लेखिका बापूके साथ

बा और बापूकी शीतल छायामें

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

प्रकाशकका निवेदन

गांधी-साहित्यके पाठक श्री मनुबहन गांधीको अुनकी पहले प्रकाशित हो चुकी नीचेकी पुस्तकों द्वारा जानते हैं:

१. बापू — मेरी मां (हिन्दी, गुजराती, मराठी और अंग्रेजीमें)

२. कलकत्तेका चमत्कार (हिन्दी, गुजरातीमें)

श्री मनुबहन गांधी श्री जयसुखलाल गांधीकी पुत्री हैं। श्री जयसुखलाल गांधी गांधीजीके काकाके लड़के हैं। कुछ बरस पहले वे कराचीमें अपना धंधा करते थे। बादमें वे सौराष्ट्रमें आकर रहे और आजकल महुवामें रहते हैं। श्री मनुबहन आजकल अुन्हींके पास रहती हैं। वे कराचीसे १९४२ में गांधीजीके पास गअीं तबसे लेकर १९४५ में अपने पिताजीके पास महुवा रहने आअीं तब तककी डायरी अिस पुस्तकमें दी गअी है।

अूपर बताअी हुअी पुस्तकों परसे पाठक जानते होंगे कि श्री मनुबहनने गांधीजीके साथ अपने निवास-कालमें जो डायरी रखी थी, अुस परसे ये दो पुस्तकें तैयार की गअी हैं। यह डायरी वे गांधीजीके साथ रहते हुअे रोज लिखती थीं और गांधीजीको बता देती थीं। अिससे यह माना जा सकता है कि अुनमें दी गअी वस्तु स्वयं गांधीजीकी लिखी हुअी तो नहीं है, लेकिन अुसे वे आद्योपान्त देख जरूर गये हैं। 'कलकत्तेका चमत्कार' नामक पुस्तकमें अिस बात पर प्रकाश डाला गया है, अिसलिअे यहां अुस विषयमें ज्यादा कहना जरूरी नहीं है।

यह नअी पुस्तक १९४२ से १९४५ के बीचके अरसेसे संबंध रखती है। और, जैसा कि अिसका नाम सूचित करता है, अुन वर्षोंमें

लेखिकाको बा और बापूके साथ रहनेका सौभाग्य मिला। अुस बीच अुन्हें जो तालीम मिली, अुसका चित्र अिसमें पेश किया गया है। यह काम अुन्होंने अपनी डायरीके तारीखवार अुद्धरणोंको शृंखलाबद्ध करके किया है। अिसलिअे अिसमें लेखिकाकी कुछ वर्षोंकी आत्मकथाके साथ गांधीजी-के अुन वर्षोंके कार्योंका कुछ अितिहास भी मिलता है। डॉ० सुशीला नय्यरने आगाखां महलमें गांधीजीकी नजरकैदके अिन वर्षोंका अितिहास अपनी आकर्षक शैलीमें 'बापूकी कारावास-कहानी' नामक पुस्तकमें दिया है। प्रस्तुत पुस्तक थोड़े भिन्न पहलूसे अुसमें अुल्लेखनीय वृद्धि करती है। लेकिन अिसका खास पहलू है गांधीजी द्वारा लेखिकाको दी हुअी तालीम। अिसमें शिक्षामें रस लेनेवाले पाठकोंको गांधीजी अेक शिक्षकके रूपमें काम करते दिखाअी देंगे। लेकिन वे किसी स्कूलके शिक्षककी तरह काम नहीं करते, बल्कि अपना घर चलानेवाले अेक पिता या पालककी तरह काम करते हैं। और अुस कामके जरिये बालकों और दूसरे सब लोगोंको शिक्षा देते हुअे और खुद लेते हुअे दिखाअी देते हैं। बालकको स्कूलमें ही नहीं — घरमें माता-पिता और साथमें रहनेवाले भाअी-बंधुओंके सम्पर्कसे तथा अुनके कार्योंमें यथाशक्ति सहकार या मदद करनेसे भी शिक्षा और तालीम मिलती है। और अिस तरह मिलनेवाला शिक्षण असरकारक होता है। यह शिक्षण वैसा ही होगा, जैसा बालकका घर और अुसमें रहनेवाले मनुष्य होंगे। वे सब जिस तरह कामकाज करते होंगे, वैसा ही बालकको सहज शिक्षण मिलेगा। अुससे बालकको अपने-आप ही तालीम और संस्कार मिलेंगे। अुसमें जितना जाग्रत भाव होगा, अुतना ही वह शिक्षण अच्छा होगा। और जाग्रत भावकी जितनी कमी होगी, अुतनी अुसमें विचार-शुद्धिकी कमी रहेगी। फिर भी अुसका स्वाभाविक प्रभाव तो बालक पर पड़ेगा ही। अिस तरह गांधीजीकी शिक्षण-पद्धतिमें व्यवस्थित और विचार-शुद्ध गृहजीवनका मुख्य स्थान है। जिसे स्कूलका शिक्षण कहा जाता है, वह अुसका अेक अंग बनता है। अिसलिअे पाठक देखेंगे कि

गांधीजीकी नजरकैदके समयके कुटुम्बीजनोंमें से ही कुछ लोग लेखिकाको पढ़ानेका समय निकालते हैं और अुसका नियमित टाअिम-टेबल भी होता है। गांधीजीने शिक्षाका अर्थ चारित्र्यकी शिक्षा किया है। अिस अर्थका शिक्षण बालकको देना हो, तो किस तरह काम करना चाहिये, अिसका नमूना अिस पुस्तकमें देखनेको मिलता है। और वही अिसका मुख्य रस है। अिसलिअे यह पुस्तक छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष सबको रसप्रद मालूम होगी।

अिसमें बा और बापूका भी अेक विरल चित्र पाठकोंको मिलता है। अुसका वर्णन करना सम्भव नहीं है। वह अैसा है कि गृहस्थ-जीवनका यह दृष्टान्त हमारे देशके लोग हमेशा याद रखेंगे और अुससे हमेशा प्रेरणा पाते रहेंगे।

श्री मनुबहनकी अेक और पुस्तक 'अेकलो जाने रे' भी हम यथासंभव जल्दी ही हिन्दी पाठकोंके सामने रखनेकी आशा करते हैं। अिसमें गांधीजीकी नोआखलीकी धर्मयात्रासे सम्बन्ध रखनेवाली डायरी दी गअी है।

२८-११-'५४

अनुक्रमणिका

बा और बापूकी शीतल छायामें

१

शीतल छायामें

१९४२ के मअी मासमें बापूजी अेण्ड्रूज़-कोष अिकट्ठा करने बम्बअी आये थे। बापूजी मुझे अपने पास आनेको ललचा रहे थे और अन्तमें बापूजीके "चार बहनोंमें से कोअी तो सेविका बनो" अिस वाक्यसे मैं जानेको तैयार हो गअी। मैंने मअीकी छुट्टियों तकके लिअे ही जाना मंजूर किया और कराचीसे बम्बअी गअी। बम्बअीसे २३ मअीको बापूजीके साथ सेवाग्रामके लिअे रवाना हुअी।

हम दूसरे दिन लगभग ११॥ बजे सेवाग्राम पहुंचे। बापूजी मेरा कंधा पकड़कर पहले सीधे मुझे बाके पास ही ले गये। और अुनकी तरफ धकेलकर बासे कहने लगे: "लो, तुम्हारे लिअे अेक लड़की लाया हूं। अब अिसे अच्छी तरह पकड़कर रखना ताकि भाग न सके।"

अुपरोक्त शब्द आज जब मैं अपनी डायरीमें पढ़ती हूं, तब अैसा लगता है मानो बापूने अेक अेक शब्दकी अुसी समय भविष्यवाणी कर दी थी। मैं सिर्फ दो महीनेकी छुट्टियां बिताने ही सेवाग्राम गअी थी, परंतु पूर्वजोंके किसी पुण्यके प्रतापसे बा और बापू दोनोंकी अंतिम सेवा करनेका सौभाग्य मुझे मिला।

बा मुझे अपने कमरेमें ले गअीं। मेरा सामान खुदने ही व्यवस्थित रखवाया। प्रेमपूर्ण शब्दोंमें मुझे कहा: "बेटी, अब तुझे भूख लगी होगी, अिसलिअे पहले नहा ले। परंतु तू फ्रॉक पहनती है, यह मुझे पसन्द नहीं। तेरी अुम्र १३–१४ वर्षकी तो अवश्य होगी? तेरे पास ओढ़नी नहीं होगी। ले, यह मेरी साड़ी पहन ले, बादमें मैं तुझे ओढ़नी फाड़ दूंगी।" यों कहकर अपनी धुली हुअी साड़ी मेरे हाथ पर रख दी। मैं क्षण भरके लिअे हक्कीबक्की हो गअी कि बा अितनी बड़ी (प्रतिष्ठामें) हैं, अुनकी साड़ी मैं अेकदम कैसे पहन सकती हूं? परंतु मेरी परेशानीको समझकर वे बोलीं: "अिसमें संकोच क्यों करती है?

कल फिर धुल जायगी तो मैं पहन लूंगी।" फिर भी बा और बापूजीका कपड़ा हमारे लिअे तो प्रसादी ही हो सकता है। अुसे पहना कैसे जा सकता है? हजारों लोग अुनकी प्रसादीको यादगारके तौर पर रखते हैं; अुसके बजाय मैं अुसे पहनूं, तो कोअी पाप तो नहीं लगेगा न? अैसे अैसे विचार भी मनमें आये। फिर भी मैं हिम्मतके साथ अिन्कार नहीं कर सकी, और मैंने नहा कर साड़ी पहन ली।

मुझे अुस समय साड़ी पहननेकी आदत ही नहीं थी। अिसलिअे पहनना नहीं आया। परंतु बाके साथ अेक और बहन रहती थीं, अुन्होंने मुझे ठीक ढंगसे पहना दी। बाको मानो खूब संतोष हुआ। वे बोलीं: "हां, अब मुझे तू जरूर अच्छी लगती है! अितनी बड़ी १४ सालकी लड़कीको कहीं फ्रॉक अच्छा लगता है? परंतु आजकल विदेशी फैशनने आंधीकी तरह सब जगह अपना असर फैला दिया है।"

बा मुझे भोजनके लिअे ले गअीं। खानेमें अुबला हुआ साग, रोटी, मक्खन, दही और गुड़ था। आश्रममें खानेकी घंटी ११ बजे होती थी, अिसलिअे खानेवाली मैं अकेली ही रह गअी थी। अुबला हुआ साग, अुसमें भी कद्दूका, मुंहमें रखते ही मिचली आने लगती थी। बा मेरी स्थितिको समझ गअीं। अुनका अेकादशीका व्रत था, अिसलिअे सूरण (जमीकंद) का साग बनाया था। अुसमें से मुझे थोड़ासा दिया। परंतु यह डर तो था ही कि अिस तरह नियमके विरुद्ध साग खाअूंगी और बापूजीको पता चलेगा तो वे मुझे क्या कहेंगे? पिताजी और मेरी बहनें वगैरा मुझे अिस बातकी कल्पना कराते रहते थे कि आश्रमके आदेश और नियम जो तोड़ता है अुसके कैसे बुरे हाल होते हैं। अिसलिअे मैं पहलेसे ही सावधान रहना चाहती थी। बा मेरा चेहरा देखकर मेरे मनकी बात समझ गअीं। बोलीं, "आजके दिन खा ले, बादमें धीरे धीरे अभ्यास हो जायगा तो मैं खुद ही तुझे नहीं दूंगी।"

मुझे खिलाकर बा बापूजीके कमरेमें गअीं। मुझसे कह गअीं कि "खूब थक गअी होगी, अिसलिअे कुछ देर सो लेना।" थोड़ी देरमें वे आअीं। मैं सोअी नहीं, अिसलिअे अुलहनेके तौर पर कहने लगीं:

"सोओी क्यों नहीं? आश्रममें बीमार नहीं पड़ना है। यहां तो पढ़-लिख कर होशियार बनना है।" थोड़ी देर बाने गांधी-परिवारकी पुरानी बातें सुनाओीं: "तेरी दादी मेरी जिठानी थीं। मोतीभाभीने जब बापूजी विलायत गये तब मेरी बहुत देखभाल की थी। हम दोनों अुस समय अेक दूसरेके सुख-दुःखकी साथिन थीं। हमारी सास किसी दिन हमसे कुछ कहतीं, तो दोनों अेक-दूसरेको समझा और ढाढ़स बंधाकर अपना दुःख हलका करतीं और आनंद मनाती थीं। हमारी देवरानी-जिठानीकी जोड़ी थी। आजकल तो कहीं भी अैसी जोड़ी देखनेको नहीं मिल सकती। हमारी सास कहतीं: 'कस्तूर बहू और मोती बहूको छः महीने तक खानेको कुछ भी दिये बिना अेक कोठरीमें साथ ही बन्द रखकर खूब पेट भरकर बातें करने दो और छः महीने बाद फिर बाहर निकालो तो भी अेक मिनट वे अेक-दूसरेके बिना नहीं रह सकतीं।' हमारी अैसी जोड़ी थी। तेरा यहां आना तो मुझे बहुत ही अच्छा लगा है। कौन जाने, कहीं मोतीभाभीने ही स्वर्गमें बैठे बैठे अितना प्रेम प्रगट न किया हो! मुझे कभी कभी अुनकी बहुत याद आती है। तेरी मां भी अैसी ही सेवाभावी थी। बेचारी जब तक मेरे सिरमें तेल मलने या पैर दबाने न आ जाती तब तक सोती ही न थी!"

मुझे ये पुरानी बातें सुननेमें बड़ा ही आनन्द आया। अपनी दादीके बारेमें यह सब जाननेको मुझे और कहां मिलता? मैंने अुन्हें कभी देखा नहीं था। बाने आगे कहा: "तेरे दादा बड़े तेज थे। किसीने जरा सी खराब रोटी बना दी कि तुरंत टोकते — यह रोटी कौनसी बहूने बनाओी है? और अिस बातका खास तौर पर खयाल रखते कि बापूकी गैरमौजूदगीमें मुझे कोओी दुःख न दे। मेरे ससुर पर तेरे दादाकी बहुत ही श्रद्धा थी; छोटेसे छोटा काम भी अुनसे पूछ कर ही करते थे।"

अिस प्रकार लगभग घंटे भर तक बाने मुझे मेरे दादा-दादीके मीठे संस्मरण सुनाये। बापूजी कभी कभी अैसे संस्मरण सुनाते थे, जो कभी किसीने नहीं सुनाये। बाके पैर दबाते दबाते मैं भी बाके पास ही सो गओी। बा दोपहरको कोओी आध घंटे सोती थीं, अिसलिये वे

तो आध घंटेमें जाग गअीं। परंतु मुझे नहीं अुठाया। आमका मौसम था, अिसलिअे हमारे लिअे स्वयं रसोअीघरसे आम लाकर पानीमें भिगो रखे। अुस समय रामदास काकाका कान्हा भी बाके पास ही था। हम तीनोंको बाने नाश्ता दिया। मैं अिन्कार कर रही थी परंतु बाके साथ रहनेवाली बहनने मुझे बाके स्वभावका परिचय देकर कहा: "बा खाने या पहननेकी कोअी चीज दें, तब रुचि हो या न हो जरूर ले लेनी चाहिये। बाको खिलानेमें बड़ा आनंद और संतोष होता है। अिसलिअे नहीं लोगी तो वे नाराज होंगी।" अिसलिअे मैंने भी नाश्ता किया।

अितनेमें अखबार आ गये। बाको अखबार सुनाये। फिर बाने डाक लिखवाअी। अितनेमें तीन बज गये, अिसलिअे वे चरखा चलाने बैठीं।

चरखा हाथमें लेते लेते बाने कहा: "तू चरखा नहीं लाअी?" मुझे बड़ी शर्म आअी। मैंने ना तो कह दिया, परंतु अुस समय अैसा लगा कि बाके पास चरखेके बिना खड़ी कैसे रहूं? मनमें यह डर था कि चरखा नहीं लाअी अिसलिअे बा नाराज होंगी। परंतु अुन्होंने अपने प्रेममय शब्दोंमें चरखेका मीठा तत्त्वज्ञान समझाया: "अिस तरह कैसे काम चलेगा? हमें रोज कातना ही चाहिये। तुझे रोज कपड़े पहनने पड़ते हैं। अितनी ही बात नहीं है कि हम कपड़े शरीरकी लज्जा ढंकनेको पहनते हैं, परंतु ठंड और गरमीमें कपड़े हमारे शरीरकी रक्षा भी करते हैं और हमारे लिअे बहुत आवश्यक हैं। अिसीलिअे तू ठेठ कराचीसे यहां तक बिना भूले कपड़े पेटीमें रखकर लाअी है। कहीं भी जाते वक्त कपड़ोंकी जोड़ी ले जानेकी आदत हमें जाने अन-जाने पड़ी हुअी है। अैसी ही आदत यदि भारतके लोगोंको चरखा चलानेकी पड़ जाय, तो बापूजीका कितना ही काम तेजीसे बन जाय। यह ले, अपना दूसरा चरखा तुझे देती हूं। अब अिस पर कातना।"

अिस प्रकार बाने थोड़ेसे शब्दोंमें मुझे चरखेका तत्त्वज्ञान समझा दिया और अिस बातका भान करा दिया कि बापूके चरखेको वेग प्रदान करनेकी अुनके भीतर कितनी अुत्कट भावना है। कोअी आध घंटे कातकर मैं अपने और बाके सूखे हुअे कपड़ोंकी तह करने लगी। बाकी

तीक्ष्ण दृष्टि मेरे फ्रॉक पर पड़ी। तुरंत ही मुझसे कहने लगीं: "बेटी! जरा फ्रॉक तो दिखा। ये धब्बे नहीं रहने चाहिये। मालूम होता है तुझे कपड़े धोना नहीं आता। कराचीमें तो नौकर धोते होंगे न? हम लोग जब तेरे बराबर थीं, तब तो हमारी शादी हो चुकी थी। मां-बाप नौकर रखकर आजकलकी लड़कियोंको पंगु बना देते हैं। ला में मिटा दूं, अिसमें बहुत साबुनका काम नहीं। हाथसे खूब मसलना चाहिये। तू रोज कपड़े धोकर मुझे बताया कर। दो तीन दिनमें सब ठीक हो जायगा। ये सब बातें यहां अधिक सीखनी होंगी। पढ़ना भी आना चाहिये और प्रत्येक काम भी आना चाहिये।"

बापूजी सुबह बाके पास छोड़ गये थे तबसे मैं अुनके पास गअी नहीं थी। शामको खानेकी घंटीके समय (पांच बजे) बापूजीको लानेके लिअे बाने जबरदस्ती मुझे भेजा। (बापूजी दोनों समय सामूहिक भोजनालयमें खाने आते थे।)

बापूजीके पास गअी तो वे बोले: "अरे, यह लड़कीसे अेकदम स्त्री कब बन गअी? आज यह साड़ी क्यों पहनी है? यह तो बाकी मालूम होती है। खुद अपनेको संभाल सके, अितनी भी शक्ति तुझमें नहीं है; फिर अूपरसे अितना भार क्यों लाद रही है? क्या तेरे पास फ्रॉक नहीं है? न हो तो सिलवा दूं।"

मैंने कहा: "बापूजी, मोटीबाको फ्रॉक पसन्द नहीं है। अुन्होंने मुझे साड़ी पहननेके लिअे कहा, और अपनी साड़ी दी। मैंने सुबहसे ही साड़ी पहनी है।" अिस तरह बातें करते करते हम बरामदे तक पहुंचे। बा बाहर आअीं तो बापूजीने बात छेड़ी: "अिस बेचारीको साड़ी किस लिअे पहनाअी है? भले ही यह १४ वर्षकी हो, परंतु मैं तो अिसे ११-१२ वर्षकी ही मानता हूं। अिसे आजादीसे दौड़ने-खेलनेका मौका मिलना चाहिये। यह अपनी साड़ी धो भी नहीं सकती। मुझे पता होता तो सुबह ही निकलवा देता।"

बा बापूजी पर नाराज होकर बोलीं: "मैं फ्रॉक तो हरगिज नहीं पहनने दूंगी। लड़कियोंके बारेमें मैं अधिक जानती हूं। साड़ी आजके ही लिअे है, कलसे ओढ़नी दे दूंगी। लड़कीको मेरे पास रखा

है, तो मुझे जैसा पसन्द होगा वही पहनाअूंगी। हां, अिसकी अिच्छा फ्रॉक ही पहननेकी हो तो अिस पर मेरी जरा भी जवरदस्ती नहीं है।" अव मैं धर्मसंकटमें पड़ गअी। किसकी मानूं? वाकी या वापूकी? अन्तमें मैंने कहा, "मेरे पास कोअी छः फ्रॉक हैं, अुन्हें पहन डालूं; वादमें नये नहीं सिलवाअूंगी।" और अिस वातको दोनोंने अुत्साहसे मान लिया। वाने अिस पर जरा भी आपत्ति नहीं की।

अिस प्रकार २४ मअी १९४२ के दिनसे मुझे अिन दोनों महान आत्माओंकी शीतल छायामें स्थायी रूपसे रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह दिवस जीवनमें सदाके लिअे अंकित हो गया। और आज मानो वह स्वप्नवत् वन गया है। जव यह विचार करती हूं तो लगता है कि क्या वे सव सपने थे या जीती-जागती महान आत्मायें थीं?

वा मेरी पढ़ाअी, खान-पान वगैरा हरअेक वातका ध्यान रखती थीं। और मेरे दिन भी वाकी सेवा करनेमें, खेलने-पढ़नेमें, और आश्रमजीवन जीनेके आनंदमें सुखपूर्वक व्यतीत होने लगे।

२

पहला पाठ

मेरे आनेके वाद मेरे साथ रहनेवाली वहन वीमार हो गअी। अुसे सख्त वुखार आने लगा। अिसलिअे वाकी सारी सेवा मेरे हाथमें आ गअी। वाने अुस वहनकी खाट आग्रहपूर्वक अपने ही कमरेमें रखवाअी। अुस वहनका वुखार कव वढ़कर कितना हो जाता है, अुसके खाने-पीने, स्पंज, अेनिमा, मिट्टीकी पट्टियां वगैरा तमाम सेवाशुश्रूषाका ध्यान वा वड़े प्रेमसे रखतीं। अुस वहनको चरखेकी आवाज अच्छी नहीं लगती थी, अिसलिअे वा पासवाली छोटीसी कोठरीमें कातती थीं। वीमारीमें दूसरेकी लड़कीकी अितनी देखभाल अेक मांकी तरह विरली ही स्त्रियां कर सकती हैं।

जैसा मैंने पहले लिखा है, वाने मुझे पढ़ानेकी व्यवस्था भण-सालीभाअीको सौंप दी। अुनके पास मेरा अंग्रेजी, गुजराती, वीज-गणित,

भूमिति, संस्कृत, अितिहास, भूगोल, वगैराका अध्ययन नियमित रूपसे चलता था। अेकवार वाने सुझाया कि कभी कभी अिसकी परीक्षा भी लेते रहिये। अिसलिअे अंग्रेजीकी पांचवीं कक्षाकी पढ़ाअी करनेवाली हम दो-तीन लड़कियोंकी परीक्षा लेनेका भणसालीभाअीने निर्णय किया। वाको तो अिसकी जानकारी थी ही। परंतु जिस दिन परीक्षा थी अुसी दिन सेवाग्राममें कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठक होनेके कारण मेहमान आये हुअे थे। और शामको रोटी बनानी थी। बहनें अुस समय थोड़ी थीं। मेरी परीक्षा शामके छः बजे बाद थी। अिसलिअे मैं चार बजे दूसरी बहनोंके साथ रोटियां बेलनेके लिअे भोजनालयमें गअी। अभी पांच सात रोटियां ही बेली थीं कि वा आअीं। मेरे हाथसे बेलन ले लिया और मुझे मीठा अुलहना देने लगीं: "क्या तेरे बजाय मुझे परीक्षामें बिठायेगी? बेचारी पढ़नेसे अूब गअी जान पड़ती है जो यहां आकर बैठ गअी है। बादमें मोटीबा नाराज होगी तब बहाने बनाये जायंगे कि मैं तो रोटी बेलने गअी थी। तुझे मुझसे पूछना चाहिये था कि रोटी बेलने जाअूं?" मैं क्षणभरके लिअे स्तब्ध रह गअी। मैंने कहा, "परंतु साढ़े चार बज गये थे और अितने अधिक खानेवाले होनेके कारण मुझे बुलाया गया, अिसलिअे मैं आ गअी। मैंने अपनी पढ़ाअी पूरी कर ली है। आप यहां रोटी बेलेंगी तो थक जायंगी। मैं थोड़ी सी बेलकर अभी चली जाअूंगी।"

अितना-सा बड़ी हिम्मत करके मैं बोली तो सही, परंतु वाका जवाब सुनकर अुल्टी पछताअी।

"हां, मैं तुम लड़के-लड़कियोंको — पढ़ाअीके चोरोंको — खूब जानती हूं। यों ही कह न कि अिस तरह तू पढ़नेसे बच निकलना चाहती है। जा, यहांसे और सीधी पढ़ने बैठ जा। अभी भणसालीसे कह देती हूं कि खूब कठिन सवाल पूछना। और फिर यदि थोड़े नम्बर लाअी तो तू तेरी जानती है।"

मैं कुछ बोले बिना चुपचाप चली आअी। वा जिसकी जिम्मेदारी लेतीं अुसकी संभाल अपने शरीरको हानि पहुंचाकर भी रखती थीं।

मेरी आंखें बिगड़ गअी थीं। चश्मा था, परंतु मैं लगाती न थी। बाको मालूम नहीं था कि मेरी आंखें बिगड़ी हुअी हैं।

बाके कमरेमें अेक ताक है। अुसमें कुंकुमका ॐ बनाया हुआ है। आज भी सेवाग्राममें वह मौजूद है। वहां बा सुबह शाम घीका दिया जलातीं, माला फेरतीं, गीता पढ़तीं और अेक दो फूल चढ़ातीं। वह ॐ मिटने लगा तो बाने मुझे फिरसे बना देनेको कहा। मैंने ॐ बनाया परंतु जरा नीचेकी पांख ठीक नहीं बनी। अुसका मुझे तो कोअी खास पता नहीं चला। परंतु बाकी कला-पारखी आंखोंने तुरंत देख लिया। अुन्होंने मुझसे कहा: "मनु, दूरसे देख तो, ॐ की नीचेकी पांख जरा बेडौल लगती है।" मैंने दूरसे देखनेका प्रयत्न किया, परंतु दिखाअी दे तब न? अुस समय कुछ अुत्तर देना चाहिये, अिसलिअे मैं अितना ही बोली कि अभी ठीक कर देती हूं। बा बाहर बरामदेमें चली गअीं। अिस बीच मैंने चश्मा लगाकर देख लिया। बाके कमरेमें अेक जाली है। बाने अुसमें से मुझे चश्मा लगाते देख लिया। अुसी क्षण अन्दर आअीं, "क्यों, तुझे भी चश्मा लगता है? तो लगाती क्यों नहीं? आंखें ज्यादा बिगाड़नी हैं क्या? बादमें रामदासकी सुमी जैसा हाल होगा। आजसे चश्मा नहीं लगाया तो मैं अपना कुछ भी काम तुझे नहीं करने दूंगी। याद रखना बापूजीसे कह दूंगी। और तुझे भी दोपहरको गरमीमें तीन संतरोंका रस निकालकर पी लेना है। सुमीको अिससे बड़ा लाभ हुआ था। (सुमी अर्थात् सुमित्रा — रामदास काकाकी बड़ी लड़की।)

मुझे कल्पना भी नहीं थी कि बा अिस तरह मेरी चोरी पकड़ लेंगी। परंतु अुस दिन बाने मुझे चश्मा न लगवा दिया होता तो शायद आज मैं बिलकुल अंधी हो जाती। अथवा आंखें अत्यंत कमजोर तो हो ही जातीं।

मेरी अेक कुटेव थी। खाने बैठती तो कभी पानीका लोटा न भरती थी। अिसका कारण यह भी था कि हम चार पांच लड़कियां साथ खाने बैठतीं और बर्तन मलनेमें स्पर्धा होती कि कौन जल्दी मल लेती है। मुझे बर्तन मलनेका अभ्यास कम था, अिसलिअे मैं कमसे कम बर्तनोंका

अुपयोग करती। पानी लेकर न वैठनेसे अेक गिलास कम मलना पड़ता। यह भी मनकी अेक चोरी तो थी ही। फिर भी मुझे याद है कि मेरी अेक मुसलमान सहेली जोहरा वहनके पास मुझसे दुगुने वर्तन होते तो भी वह मुझे अिस स्पर्धामें हरा देती। यह दृश्य वा भी कअी वार देखती थीं। और अुन्हें भी हमारी अिस स्पर्धामें मजा आता था।

अिन्हीं दिनों अेक वार आश्रममें प्रार्थनाके वाद मुझे विच्छूने काट लिया। अुसकी असह्य पीड़ा २४ घंटे तो रहती ही है। रोज वाका विस्तर, खाने-पीनेका प्रवंध तथा अन्य कुछ सेवा मैं करती थी। वाके कमरेमें अिन दिनों मैं अकेली ही थी। वाने प्रेमसे मेरे सिर पर हाथ फेरा। प्रार्थनाके वादके हमारे रोजके कार्यक्रममें हम सव लड़कियां मिलकर अन्त्याक्षरीका खेल खेलतीं, या वाके पास वैठकर काशी ताई ('जीवनका प्रभात' नामक गुजराती पुस्तकके लेखक प्रभुदास गांधीकी माता) भजन गातीं, शकरी मामी वाकी कमर दवातीं और शकरी मौसी (आश्रमके व्यवस्थापक चिमनलालभाअी शाहकी पत्नी), दुर्गा-मौसी (महादेवभाअी देसाअीकी पत्नी) और गोमती काकी (श्री किशोरलालभाअी मशरूवालाकी पत्नी) खाने-पीनेसे निवट चुकने पर वाके पास आकर वैठती थीं। अिस प्रकार रातके समय आश्रमका कुटुम्व किल्लोल करता था। अिसलिअे अुस रातको विच्छू काटनेसे हमारे रंगमें भंग हो गया। जव वापूजी सोनेके लिअे आये, तव मेरे पास आये। वाने कहा: "देखिये न वेचारी लड़की खेल रही थी, अितनेमें अिसे विच्छूने काट लिया।"

आश्रममें वा, वापूजी तथा हम लड़कियां प्रार्थनास्थल पर रेतमें खुले आकाशके नीचे सोते थे। वा वहुत देर तक मेरे पास वैठी रहीं। दूसरे दिन भी कोअी काम न हो सका। रोज वाकी थाली मैं परोसती थी, अिसके वजाय वा मेरी थाली परोसकर लाअीं और पानीका लोटा भरकर मुझे दिया। "हमेशा लोटा भरकर खाने वैठनेकी तेरी आदत नहीं है, यह वात तुझे कहना रोज भूल जाती हूं। जिस सावधानीसे तू मेरे लिअे लोटा भरकर रखती है, वही सावधानी तुझे अपने काममें रखनी चाहिये।

यह ठीक नहीं कि बाका काम तो अच्छी तरह कर दे और अपना चाहे जिस तरह करनेकी छूट रखे। अैसे आदमी कभी आगे नहीं बढ़ते। खाते-खाते किसी समय पानी पीनेकी जरूरत पड़ जाये, तब या तो तुझे जूठे हाथों अुठना पड़े अथवा दूसरेसे मांगनेकी नौबत आये। तेरे मनमें अगर यह खयाल हो कि अैसा करनेसे अेक लोटा कम मलना पड़ेगा, तो यह बड़े आलस्यका चिन्ह माना जायेगा। अब आजसे रोज पानी भरकर खाने बैठना।"

बा छोटी छोटी आदतें कितनी सूक्ष्मता और संक्षेपमें समझा सकती थीं, अिसका मुझे यह प्रत्यक्ष पाठ मिला।

३

बा और बापूकी बिदाअी

१९४२ का जुलाअी महीना बहुत स्मरणीय बन गया। रोज अखबारोंमें प्रश्न अुठाया जाता था कि बापू अुपवास करेंगे या आमरण अनशन? सारी बातचीत बापूकी कुटियामें ही होती थी। बा चाहतीं तो अिन सब सलाह-मशविरोंमें अुनके मौजूद रहने पर कोअी अेतराज न करता। परन्तु मैंने देखा कि वे कभी खानगी सलाह-मशविरा सुननेकी जिज्ञासा नहीं रखती थीं। बा यह सम्बन्ध भूल ही गअी थीं कि बापू पर पत्नीके नाते अुनका ज्यादा अधिकार है। कारण, बापू सबके बापू और बाके भी बापू बन गये थे। और बा भी सबकी बा और बापूकी भी बा बन गअी थीं। अिसलिअे यदि आम जनता अखबारोंसे सन्तोष मान लेती थी, तो बाको भी अुन्हींसे सन्तोष मानना चाहिये।

अिसलिअे बाको अिस सारी हलचलकी बहुत चिन्ता रहती थी। 'हरिजनबन्धु' में बापूका "अंग्रेज भारत छोड़कर चले जायं" नामक लेख मैंने बाको पढ़कर सुनाया। बाने लेख बड़ी आतुरता और धानीसे सुना। परन्तु शायद अुन्हें मेरे सुनानेसे सन्तोष नहीं हुआ, अे अुन्होंने स्वयं वह लेख धीरे धीरे पढ़ा। ('हरिजनबन्धु' के

लेख भी वा पहलेसे नहीं पढ़ती थीं; जब वे प्रति सप्ताह छपते, अुसके वाद ही नियमित पढ़ती थीं।) पढ़कर कहने लगीं: "अभी तक वापूजीने अितनी कड़ाअी नहीं दिखाअी थी। अिसलिअे अब या तो सरकार यह अखवार बन्द कर देगी या कोअी अुथल-पुथल जरूर होगी।" अिन दिनों खुरशेद वहन (दादाभाअी नौरोजीकी पौत्री) भी वहीं थीं। वे रोज वाके कमरेमें वहनोंकी सभा करती और अुसमें यह वताती थीं कि यदि वापूजी लड़ाअी छेड़ें तो वहनोंको क्या करना चाहिये।

अन्तमें अगस्तका महीना आया। वापूजीको कांग्रेस महासमितिकी वैठकके लिअे २ तारीखको वम्वअी जाना था। वाका जाना तय नहीं हो रहा था, क्योंकि अुनका स्वास्थ्य कमजोर था और वापूजी मानते थे कि सरकार अिस वार अुन्हें हरगिज नहीं पकड़ेगी। वापूजीने वाको समझाया, "तुम यहीं रहो। सरकार मुझे नहीं पकड़ेगी। सरकार अितनी पागल थोड़े ही है?"

परन्तु वा अिस तरह माननेवाली नहीं थीं। अुन्होंने वापूजीको अुत्तर दिया: "मुझे क्यों नहीं ले जाते? मैं आपकी चालाकी जानती हूं! अिस वार क्या सरकार आपको पकड़े विना रहेगी? आप कितना कड़ा लिखते हैं? मैं जरूर चलूंगी। जहां आप वहां मैं।"

वापू अेक शब्द भी नहीं वोले। "तो फिर हो जाओ तैयार।" और हुआ भी अैसा ही। वापूजीने स्वयं प्रस्ताव रखे, भाषण दिये। फिर भी अुनका अनुमान गलत निकला। और केवल समाचारपत्रों परसे किया हुआ अपढ़ वाका अनुमान विलकुल सही निकला और सवको जेल जाना पड़ा।

वाने मुझे तैयारी करनेको कहा। मानो वाको सारे भविष्यका पता हो, अिस तरह वे मुझे प्रत्येक छोटी-वड़ी चीज याद करके वताती थीं और कहती थीं, अब सेवाग्राम कहां वापस आना है? मैंने पूछा: "मोटीवा, मैं भी चलूं?" वे वोलीं: "वेटी, तुझे ले जाना तो मुझे अच्छा लगेगा, परन्तु तेरे लिअे वापूजीसे कहूंगी तो मेरा जाना भी एक

जायेगा। फिर वहां प्रभा है, अिसलिअे मुझे कोअी दिक्कत नहीं होगी।" (प्रभावतीबहन श्री जयप्रकाशजीकी पत्नी)।

मैंने बाकी पेटी जमाअी। पेटीमें साड़ियां रखाते रखाते वे बोलीं: 'यह साड़ी मुझे राजकुमारीने कात कर दी है, अिसलिअे अिसे जरूर रख। वह बेचारी बहुत खुश होगी।" बामें दूसरोंको खुश करनेके अैसे महान् गुण थे। अेक लाल किनारकी साड़ी बापूके सूतकी थी, वह मेरे हाथमें रखकर गद्‌गद कंठसे बोलीं: "बेटी शायद हम पकड़े जायं, और आश्रम भी जब्त कर लिया जाय, तो मेरी अिस साड़ीको संभाल कर रखना। जबसे यह साड़ी बुनकर आअी, तबसे मैंने अपने मनमें निश्चय कर लिया है कि मरते समय बापूकी यही साड़ी ओढूंगी। यही मेरी अेक अंतिम अिच्छा है। अिसे तू पूरी करना। यह बात तुझे ही कहती हूं, और किसीसे नहीं कही। अुन्हें जो कुछ ले जाना हो भले ले जायं, परन्तु अिस साड़ीकी रक्षाकी जिम्मेदारी तुझ पर है।"

हुआ भी यही। आश्रम जब्त तो नहीं हुआ, परन्तु जब किशोरलालभाअी मशरूवालाको पकड़ने रातमें पुलिस आअी, तब जब्तीकी पूरी शंका थी। परन्तु वह साड़ी ज्यों ही बा और बापू पकड़े गये, मैंने बजाजवाड़ी वर्धामें भेज दी। और मेरे आगाखां महलमें जानेके बाद वह साड़ी वहां मंगवा ली। वहां अपने ही हाथों बाको ओढ़ाअी। अुनकी अितनी-सी अंतिम अिच्छा मैं पूरी कर सकी, यह मेरे पुण्यके बल तो नहीं परन्तु बड़े-बूढ़ोंके पुण्य और आशीर्वादके बल पर ही हुआ। आज अिसका मुझे अपार सन्तोष है। साड़ीकी बात परसे जान पड़ता है कि बामें पतिभक्ति — बापू-भक्ति कितनी अूंची, कितनी भव्य थी!

२ तारीखको स्टेशन पर जाते जाते मुझे बार बार कअी बातें बाने समझाअीं: "घीका दीया नियमित जलाना। हम पकड़े जायं तो कराची चली जाना। शरीरकी अच्छी तरह संभाल रखना। मेरे कमरेमें अकेलापन लगे तो दुर्गाके यहां सोने जाना।" मुझे अच्छी तरह नाश्ता मिलता रहे अिसके लिअे भोजनालयके व्यवस्थापक श्री ...चन्द्रको सब बातें समझाअीं।

अिस बीच अेक बहनने बाके लिअे 'थेपला' नामकी नमकीन बानगी बनाकर भेजी। बाको चने, मूंग वगैराकी बनी नमकीन चीजोंका शौक तो था। लेकिन अुन बहनको लिखवाया: "तुम आश्रमके सब नियम जानती हो। फिर यह चीज क्यों भेजी? मुझे खानी हो तो यहां कौन मना करता है? परन्तु अिस प्रकार बाहरकी चीजें मैं खा ही कैसे सकती हूं? बापूके सामने भी कैसी चोर ठहरूंगी?"

बाने अुन 'थेपलों' के टुकड़े करवाकर अंतिम समय सबकी थालियोंमें रखवा दिये। खुदने अेक टुकड़ा भी नहीं चखा। अिस प्रकार बा बापूके सारे नियम बहुत ही समझ-बूझकर पालती थीं। शुरूके जीवनमें वे भले जाने-अनजाने बापूके पीछे खिचती रही हों, परन्तु अुन नियमोंके समझमें आनेके बाद तो अिस हद तक अुनका पालन करती थीं। चाहतीं तो अुन 'थेपलों' को अपने कमरेमें रखवाकर दूसरे दिन रास्तेमें खानेके लिअे ले जातीं। परन्तु बा कभी पापका पोषण कर सकती थीं? तब तो बा बा न बन सकी होतीं।

बा और बापूने आश्रमसे बड़े गंभीर वातावरणमें विदा ली। बादल खूब घिरे हुअे थे। राजनैतिक बादल तो थे ही, साथ ही ये कुदरती बादल भी थे। दिन बड़ा नीरस लग रहा था। या तो पूरा सूर्यप्रकाश आनन्दप्रद होता है या बरसात ही अच्छी लगती है। परन्तु यह तो न बरसात थी न धूप। मुझे लगता है कि हममें जो शकुन देखा जाता है, अुस पर मेरा विश्वास अिस घटनाके बाद अधिक बैठ गया। बाके मुंहसे यही शब्द निकल रहे थे: "अब कहां आश्रममें आना है? मुझे नहीं लगता कि अब फिरसे मैं आश्रमको देखूंगी।"

और बाने सेवाग्राम आश्रम लौटकर फिर कभी देखा ही नहीं! अुनकी आखिरी विदाअी आखिरी ही साबित हुअी!

४

गिरफ्तारी

बापूजी और बा जिस दिन गये, अुस दिन आश्रममें सूना-सूना लगने लगा। किसीका कहीं जी ही नहीं लगता था। किसीके लिअे मानो कोओी काम-धंधा ही नहीं रह गया था। दूसरे दिन मैंने बाका कमरा साफ किया। सब सामान पासकी कोठरीमें भरकर वहां ताला लगा दिया और कुंजी आश्रमके व्यवस्थापक चिमनलाल काकाको सौंप दी।

सभीकी नजर बम्बअीके समाचारों पर लगी हुअी थी। मैंने आश्रममें आनेके बाद आश्रमके नियमानुसार अब तक पाखाना-सफाअी नहीं की थी, क्योंकि पूज्य बाकी सेवामें सबेरेका समय चला जाता था। परन्तु बा और बापूजीके चले जानेके बाद मुझे भी यह आनन्द अुठानेकी अिच्छा हुअी। पूज्य बापूजीके आश्रममें पाखाना-सफाअी करना भी जीवनका अेक अमूल्य आनन्द था और आज भी है। अिस कामसे जीवनके निर्माणमें कितना अमूल्य लाभ होता है, यह तो अनुभव करनेवालेको ही पता चलता है। मुझे गन्दगीसे बड़ी घिन होती थी। कभी किसीको कै करते देखती, तो अुसे तो होते होती परन्तु मुझे तुरन्त कै हो जाती। मैंने यह घिन मिटानेके लिअे ही जान-बूझकर पाखाना-सफाअीकी मांग की और मेरी सारी घिन अुसके बाद ही मिटी। मुझे लगता है कि मैं यदि पहले जितनी ही घिन करनेवाली होती, तो बा और बापूजीके पास टिक ही नहीं सकती थी। परन्तु अेक सप्ताह पाखानेकी बाल्टियां अुठानेसे मुझे बहुत लाभ हुआ। ८ अगस्त मेरी सफाअीका अंतिम दिन था। सबको यह विश्वास था कि बा और बापूजी कल अवश्य आयेंगे। अिसलिअे पाखाना-सफाअीसे निपटकर मैंने बापूजीका कमरा साफ किया, बरामदेको लीप भी दिया और पूज्य बाकी सब चीजें ज्योंकी त्यों जमा दीं। परन्तु अीश्वरकी लीलाको कौन समझ सकता है?

९ तारीखको सुबह ८-३० बजे सब नेताओंके पकड़ लिये जानेके समाचार आये। हमें बजाजवाड़ीसे टेलीफोन द्वारा सब समाचार सीधे मिला करते थे।

यह खबर सेवाग्रामके आसपास वायुवेगसे सब जगह फैल गयी। आसपासके देहातके लोग आये। सब किशोरलाल काकाके यहां अिकट्ठे हुअे और सबने रोते दिलसे प्रार्थना की। बापूजीका प्यारा गीत 'वैष्णव जन' गाया गया। सेवाग्रामके मनुष्य तो क्या पेड़, फूल, फल भी मानो खिन्न होकर, बिना हिलेडुले, जड़वत् खड़े थे। सूर्य भगवान भी शोक अनुभव करते हों, अिस प्रकार बादलोंमें छिप गये थे। किशोरलाल काकाने बम्बअी टेलीफोन करनेकी बड़ी कोशिश की, तब कहीं मुश्किलसे लाअिन मिली। और अुसमें भी अितनी ही खबर मिली कि महादेव काका, श्रीमती सरोजिनी नायडू और मीराबहन बापूके साथ हैं।

और बा? बासे पुलिसने कहा: 'बापूजीके साथ जाना हो तो आप जा सकती हैं।' परन्तु बा तो बहादुर थीं। अुन्हें सरकारकी अैसी मेहरबानी कहां बरदाश्त होती? अुन्होंने अिन्कार कर दिया। शामको बहनोंकी सभाका प्रबन्ध करवाया और अुसमें देनेका सन्देश तुरन्त तैयार कराया। वह सन्देश अिस प्रकार था:

बहनोंको पूज्य कस्तूरबाका सन्देश

महात्माजी तो आपको बहुत कुछ कह चुके हैं। कल अुन्होंने ढाअी घंटे तक कांग्रेस महासमितिमें अपने हृदयके अुद्‌गार प्रकट किये। अुससे अधिक और कुछ कहनेका हो ही क्या सकता है?

अब तो अुनके आदेशों पर अमल करना है। अब बहनोंको अपना तेज दिखाना है। सभी जातियोंकी बहनें मिलकर अिस लड़ाअीको सुशोभित करें। सत्य और अहिंसाका मार्ग न छोड़ें।

बिड़ला हाअुस, बम्बअी कस्तूरबा गांधी
ता० ९-८-'४२

अैसी थीं बा। वे कोअी पढ़ी-लिखी नहीं थीं, फिर भी छोटा-सा और प्रभावोत्पादक सन्देश अुन्होंने लिखवाया।

परन्तु सरकारको दया आअी या वह बासे डर गअी, कुछ भी हो, लेकिन अितना तो सही है कि अुसने बाको अुस सभामें जानेका कष्ट नहीं दिया। सभामें जानेके बजाय अुन्हें सीधे मोटरमें बिठाकर आर्थर रोड जेलमें ही ले गये! बाके साथ डॉक्टर सुशीलाबहन भी थीं। कुछ समय अुन्हें वहां रखनेके बाद दोनोंको बापूजीके पास ले गये। बा आर्थर रोड जेलमें और वहांसे पूना गअीं, अुस समयकी अुनकी मानसिक स्थिति कैसी थी, वे बापूजीके पास पहुंची तब क्या हुआ, यह सब हाल जानने लायक है। डॉ० सुशीलाबहन बाके साथ थीं अुस वक्तका अुन्होंने 'हमारी बा'* नामक पुस्तकमें सुन्दर वर्णन किया है, यह बहुत लोग जानते होंगे। फिर भी अूपरके संदर्भमें अुसका थोड़ासा भाग यहां दे दूं, तो अनुचित नहीं होगा।

आर्थर रोड जेलमें

ता० १०-८-'४२

"रातके करीब दो बजे कुछ आवाज सुनकर मैं अुठ बैठी। देखा तो बा पाखानेसे आ रही थीं। अुन्हें रातमें पतले दस्त होने लगे थे। मेरे अुठनेसे पहले वे कअी बार पाखाने जा चुकी थीं। मैंने अुठकर बाकी मदद की और अुन्हें बिस्तरमें सुलाया। दूसरे दिन जब डॉक्टर आये, तब मैंने बीमारीकी बिना पर बाके लिअे खास खुराककी मांग की।.... जिस कमरेमें हमें रखा गया था, अुसकी हवा अितनी खराब थी कि अन्दर बैठते ही सिरमें दर्द होने लगता था। मेट्रनको भी अैसा लगा, अिसलिअे अुसने हमसे कहा कि हम अुसके कमरेमें जाकर बैठें।... लेकिन बाको जल्दी ही पाखाना जानेके लिअे अुठना पड़ा। बार-बार वहांसे जाना-आना बाकी शक्तिके बाहर था, अिसलिअे हम वापस अपने कमरेमें आ गअीं। बाने आग्रह करके मुझे बाहर भेजा। लेकिन मैं थोड़ी देर बाद

* नवजीवन प्रकाशन मंदिर, कीमत २-०-०।

ही अन्दर चली गअी। अुसी समय अेक और बहन हमारे कमरेमें लाअी गअीं। वह तीन-चार छोटे बच्चोंको छोड़कर आअी थीं। बाने खूब प्रेमसे अुनका सब हाल पूछा। . . . बाके मन पर व्यक्तिगत दुःख और चिन्ताका बोझ नहीं था। अुन्हें तो अेक दूसरी ही चिन्ता सता रही थी — क्या बापूजी हिन्दुस्तानका दुःख दूर करनेमें सफल हो सकेंगे? . . . स्टेशन ले जाकर हमें अेक वेटिंग रूममें बैठाया गया। मुझे नींद आ रही थी, पर बा भलीभांति जाग रही थीं। स्टेशन पर हमेशाकी तरह लोगोंका आना-जाना, भीड़-भड़क्का और शोरगुल जारी था। बा ध्यानपूर्वक सब कुछ देख रही थीं। अेकाअेक वे बोल अुठीं: "सुशीला, देख यह दुनिया तो अैसे चल रही है, जैसे कुछ हुआ ही न हो! बापूजीको स्वराज्य कैसे मिलेगा?" अुनकी आवाजमें अितनी करुणा भरी थी कि सुनकर मेरी आंखें डबडबा आअीं।

आगाखां महलमें प्रवेश

ता० ११-८-'४२

"सुबह करीब सात बजे गाड़ी अेक छोटेसे स्टेशन पर खड़ी हुअी। अेक पुलिस अफसर हमें लिवाने आया था। बाको सारी रात दस्त आते रहे थे, अिससे वे बिलकुल कमजोर हो गअी थीं। स्टेशन पर अुनके लिअे कुरसी तैयार रखी गअी थी, मगर अुन्होंने कुरसी पर बैठनेसे अिन्कार किया। बाका स्वभाव ही था कि जब तक शरीर चल सके अुसे चलाना; दूसरे पर अुसका बोझ न डालना। वे चलकर ही बाहर आअीं। बाहर मोटर तैयार थी। करीब आधे घंटेमें मोटर आगाखां महलके फाटक पर पहुंची। पहरेदारोंने अेक बड़ा फाटक खोला। कुछ दूर जाने पर अेक तारका दरवाजा खुला। मोटर पोर्चमें जाकर खड़ी हो गअी। बा मेरा सहारा लेकर धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ीं। बरामदेमें कुछ कैदी झाड़ू लगा रहे थे। हमने अुनसे पूछा: "बापूजीका कमरा कौनसा है?" अेकने जवाब दिया: "अखीरका।" बा मेरे सहारे धीरे-धीरे चलकर बापूजीके कमरेमें पहुंचीं। बापू अेक अूंची गद्दी पर बैठे थे। पेंसिल हाथमें लेकर वे ध्यानपूर्वक कोअी लेख सुधार रहे थे। महादेवभाअी

पास खड़े थे। कुछ चर्चा चल रही थी। हम जब अुनके बिलकुल नजदीक पहुंच गअीं, तब महादेवभाअीने हमें देखा। वे बहुत खुश हुअे। लेकिन बापूकी त्यौरियां थोड़ी चढ़ गअीं। अुन्हें लगा, कहीं बा दुर्बलताके कारण, मेरा वियोग असह्य लगनेकी वजहसे तो यहां मेरे पीछे-पीछे नहीं चली आअी? वह अपना कर्तव्य तो नहीं भूल गअी? बापूजीने तीखे स्वरमें पूछा: "तूने यहां आनेकी अिच्छा प्रगट की थी या अुन लोगोंने तुझे पकड़ा?" बा अेक क्षणके लिअे चुप रहीं। वे कुछ समझ ही न पाअीं कि बापू क्या पूछ रहे हैं। मैंने जवाब दिया: "नहीं बापूजी, गिरफ्तार होकर आअी हैं।" अब बा समझीं कि बापू क्या पूछ रहे हैं। बोलीं: "नहीं, नहीं, मैंने कोअी मांग नहीं की थी। अुन्होंने हमें पकड़ा है।"... बाको खाटमें सुलाकर मैंने अुनके लिअे दवाका नुस्खा लिखा। मगर बाके दस्त तो बापूजीके दर्शनसे और मनका बोझ हलका हो जानेसे अपने आप बन्द हो गये थे। दवाकी सिर्फ अेक ही खुराक अुन्हें दी गअी। दूसरी खुराक देनेकी जरूरत ही नहीं पड़ी। शायद अेक भी न देते तो भी काम चल जाता।"

५

महादेव काकाका अवसान

अभी अेक सप्ताह भी पूरा नहीं हुआ था कि अेक अकल्पित दारुण आघात लगा। वह अितना भयंकर था, अुससे संबन्धित लोगोंको अैसा असह्य दुःख हुआ कि आज ८ बरसके बाद भी वह ताजा ही मालूम होता है। मित्रों, धर्मकी मानी हुअी लड़कियों, पुत्र और जाने हुअे तथा अनजाने लोगोंके — जिन्होंने अुनका केवल नाम ही सुना होगा और कितने तो केवल अुनकी लेखनीको ही जानते होंगे — सबके हृदयों पर लगनेवाला यह गहरा घाव पूज्य महादेव काकाके अवसानका था। किसीको स्वप्नमें भी खयाल नहीं था कि पहाड़ जैसे महादेव काका अिस तरह अेकाअेक चले जायंगे! बजाजवाड़ीके बंगलेसे फोन आया: रेडियो पर समाचार आया है कि महादेवभाअी गुजर

गये। जिस पर कैसे विश्वास किया जाय? दुर्गा मौसीको कौन कहने जाय? बादमें दूसरा फोन आया कि कर्नल भण्डारीके साथ बातें करते करते ही अुन्हें चक्कर आ गये और वहीं सदाके लिअे सो गये। पूज्य महादेव काकाकी मृत्युका करुण चित्र सुशीलाबहनने 'हमारी बा' नामक पुस्तकमें खींचा है। अुसमें से थोड़ा-सा भाग यहां देती हूं:

शनिवार, १५-८-'४२

"हमेशाकी तरह बापू सुबह ७॥ बजे घूमने निकले। महादेवभाअी भी अुस दिन घूमने आये। आठ बजे सब लोग लौट आये। बापूजी मालिश कराने गये और महादेवभाअी अपने काममें लग गये। बा पंखा झलने नहीं आयीं। अुस दिन जेलोंके अिन्स्पेक्टर जनरल कर्नल भंडारी आनेवाले थे। कैदी लोग बरामदेमें बड़ी फुर्तीसे सफाअी कर रहे थे। बा श्रीमती सरोजिनी नायडूके कमरेमें थीं। थोड़ी देरमें कर्नल भंडारीकी मोटर आअी। बापूको और मुझे छोड़कर बाकी सब लोग श्रीमती नायडूके कमरेमें अुनसे बातें कर रहे थे। मैं बापूजीकी मालिश कर रही थी। बीच बीचमें महादेवभाअी वगैराके हंसनेकी आवाज आती रहती थी। अेकाअेक आवाज बन्द हो गअी। किसीने मुझे पुकारा। मैं समझी, कर्नल भंडारीसे मिलनेके लिअे बुलाया होगा। अितनेमें बा खुद दौड़ी आयीं और बोलीं: "सुशीला, जल्दी चल महादेवको फिट आयी है!" मैं दौड़ी गअी। महादेवभाअी महाप्रयाणकी तैयारीमें थे। नाड़ी बन्द थी। हृदयकी गति बन्द थी। सांस चल रही थी। शरीर अैंठा जा रहा था।

"मैंने बापूजीको बुलवाया। वे भी समझे कि कर्नल भंडारीसे मिलनेके लिअे ही बुलाया जा रहा है। किसीने अुनसे कहा: "महादेवकी तबीयत ठीक नहीं है।" लेकिन बापूको यह कल्पना कैसे हो कि महादेवभाअी हमेशाके लिअे जानेकी तैयारी कर रहे हैं! बापू महादेवभाअीकी खटियाके पास आकर खड़े हुअे और 'महादेव, महादेव' पुकारने लगे। बा कहने लगीं, 'महादेव, महादेव! बापूजी आये हैं। महादेव, बापूजी बुलाते हैं।' पर महादेवभाअी तो अुस दिन किसीको भी जवाब देनेवाले

नहीं थे। धीरे-धीरे अुनकी सांस भी बन्द हो गअी। बाके लिअे अिस वज्राघातको सहना सबसे कठिन था। वे बड़ी हिम्मतके साथ प्रार्थना वगैरामें शामिल हुअीं। मगर आंसुओंकी धारा तो अखंड बहती ही रही। अुनकी आंखोंके सामने सारी दुनिया घूम-सी रही थी।

"आखिर जब शवको जलानेके लिअे नीचे ले गये तो बा भी आग्रहपूर्वक नीचे आअीं। अभी अुनमें सीढ़ियां चढ़ने-अुतरनेकी ताकत नहीं आअी थी। मगर वे अपने महादेवको पहुंचाने भी न जायं, यह कैसे हो सकता था? बाकी कमजोर हालतको देखते हम यह चाहते थे कि वे दाहक्रिया न देखें तो अच्छा हो। लेकिन बा रुकनेवाली नहीं थीं। चितासे थोड़ी दूर अुनकी कुरसी रखी गअी। बा सारे समय हाथ जोड़कर यही पुकारती रहीं, "महादेव, तू जहां जाय वहां सुखी रहना।" और बीच बीचमें पूछ अुठतीं, "महादेव क्यों गया? मैं क्यों नहीं गअी? अीश्वरका यह कैसा न्याय है?" शवको जलाकर हम सब घर लौटे। शामके पांच बज चुके थे। घरमें पूरा सन्नाटा था। कौन किसे सांत्वना देता?

"बाको लगा करता कि 'ब्राह्मणकी मृत्यु तो भारी अपशकुन है।' बापू कहते: 'हां, सरकारके लिअे।' पर बाके मनसे यह शंका मिटी नहीं। कुछ दिनों बाद वे फिर कहने लगीं: 'सुशीला, यह ब्रह्महत्याका पाप तो हमारे सिर ही लगा न? बापूजीने लड़ाअी छेड़ी, महादेव जेलमें आया और यहां अुसकी मृत्यु हुअी। यह पाप तो हमारे ही मत्थे चढ़ा न?'"

आगाखां महलका वह कैसा भयानक दृश्य होगा, अिसकी कल्पना अूपरके करुण वर्णन परसे भी आना शायद कठिन है। मैं चश्मा लगाती अिसलिये महादेव काका मुझे सदा 'मिनी' कहते थे। कोअी भी बात होती तो कहते, "यह मेरी पालतू मिनी है।" किसी वक्त महादेव काका भोजन कर रहे हों, कोअी अच्छी चीज बनाअी गअी हो और मैं जा पहुंचूं, तो कहते, "पालतू मिनी तो मेरी थालीमें से ही खायगी। वह कुछ भी ढोल-फोड़ करके अूधम नहीं मचायेगी।" अिसका अर्थ यह कि दूसरी बिल्लियोंकी तरह

झूठा ऊधम न मचाया जाय अर्थात् झूठा आग्रह न कराया जाय। परन्तु कोअी पसन्दकी चीज हो तो सीधी तरह खा ली जाय। मैं कहती कि खा तो लूं, परन्तु बापूजीकी अिजाजत चाहिये न? (आश्रममें आश्रमके रसोड़ेके सिवाय जिनके घरोंमें अलग निजी रसोड़े होते, वहां आश्रमके रसोड़ेमें खानेवाले कोअी चीज नहीं खा सकते, अैसा नियम था।) अिसलिअे महादेव काका हंसकर हाथ पकड़कर यह कहते हुअे मुझे जबरदस्ती बिठा लेते, "मगर तू तो मिनी है न? तेरे लिअे अपवाद है। मैं बापूसे कह दूंगा कि कहीं भी मिनी (बिल्ली)के लिअे अैसा नियम नहीं सुना। सिर्फ आपके आश्रममें ही सुना है। अिस तरह झूठ भी नहीं बोले और सच भी नहीं। अैसा 'नरो वा कुंजरो वा' तो श्रीकृष्ण भगवानने भी सिखाया है और धर्मराज युधिष्ठिर भी तो बोले थे न।" अिस तरह मजाक करके कभी कभी मुंहमें स्वाद ही रह जाय, अितनी सी चीज तो भी खिलाये बिना जाने न देते थे। और फिर बापूसे छिपाते भी नहीं थे। बापूसे भी हंसते हंसते कह देते थे —— अैसी बात कहीं भी नहीं सुनी कि मिनी (बिल्ली)को भी सारे नियम पालने पड़ें। बापू कहते, "भेद अितना ही है कि यह दो पैरोंवाली है और वह चार पैरोंवाली होती है।" लेकिन महादेव काकाका दिमाग क्या कम था? बापूके सामने ही मुझसे कहते: "तो तुझे दो हाथों और दो पैरोंसे चलकर आना चाहिये, जिससे मैं भी सच्चा और बापू भी सच्चे।" बापू मुझसे कहते, "देख तो सही महादेव तुझे खिलानेके लिअे जानवर बना रहा है।" अिस प्रकार कअी बार मजाक चलता। महादेव काका कितने ही काममें क्यों न हों, हम बालक यदि अुनके पास कुछ बात करने जाते, तो वे कभी हमसे सीधी तरह बात न करते। या तो हमारे बाल पकड़ते या कान पकड़ते। कुछ नहीं तो मीठी चपत तो मारते ही। अैसे प्रेमल थे। आखिरी बार सेवाग्रामसे जब अुन्होंने विदा ली, तब मैं अुन्हें प्रणाम करने गअी। मुझे अपने पास बिठाकर कहा: "अच्छा मिनी अब तो क्या पता हम फिर कभी मिलेंगे या नहीं मिलेंगे।" भावी कभी कभी मनुष्यके मुंहसे सत्य बात कहलवाती है। मैंने रोते-रोते कहा, "आप जेल जायेंगे न? मैं भी जाअूंगी।" "अरे तू तो छोटीसी

लड़की है, तुझे कौन ले जायगा? मगर जेलमें मिनियां (बिल्लियां) बहुत होती हैं। अुनमें तू भी अेक बढ़ जायगी।" अुनके अंतिम शब्द सदाके लिअे अंतिम बन गये। अुन्होंने जानेसे पहले मुझसे नीचेका भजन गवाया था। अुन्हें यह भजन बहुत ही पसन्द था। मैंने कराचीमें सीखा था। मुझसे वे बार बार यह भजन गवाते थे। बापूजीको भी यह बहुत प्रिय था।

"थाके न थाके छतांये हो मानवी,
न लेजे विसामो,
ने झूझजे अेकला बांये,
हो मानवी! न लेजे विसामो!

तारे अुल्लंघवानां मारग भुलामणां,
तारे अुद्धारवानां जीवन दयामणां.
हिम्मत न हारजे तुं क्यांये,
हो मानवी! न लेजे विसामो!

जीवनने पंथ जतां ताप थाक लागशे,
वधती विटम्बणा सहतां तुं थाकशे.
सहतां संकट अे वधांये,
हो मानवी! न लेजे विसामो!

जाजे वटावी तुज आफतनो टेकरो,
आगे आगे हशे वणखेड्यां खेतरो.
खेते खेडे अे वधां छे,
हो मानवी! न लेजे विसामो!

झांखा जगतमां अेकलो प्रकाशजे,
आवे अंधार तेने अेकलो विदारजे.
छोने आ आयखुं हणाये,
हो मानवी! न लेजे विसामो!

लेजे विसामो न क्यांये, हे मानवी, देजे विसामो,
तारी हैया वरखडीने छांये, हो मानवी, देजे विसामो.*

यह गीत अुन्हें वहुत ही प्रिय था। अुन्होंने मानो अिस प्रकारके गीतोंको जीवनमें अुतार कर ही अपना जीवन सार्थक किया था। और अिस अंतिम कड़ीके तो मानो वे जीती-जागती मूर्ति ही वन गये थे:—

"लेजे विसामो न क्यांये, हे मानवी, देजे विसामो,
तारी हैया वरखडीने छांये, हो मानवी, देजे विसामो."

पच्चीस पच्चीस वर्ष तक बापूजीकी अखंड सेवा की, न रात देखी न दिन देखा, न ठंड देखी न धूप देखी, और जीवनके अंतिम क्षण तक बापूजीका काम करते-करते बापूजीमें ही अपने प्राणोंको समा-कर हृदयरूपी वृक्षकी छायामें ही अुन्होंने विश्राम लिया। कौन जाने शायद अिसीलिअे अुन्होंने भविष्यवाणीके रूपमें मुझसे यह गीत गवाया हो? अुन्हें यह गीत कंठाग्र नहीं था। और अभी अुसका स्वर भी नहीं

* हे मानव, तू थके या न थके, कभी विश्राम न लेना और अकेले हाथों लड़ते रहना। हे मानव, विश्राम न लेना। तुझे भुलावेमें डालनेवाले मार्ग तय करने हैं। और करुण जीवनोंका अुद्धार करना है। तू कहीं भी हिम्मत न हारना; हे मानव, विश्राम न लेना। जीवन-पथ पर चलते हुअे तुझे धूप और थकावट लगेगी। वढ़ती हुअी कठिनाअियों और विडम्वनाओंको सहते-सहते तू थक जायगा। हे मानव, अिन सारे संकटोंको वहादुरीसे सह लेना, लेकिन विश्राम न लेना। अपनी मुसीवतोंका पहाड़ लांघते हुअे चले जाना। अुसके आगे विन जोते खेत होंगे। लगनसे खेती करेगा तो वे सब तेरे होंगे। हे मानव, विश्राम न लेना। अिस धूमिल जगतमें अकेले अपना प्रकाश फैलाना। जो अंधेरा सामने आयें, अुसे अकेले चीरते चले जाना। भले यह जीवन नष्ट हो जाय, लेकिन हे मानव, विश्राम न लेना। कहीं भी विश्राम न लेना। हे मानव, दूसरोंको विश्राम देना। हे मानव, तू अपने हृदयरूपी वृक्षकी छायामें सवको विश्राम देना।

वैठा था। परंतु जिसे जीवनमंत्र मान लिया हो, अुसके स्वरकी क्या परवाह?

मुझसे कहा, "मुझे झटपट अेक कागज पर यह गीत अुतार दे।" मैंने अेक कागज पर लिख दिया। अुन्होंने वह कागज अपने कुरतेके आगेके जेवमें संभालकर रख लिया और सदाके लिअे सेवाग्राम आश्रम छोड़ दिया।

अैसा असह्य आघात लगने पर भी वापूजी जेलके वन्धनोंके कारण महादेव काकाके प्रिय पुत्र नारायणभाअीको और अुनकी माता (दुर्गावहन) को दो शब्द भी आश्वासनके न लिख सकें, यह कैसे सह्य हो सकता है। अुन्होंने कह दिया: "तो मुझे किसीको भी पत्र नहीं लिखना है। मेरा सच्चा कुटुम्व केवल गांधी-कुटुम्व ही नहीं है। अैसे संकुचित पारिवारिक जीवनमें जीना तो मैंने कभीका छोड़ दिया है।" और तवसे वापूके साथ रहनेवाले साथियोंने जेलसे अपने किसी भी संवंधीको पत्र नहीं लिखा।

हमारे समाजमें अैसे मजेदार पौराणिक किस्से प्रचलित हैं कि किसी भी ३२ लक्षणोंवाले मनुष्यका वलिदान दिया जाय तो अमुक काम सफल हो जाता है; खास करके देवियोंके विषयमें तो अैसा कहा ही जाता है। क्या महादेव काकाके विषयमें भी अैसा ही हुआ? भारतकी स्वतंत्रताकी लड़ाअीमें प्रसिद्ध अप्रसिद्ध कितने ही सेवकोंका वलिदान दिया गया है, परंतु जैसे हाथीके पैरमें सभी समा जाते हैं, वैसे ही अिस अेक महान आत्माके वलिदानसे ही तो अन्तमें स्वतंत्रता देवीको प्रसन्न न होना पड़ा हो? क्या अिसीलिअे १५ अगस्तको वह हमारी अितने वर्षोंकी गुलामीकी जंजीरें तोड़कर आअी? कहीं अंग्रेजोंने 'अुसी तारीखको' भारत माताको गुलामीसे मुक्त करके अपने पाप तो नहीं धोये? कुछ भी हो, वहुत विचार करने पर अैसा महसूस हुअे विना नहीं रहता कि अिसमें कोअी न कोअी अीश्वरीय संकेत जरूर होगा।

सेवाग्राममें हम सवने अुनका श्राद्ध-दिवस अुनके निवास-स्थान पर कताअी और प्रार्थना तथा गीता-पाठमें विताया, जो अुन्हें वहुत प्रिय था।

६
सेवाग्राममें धरपकड़

सेवाग्राम, २२–८–'४२

पू० महादेव काकाकी मृत्युके शोकका सप्ताह अेक वर्ष जितना लम्बा बनकर बड़ी मुश्किलसे बीता और अगस्तका तीसरा सप्ताह आ पहुंचा।

वह भी कड़ी परीक्षाका सप्ताह था। सबको असह्य दुःखमें जो थोड़ा बहुत आश्वासन मिल रहा था, वह भी शायद भगवानको अच्छा नहीं लगा होगा, अथवा अभी तक परीक्षा बाकी रह गअी होगी। क्योंकि अभी तक आश्रम, दुर्गाबहन और नारायणभाअी जिनसे आश्वासन प्राप्त कर रहे थे, अुन्हें भी सरकारने छीन लिया; अुन्हें जेलमें बिठा दिया।

२ अगस्तको पू० बापूजी, बा और महादेव काकाने बम्बअी जानेके लिअे आश्रम छोड़ा। ८ तारीखको अनिश्चित अवधिके लिअे सबने आश्रम छोड़ा, पू० महादेव काका अपने प्रिय सेवाग्रामको सदाके लिअे छोड़कर गये और दुःखमें सान्त्वना देनेवाले किशोरलाल काकाने २२ तारीखकी रातको अनिश्चित समयके लिअे सेवाग्राम छोड़ा। अिस प्रकार सारा अगस्त मास ही हम सबके लिअे अग्नि-परीक्षाका सिद्ध हुआ।

२२ अगस्तकी रातको कोअी बीस पुलिसवालोंकी हथियारबन्द सेना अचानक सेवाग्राममें आ धमकी। आश्रमके अेक भाअी श्री मुन्नालालने अफसरसे पूछा, आपको किससे काम है? अफसरने कहा, हमें श्री किशोरलाल मशरूवालाके घरकी तलाशी लेनी है; अुनका घर कहां है, हमें बतायेंगे? रातके करीब डेढ़-दो बजे होंगे। किशोरलाल काकाके घरके दरवाजे तो खुले ही थे।

अेक तो आश्रम वर्धासे पांच मील दूर बहुत शान्त जगह पर स्थित है। दूसरे, रातकी नीरव शान्ति थी। अुस शांतिमें घ–र–र–र करती हुअी पुलिसकी लारीने आकर सबकी नींद खोल दी। अिसके अलावा, आश्रममें अैसी कोअी घटना होने पर वहांका घंटा रोजसे भिन्न प्रकारकी आवाजसे बजाना होता था। यह काम मेरे सुपुर्द था। अिसलिअे लारी आनेकी खबर मिलते ही मैंने घंटा बजा दिया।

अिस घंटेका नाम खतरेकी घंटी रखा था। घंटेकी आवाज सुनकर गांवसे भी लोग दौड़कर आ पहुंचे। आसपाससे खादी विद्यालय और तालीमी संघकी संस्थाओंके भाअी-बहन भी आ पहुंचे। सभी किशोरलालभाअीके यहां अिकट्ठे हो गये।

पुलिस अफसरने पूछा, 'कोअी कुछ फसाद तो नहीं करेगा? हमारे पास साधन तो काफी हैं, परंतु हम नहीं चाहते कि अुनका अुपयोग हमें यहां करना पड़े।' आश्रमके व्यवस्थापकने कहा, 'नहीं, अैसा कोअी फसाद नहीं होगा।'

मैं तो मूढ़की तरह खड़ी खड़ी अुन यमदूत जैसे पुलिसवालोंको देखकर हक्कीबक्की रह गअी। मैंने कभी किसीको पकड़ते या अिस प्रकार पुलिस दलको भरी बंदूकोंसे लैस देखा न था। हां, हालकी घटनाअें अखबारोंमें अवश्य पढ़ती थी। परंतु वर्णन पढ़ना अेक बात है और आंखों देखना दूसरी बात है, अिसका अनुभव मुझे अिसी वक्त हुआ।

फिर भी मेरा तो अिस लड़ाअीमें भाग लेनेका निश्चय था। अिसलिअे मनका डर कोअी चेहरे पर देख न ले, अिसकी सावधानी रखनेमें मैंने जितनी मेहनत की अुतनी तो जब मैं सचमुच पकड़ी गअी तब भी नहीं की थी।

पुलिस अफसरोंने घर छानना शुरू किया और अेक-अेक कागज अुलटपुलट कर देख डाला। परंतु अुन्हें कुछ भी आपत्तिजनक साहित्य न मिल सका। अन्तमें किशोरलाल काकासे किसी क़ागज पर हस्ताक्षर करनेको कहा। अुन्होंने अिन्कार कर दिया। 'अूंघतेको बिछौना मिल गया' के अनुसार पुलिस अफसरने तुरन्त वारन्ट निकाला और अुन्हें

तैयार हो जानेको कहा। सवेरेके ३॥ बज गये थे। सबने भग्न हृदयसे प्रार्थना की। सामानमें सिर्फ अेक पूनियोंका बंडल और अेक चरखा था। अितनी अधिक कमजोर तबीयत होने पर भी किशोरलाल काकाने अेक शालके सिवाय कुछ भी ओढ़ने-बिछानेको न लिया और न कपड़ोंका दूसरा जोड़ा ही साथ लिया! गोमती काकी तो हिम्मतवाली हैं ही। अुन्होंने प्रणाम करके सबसे पहले विदा दी।

पुराने अितिहासमें हम पढ़ते हैं कि जब राजपूत लड़ने जाते थे, तब शूरवीर राजपूतनियां हंसते-हंसते कमरमें तलवार बांधकर और माथे पर तिलक लगाकर अपने पतियोंसे कहतीं: देखिये, हार-कर लौटनेके बजाय पीछे रहे हुअे लोगोंका जरा भी विचार किये बिना रणभूमि पर बहादुरीसे लड़ते लड़ते शत्रुके हाथ मर जाना। अुन वीर राजपूतनियोंका वीरतापूर्ण अुत्तराधिकार मिटता जा रहा है, अैसा कौन कह सकता है? जब गोमती काकीने अितने अधिक लोगोंके बीच सबसे पहले हंसते हुअे किशोरलाल काकाको विदाअीका प्रणाम किया, तब मुझ पर अैसा ही असर हुआ। क्योंकि यह भी तो अेक प्रकारका रणक्षेत्र ही था। अिसका स्वरूप भले ही दूसरा हो, परंतु सोचा जाय तो वस्तुस्थिति अेक ही थी। अुल्टे, यह रणक्षेत्र अधिक विकट था। क्योंकि अिस अहिंसक रणभूमिमें किसीको मारना तो क्या, मारनेका विचार तक करनेकी मनाही थी; केवल मरनेकी ही बात थी। अिसलिअे अिसमें मन पर काबू रखना बहुत कठिन है।

प्रणाम करनेमें मेरा नम्बर सबसे आखिरी था। किशोरलाल काकाके मुंह पर तो स्मितहास्य ही था। जिस जिसको हिदायतें देनी थीं, अुसे विदा लेते समय जरूरी हिदायतें देते जाते थे। अिसी प्रकार मुझे भी समझाया, "तुम्हारी अिच्छा कराची जानेकी नहीं है और जयसुखलालभाअी (मेरे पिताजी) ने तुम जैसा चाहो वैसा करनेकी मंजूरी दी है। अिसलिअे मैं तुम्हें रोकूंगा तो नहीं, परंतु अब भी विचार कर लो। अभी अिसका काफी मौका है। दिलको अच्छी तरह टटोल लो। परंतु अेक बार लड़ाअीमें कूदनेके बाद पीछे न हटना। तुम्हारी अुम्र अभी छोटी है। अिसलिअे बिना सोचे-समझे जोशमें आकर

लड़ाअीमें न कूद पड़ना। अिसमें कभी लाठी चार्ज हो जाय या गोली चल जाय, तो सब कुछ हंसते हंसते सहन करना पड़ेगा। अिन सब बातोंका पूरा विचार करना और पूरी हिम्मत रखना।" सुबहके लगभग ४ बजे किशोरलाल काका जेलमंदिरमें जानेके लिअे लारीमें बैठकर विदा हुअे।

अभी भी अगस्तकी यातनाके दिवस आश्रमके लिअे आने बाकी ही थे। अैसी मान्यता है कि किसी मनुष्यके पीछे अमुक ग्रह पड़ा हो, तो अुसका कचूमर निकाल डालता है। अिसी प्रकार हमारे आश्रमके लिअे अगस्तमें कौनसा ग्रह अनिष्ट था यह तो अीश्वर जाने, परंतु हर हफ्ते हम कोअी न कोअी नया धड़ाका सुन ही लेते थे। लेकिन मेरे लिअे तो यह (अंतिम) सप्ताह आनंदप्रद साबित हुआ। महिला-आश्रमकी बहिनोंने अेक अैसी शृंखला बना ली थी कि तारीख ३०–८–'४२ से बहनोंकी टोलियां रोज वर्धा जाकर १४४वीं धारा तोड़ें। तदनुसार आज कानून-भंग करनेकी बारी आश्रमके महिला-दलकी आअी। अिसलिअे यों ही खयाल हुआ कि अगस्तका अन्तिम सप्ताह भी शांतिसे कैसे गुजर सकता है? आश्रममें कुछ न कुछ नअी घटना तो होनी ही चाहिये।

मैं आनन्दभरी अपनी तैयारी कर रही थी। हमारे ८ बहनोंके दलमें हम ३ बहनोंकी अुम्रमें दो-दो चार-चार वर्षका अंतर था। हमारे दलमें जोहरा बहन मेरी खास मित्र थीं। हम दोनोंने तो अपना बिस्तर भी अेक ही बना लिया था। कपड़े भी दोनोंके अेकसे थे। हम खूब अुत्साहसे तैयार हो रही थीं। परंतु मैं छोटी थी और फ्रॉक पहनती थी। अिसलिअे सब हमें चिढ़ाते थे कि मनु-जोहरा जरूर अलग होंगी, क्योंकि मनु छोटी है। अुसे कोअी नहीं पकड़ेगा। अिस प्रकार चिढ़ानेवालोंमें आश्रमके अेक बहुत विनोदी भाअी बलवन्तसिंहजी और दूसरे भणसाली काका (प्रोफेसर भणसाली) थे। मैं अिससे बड़ी परेशान हुअी। अिसलिअे हम दोनोंने अेक युक्ति निकाली : पहने हुअे कपड़ों पर ही मैंने साड़ी पहन ली, जिससे मैं बड़ी और मोटी दीखने लगी।

हमारे दलमें ४ वहनें २५ वर्षके भीतरकी और ४ प्रौढ़ थीं।

हमने प्रार्थना की। चिमनलाल काकाने (आश्रमके व्यवस्थापक) 'थाके न थाके छतांये' भजन (देखिये पृष्ठ २४) गानेकी सूचना की थी। अुसका जोश भी चढ़ गया था।

आश्रममें सबको प्रणाम करनेका सौभाग्य मुझे ही प्राप्त था, क्योंकि सब मुझसे बड़े थे। अुनमें से अेक दो भाओी (लड़के) मुझसे बहुत बड़े तो नहीं थे, २–३ वर्ष ही बड़े होंगे। फिर भी मेरी हंसी अुड़ाते हुअे मुझसे कहते, "अरी मनु, हम भी तुझसे तो बड़े हैं; हमारे पांव पड़।" मैं सोचती, यदि अिस मंडलीमें कोओी मुझसे छोटा होता तो मैं भी अुससे जबरन् पांव पड़वाकर जोरसे पीठमें धप्पे लगाती। परंतु दुर्भाग्यसे अैसा कोओी भी नहीं था।

जिन जिनके मैंने पांव पड़े थे, अुन्होंने मुझे जोरसे धप्पे लगा कर मेरा मजाक अुड़ाया।

अिन लोगोंके लिअे खेल था और मेरे प्राण निकल रहे थे। अिन दो भाअियोंको प्रणाम करते समय मुझे बड़ा गुस्सा आया, परंतु जेलकी विदाअीके समय अपशकुन नहीं होना चाहिये, अिस खयालसे अिच्छा न होने पर भी मैंने अुन्हें प्रणाम किया। फिर भी आज तो यह स्पष्ट लगता है कि मुझे अुन सबके आशीर्वाद अद्‌भुत रूपमें फले। बलवन्तसिंहजी और भणसाली काकाने सबसे अन्तमें कहा 'लड़ाअीमें जानेका, जेल जानेका जोश तो तुझ पर खूब छाया हुआ है। परंतु बापूको साथ लाये बिना लौट आओी तो तेरी खैर नहीं है।' सचमुच अिन लोगोंकी वाणी फली और मैंने बापूके बिना जेलके बाहर पैर नहीं रखा। अिसमें विदाअीके समय सच्चे अन्तःकरणसे दिये हुअे आश्रमके बुजुर्गोंके आशीर्वाद ही कारणभूत हुअे।

हम सब बहिनें ठीक ४ बजे वर्धाके तिलक चौकमें पहुंची और जिस जिसके जीमें आया, अुसने भाषण दिया; छोटी बहनोंने राष्ट्रीय गीत और नारे लगाने शुरू कर दिये। अिस प्रकार आधे घंटेमें हमने अपनी मंडलीको जमानेकी शुरुआत की और कुछ भीड़ अिकट्ठी

हुअी, अितनेमें तो राक्षसी मोटर लारी घ...र...र...र करती हमारे सामने आ खड़ी हुअी। अुसमें बैठे हुअे आदमियोंको देखकर हमें अधिक जोश चढ़ा। हमने जोरशोरसे गाना शुरू किया और पुलिसको चिढ़ानेके लिअे "सरकारी नौकरी छोड़ दो" का नारा अधिकाधिक जोरसे लगाने लगीं। पुलिस भी हम पर गुस्सा हो रही थी, परंतु हमारी आवाज सुन कर भीड़ जमा न हो जाय, सिर्फ अिसीलिअे बिना कारण पेट्रोल जलाकर भी लारीकी आवाज जारी रखी। अितनेमें कोअी बैंड बाजेवाले निकले (जहां तक मुझे याद है वह बरात थी)। वे बाजेवाले बेचारे किसी अशुभ घड़ीमें निकले होंगे, क्योंकि अुन्हें 'सरकार माअी-बाप' का हुक्म हुआ कि अिन लोगोंका दल घूमे अुसके आगे आगे बैंड बजाते हुअे जायं; फिर भले ही ये लोग राग अलापती रहें, कुछ समयमें अपने आप थक जायंगी। हमारे गलेमें पानी अितना ज्यादा सूख गया कि आवाज ही बंद हो गअी। लेकिन कैसी भी मुसीबत झेलकर बारी बारीसे नारे लगाकर अुन लोगोंको छकाना तो था ही।

बेचारे बाजेवालोंकी तो शामत ही आ गअी। अंतमें अुनके मालिकोंको अुन्हें छोड़कर चुपचाप अपने गन्तव्य स्थान पर जाना पड़ा। बाजे हमारे लिअे रहे।

हमारे दलमें आश्रम-व्यवस्थापककी पत्नी श्रीमती शकरी बहन भी थीं। अुन्हें मैं मौसीजी कहती थी। शकरी मौसी प्रौढ़ होते हुअे भी बहुत विनोदी हैं। अिस कुटुम्बने कितने ही वर्षों तक आश्रममें बापूजीकी अेकनिष्ठ सेवा की है; वे अत्यन्त मूक सेवक हैं। वे आज भी अुसी श्रद्धा और निष्ठासे आश्रमका संचालन कर रहे हैं। बापूजी मुझे अनेक बार अिस परिवारके बारेमें कहा करते थे: 'मैं शकरी बहनको बासे कम त्यागी नहीं मानता। ये दोनों पति-पत्नी बस मेरी आज्ञा मिलते ही बिना किसी बहसके अुसे शिरोधार्य कर लेते हैं।" अैसे अैसे परिवारोंकी अद्भुत विरासत बापूजी हमारे लिअे छोड़ गये हैं, यह हमारे लिअे कोअी कम सौभाग्यकी बात है?

अिन बहनको हिन्दी नहीं आती, अिसलिअे कहने लगीं: "आ[1] तो मामा[2]नी जान[3] है। अेटलेज[4] अुसके लिअे वाजां दीधां[5] है। मामाके घर रोटलाय[6] नहीं है ने ओटलाय[7] नहीं है।"

अिससे हंसते हंसते हमारा पेट दुखने लगा। हमने मजाकमें पुलिसका नाम 'मामाका घर' रख लिया था।

हमें न तो पुलिस पकड़ती थी और न हमारा कहना किसीको सुनने देती थी। दो घंटे तक हमारा जोश बना रहा। अन्तमें खूब थक गअीं और विश्राम लेनेके लिअे अेक चबूतरे पर बैठीं। बाजे, मोटर वगैरा सब बन्द हो गये। परंतु ज्यों ही हमने बोलना शुरू किया त्यों ही अुन्होंने भी शुरू कर दिया।

अन्तमें दिन छिपनेके बाद सात-साढ़े सात बजे पुलिस अफसरने हुक्म दिया कि मोटरमें बैठ जाओ। अुनके मुंहसे शब्द निकला ही था कि मैं सबसे पहले चढ़ गअी। चलो, आज रातको खूब सोयेंगी, हमारे मुंहसे ये अुद्गार निकले। आवाज बिलकुल बैठ गअी थी। १५-२० मिनटमें हम जेलके दरवाजे पर पहुंचीं।

दरवाजे पर प्रारंभिक विधि पूरी हुअी। सबके नाम-पते लिखे गये। ८ बजे हमें अेक कोठरीमें बन्द किया गया। अुसमें ३०-४० स्त्रियोंकी मंडली पहलेसे ही थी। वे हमें देखकर खुश हुअीं। अुन्हें लगा हम कोअी ताजी खबर सुना सकेंगी।

तेज भूख लगी थी। मगर सूचना मिली कि अिस समय जेलमें खाना नहीं मिल सकता! भूखका गुस्सा जेलर पर निकाला कि हम अितनी अुमसमें छोटीसी कोठरीमें ३०-४० स्त्रियां नहीं रह सकतीं। आगेका फाटक भले ही बन्द कर दीजिये। यह कहकर सब स्त्रियां कोठरीके बाहर आकर खड़ी हो गअीं।

वादविवादके बाद अन्तमें हमारी कोठरी खुली रही। फिर भी जेलके बड़े बड़े चूहोंके कारण और पुरुषोंकी बैरकमें कुछ ज्यादा

---

१. आ = यह। २. मामानी = मामाकी। ३. जान = बरात। ४. अेटलेज = अिसीलिअे। ५. वाजां दीधां = बाजे दिये। ६. रोटलाय = रोटी भी। ७. ओटलाय = बैठनेका चबूतरा भी।

रातभर हमारी पलक तक नहीं लगी। जैसे-तैसे

७

जेलके अनुभव

हम वर्धाकी जेलमें दो दिन रहीं। परंतु अिन दो दिनोंमें ही अनेक अनुभव हुअे। पहले दिन रातको तो भूखी ही सो रहीं। दूसरे दिन सुबह जुवारके आटेकी राब (लपसी) आअी। हममें से जिन जिनको जेलका अनुभव था, अुन्होंने तो पी ली। परंतु हम जो नअी थीं अुन्होंने मुंहमें रखते ही थू—थू करके निकाल डाली। राब कंकरीसे भरी और कुछ अजीब गन्धवाली मालूम हुअी। अिस आशासे कि दोपहरको कुछ खाने लायक पदार्थ मिलेगा, सवेरे हमने कुछ भी नहीं खाया। अिस पर कुछ बड़ी बहनें नाराज होकर कहने लगीं, जेलमें आकर अैसे नखरे करनेसे कैसे काम चलेगा?

नहाने-धोनेके लिअे पानी भी नहीं था, अिसलिअे हमने नहाना ही छोड़ दिया।

ज्यों-त्यों करके ११ बजाये, तब कहीं खाना आया — निरा लहसन पड़ा हुआ अुड़दकी दालका पानी और कंकरीवाली जुवारकी मोटी मोटी रोटियां। दालके दाने तो अन्दर गिनतीके ही थे। अिस-लिअे मैंने कुछ नहीं खाया और भूखी ही दोपहरको सो गअी। दूसरी बड़ी बहनें बहुत नाराज हुअीं कि अैसा करोगी तो जरूर बीमार पड़ोगी और कमजोरी आ जायगी। पेटमें भूख तो खूब लगी हुअी थी, परंतु शामकी आशामें दोपहरका वक्त जैसे तैसे बिताया।

परंतु बिना खाये कब तक रहा जा सकता था? शामको ६ जते ही खानेकी बाल्टियां आअीं। मोटी रोटियां और दाल थी। परंतु खी होनेके कारण वह रोटी-दाल अितनी अच्छी लगी कि मैंने कहा,

देख लिया? मैंने सवेरे नहीं खाया, अिसका जेलरको पता चल गया। अिसीलिअे अिस वक्त अच्छा खाना लाये। असलमें यह बात नहीं थी। खाना सुबह जैसा ही था, परंतु पेटमें अग्नि थी अिसलिअे रोटियां खूब मीठी लगीं; न कंकरी मालूम हुअी और न लहसनकी गंध। वे रोटियां और दाल अितनी स्वादिष्ट लगीं कि अभी तक मैंने अैसा खाना कभी न खाया था।

तीसरे दिन जन्माष्टमी थी। अिसलिअे जेलर पूछने आये कि हममें से कौन कौन अुपवास करेंगी? लगभग सभी स्त्रियां अुपवास करनेको तैयार हो गअीं। अुनमें मुस्लिम बहनें भी थीं। यह लोभ भी था कि फलाहारमें कोअी अच्छी चीज खानेको मिलेगी। सिकी हुअी मूंगफली और उबला हुआ रताल् फलाहारमें मिला। परंतु हमें अैसा लगा मानो आज सबसे बढ़िया चीज खानेको मिली हो। हमने जी भरकर खाया। जब खा चुकीं तो हमें तैयार होनेको कहा गया और नागपुर सेंट्रल जेलमें ले जानेका हुक्म दिया गया।

वर्धासे नागपुर बसमें गअीं। शाम हो गअी थी। लगभग ८ बजे हम नागपुर जेलमें पहुंचीं। जेल बहुत बड़ी थी। वहां सुविधा भी खूब थी। परंतु मजेकी बात यह हुअी कि ज्यों ही हम अन्दर पहुंचीं, त्यों ही गरमागरम दाल, भात, साग और रोटी हमारे लिअे आअी। दिन भरका जन्माष्टमीका व्रत था, फिर भी हम सबने दाल-भात खानेके लिअे व्रत तोड़ दिया। हम चार दिनकी भूखी थीं, अिसलिअे अिस भोजनसे हमें बड़ा संतोष हुआ और खानेके बाद ही व्रत तोड़नेका पश्चात्ताप किया। आरामसे सुबह ८ बजे तक सोती रहीं। नागपुर जेलमें हमें कोअी तकलीफ नहीं थी। मैट्रन भी बहुत भली थीं। जेलके सभी अफसर अच्छे थे।

'ब' वर्ग मिला था परंतु महीनेमें ४ पत्र लिखनेकी छूट थी। जेलका कोअी काम नहीं करना पड़ता था। हमने अपनी अपनी अिच्छानुसार समयकी व्यवस्था कर ली थी। कातनेका काम धूमधामसे चलता था।

दिन भरमें हमारी डाक या कोअी नये समाचार शामको ४ बजे जब हमारी मैट्रन आतीं तभी मिलते थे। जेलमें अेक सुन्दर पीपलका पेड़ था। मैट्रन अुसके नीचे बैठतीं। ज्यों ही फाटक खुलता हम दौड़-कर आतुरतासे डाककी पूछताछ करतीं। किसी भी बहनकी डाक क्यों न आवे, हम सब बड़ी जिज्ञासासे अुसे सुनतीं। वहां हम करीब करीब १५० स्त्रियां थीं।

हमें जेलमें अनेक अच्छे-बुरे अनुभव हुअे। पू० बापूजी और भणसाली भाअीके अुपवासके दिनोंमें हमारी स्थिति बड़ी विषम रही। बाहरकी कोअी खबर न मिलती थी। अेक अखबार आता था, परंतु अुसमें कोअी खास समाचार न मिलते थे। सेवाग्रामसे हमारी जो डाक आती, अुसमें अगर कोअी समाचार देता तो अुस पर अधिकारी डामर पोत देते थे। कभी कभी तो अैसे पत्र आते कि लिफाफेके पतेके ही अक्षर सिर्फ पढ़नेको मिलते, बाकीके अक्षरों पर डामर पुता होता।

१९४३ के मार्च मासकी १९ तारीखकी शामको अेकाअेक जेलर आये। हमने अपनी मैट्रनको कातना सिखा दिया था। वे कात रही थीं। बेचारी घबराहटमें पड़ गअीं कि अिस तरह अचानक 'साहब' के आनेका क्या कारण होगा?

मेरी आंखें बहुत बिगड़ रही थीं और बुखार आता था। वे सीधे मेरे पास आये। पहले जांच कराअी कि मनु गांधी कौन है? क्योंकि मेरी भाभी — यद्यपि अुनका नाम मनोज्ञा बहन है, परंतु सब अुन्हें मनुबहन भी कहते थे — का बच्चा बीमार था, अिसलिअे हमने समझा कि शायद अुन्हें पैरोल पर छोड़ रहे होंगे। परंतु जेलरने जांच करके बम्बअी सरकारसे फिर पुछवाया कि दो मनुमें से कौनसी मनु? अुसी रातको फिर बम्बअी सरकारका नागपुरके जेल सुपरिन्टेन्डेन्टके नाम तार आया: १४ वर्षकी लड़की मनु। अुसी रातको जेलरने दुबारा आकर मुझे तैयार हो जानेको कहा। मेरी बीमारीके कारण मुझे छोड़ रहे होंगे, यह समझकर कितनी ही बहनोंने बाहरके अपने आप्तजनोंके लिअे मुझे संदेश कहे। कुछने अिकट्ठा हुआ सूत बुनवानेके लिअे दिया, तो कुछने बच्चोंके लिअे भेंटकी चीजें दीं।

मैंने दो खासे विस्तर और अेक पेटी तैयार कर ली। अितनेमें हमारी मैट्रन आओीं और कहने लगीं, "कल जाना है, आज नहीं। और किसीकी कोअी भेंट नहीं ले जानी है। तुम्हारा तो तबादला कर रहे हैं।" तबादलेका नाम सुनते ही मैं चौंक पड़ी। मेरे साथ जो वड़ी स्त्रियां थीं वे भी सब चौंकी कि अिस बेचारीका ही तबादला क्यों कर रहे हैं?

हमारे साथ रैहाना तैयबजी भी थीं। अुन्होंन जरा गुस्सेसे कहा: "अकेली लड़कीका तबादला करेंगे तो हम अिसका विरोध करेंगी। अिसलिअे साहबको बुलाओ और जांच कराओ।" अुन्होंने जेल सुपरिन्टेन्डेन्टको बुलाया। अुन्हें देखते ही रैहाना बहनने गुस्सेसे कहा, "आप हमें बताअिये कि मनुका तबादला कहां कर रहे हैं। यह लड़की बापूकी सगे रिश्तेकी बेटी है, अिसलिअे हम सबकी बेटी है। अिसे हम यों नहीं जाने देंगी।" रैहाना बहनने अेक ही सांसमें सारी वेदना अुड़ेल दी। सुपरिन्टेन्डेन्ट भी मुसलमान थे। वे ठंडे दिमागसे सुनते रहे और अन्तमें बोले, "कहिये, अभी और कुछ कहना है? (यों कहकर रैहाना बहनको और चिड़ाने लगे।) अिस लड़कीके पुण्यकी कोअी हद नहीं। आप सब १५०–२०० बहनें यहां हैं, अुनमें अिसीका भाग्य चमक अुठा है। मैं तो अपना और अपनी अिस जेलका अहो-भाग्य समझता हूं कि अिसमें से अेक छोटीसी लड़की संसारके महापुरुषके पास अुनकी सेवाके लिअे जा रही है। यह कोअी अैसी वैसी बात है? कस्तूरबाको दिलका दौरा हुआ है; अुन्होंने मनुकी मांग की है। मेरे खयालसे आप सबकी अपेक्षा अिसीका जेल आना सफल हुआ है। यह कल आगाखां महलके लिअे रवाना होगी।" मेरी ओर देखकर कहने लगे, "बोलो, अब तो जाना है न?"

सब बहनें सुन्न रह गअीं। जब सुपरिन्टेन्डेंट साहब बोल रहे थे, तब अैसी शांति थी कि सुअीके गिरनेकी आवाज भी सुनाअी दे जाय।

मैं तो आनन्दसे पागल हो गअी। सुपरिन्टेन्डेंट साहब बोले, 'तुम तो मेरी बेटी हो। मेरी तरफसे महात्माजी और माता कस्तूरबाको प्रणाम कहकर तबियतके हाल जरूर पूछना। मैं

महात्माजीको पैगम्बर साहबकी तरह ही अवतारी पुरुष मानता हूं।' यों कहकर गद्‌गद हो गये।

सुपरिन्टेन्डेन्ट मुसलमान थे, अुस पर अेक अफसर थे और हम कैदी थीं। वे चाहते तो अुपरोक्त बात हमें न कहते। परन्तु बड़े अफसर होकर भी वे बहुत नम्र थे।

८

नागपुरसे पूना

१९ मार्च १९४३ की शामको मुझे आगाखां महलमें ले जानेके शुभ समाचार मिले। मेरे वहांसे जानेके अुपलक्ष्यमें 'अपराधी स्त्रियों' और हमारे साथकी बहनोंने मिलकर २० तारीखको मनोरंजनका कार्यक्रम रखा। वह कार्यक्रम आनन्द देनेवाला था, फिर भी चूंकि हम सहेलियां जुदा होनेवाली थीं, अिसलिअे हमारी आंखोंसे आंसुओंकी धार लग गअी थी।

दोपहरको दो बजेके करीब सात महीने तक चार-दीवारीमें रहनेके बाद जेलका बड़ा फाटक खुला। मेरे सामानमें अेक छोटासा बैग और अेक बिस्तर ही था। सब बहनें दरवाजे तक पहुंचाने आअीं। परन्तु यह तो मेट्रन और जेलरकी मेहरबानी ही थी। वर्ना वहां तक अुन्हें कौन आने देता?

हमारी बैरकसे थोड़ी ही दूर चलने पर सामने पुरुषोंकी बैरक आती थी। अुसमें काकासाहब, कृष्णदासभाअी गांधी और दूसरे हमारे आश्रमके लगभग कुटुम्बी-जन ही थे। परन्तु अुनसे मिलने तो कौन देता? पर मुझे बादमें रैहाना बहनने बताया कि सभी लोग अिस खबरसे बहुत खुश हुअे थे।

मुझे आफिसमें ले जाया गया। वहां मेरे साथ जानेवाले दो जवान पुलिस तैयार खड़े थे। अुन्हें जेलर मेरे सारे कागजात सौंप रहे थे।

अितनेमें सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब आ गये। मुझे देखकर फिर मुस्कराये और समझाया कि संभलकर जाना, तुम्हें रास्तेमें किसी चीजकी जरूरत हो तो तुम्हारे साथ जो सिपाही हैं अुनसे कह देना। और तुरन्त सिपाहियोंकी तरफ देखा और अुन्हें बाहर भेजकर मेरे सामने ही जेलरको डांटा। अिस लड़कीके साथ असे जवान छोकरोंको भेजा जाता है? अेक स्त्री-कैदीकी कितनी जिम्मेदारी होती है, अिसका आपको जेलरके नाते बिलकुल भान नहीं है। जाअिये, दशरथ और गोविन्दको तैयार कीजिये। (दशरथ और गोविन्द दोनों अधेड़ अुम्रके ४०से अूपरके होंगे।) असा कहकर अुन दो नौजवानोंको मना कर दिया। अुन्हींके बिस्तर अिन दो वृद्ध सिपाहियोंको दिलवा दिये, क्योंकि गाड़ी ५ बजे रवाना होती थी और ३-४५ यहीं बज गये थे। अगर सिपाही सामान लेने घर जाते तो देर हो जाती। बेचारा दशरथ कहने लगा: "साहब, मैं जरा घर कह आअूं? घर पर सब मेरी चिन्ता करेंगे।" साहबने दोनोंको घर ले जानेके लिअे अपनी मोटर दी और फौरन लौटनेको कहा। सुपरिन्टेन्डेन्ट बड़े दयालु अफसर थे। वे दशरथसे कह सकते थे, "तुझे नौकरी करनी हो तो कर, घर नहीं जा सकता।" परन्तु अुनमें कितनी दया भरी थी यह मैं देखती ही रही। सिपाही दसेक मिनिटमें वापस लौटे। मेरे लिअे स्टेशन-वैगन जैसी गाड़ी आअी। अुसमें सामान रखवाया। मैट्रन और सुपरिन्टेन्डेन्टको मैंने प्रणाम किया। मैट्रन तो रो पड़ीं और सुपरिन्टेन्डेन्ट भी मेरी पीठ थप-थपाकर गद्‌गद हो गये और कहने लगे: "बेटी! मेरी नौकरीको लगभग १८ वर्ष पूरे हो रहे हैं। अिस बीच कितने ही कैदी आये-गये। बहुतोंकी फांसी भी देखनी पड़ी है। अनेक जेलोंमें काम करना पड़ा है। लेकिन मेरे जीवनमें यह अेक प्रसंग मेरे वारिसोंके लिअे बहुत महत्त्वका आया है कि मुझे अपने ही हाथों कैदियोंकी कोठरीमें से महात्मा गांधीके पास अेक बालिकाको भेजनेका सौभाग्य मिला। अिसे मैं कोअी असी वैसी बात नहीं मानता। मुझे विश्वास है कि ये महापुरुष ही हम लोगोंको अिस गुलामीसे मुक्त करनेवाले हैं। खुदासे मेरी यही प्रार्थना है कि अुनकी यह लड़ाअी आखिरी लड़ाअी बन जाय। मैंने अिन बरसोंमें

बहुतसे कैदियों पर अत्याचार किया है, परन्तु मुझे अैसा लगता है कि तुझे कस्तूरबा जैसी देवीकी सेवा करने भेजते समय मेरे सभी पाप अवश्य जल जायंगे। बेटी! मुझे भूलना मत। मैं तुझसे जरूर मिलूंगा। खुदा तेरा भला करे।" अुन्होंने ये वचन अेक सांसमें पांच मिनिट तक गाड़ीका दरवाजा पकड़कर मुझे कहे। वे आज भी मानो मेरे कानोंमें गूंज रहे हैं। (अुनका लगभग प्रत्येक शब्द मैंने अपनी नोटबुकमें नागपुर स्टेशन पर ही लिख लिया। अुस वक्त लिख लेनेका कारण तो यही था कि मैं बापूजीके पास पहुंचते ही यह बताना चाहती थी कि अेक मुस्लिम अफसर कैसे थे।)

ये ही सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब मुझे १९४६ में दिल्लीमें मिले। अब बूढ़े हो जानेके कारण मैं अुन्हें अेकदम पहचान न सकी। अिसलिअे अुनसे मिली तब अेक अनजान मनुष्यके नाते मैंने दूरसे अुन्हें नमस्ते किया। अुन्होंने मुझे ताना मारा: "बेटी! तू भले ही मुझे दूरसे नमस्ते कर, क्योंकि तू अब बड़ी हो गअी है। पर मेरी तो तू बेटी ही है। नागपुर जेलको कभी याद करती है? हमें अपनी पुरानी स्थितिको कभी न भूलना चाहिये। अगर हम अुस स्थितिको भूल जायं तो हमारी कोअी कीमत न रहे। चाहे जितना वैभव हो, चाहे जितना बड़ा ओहदा हो, फिर भी हम यदि विवेक छोड़ दें तो हम गिर जायंगे। अिसलिअे अेक पुत्रीके नाते मैं तुझे यह शिक्षा देता हूं। भले तू बड़ी बन गअी है। बापूके साथ तेरे फोटो देखकर मेरा मन नाचने लगता है। अभी तो तू बालिका ही है। पर बापूके कारण तेरा बहुत लोग सम्मान करेंगे। परन्तु तू अपनी नम्रताको कभी न छोड़ना।"

मुझे अेकदम अुनकी याद आ गअी और मैंने अुन्हें पहचान न सकनेके लिअे माफी मांगी।

अिसके अलावा, जेलमें मैंने अुन्हें अंग्रेजी पोशाकमें देखा था। लेकिन जब वे मिलने आये तब तो पाजामा और कुरता पहनकर आये थे। मैंने अुन्हें प्रणाम किया और फौरन बापूजीके पास ले गअी। बापूजी अुनसे मिलकर बहुत खुश हुअे। अुन्होंने कहा: "मेरी जेलकी बेटी है। अिससे

आपके दर्शन भी हुअे।" अुस दिन प्रार्थनामें कुरानशरीफकी आयत भी अुन्होंने पढ़ी।

जाते जाते अूपरके कड़वे शब्द कहनेके लिअे अुन्होंने मुझसे माफी मांगी। मैंने कहा: "आपको तो मुझे मारनेका भी अधिकार है। अगर आप माफी मांगेंगे, तो मैं पापकी भागी बनूंगी। पिता भी कहीं पुत्रीसे माफी मांगता है?" अुन्होंने कहा: "मैं अिसलिअे माफी नहीं मांगता; लेकिन तू मुझे पहचान क्यों न सकी यह पूछे बिना मैंने तुझे कड़वे शब्द कहे, अिसके लिअे माफी मांगता हूं।" मैंने कहा: "अिसमें तो आपने मुझे सावधान ही किया है। आप भी मेरे लिअे अीश्वरसे प्रार्थना कीजिये कि मुझमें हमेशा नम्रता बनी रहे। आप जैसे बुजुर्गोंसे अैसे ही आशीर्वाद मांगती हूं।"

मैं नागपुर स्टेशन पर पहुंची। लेकिन गाड़ी आध घंटा लेट थी। स्टेशन पर कुछ लोगोंको शायद पहलेसे ही किसी तरह खबर लग गअी थी। अिससे अेक छोटीसी टोली मेरे आसपास जमा हो गअी। सब पूछने लगे कि तुम्हारी बदली कहां हुअी है? मुझे अितना तो मालूम ही था कि जेलमें जाने पर जेलके नियम तोड़ना बापूजीको अच्छा नहीं लगता। और कभी बापूजी मुझे पूछ बैठें या मैं ही कह दूं, तो अुन्हें बुरा लगेगा। अिसलिअे मैंने सबको यही जवाब दिया कि मेरे साथ आने वाले वृद्ध सिपाहियोंसे पूछो। मैं अिसका जवाब नहीं दे सकती। मैं कैदी हूं। मेरे अिस जवाबसे कुछ लोग मेरा ही मजाक अुड़ाने लगे। कुछ युवकोंने कहा, यदि कह दोगी तो हमारे बजाय तुम्हें फायदा होगा; हम अपने सगे-सम्बन्धियों और जान-पहचानवालोंको तार कर देंगे तो स्टेशनों पर तुम्हें सुविधा हो जायगी। दो चार भाअियोंने कहा, अरे, अैसी मूर्ख लड़कीको कहां महात्मा गांधीके पास ले जा रहे हैं। कहनेका कितना अच्छा मौका है, तो भी नहीं कहती। यदि हममें से कोअी अिसकी जगह होता और अैसे कमजोर बूढ़े सिपाही साथ होते, तब तो हम सभा ही कर डालते।... अिस तरह आपसमें बातें करके मेरी खिल्ली अुड़ाते रहे। मुझे यह जरा भी अच्छा नहीं लगता था। लेकिन मैं चुपचाप सब सुनती रही। क्योंकि मुझे ज्यादा अुत्तर नहीं देने थे। ५॥ बजे

गाड़ी आअी। यह आधा घंटा मुझे अेक दिन जितना लम्बा लगा और गाड़ी आअी तभी अिस झंझटसे मुक्ति मिली।

मुझे दूसरे दर्जेमें ले जाया गया। लेकिन वहां भी लगभग स्टेशन जैसा ही अनुभव हुआ। दूसरे दर्जेके डिब्बेमें मुसाफिर तो थे ही। मेरे लिअे सीट रिजर्व करवा ली थी। लेकिन किसीको मालूम न हो, अिसलिअे मेरा नाम नहीं लिखा था। स्टेशन मास्टर आकर मुझे अच्छी तरहसे गाड़ीमें बैठा गये। नागपुरमें गाड़ी बीसेक मिनिट ठहरी। अिस बीच स्टेशनवाली अुस टोलीकी संख्या बढ़ी और डिब्बेके पास करीब सौ आदमी अिकट्ठे होकर "महात्मा गांधीकी जय" बोलने लगे। मुझे बहुत बुरा लग रहा था लेकिन मैं निरुपाय थी।

गाड़ी चल दी। अंदर बैठे सज्जनोंमें से अेक तो पोरबंदरके ही थे और मेरे सारे कुटुम्बको पहचानते थे। अुन्होंने भी बातें जाननेकी अिच्छा प्रगट की। दशरथकी तरफ देखकर मैंने कहा, आप अिस भाअीसे पूछिये। अुन्होंने सिपाहीको फुसलाकर पूछा। दशरथने सारी बात कह दी। मेरे नामका हुक्म तक निकालकर दिखा दिया।

अैसा होते होते कल्याण स्टेशन आया। अिस तरफके रास्तेकी मेरी यह पहली ही यात्रा थी। मुझे मालूम नहीं था कि कल्याणमें गाड़ी बदलनी होती है। वे दोनों बूढ़े तो बहुत ही भोले थे। अिसलिअे अुस गाड़ीमें हम सीधे बम्बअीके बोरीबंदर स्टेशन पर पहुंच गये। मैं खूब चिढ़ गअी। मेरे साथके वे परिचित सज्जन तो बीचमें ही अुतर गये थे। अखबारमें पढ़ा था कि कस्तूरबाको हृदयका सख्त हमला हुआ है। अिससे बहुत चिन्ता थी। अिसके सिवा दो दिनसे बिलकुल भूखी थी; गाड़ीमें कुछ खाया भी नहीं था। अैसा निश्चय किया था कि बापूजीके पास पहुंचकर ही खाअूंगी। लेकिन भूखसे भी ज्यादा चिन्ता तो अिस बातकी थी कि मोटीबासे कब मिलूंगी। बोरीबंदर पर सारी बातोंकी पूछताछ की। पूनाके लिअे दूसरी गाड़ी मुझे ४ बजे मिलनेवाली थी। तीन घंटे किस तरह बीतेंगे, यह सोचकर मैं तो कांप अुठी।

अब दूसरी तरफ पूना स्टेशन पर स्थानीय पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, कान्स्टेबल वगैरा मुझे लेने आये। जब अुन्होंने मुझे न देखा तो तार-टेली-

फोन किये। मैं स्त्रियोंके वेटिंग रूममें बैठ नहीं सकती थी, क्योंकि सिपाही मुझे छोड़ नहीं सकते थे; और स्त्री होनेकी वजहसे पुरुषोंके वेटिंग-रूममें भी नहीं बैठ सकती थी। अिसलिअे बाहर बेंच पर बैठी। बोरी-बंदरके स्टेशन मास्टरके पास पूनासे पैगाम आया था। अिसलिये वे मेरी तलाश कर रहे थे। वे मेरे पास आये और मेरा नाम-पता पूछा। फिर बोले: "बहन! तुम्हारी तो बड़ी खोज हो रही है। तुम यहां कैसे आ पहुंचीं?" मैंने सब बात कही। मुझे अपने आफिसमें बैठाकर कुछ खानेका आग्रह किया। मैंने मना किया; केवल नींबूका शरबत लिया। अखबार पढ़नेको दिया, वह पढ़ा। ये दो घंटे दो युग जैसे बीते। मैंने बातें करते समय स्टेशन मास्टरसे कहा था कि मेरी बहन बम्बअीमें ही रहती है और बुआ विलेपार्लेमें रहती हैं। अिसलिअे अुन्होंने मुझसे बहुत आग्रह किया कि अगर अुनसे तुम्हारी मिलनेकी अिच्छा हो तो मेरी मोटर अुन्हें जाकर ले आवे। लेकिन अिस लोभमें मैं नहीं पड़ सकती। पड़ूं तो बापूजीको कितना कष्ट हो? यह सोचकर मैंने अुनकी अिस शिष्टताके लिअे अुनका आभार मानकर अिन्कार कर दिया।

शामको ३॥ बजेकी गाड़ीमें मैं पूना जानेके लिअे रवाना हुअी। ६॥ बजे स्टेशन पर पहुंची। लेकिन कान्स्टेबलों और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्टके न होनेसे मुझे आगाखां महल कौन ले जाता? वहां भी आधा घंटा स्टेशनके आफिसमें बैठना पड़ा। करीब ७ बजे वे लोग आये। अुन्होंने मैं ही मनु हूं अिसकी खातरी करनेके लिअे मुझसे खूब जिरह की और बहुतसे प्रश्न पूछे। नागपुरमें मैंने जो हस्ताक्षर किये थे, अुससे मेरे अंग्रेजी, गुजराती और हिन्दी तीनों भाषाओंके हस्ताक्षर मिलाये। लेकिन मेरी यह जांच करना अुन्हें अच्छा नहीं लग रहा था। अुनकी अिच्छा भी मुझे जल्दी घर पहुंचानेकी थी, क्योंकि मैं खूब थकी हुअी थी। फिर भी कानूनका पालन करनेके लिअे यह विधि करनी पड़ती है, अैसा कहकर बीच बीचमें वे लोग 'माफ करना, माफ करना' कहते थे।

वहांसे अेक मोटर लारीमें मेरे साथ दशरथ और गोविंद नामके दो सिपाही, दो अंग्रेज सार्जन्ट और कान्स्टेबल और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट बैठे और आगाखां महलकी तरफ रवाना हुअे।

करीब १५ मिनिटमें हम आगाखां महलके सदर दरवाजे पर पहुंचे।

६

आगाखां महलमें

ता० २०–३–'४३ की शामको मैं आगाखां महलमें पहुंची। अिस महलके चारों ओर पुलिसका पहरा लगा हुआ था। जाते ही सदर दरवाजे पर दो गोरे सार्जन्ट भरी बन्दूक लिये खड़े दिखाअी दिये। अुन्होंने हमारी मोटर रोक दी। वहां हमारी पहली तलाशी हुअी। (जेलमें मनुष्यके शरीर पर कोअी निशान हो तो वह भी नाम-पते और अुम्रके साथ लिखना पड़ता है, ताकि कभी अपराधी भाग जाय तो अुस निशानसे ढूंढ़ा जा सके।) अिस प्रकार मेरे दायें पैरके तलवेके बीचका तिल दिखानेको सार्जण्टने मुझसे कहा। मैंने अुसे दिखानेमें आनाकानी की। मैंने कहा, 'यदि अितना अधिक अविश्वास हो तो आप नागपुर जेलके अफसरोंको बुलवा लीजिये। मैं यहां दरवाजे पर दो दिन पड़ी रहूंगी। परन्तु अभी तक किसीने मेरी अैसी जांच नहीं की। अिन कान्स्टेबल साहबने भी अैसी जांच नहीं की।' अुस कान्स्टेबलने कहा, "ये लोग अंग्रेज हैं। हम तो अेक ही हैं। आपको देखते ही पता लग जाता है कि आप गांधी परिवारकी हैं। फिर भी कानूनको मानकर हमने आपके हस्ताक्षर मिलाये। अब आपको भी देर होती है, आप बता दीजिये।" अितनेमें आगाखां महलके सुपरिन्टेन्डेन्ट कटेली साहब आ गये। अुन्होंने गोरे सार्जन्टको समझाया, 'अिसमें अिनका अपमान है। और देखो न, स्टेशन पर ही अिनके हस्ताक्षर मिलाये

गये हैं। दूसरी तरह भी नागपुर सेंट्रल जेलकी तरफसे जो यह रिपोर्ट है, अुसके आधार पर भी यह मनु गांधी ही हैं। और कोअी नहीं।"

अिस पर सार्जण्ट कुछ शांत हुआ और पहला दरवाजा बड़ी मुश्किलसे खींचतानके बाद पार किया। अुसके बाद आया दूसरा छोटा-सा, कांटोंकी बाड़वाला दरवाजा। वहां मेरी पेटी, बिस्तर वगैरा रखवाकर कटेली साहबने दिखानेको कहा। अुन्होंने तो अूपर अूपरसे ही देखा। मेरे भत्तेका रुपया सारा ही बच गया था। अुसका हिसाब मेरे साथ आये हुअे सिपाहियोंने दिया। मैंने सारा रुपया अुन सिपाहियोंको दे दिया। वे बड़े खुश हुअे। अुन्होंने दूरसे बापूजीके दर्शन भी कर लिये।

यह विधि पांचेक मिनटमें पूरी करके मैं बरामदेकी सीढ़ियों पर चढ़ी। अितने अधिक कमरे थे कि बा और बापूजीका पता लगानेके लिअे मैं अेक अेक कमरा पार करती ही चली गअी।

अुस दिन श्रीमती सरोजिनी नायडूके बीमार होनेके कारण डॉक्टरोंकी कुछ धूम-सी मची हुअी थी। अुस कमरेके पीछे वाले या तीसरे कमरेमें अेक लकड़ीके तख्ते पर स्वच्छ गद्दी और तकिया था, जिन पर जेलकी चादर बिछी हुअी थी। हाथमें लकड़ीका चम्मच और जेलका लोहेका कटोरा लिये बापूजी बैठे थे। साफ दिखाअी देता था कि अभी तक अुपवासकी अशक्ति दूर नहीं हुअी है। अुनके सामने ही अेक पलंग था, जिस पर बा बैठी थीं। मैंने जाते ही बापूको प्रणाम किया। बड़ी जोरका धप्पा लगाकर सदाकी आदतके अनुसार मेरा कान खींचकर बापूजीने कहा, "क्यों, कहां भाग गअी थी?" मैंने साड़ी पहन रखी थी, अिसलिअे अुन्हें पुरानी बात याद आ गअी। "अब तो मनुबहन बन गअी हो न? मगर मुझे न तो बाको सताना है, और न तुझे छोटीसी मनुड़ी बनाना है।"

बाको प्रणाम करने जाअूं, अिसके पहले बा ही बापूके पलंग तक पहुंचकर अुस पर बैठ गअी थीं। अिसलिअे अुपरोक्त बातोंके बीचमें मैंने अुनके पैर छूअे। बा बहुत कमजोर और फीकी लगती थीं। बोलीं: "क्यों बेटी, तू बहुत सूख गअी? जयसुखलाल यहां आये तभी मुझे

पता लगा कि तू नागपुरमें है। मैंने तुझसे कहा था न कि तू कराची चली जाना। परन्तु तू क्यों मानने लगी? चल, अब भूख लगी होगी। नहा ले फिर बातें करना। अभी अभी तेरे बारेमें श्रीमती नायडू पूछ रही थीं कि तू आ गअी या नहीं? सबने जल्दी खा लिया है। लेकिन तेरे लिअे अुन्होंने सब कुछ रखवाया है।"

श्रीमती नायडू वहांका भोजनालय संभालती थीं। अुन्हें नअी नअी बानगियां बनवानेका शौक था। और खिलानेका भी अुतना ही शौक था। अितनी बीमारीमें भी अुनका पलंग खानेके कमरेमें ही था। मेरे नहा-धोकर निपटने पर पू० बा मुझे खानेके कमरेमें ले गअीं। बाने मुझे कहा: "ले, यह तेरी अम्माजान; अिन्हें प्रणाम कर और फिर खानेको बैठ।"

अिस प्रकार अम्माजानसे परिचय कराकर बाने अुनके साथ अैसा पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित कर दिया कि वह सदाके लिअे बना रहा।

मैंने प्रणाम किया तो अुन्होंने अपने स्वभावके अनुसार मुझे चूम लिया। मैं थोड़ी घबराकर मूर्तिकी तरह खड़ी रही। मनमें अितना हर्ष था कि कुछ बोल ही नहीं सकी। बा और बापूके साथ तो मेरा खूनका सम्बन्ध था और अुनकी गोदमें खेली थी, अिसलिअे अुनसे मिलकर मैंने कोअी विचित्रता अनुभव नहीं की। फिर मनमें यह खयाल भी जरूर था कि सरोजिनी देवी तो महान देशनेत्री हैं, अुन्हें कभी कभी सभाओंमें दूरसे देखनेका अवसर मिल जाय तो भी अपनेको धन्य समझना चाहिये। अैसी महान देशनेत्रीके सान्निध्यमें मैं खड़ी हूं। मैंने अुन्हें प्रणाम किया। अुन्होंने मुझे चूम लिया। यह सब स्वप्न तो नहीं है? अिस विचारसे मैं शून्यमनस्क बन गअी थी। परन्तु अम्माजानने दूसरे ही क्षण कहा: "बेटी, अब तुम खा लो, पीछे मेरे पास बैठना। मेरी भी सेवा करोगी न?"

मैं मेज पर खाने बैठी, अुस वक्त प्यारेलालजी खा रहे थे। अुनसे बोलीं, "अिस लड़कीको कच्चे टमाटर, चटनी, पुडिंग वगैरा सभी देना। बहुत दुबली है, अिसे यहां मोटी बनाना है।"

खाकर में फिर अुनके पास गअी। अुन्होंने मुझे प्रेमसे अपने पास बिठलाया। में अुनके पैर दबाने लगी। अिससे मानो में अुनकी सगी लड़की होअूं, अितनी अुनके निकट पहुंच गअी। पहली बार अितने अधिक स्नेहसे मिलने पर मनमें जो घबराहट हुअी थी वह अब जाती रही। परंतु अुस समय अुनकी सेवा करनेका जो सौभाग्य मुझे मिला वही मिला। क्योंकि अुनका स्वास्थ्य अधिक खराब हो जानेके कारण अुसी रात अुन्हें छोड़ देनेका हुक्म जेलके सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब बता गये।

थोड़ी देरमें बाने कहा: "मनु, सुशीलाके साथ जाकर महादेवको फूल चढ़ा आ।" मैं कुछ समझी नहीं। अितनेमें सुशीला बहनने आवाज दी, 'चलो, महादेवभाअीकी समाधि पर फूल चढ़ा आयें।' तभी मैं बाके कहनेका अर्थ समझी।

वहांसे आकर अपने नागपुर जेलके अनुभवों और वहांकी स्त्रियोंकी मूर्खताकी थोड़ीसी बातें कीं। सब हंस रहे थे। अितनेमें सायंकालकी प्रार्थनाका समय हो गया। प्रार्थना की। प्रार्थनाके बाद बापूजी अम्माजानके पास गये। मैंने बाको तेलकी मालिश की। मालिश कराते कराते बाने सबकी खबर तो पूछी, परन्तु अुन बातोंके बीच अेकाअेक सारी बात काट कर वे बोलीं: "मैंने तुझे सेवाग्राममें बापूजीके हाथ-कते सूतकी अेक साड़ी दी थी और कहा था कि मुझे मरते समय ओढ़ा देना। वह कहां है? अब मैं ज्यादा नहीं जीअूंगी। अिस-लिअे याद रखकर कल पत्र लिखकर मंगवा लेना।"

मेरी आंखोंमें आंसू भर आये। मैं बोली, "मोटीबा, यह क्या कह रही हैं? आपकी साड़ी तो मंगा ही दूंगी। परन्तु अब सरकार बापूजीको भला कब तक जेलमें रखेगी?"

बा बोलीं: "यह सब गलत है। बापूजी कहते हैं कि सात वर्ष तक रहेंगे। लेकिन अब मैं तो दो-चार महीनेकी मेहमान हूं, अधिक नहीं।"

बा बापूका बिस्तर करके अम्माजानके पास थोड़ी देरके लिअे हो आअीं। बापूजीके और बाके पैर दबाकर हम रातको साढ़े दस बजे सोये। मेरा पलंग बाके पलंगके पास ही था, ताकि जरूरत पड़ने पर मुझे बुला

सकें। लगभग साढ़े बारह बजे होंगे। बाको जोरकी खांसी शुरू हुअी, अिसलिअे मैं अुनके पलंग पर चली गअी। "बेटी, तू मेरे साथ ही सो जा, तेरी नींद बिगड़ेगी।" मैंने कहा, "मोटीबा, आपने मुझे अपनी सेवा करनेका यह अमूल्य अवसर दिया है; आप मेरी चिन्ता न कीजिये।" थोड़ी देर पीठ और पैर दबाये। बाको थोड़ी राहत मिली। जैसे माता अपने छः-सात महीनेके बालकको प्रेमसे थपथपाकर सुलाती है, वैसे ही बाने मुझे सुलाया। बाको तो यही चिन्ता थी कि वे मेरी नींद खराब कर रही हैं। लेकिन मैं अुनके प्रेमकी गरमीमें अैसी आरामसे सोअी कि सुबहकी प्रार्थनाका समय हो जानेका मुझे पता ही न चला।

बापूजी और बाके मनमें अितनी दया भरी हुअी थी कि बेचारी रात भर जगी है अिसलिअे अिसे नहीं जगाना चाहिये; भले सोती रहे। परन्तु भजनकी आवाजसे मैं अेकदम चौंक कर जाग गअी और तुरन्त धीरेसे अुठकर प्रार्थनामें बैठ गअी। प्रार्थनाके बाद मैंने बापूजीसे पूछा कि मुझे क्यों नहीं अुठाया? बापूजीने कहा: "सुशीलाने मुझे कहा कि बाको रातमें खांसी आती रही और तुझे जागरण करना पड़ा। साथ ही अभी तक तू थकी हुअी लगती है, अिसलिअे अुसने मना कर दिया।" मैंने कहा: "मैं छः-सात महीनेके बच्चेकी तरह मोटीबाकी मीठी गरमीमें कितने आरामसे सो रही थी, अिसकी आपको क्या कल्पना हो सकती है?"

आगाखां महलकी अुस पहली आनन्दपूर्ण रात्रिसे मुझे अितना अुल्लास हुआ मानो मेरे जीवनमें सुनहले सूर्यका अुदय हुआ हो।

१०
अम्माजानकी रिहाअी

आगाखां महल, पूना,
२१–३–'४३

श्रीमती सरोजिनी नायडूकी आज रिहाअी होनेवाली थी। हम अुन्हें अम्माजान कहते थे। मेरे लिअे तो अुनके नजदीक आनेका यह पहला ही दिन था। और दो घंटेमें ही वह अंतिम बन गया। अुन्होंने अपने प्रेमपूर्ण स्वभावके झरनेमें अपनी सेवा करनेवाले सिपाहियों, कैदियों और जेलके साथियों सभीको परिप्लावित कर दिया था, अिसलिअे सभीको अुनका वियोग खलने लगा। अम्माजानको बिगड़े हुअे स्वास्थ्यके कारण जेलसे मुक्त किया गया, अिसलिये अुन्हें भी क्या आनन्द होता? अुल्टे, अुनके चेहरे पर दुःख झलक रहा था। मानो अुनके चेहरेसे यह भाव टपक रहा था कि जब आत्मा वीरतापूर्वक सब कुछ सहन करती है तो फिर शरीर क्यों बरदाश्त नहीं करता? परन्तु देशके लिअे लड़नेवाली अिस महान वीरांगनाने शरीरसे आज हार मान ली। यह कल्पना की जा सकती है कि जब तमाम साथी जेलोंमें पड़े हों तब अुन्हें स्वास्थ्यके कारण विवश होकर बाहर जाना बुरा लगा होगा। मेरे लोभका मानो पार ही नहीं था। मुझे लगा कि भारतके रत्नोंमें से अेक व्यक्तिके अितने ज्यादा नजदीक आनेका सौभाग्य जरा जल्दी प्राप्त हुआ होता, तो मुझे कितना अधिक ज्ञान मिलता?

३॥ बजे मोटर अुन्हें लेने आअी। अधिकारी आये। अम्माजानने तैयार होकर बाको नमस्कार किया। बाको वैसा ही दुःख हुआ जैसा कुटुम्बके किसी व्यक्तिके लम्बे समयके लिअे सफर पर जाते समय घरके लोगोंको होता है। बाने हाथ जोड़कर अम्माजानसे कहा, "अब हम दुबारा मिलें या न मिलें, अिसलिअे यह आखिरी राम राम कर लें।" अम्माजानने बाका आलिंगन करके कहा, "बा, आप तो अब

जल्दीसे जल्दी बाहर आने ही वाली हैं।" परन्तु यह केवल आश्वासन ही था।

मैं प्रणाम करने लगी तो मुझे अुलहना दिया — "यह सब तेरा ही कसूर है। तुझे मेरी अीर्ष्या जो हो गअी।" यों कहकर चपत लगानेको हाथ अुठानेकी शक्ति तो नहीं थी, फिर भी मीठी चपत मार दी। बाने मेरा पक्ष लिया: "यों कहो न कि यह अच्छे कदमोंवाली आअी जिससे आपको आज ही जेलसे छुट्टी मिल गअी। बाहर जाकर आप अधिक काम कर सकेंगी, अधिक शरीर-सेवा भी कर सकेंगी।"

परन्तु अम्माजानको अिस तरह जाना कहां अच्छा लगता था? अुन्होंने निराशाभरे स्वरमें कहा, "नहीं जी, बापू जेलमें हैं, सब साथी पिंजड़ेमें बन्द हैं। तब मेरे स्वास्थ्यके कारण मुझे छोड़ा गया, अिसमें मेरी क्या बहादुरी है? अिसमें तो अुलटी मेरी हेठी है।"

यह अंतिम बात कहकर अम्माजानने बापू और दूसरे सब लोगोंसे हाथ जोड़कर गीली आंखोंसे विदा मांगी। बापूजीने अुनके कान मलकर कहा, "देखना, बाहर जाकर तन्दुरुस्ती जल्दी सुधार लेना। नहीं सुधारी तो तुम्हारी खैर नहीं है।"

अम्माजानकी मोटर चली गअी और हम सब लौट आये। घरमें सब ओर सुनसान लगने लगा। थोड़ी देर सब बैठे, फिर जिस कमरेमें अम्माजान रहती थीं अुसकी पूरी सफाअी कराअी। अिसमें समय निकल गया।

अम्माजान जेलके भोजनालयकी देखरेख करती थीं, क्योंकि अुन्हें खाने और खिलानेका बहुत शौक था। अुनकी जगह अब सुशीला बहनने देखरेख रखनी शुरू की। मैं अुनकी सहायक बनी।

हमारा साधारण कार्यक्रम अिस प्रकार था: सवेरे ५॥ बजे अुठना, दातुन वगैरासे निपटकर लगभग ६ बजे तक प्रार्थना। बापूजी २ चम्मच शहद और ८ औंस गरम पानी और १ नींबूका रस मिला कर प्रार्थनाके बाद लेते थे। बादमें अभी तक २१ दिनके अुपवासकी कमजोरी होनेके कारण थोड़ी देर आराम करते थे। बा ६॥ बजे

अुठतीं। वाके लिअे दातुन वगैरा तैयार करके और तुलसीका काढ़ा बनाकर मैं अुन्हें देती और वापूके लिअे मोसंवीका रस निकालती। बादमें वापूजीके सुबहके बर्तन और पीकदान वगैरा सबको मांज डालती। अिनमें से वापूजी जेलमें खानेके लिअे जेलका लोहेका जो कटोरा रखते थे अुसे तो अैसा मांजना पड़ता था कि मुंह दिखाअी दे। वापू कहते कि दक्षिण अफ्रीकामें जेलका कटोरा वे अितना बढ़िया मांजते थे कि जेलर और जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट खुश हो जाते थे। और अफ्रीकाकी जेलमें तो नींवूके छिलके या अैसी कोअी चीज देखनेको भी नहीं मिलती थी। रेत और हाथकी ताकतसे ही मांजना पड़ता था। यहां मुझे अितनी दिक्कत नहीं थी, अिसलिअे किसी दिन कम अुजला निकलता तो बापू मुझे क्षमा नहीं करते थे। फिर, आगाखां महलमें काम करनेके लिअे २५ कैदी यरवड़ा जेलसे रोज सुबह ८ बजे लाये जाते और शामको ६ बजे वापस ले जाये जाते थे। परंतु अपना काम आप ही करनेका हमारा नियम था, अिसलिअे कैदियोंका विशेष अुपयोग नहीं किया जाता था। वापू कहते, "यह कटोरा अैसा अुजला होना चाहिये कि अिसमें मुंह देखकर मैं हजामत बना सकूं।"

यह सारा कामकाज करते करते सहज ही ८ बज जाते। अुसके बाद हम लोग ८ से ८॥ तक वापूजीके साथ सैरको जाते, महादेव काकाकी समाधि पर फूल चढ़ाते और वहां नित्य गीताके १२ वें अध्यायका पाठ करते।

९ से १ : सैरसे आकर मोटीवाके सिरमें कंघी करना, अुनको मालिश करके स्नान कराना, अुनका तथा वापूजीका भोजन तैयार करना, कपड़े धोना, खानेके बर्तन धोना और भोजन करना। हमारा, बापूजीका और वाका भोजन अलग अलग ढंगसे पकता था।

वापूजीके लिअे अुबला हुआ शाक, बकरीका दूध, बकरीके दूधसे रोज मक्खन निकालना और कच्चे शाकको धो और सुधारकर रखना होता था। बापू १०॥ बजे भोजन करते और वा ११ बजे। वाकी अिच्छा होती तो अुनके लिअे थोड़ासा शाक घीमें भी छौंक देती थी। कभी कभी वे पूरीके बराबर रोटी खातीं और वह भी केवल अेक-दो ही।

गायका दूध, दूधमें कभी कभी अंजीर, द्राक्ष या जरदालू अुबालकर रखती। और हमारे लिअे साधारण भोजन। परंतु यह सब काम सुशीलाबहन, प्यारेलालजी और मैं अेक-दूसरेकी मददसे कर लेते। मीराबहन अपना भोजन — रोटी और साग खुद ही बना लेतीं।

जब मैं बाको मालिश वगैरा करती तब सुशीलाबहन और डॉ० गिल्डर बापूजीको मालिश करने और अुनका रक्तचाप देखनेका काम करते। अिस प्रकार बाका काम मुख्यतः मुझ पर और बापूका काम सुशीलाबहन पर रहता था।

१ से २ : मैं आरामके समय बापूजी और बाके पैरोंमें घी मलती थी। अुस बीच सुशीलाबहन बापूजीके साथ संस्कृत रामायणका अनुवाद करतीं और अपना संस्कृतका ज्ञान ताजा करतीं। अिस १ घंटेके बीच सबको अनिवार्य रूपसे सोना पड़ता था। कभी मैं या सुशीलाबहन न सोतीं तो बापू दोनों पर नाराज भी हो जाते और कहते : "अभी हाल ही में अैसी खोज हुअी है कि बालक, युवा और वृद्ध यदि नित्य दोपहरको आधे घंटेके लिअे सो जायं, तो दुगना काम कर सकते हैं। और मेरा अनुभव भी यही कहता है।"

२ से ३ : मुझे सुशीलाबहन अंग्रेजी पढ़ातीं। बा व बापूजी फिर गरम पानी और शहद लेते, अखबार पढ़ते और पढ़ने योग्य अुपयोगी समाचारों पर नजर डाल लेते।

३ से ४ : मैं बाके पास अखबार पढ़ती, डाक लिखती, डाक आअी हो तो अुसे पढ़ती वगैरा।

४ से ४॥ : बापूजी मुझे गीता, भूमिति और गुजराती पढ़ाते। अिसमें अेक दिन गीता, अेक दिन भूमिति और अेक दिन गुजराती, अिस तरह बारी बारीसे चलता था।

४॥ से ५ : फिर बाको भागवत या रामायण या अुनकी अिच्छाके अनुसार और कुछ पढ़कर सुनाती।

५॥ से ६॥ : बापूजीका व हमारा भोजन। बा तो शामको सिर्फ तुलसीका काढ़ा लेतीं, और अुसमें अेक वैद्यका दिया हुआ कोअी और मसाला डलवातीं।

६॥ से ७॥ : शामका छोटामोटा काम। कपड़ोंकी तह करना या आगे पीछेका कामकाज। ७॥ होते ही बापूजी घंटी बजाते, और हमें अुस समय चाहे जितना काम हो अुसे छोड़कर लाजमी तौर पर खेलने जाना पड़ता। बापूजी कहते, मेरे साथ घूमनेसे तुम्हें पूरी कसरत नहीं मिलती। अिसलिअे दूसरी घंटी होने तक हम बैडमिंटन, पिंगपोंग वगैरा खेल खेलते। दूसरी घंटी ८ या ८। बजे होती।

८ से ११ : बापूजीके साथ घूमना। वापस आकर प्रार्थना करना, बिस्तर लगाना, बापूजीके सिरमें तेल मलना, बा और बापू दोनोंके पैर दबाना और फिर अगले दिनके लिअे कुछ पढ़ना हो तो पढ़कर डॉ० गिल्डरसे आध घंटा शरीर-विज्ञान पढ़कर सो जाती। अिस प्रकार मेरा सामान्य कार्यक्रम और पूज्य बा, बापूजी तथा साथके बुजुर्गोंकी छत्रछायामें नियमित रूपसे मेरे जीवनका नवनिर्माण शुरू हुआ। बापूजी मुझे हमेशा समयका ध्यान रखनेके लिअे बार-बार कहा करते और दिनभरकी बातें डायरीमें नोट कर लेनेके लिअे कहते थे। रोज रातको मैं क्रमपूर्वक लिखी डायरी बापूजीके सामने रखती। वे दूसरे दिन अुस डायरीमें सुधार करके 'बापू' हस्ताक्षर करके मुझे दे देते, जिसने आज मेरे लिअे अेक प्रतीकका रूप ले लिया है। वहां मुझे शिक्षा और दीक्षा दोनों मिलीं। फिर मैं सबसे छोटी थी, यह अेक अलभ्य लाभ था। अिसलिअे बा, बापूजी, डॉ० गिल्डर, मीराबहन प्यारेलालजी और सुशीलाबहन सबके साथ और सबकी देखरेखमें रहनेका मौका मिलनेसे अनेक प्रकारके और नये नये — बहुत बार कड़ी परीक्षा करनेवाले — सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक और आध्यात्मिक पाठ सीखनेको मिलते।

११

जेलमें पढ़ाअी

आगाखां महल, पूना,
१०-४-'४३

जैसा पहले लिखा जा चुका है, पूज्य बापूजी और दूसरे बड़े साथी मेरी पढ़ाअी पर खूब ध्यान देते थे। अिसलिअे आजसे बापूजीने अपने अध्ययनके लिअे अुन पुस्तकोंको पढ़ना शुरू किया, जो कराचीकी मेरी पाठशालामें पाठ्य-पुस्तकोंके रूपमें थीं। अिस प्रकार भूमिति और अितिहास-भूगोल तथा गुजराती व्याकरणकी पुस्तकें वे पढ़ने लगे। अपना पढ़ना छोड़कर मेरी पाठ्य-पुस्तकोंके आधार पर मुझे कैसे पढ़ायें, अिस विचारसे बहुत ही ध्यानके साथ, जहां भी नोट करना अुचित था वहां पेंसिलसे नोट लगा लिये और दोपहरको मुझे भूमिति और त्रैराशिकके दो तीन सवाल लिखवाये। वे सवाल दूसरे दिन करके लाने थे। मेरे पास भूमितिकी नोटबुक नहीं थी, अिसलिअे मैंने हमारे सुपरिन्टेन्डेन्ट साहबसे मंगवा ली। वह डेढ़ रुपयेकी आअी। वह नोटबुक लेकर मैं सीधी बापूजीके पास गअी और अुन्हें बताअी। अुन्होंने मुझे पहला ही सवाल पूछा, "कितनेमें आअी?"

मैंने कहा, "मुझे मालूम नहीं।"

बापू बोले, "जा, पूछकर मुझे खबर दे कि कितनेमें मिली।"

कटेली साहब तो बापूके स्वभावको जानते थे, अिसलिअे मुझसे बोले, "बापूजीको कुछ भी कहनेकी जरूरत नहीं है।"

मैंने कहा, "अेक तो मैंने अुनसे पूछे बिना मंगा ली और अब न बताअूं और अुसमें 'लेसन' लिख डालूं तो बापू मुझे खूब डाटेंगे।" अिसलिअे अुन्होंने बिल मुझे सौंप दिया।

डेढ़ रुपयेका बिल देखकर बापू मुझसे कहने लगे: "तू यह समझती होगी कि हमारा पैसा नहीं खर्च हो रहा है, अंग्रेज सरकारका

हो रहा है। और हमें जितनी सुविधा मिली है, जिसलिअे चाहे जो चीज मंगवानेमें हर्ज नहीं है। परंतु यह तेरी बड़ी भूल है। यह पैसा अंग्रेज सरकार कहांसे लाअी? असलमें ये हमारे ही पैसे खर्च होते हैं। जिस तरह तो हमीं अपनेको बेवकूफ बनाते हैं। जिसके अलावा अेक बड़ी बुरी आदत तो यह पड़ती है कि जो सुविधा मिले, अुसका अपव्यय या दुरुपयोग किया जाय। अच्छा हुआ कि तूने नोटबुक मुझे बताये बिना काममें नहीं ली। मेरा जितना डर तो लगा। तुझे आज-कल पाठशालाके नियम कहां पालने पड़ते हैं, जो अैसी पक्के पुट्ठेकी भूमितिकी नोटबुक चाहिये? हमारे पास तारीखके पन्ने बहुत पड़े हैं, जिनके पीछेके हिस्से बिल्कुल कोरे हैं। तू अुन पर सवाल किया कर। यह नोटबुक लौटा दे।"

वह नोटबुक मैंने लौटा देनेके लिअे कटेली साहबको दी। वे कहने लगे, "बापूजी भी जुल्म करते हैं। मैं अपने पास रख लूंगा। तुम्हें चाहिये तब ले जाना।" परंतु दो बजते ही कटेली साहब डाक और अखबार देने बापूजीके पास आये। अुस समय बापूजीने अुनसे पूछा, "क्यों, मनुने नोटबुक आपको लौटा दी?"

अुन्होंने कहा, "हां, लौटा दी। मगर बेचारीको जिस्तेमाल करने दीजिये न? संभालकर रखेगी तो बादमें काम आयेगी।"

बापूजी बोले, "मालूम होता है आप अुसे बिगाड़ना चाहते हैं। अगर अुसे संभालकर रखनेकी परवाह होगी, तो क्या आप मानते हैं कि ये तारीखके पन्ने नहीं रखे जा सकते? अुसे तो वापस ही कर देना चाहिये। अुसका नकद डेढ़ रुपया लौटा लाये या नहीं, जिसकी मुझे खबर दीजिये, यद्यपि शामको मैं जमादारसे तो पूछूंगा ही।"

शाम हुअी। बापू और हम सब बाहर घूमने निकले। फिर नोट-बुकका प्रकरण शुरू हुआ, "तू समझ गअी न, तुझे जिससे कितना बड़ा सबक मिला? (१) यह डेढ़ रुपया कौन देता है? किसे चूसकर यह सारा खर्च पूरा किया जाता है? जिस सारे खर्चका रुपया कोअी विलायतसे नहीं आता। जिस प्रकार जिससे मैंने तुझे

अितिहास सिखाया। (२) और जितनी चाहिये अुससे अधिक किसी भी तरहकी सुविधा मिले तो भी अुसका अुपयोग नहीं करना चाहिये। अिस प्रकार मानवताके अनेक लक्षणोंमें से तूने अेक गुण सीखा। (३) और बेकार पड़ी हुआी चीजका सुन्दर अुपयोग होगा। ये कैलेण्डरके पर्चे यों ही फेंक दिये जाते, लेकिन अगर काममें आ सकेंगे तो अब वे बचाकर रखे जायंगे। और फेंके भी जायंगे तो अुपयोगमें आनेके बाद; अिसमें कोअी हर्ज नहीं। (४) और कभी तेरा बाहर जाना हो जाय और तू शालामें पढ़ने जाय तो पक्के पुट्ठेकी अितनी सुन्दर नोटबुक, जिसमें सवाल किये हुअे हों, कोअी चुरा भी सकता है (हमारे समयमें बहुत दफा अैसा होता था)। लेकिन अिन कैलेण्डरके पर्चोंको चुरानेका किसीका भी मन न होगा। बोल, यह सबसे बड़ा लाभ हुआ कि नहीं?"

यह बात हो ही रही थी कि जमादार साहब आये और नकद डेढ़ रुपया वापस लानेकी खुशखबर सुना गये। तो भी यह नोटबुकका प्रकरण पूरा नहीं हुआ। बापूने विनोदमें कहा:

"अगर तुझे शर्म आये कि अिन तारीख बतानेवाले पर्चोंमें भी कहीं अंग्रेजी हाअीस्कूलमें जानेवाला सवाल कर सकता है, तो मैं भी कितने वर्षोंके बाद तुझे भूमिति पढ़ा रहा हूं? अिस प्रकार मैं भी अब सीखनेवाला माना जाअूंगा और तू भी सीखनेवाली मानी जायगी। अिसलिअे मेरा नाम लेकर कहना कि बूढ़ोंका तो कैसी भी चीजसे काम चल जाता है।"

अब तो मैं अिन तारीखके पर्चोंको अिस तरह संभाल कर रखती हूं, जैसे कोअी रुपयों या जवाहरातका खजाना संभाल कर रखता है। अिन पर्चोंमें कितने ही सवाल और आकृतियां पू० बापूके हाथकी खींची हुअी हैं। अिसलिअे बापूने जो आखिरी बात कही थी कि "आकर्षित करनेवाली अच्छे पक्के पुट्ठेकी नोटबुक हो तो किसीका चुरानेका मन हो सकता है," वह बिलकुल सही है। किसीको चोरी करनेका प्रोत्साहन नहीं मिलता और वह अमूल्य वस्तु सुरक्षित भी रहती है।

आगाखां महल, पूना,
१३-४-'४३

अपनी रोजकी डायरीमें मैंने भूमितिकी नोटबुक संबंधी बात नहीं लिखी थी। बापूजीने अुसे लिखनेके लिअे कहा और वह डायरी रोज शामको अपने पास रख देनेकी हिदायत दी।

डायरीका अेक नमूना

ता० १३-४-'४३

५ बजे बापूजीने अुठाया।

५ से ५॥ दातुन वगैरा और प्रार्थना।

५॥ से ६॥ पढ़ना था लेकिन आंखोंमें नींद छा गयी और सो गयी।

७ से ८ बापूजीके लिअे रस निकाला, मोटीबाके लिअे दवा डालकर चाय बनायी, सब बर्तन मांजे।

८ से ८॥ आज १३वीं अप्रैल होनेसे बापूजीने झंडावंदन करवाया। 'झंडा अूंचा रहे हमारा' गीत गाया और बापूजीके साथ घूमे।

८॥ से ९ पूज्य बाके सिरमें तेल मला और बालोंमें कंघी की।

९ से १०॥ पूज्य बाकी मालिश की, उन्हें स्नान कराया और अपने तथा बाके कपड़े धोये।

१०॥ से ११ बापूजीके लिअे खाखरा रोटियां बनायीं, शाक और दूध तैयार किया और छाछ बिलोकर मक्खन निकाला।

११ से ११॥ अंग्रेजीका पाठ लिखा।

११॥ से १२॥ बापूजीको खिलाकर बाके साथ हम सबने खाना खाया।

१२॥ से १ पूज्य बापूजी और बाके पैरोंमें घी मला। कल रातको भी बाके सारे शरीरमें बहुत जोरका दर्द था, बुखार जैसा लगता था, और अभी भी था अिसलिअे अुनका शरीर दबाया।

१ से १॥ बाको अखबार पढ़कर सुनाये और बापूजीसे १५ मिनिट बाद अुठा देनेका वचन लेकर सो गअी। १५ मिनटमें बापूजीने अुठा दिया।

१॥ से २॥ बा और बापूजीको शहदका गरम पानी पिलाकर काता। बापूजीका और मेरा सूत अटेरन पर अुतारा; बापूजीके २२० तार निकले। सफाअी वगैरा की।

२॥ से ३॥ कल गुजराती व्याकरणकी बापूजी लिखित परीक्षा लेंगे, अिसलिअे यह घंटा पढ़नेके लिअे मुझे दिया गया। अतः गुजराती व्याकरण पढ़ा।

३॥ से ४ सुशीलाबहनसे अंग्रेजी पढ़ी।

४ से ६ बकरी, गाय और भैंसका दूध आते ही अुसे गरम करके अुसकी अलग व्यवस्था की। शाक सुधारा और शामकी रसोअी बनाअी। सब खाना खाकर निपट गये। (सब कैदियोंको खिलाया।)

६ से ६॥ ग्रामोफोन पर भजनोंके रिकार्ड बजाये। बाने लेटे-लेटे सुने।

६॥ से ७ शामके बर्तन मांजे, बा और बापूजीके लिअे दातुनकी कूंची तैयार की, कपड़ोंकी तह की, बाके लिअे अेक साड़ीकी किनारी काढ़नी शुरू की।

७॥ से ८ बैडमिंटन खेलकर बादके दसेक मिनिट बापूजीके साथ घूमे।

८ से ८॥ प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद बिस्तर लगाये। बाको मालिश की। पूज्य बापूजीके सिरमें तेल मलकर पैर दबाये। मैंने बापूजीसे कहा, रोज रातको मुझे अेक कहानी सुनाया करिये। अिस पर बापूजीने मेरी बात अुड़ा देनेके लिअे चिड़ा-चिड़ीकी कहानी सुनाअी। अिस तरह थोड़ी देर मजाक करके ९ बजे बापूजी सोये। बाकी तबीयत आज अच्छी नहीं रही। पसलीमें बहुत दर्द रहा। अिसलिअे आध घंटे तक दबाया। अिससे कुछ शांति मिलने पर वे सो गअीं। अुन्हें खांसी थी।

१०। बजे अपना 'लेसन' करने बैठी और १२ बजे सोओी।

नोट: — आज १३ अप्रैल होनेसे हम सबने आधे दिनका अुपवास किया। हमारा जितना खाना बचा अुसमें थोड़ा और मिलाकर जेलके कैदियोंके लिअे खिचड़ी, शाक, केलेकी चटनी और हलवा बनाया था। बीसेक कैदी थे। पूज्य बापूजीने खुद ही सबके बर्तनोंमें परोसा। अुनके हाथकी परोसी हुओी प्रसादी खाते खाते कुछ कैदियोंने कहा: "हम सात सात सालसे यरवड़ा जेलमें हैं; परंतु अपने अपराधोंके लिअे भी हम आज यह सोचकर गौरवका अनुभव करते हैं कि महात्माजीके हाथसे प्रेमपूर्वक परोसी हुओी प्रसादी खानेको मिली।"

अिस प्रकारकी डायरी रखनेके लिअे बापूजीने मुझे हिदायत दी थी, जिससे अेक अेक मिनिटका सावधानीसे सदुपयोग हो। आजकी डायरीमें बापूजीने नीचेकी अधिक सूचना देकर हस्ताक्षर किये:

"कातनेका हिसाब लिखा जाय। मनमें आये हुअे विचार लिखे जायं। जो जो पढ़ा हो अुसकी टिप्पणी लिखी जाय। 'वगैरा'का अुपयोग नहीं होना चाहिये। डायरीमें 'वगैरा' शब्दके लिअे कोओी स्थान नहीं है।

"जिससे जो पढ़ा हो वह लिखा जाय। अैसा करनेसे पढ़ा हुआ कितना पच गया है, यह मालूम हो जायगा। जो बातें हुओी हों, वे लिखी जायं।"

— बापू

अिस प्रकारकी सूचनाअें मेरी डायरीमें लिखकर बापूजी रोज अपने हस्ताक्षर करते थे।

१२

सेवाके नियम

आगाखां महल, पूना,
३–५–'४३

मुझे पिछले चारेक दिनसे बुखार आता था। आज रातको अधिक था। बापूजी रातको मेरे पास आये; मेरा सिर दबाया। मैंने बापूजीको सो जानेके लिअे बहुत आग्रह किया। वे बोले, "तू मेरी दुगनी सेवा कर लेना, जिससे पापसे मुक्त हो जायगी। सुबह अरंडीका तेल पी ले, तो तबीयत अच्छी हो जायगी। अच्छी हो जायगी तो किसीको तेरी सेवा नहीं करनी पड़ेगी। तू सबकी सेवा कर सकेगी, अिसलिअे पुण्योंका ढेर हो जायगा।"

मैं अरंडीका तेल पीनेमें आनाकानी कर रही थी, अिसलिअे सिर दबाते-दबाते बापूजीने अूपरवाली बात कही और सुबह अरंडीका तेल पी लेना मंजूर करवा लिया। सुबह ५। बजे अरंडीका प्याला, पानीका लोटा और नींबू लेकर बापूजी मेरे बिस्तरके पास आये। और सोमवारका मौन होनेसे बोल न सकनेके कारण मुझे खूब हिलाया। जागता चोर भला क्यों अुठने लगा! मैं तो जैसे गहरी नींदमें सोअी होअूं अिस तरह — यद्यपि थोड़ी देर बाद तो अरंडीका तेल पीना ही था — ढोंग करके पड़ी रही। पर बापूजी अिस तरह छोड़नेवाले नहीं थे। मेरी नाक पकड़ी कि आसानीसे मुंह खुल गया और मुझे हंसी आ गअी। अंतमें अरंडीका तेल पिलाकर ही छोड़ा। आज पहली ही बार बापूजीके हाथसे अरंडीका तेल पीना पड़ा। बापूजीने मौन होनेके कारण पर्चे पर लिख दिया: "बच्चे तो बूढ़ोंको बनाना ही चाहते हैं, लेकिन 'बच्चे और बूढ़े बराबर' अिस कहावतके अनुसार बराबरी-वालोंमें मित्रता होती ही है। अुस पर मैं ठहरा तेरा दादा, अिसलिअे मेरे सामने तो तेरा ढोंग कैसे चल सकता था? वैसे बच्चोंका

दिमाग अिसी अुधेड़बुनमें पड़ा रहता है कि दादा-दादीको कैसे बनाया जाय। बोल ठीक है न?" यह लिखकर बापूजी खिलखिलाकर हंसने लगे।

आगाखां महल, पूना,
४-५-'४३

हर पन्द्रहवें दिन हमारा वजन लिया जाता था। आज वजन करनेका दिन था। पूज्य बापूजीका वजन १०८ पौंड और पूज्य बाका वजन ८८ पौंड निकला। बापूजीका वजन १०९ से १०८ पौंड हो गया, अिसलिअे बा बहुत चिंता करने लगीं। "बापूजी अेक पौंड कैसे घट गये?" मुझसे बाने चिंताग्रस्त स्वरमें पूछा। मैंने कहा, आजकल सुबह दूध नहीं लेते, अिसलिअे शायद वजन घट गया हो। पूज्य बाने अिसका अुपाय खोज निकाला।

बापूजी रोज दो औंस गुड़ लेते थे। बापूजीके शरीरमें शकरका तत्त्व कम था। अिसलिअे डॉक्टरने मीठी चीज लेनेकी खास सूचना दी थी। फलोंका रस तो लेते थे, परंतु वह काफी नहीं होता था। गुड़को पानीमें डालकर घोल लेते थे और कपड़ेसे छान लेते थे, जिससे कुछ कचरा हो तो निकल जाय और गुड़ स्वच्छ हो जाय। फिर अुसे अुबाल लेते थे, जिससे पानी जल जाय और गुड़का हिस्सा रह जाय।

बापूजीका वजन कम हुआ अिसलिअे बाने मुझे कहा, "जितना गुड़ हो अुससे दुगना दूध डालकर गुड़ बनाना।" अिसलिअे मैंने वैसा ही किया। गुड़ जैसा ही गुड़ हो गया और स्वाद लगभग चॉकलेट जैसा लगता था। हम लोग बच्चोंके लिअे बाजारसे जो चॉकलेट खरीदते हैं, अुनसे बच्चोंको कितना नुकसान होता है अिसका अनुभव लगभग सभी लोगोंको होगा। अिसलिअे बाकी युक्ति बापूजीके लिअे तो लाभदायक सिद्ध हुअी ही, परंतु अिस देशी चॉकलेटने कितने ही बच्चोंको भी लाभ पहुंचाया। बा बापूजीके स्वास्थ्यकी अैसी चिन्ता रखती थीं।

आगाखां महल, पूना,
७–५–'४३

मेरी आंखें खूब लाल रहती थीं, और चश्मेसे अुलटा सिर दर्द होता था। चश्मा न लगाती तो दूरका देखनेमें कठिनाअी होती और आंखोंसे पानी झरने लगता था। अिसलिअे बापूजीने नया प्रयोग शुरू किया — आंखों पर बारबार पानी छींटना और जब जब समय मिले तब आंखों पर मिट्टीकी पट्टी रखकर आंखें बंद करना। घूमते समय मेरी आंखें बंद रखवाते; मेरे कंधे पर अुनका हाथ होनेसे चलते वक्त गिरने या ठोकर खानेका डर तो रहता ही नहीं था। परंतु आंखोंकी वजहसे अभ्यास बन्द रखना मेरे लिअे ठीक होगा या नहीं, अिसके बारेमें वे खुद प्रश्न करते। पूज्य बापूजीको यह सह्य नहीं था। अिसलिअे अुनके पास पढ़ने बैठती, तब वे संस्कृतके रूप, श्लोक, संधि, संधि-नियम, सब मुझे अपने मुंहसे कहते। पढ़कर सुनाते। और आंख पर मिट्टी रखवाते।

मैंने कहा, "लेकिन पढ़े बिना याद ही कैसे रहेगा?"

बापूजी बोले, "यदि अैसा हो तो मेरी गलती है। मैं पढ़ानेमें अितना कच्चा माना जाअूंगा।"

मैंने कहा, "लेकिन सबसे अलग अलग विषय पढ़ूं और सभी मुझे अिसी तरह पढ़ावें और याद न रहे, तो क्या वे सब बेकार कहे जायंगे?"

"हां। लेकिन अुस वक्त तेरा मन जो पढ़कर सुनाया जाय अुसमें लगना चाहिये। फिर भी अगर तुझे याद न रहे, तो मैं शिक्षकका पहला दोष मानूंगा। शिक्षक पढ़ानेमें अैसा कुशल होना चाहिये कि विद्यार्थीको पढ़ाया हुआ विषय अपने आप याद रह जाय। विद्यार्थी खेलते-खेलते सीख ले और अुसे किसी भी प्रकारकी रटाअी न करनी पड़े। मैंने फिनिक्समें अिस तरह कितने ही बच्चोंको पढ़ाया है। अुस अनुभवके बाद ही मैं कहता हूं कि विद्यार्थी कमजोर हो तो अुसमें शिक्षक और शिक्षाका अुत्तरदायित्व तीन-चौथाअी है और चतुर्थांश

विद्यार्थीका है। मेरे लिअे यह कोअी नया प्रयोग नहीं है। यों ही तेरी आंखके लिअे दो घंटे तक मिट्टीकी पट्टी रखकर तुझे लिटाअूं यह तुझे अच्छा नहीं लगेगा। फिर भी तेरे लिअे आज अितना समय नहीं निकाल सकता। क्योंकि यहां तू बाकी सेवा करनेके लिअे आअी है, तेरी आंखोंका अिलाज करानेके लिअे नहीं। तू दिन भरमें दो घंटे सबसे पढ़ती है, अिसलिअे दोनों काम साथ-साथ हो जाते हैं।"

अिस प्रयोगमें बापूजी सफल हुअे। अेक तो मेरी यह चिन्ता मिट गअी कि कल अितना पढ़कर तैयार करना है। अिसलिअे कोअी पढ़ाये अुस समय दिमागको अधिक सावधान रखनेकी तालीम मिली और स्मरण-शक्तिको तो लाभ हुआ ही। दूसरे आठ दिनमें ही आंखें ठीक होने लगीं। मिट्टीने आंखकी गरमी खींच ली। बिलकुल मिटनेमें तो लगभग अेक महीना लगा होगा। बापूजीकी अिच्छा तो अिस प्रकार चश्मा छुड़वानेकी भी थी, परंतु वह नहीं हो सका।

आगाखां महल, पूना,
९-५-'४३

आज बापूजीने घूमनेका समय बदल दिया। ८से ८॥ के बजाय ७॥ से ८॥ रख दिया। क्योंकि २१ दिनके अुपवाससे आअी हुअी कमजोरी अब कम हो गअी थी।

आज बापूजीने दोपहरके १२ बजेका घंटा सुनते ही कैसा भी काम छोड़कर सो जानेके लिअे कहा था। बादमें बापूजी और बाके पैरोंमें घी मलना था। लेकिन आज १२ से १ के बीच सोनेके बजाय मैं दूसरे काममें लग गअी। और ठीक १ बजेका घंटा होते ही बापूजीके पास गअी, तो सुशीलाबहन घी मल रही थीं। मैं क्षण भरको स्तब्ध रह गअी। कुछ क्षण बाद मैंने बापूजीसे पूछा, आज अैसा क्यों किया? बापूजीका चेहरा बहुत गंभीर हो गया था। अुन्होंने मुझे अेक ही बात कही:

"ये तेरे सेवा करनेके लक्षण मुझे नहीं दीखते। जिसे दूसरेकी सेवा करनेका अुत्साह हो अुसे पहले अपनी सेवा करनी चाहिये और

शरीरको मजबूत बनाना चाहिये। यदि शरीर मजबूत न हो तो हमें अपनी कमजोरियां नम्रतासे कबूल करके, शरीरकी आवश्यकताअें पूरी करके शरीर टूट न जाय अिसका ध्यान रखनेका प्रयत्न करना चाहिये। मैं जानता हूं कि तुझे रातमें जागना पड़ता है। बुखार आ गया। तेरा वजन ९५ से ९१ पौंड हो गया। आंखें ठीक ठीक काम नहीं देतीं। मेरा प्रयत्न शुरू न होता तो अीश्वर जाने क्या होता। लेकिन मुझे डॉ० गिल्डर और सुशीलाने चेतावनी दी। अभी भी कुनैनकी खुराक पर तू जो रही है, वर्ना मलेरिया कब तक चल सकता है? अिसलिअे मैंने तुझे १२ से १ बजे तक सोनेकी आज्ञा दी। पर तू दूसरा काम करने लगी। अपनी शर्त तुझे याद है न कि मैं कहूंगा वैसा ही तू किया करेगी? परंतु तूने नियम बदल दिया, अिसलिअे मैंने भी बदल दिया। जिसे सेवा करनी है, अुसे लोहे जैसा मजबूत शरीर बनाना ही पड़ता है। यदि तेरा शरीर अैसा मजबूत और सशक्त बन जाय कि चाहे जैसा खानेको मिले, चाहे जितना कम सोनेको मिले, तो भी कमजोर न हो तो मुझे कोअी अेतराज नहीं है। फिर मैं तेरे लिअे कोअी नियम नहीं बनाअूंगा। नींद न आये तो भी आंखें बंद करके कलसे यहां मेरे पास ही सोना मंजूर करे, तो घी मलनेका हक तेरा बना रहेगा। नहीं तो मेरी कोअी सेवा तू नहीं कर सकती। सोनेके लिअे कहते ही मेरी गद्दीका तकियेके रूपमें अुपयोग करके सो जाना। मैं तुझे जगा दूंगा। तेरे आजके अिस अपराधको क्षमा करनेकी मेरी जरा भी अिच्छा नहीं थी, परंतु तेरा करुणाभरा मुंह देखकर दया आ गअी। अिसलिअे अिस अपराधके होते हुअे भी तुझे मेरी शर्त मंजूर हो तो तू घी मल। अेक पैर तो सुशीलाने पूरा कर दिया, दूसरे पैरमें तू मल, और बाके पैरोंमें घी मलकर यहीं सो जा। नियम पालन करनेके लिअे बनाया जाता है।"

मुझे स्वप्नमें भी खयाल न था कि मेरे न सोनेकी बात अितना अुग्र रूप धारण कर लेगी। मैं अपना काम नहीं कर रही थी, बल्कि रसोअीघरकी अलमारियां साफ कर रही थी। मेरे मनमें यही भाव था कि कोअी दूसरा समय नहीं मिलता अिसलिअे अगर अेक दिन न सोअूं

तो क्या बिगड़ जायगा? पर यह तो बड़ा महंगा पड़ गया। अिसकी जरा भी कल्पना नहीं की थी कि पांच-सात मिनट तक बापूजीके दुःखी हृदयका अैसा अुग्र व्याख्यान सुनना पड़ेगा।

सारा काम वैसा ही पड़ा रहा। अैसा भाषण सुननेके बाद नींद तो आती ही कहांसे? फिर भी मिट्टीकी पट्टी चढ़ाकर अेक घंटे लेटे रहना पड़ा। यह अेक घंटा बड़ी मुश्किलसे बीता। अेक घंटेमें अेक मिनिट बाकी रह गया, तब बापूजी बोले: "जा तुझे नींद आने ही वाली नहीं है। मनमें राम राम किया होता तो जरूर आ जाती। पर अब अेक मिनिटके लिअे तुझे माफ कर देता हूं।" में तुरन्त खड़ी हो गअी। पर मनमें यह चिढ़ तो थी ही कि अितनी छोटीसी गलतीके लिअे बापूजीने सुशीलाबहनसे घी मलवाना शुरू कर दिया, अिसके बजाय मुझे बुलवाकर अुसी क्षण सोनेके लिअे कह दिया होता तो? अुसके बदले अेक पैरमें घी मलवा लिया, और अूपरसे अितनी बातें सुननी पड़ीं। अिसलिअे बापूजीसे गुस्सेमें मैं कुछ बोली नहीं। शाम हो जाने पर अकेली ही अिधर-अुधर घूमने लगी। बापूजीने मुझे अपने पास बुलाया और कान पकड़कर कहा, "मुंह क्यों फुला रखा है?"

मैंने कहा, "आपने पहलेसे नोटिस क्यों नहीं दिया?"

बापूजी बोले: "जान-बूझकर; तू यह प्रश्न करेगी ही अैसा विश्वास था अिसलिअे। तू अब और अधिक समझेगी, अधिक नियमित बनेगी। पहलेसे नोटिस देता तो यह परिणाम नहीं आता। पहलेसे कब किसे नोटिस दिया जाय, अुसका भी प्रकार और पात्र देखना होता है। परन्तु मजेकी बात तो यह है कि तुझे कोअी डांटे तो भी मैंने तेरा मुंह लम्बे समय तक चढ़ा हुआ कभी देखा नहीं। लेकिन आज तो तूने दो बजेसे मुझसे बोलना बन्द किया सो सात बज गये। अिसलिअे मेरे साथकी कुंट्टी अब तो छोड़नी चाहिये न?" अैसा कहकर मुझे हंसा दिया। मेरी और बापूजीकी फिरसे दोस्ती हो गअी। अिस तरह बापूजी बच्चोंके साथ बच्चे बनकर अुनके गुरु बन जाते थे।

१३
शिक्षिका बा

आगाखां महल, पूना,
११-५-'४३

आज रातको पूज्य बाकी तबीयत बिगड़ गअी थी। रातको ३ बजे अुन्होंने मुझे जगाया। अुनकी पीठ और सिरमें दर्द था। ३ से ५॥ तक मैं अुनके पास बैठी रही। ५॥ से ६ प्रार्थना और प्रार्थनाके बादका जो काम मुझे करना था, अुसे सुशीलाबहनने खुद करनेको कहा। मुझे अुन्होंने सोनेका हुक्म दिया। पर अुनकी बात पर कोअी ध्यान न देकर मैं काममें लग गअी। अुन्होंने बासे कहा। बाने कहा: "हां, बेचारी अब मेरी सेवा करके थक गअी होगी और जेलसे छूटनेका मन हो रहा होगा। अिसीलिअे सोअी नहीं और काममें जुट गअी है, जिससे बीमार पड़े तो सरकार छोड़ दे। अिसमें अुसका क्या दोष? अुसका अपनी बहनोंसे मिलनेका मन होना स्वाभाविक ही है।" मुझे सुलानेका मानो बाने यह अुत्तम अुपाय ढूंढ़ निकाला। मेरे मनमें यह डर था कि बा डांटेंगी। अुसके बदले अुन्होंने अुलटी बातें सुनाअीं, और अैसी सुनाअीं कि मुझे लगे कि अिस तरह अगर बा अुलटा ही समझती हैं तो मैं क्यों न सो जाअूं। मेरे मनमें छूटनेकी जरा भी अुत्सुकता नहीं थी, फिर बाने अैसी बात कैसे कह दी? मैं चिढ़कर सो तो गअी, लेकिन यह बात मैंने बापूजीसे कह दी। बापूजीने कहा: "बाकी यही तो खूबी है कि सीधे चिढ़नेके बजाय परोक्ष रूपसे दूसरे पर अैसा प्रहार करना कि वह सीधा पड़े। हमारे यहां अेक पुरानी कहावत है — लड़कीको कहकर बहूको सुनाना। सयानी सास आजकलकी तरह तुरन्त नहीं झगड़ती थी। जो कुछ कहना होता वह अिस तरह लड़कीको कहती कि बहू सुन ले। और बहू भी अैसी सयानी होती थी कि तुरन्त समझ जाती। अुसी तरह अैसा कहनेमें बाका सयानपन था। अगर तुझे डांटती तो तू रो पड़ती। और

जैसे सुशीलाकी बात पर तूने ध्यान नहीं दिया, वैसे ही बाकी बात पर भी तू ध्यान न देती तो बाका डांटना व्यर्थ हो जाता। बाने यह सुशीलाकी बात परसे जान लिया, अिसलिअे दूसरी युक्ति अपनाअी। बा और मैं क्या यह नहीं जानते कि तू हमारे लिअे मर-खपकर काम करनेको कितनी आतुर रहती है? परंतु तुझे मार डालना तो है नहीं। अिस प्रकार जागरण हो तो नींदकी कमी तेरे जैसे बच्चोंको किसी और समय पूरी करनी ही चाहिये। तभी तेरा शरीर बनेगा। तब बाने लालन-पालनका — मोन्टेसोरीका — तरीका तुझ पर दूसरे रूपमें आजमाया और तुझे पूरे ३ घंटे सुलाया। अैसी बा है। अैसी अैसी कितनी ही युक्तियां बाने मुझ पर आज़माकर मुझे जिन्दा रखा है, अैसा कहूं तो अनुचित न होगा। मैं अभी तक जीवित हूं अिसका मुख्य श्रेय बाको है। बा जानती थी कि मैं अैसा कहूंगी तो मनुको बुरा लगेगा और वह जरूर सो जायगी। बुखार आने पर मां कड़वी दवा भी पिलाती है और मौका पड़ने पर मिठाअी भी खिलाती है न?"

बापूजी बाका कितना आदर करते थे, अिसका मुझे अिस प्रसंगसे भान हुआ। दिनमें भी बाकी तबीयतमें कोअी खास सुधार मालूम नहीं होता था, परन्तु बाको मेरी पढ़ाअीमें विघ्न अच्छा नहीं लगता था। अिसलिअे अपने पास बैठाकर प्यारेलालजीसे मुझे पढ़ानेके लिअे कहा। प्यारेलालजी मुझे भूगोलके प्रश्न पूछ रहे थे। अुसमें अेक प्रश्न चीनके बारेमें था कि चीनके लोग पानी अुबालकर पीते हैं, पर अुसमें चाय किस लिअे डालते हैं? अिसका अुत्तर देनेमें मुझे थोड़ी देर लगी, तो बा तुरन्त बोल पड़ीं : "तू अितना भी नहीं समझती? रोज केटलीमें सबके लिअे तो चाय बनाती है। यदि पानी पूरा अुबला हुआ न हो और चाय डाल दी जाय तो रंग नहीं आता; पानी ठीकसे अुबला है, अिसका प्रमाण चाय डालनेसे मिलता है। और चीनमें पानी खराब होता है, अिसलिअे अुबालकर पीया जाता है। पानी गरम करने और अुबालनेमें बहुत फर्क है। सिर्फ गरम करें तो संभव है अुसमें जीव-जन्तु रह जायं। कितने ही कीड़े तो सूक्ष्मदर्शक यंत्रसे भी बहुत कठिनाअीसे दिखाअी देते हैं। अैसे कीटाणु पानीको अुबाले बगैर नहीं

मरते। अिसलिअे चाय डालनेके रिवाजसे अुबले हुअे पानीका अन्दाज आ जाता है। अैसी अैसी बातें बापूजी अफ्रीकामें बच्चोंको सिखाते थे, अिसलिअे मैं भी जानती हूं। लेकिन अैसे पाठ बापूजी कहानीके रूपमें लड़कोंको सिखाते थे, जिससे लड़के खेल-खेलमें सीख जाते थे। तेरी तरह किसीको भी पढ़-पढ़ कर दिमाग खाली नहीं करना पड़ता था।"

अिस तरह बाने मुझे भूगोलका पाठ तबीयत खराब होते हुअे भी बिस्तर पर लेटे-लेटे और खांसते-खांसते पढ़ा दिया।

शामको बापूजीने दिनभरमें मैंने जो कुछ पढ़ा अुसके बारेमें पूछा। मैंने कहा, "आज तो बाने बड़े प्रेमसे मुझे अेक पाठ पढ़ाया।" और अुबाले हुअे पानीकी सारी बात मैंने कह दी।

बापूजीने कहा: "न जाने कितने साल पहले मैंने यह पाठ फिनिक्समें सिखाया होगा, पर बा बूढ़ी हो गअी तो भी अुसे नहीं भूली।"

मैंने हंसते-हंसते कहा: "अिसमें होशियार कौन? आप या बा? जिसने अितना याद रखा वही होशियार है न?"

"हां, अैसा कहकर बाकी प्रिय बनना हो तो बन जा।" कहकर बापूजी हंसने लगे। "लेकिन मैंने तुझे कहा न कि मेरा तरीका अुलटा है। विद्यार्थियोंको कोअी विषय न आये तो मैं शिक्षकोंको ही अधिक दोष देता हूं। अिसलिअे अपने तरीकेसे मैं ज्यादा होशियार हुआ न?" बाकी तबीयतके समाचार जाननेके लिअे बापूजी बाके पास आये। (बाकी खाट तो बापूजीके कमरेमें ही थी। परन्तु हम घूमने गये अुस बीच कुछ नअी बात तो नहीं हुअी यह जाननेके लिअे बाकी खाटके पास आये।)

"क्यों, आज तो तुमने अिस लड़कीको पढ़ाया है। अब कौन कह सकता है कि तुम बीमार हो? और पढ़ानेमें भी मैंने फिनिक्समें कुछ बातें कही होंगी, अुन्हींको याद रखकर सिखाया न? पर यह लड़की तुम्हारी ही तारीफ करती है कि बा कितनी होशियार हैं जो अितना सब याद रखती हैं! तब मैंने खुद अपना पक्ष लेकर कहा कि मैं कितना होशियार हूं? मैंने लड़कोंको अिस तरह पढ़ाया कि बाने कोअी काम करते-करते अुसे सुन लिया और बूढ़ी हो गअी तब तक याद रखकर

आज तुझे यह पाठ सिखाया। बोलो, अब मैं होशियार हूं कि तुम ?" अिस तरह बासे विनोद करके क्षण भरके लिअे अुनका दर्द भुला दिया।

बाने विनोद किया: "अपने मुंह मियां मिट्ठू कौन नहीं बनना चाहता ?"

प्रार्थनाका समय हो जानेसे बापूजी अुठे। रातको कहने लगे, "मुझे यह बहुत पसन्द है। यदि तू बासे अफ्रीकामें मेरी दी हुअी शिक्षा ग्रहण कर लेगी, तब तो तू अुत्तम ज्ञान प्राप्त कर लेगी — वह ज्ञान हम सब जो तेरे शिक्षक बन गये हैं अुनसे भी अधिक अिस अपढ़ बासे तुझे प्राप्त होगा। लड़कोंको मैंने शालाओंमें क्यों नहीं पढ़ने दिया, अिस प्रश्नका अुत्तर मानो बाने आज तुझे शिक्षा देकर मुझे भी दे दिया है। मुझे अितना आत्म-सन्तोष हुआ कि फिनिक्समें रहे हुअे अुन लड़कोंको मैंने भले बैरिस्टरी पास करनेके लिअे विलायत नहीं भेजा, लेकिन अुन्होंने अुससे कहीं अधिक ज्ञान प्राप्त कर लिया होगा। अिस बारेमें मैं तो निःशंक था ही, फिर भी आजके अिस प्रसंगसे और अधिक निःशंक हो गया हूं। और यह सारा प्रसंग भले विनोदमें ही हुआ हो, फिर भी अुसमें पूरा गांभीर्य था। मैं मानता हूं कि अिससे मेरी शिक्षकके रूपमें परीक्षा भी हो गअी। अिसके सिवा, यदि बीमारीमें बा तुझे अैसे पाठ देती रहेगी, तो मुझे विश्वास है कि बाकी आधी बीमारी दूर हो जायगी। अगर मातापिता अपने बच्चोंको अिस तरीकेसे तालीम दें, तो बच्चोंकी शिक्षाके लिअे अुन्हें जो भारी खर्च करना पड़ता है वह बहुत कम हो जाय, यह भी तू जानेगी। अिसमें भी यदि स्त्रियां बच्चोंको अिस प्रकारकी शिक्षा दें, तो हिन्दुस्तानके बच्चोंका आज ही अुद्धार हो जाय। यही देखनेके लिअे मैं तरसता हूं और अिसीलिअे मैं स्त्रियोंको अधिक महत्त्व देता हूं।"

बापूजीने क्षणभरमें अिस सारे विनोदी प्रसंग पर दूसरी दृष्टिसे सोचनेकी नअी ही दिशा देकर अेक नया पाठ पढ़ा दिया। बापूजीका मस्तिष्क देशहितके प्रश्नोंको कितनी सूक्ष्मतासे देखनेका काम कर रहा है, यह सोचते-सोचते मैं बापूजीकी बात सुनती रही। अेक क्षण पहले जो बात विनोदमें ही अुड़ाअी जा रही थी, वह

अितने अूंचे आदर्शवाली हो सकती है, अिसकी कल्पना भी मुझ जैसी लड़कीको कैसे हो सकती थी?

आगाखां महल, पूना,
१२-५-'४३

मैंने बापूजीसे रोज अेक कहानी सुनानेके लिअे कहा। पहले तो अुन्होंने मेरी बात हंसीमें अुड़ा दी: "अेक था चिड़ा और अेक थी चिड़ी।" अितनेमें सुशीलाबहन आअीं। बापूजीसे बोलीं, यह कैसी कहानी? अिसके बजाय तो आप अपनी ही बातें सुनाअिये। बापूजी भी बहुत खुश थे। अुन्होंने अेक मजेदार बात कही: "मैं विलायत जानेवाली स्टीमरमें बैठा। मैट्रिक पास करके गया था, लेकिन अंग्रेजी अितनी अच्छी नहीं थी कि सबके साथ खुलकर बात कर सकूं। और शरम भी आती थी कि कहीं बोलनेमें भूल हो जाय, तो लोग हंसेंगे। अिसलिअे अधिकतर मैं अपने केबिनमें ही बैठा रहता। परन्तु ज्यों ज्यों मैं गोरे लोगोंको देखता, त्यों त्यों मैं अपने आपको काला लगने लगा। फिर मैं स्नानागारमें गया। वहां गोरा बननेके लिअे खूब साबुन लगाया, ताकि कुछ तो खूबसूरत मालूम होअूं! परन्तु अेक तो समुद्रकी हवा और अुस पर साबुन; फिर क्या पूछना? अेकदम दाद हो गया और अितना हो गया कि मैं तंग आ गया। लंदन पहुंचकर डॉ० प्राणजीवन मेहतासे बात करनेमें भी शरमाया, क्योंकि स्टीमर पर पराक्रम ही अैसा किया था। अन्तमें मैंने अुनसे सारी बात कही। अुन्होंने दवा तो दी, परन्तु खूब फटकारा भी।"

हम तो यह बात सुनकर अितनी हंसीं कि पेटमें बल पड़ गये।

आगाखां महल, पूना,
२०-५-'४३

बापूजीने मैक्सवेलको जो पत्र लिखा, अुसकी बात कही: "भले वे कुछ भी करें, परन्तु अब तो अिन लोगोंको भारत छोड़ना ही पड़ेगा। मुझे विश्वास है कि भारतको अब ये लोग अधिक समय तक गुलामीमें नहीं

रख सकेंगे। मैं तो कहता हूं कि यदि हम लोगोंको पकड़ न लिया होता, तो अिसी सन् '४२ में ही समझौता हो जाता। अिसीलिअे भाषण देकर आनेके बाद मैंने महादेवसे कहा था कि अिस बार यदि लिनलियगोमें समझदारी होगी तो हमें गिरफ्तार नहीं करेंगे। परन्तु विनाशके समय विपरीत बुद्धि ही सूझती है। जल्दबाजी करके सबको जेलमें डाल दिया, अिसीसे जाहिर होता है कि अब भारत अंग्रेजी सत्ताको अधिक वर्ष तक सहन नहीं कर सकता। मैं यह जानता हूं कि लोगोंने अहिंसा और सत्यका मार्ग मन, वचन और कर्मसे पूरी तरह नहीं अपनाया। परन्तु अिसमें भी मैं लोगोंकी अपेक्षा अपना दोष अधिक पाता हूं — मैंने स्वयं यह मार्ग मन, वचन, कर्मसे नहीं अपनाया होगा। अिसीलिअे अिस बार अितनी अधिक तोड़फोड़ हुअी। यदि हम अैक्यके साथ अहिंसा और सत्यको बुद्धिपूर्वक अपना सकें, तो ये जेलके दरवाजे अपने आप खुल जायं, अिसमें मुझे सन्देह नहीं।"

आज वर्षा होनेके कारण बाहर नहीं खेला जा सका। बरामदेमें ही खेले। मैंने रस्सी कूदनेका खेल खेला, डॉ० गिल्डरने भी यही खेल खेला। परन्तु वे जरासी देरमें ही हांफने लगे। पचास वर्षसे अूपरकी अुम्रमें वे हमारी तरह रस्सी कूदकर छलांग कैसे मार सकते थे? हम खूब हंस रही थीं, अिसलिअे बा आअीं। डॉ० गिल्डर बहुत ही विनोदी स्वभावके हैं। बासे कहने लगे: "बा, बच्चोंके अिस बुड्ढे आदमीका मजाक अुड़ानेका समय आ गया है। देखिये तो ये लड़कियां मुझे खेला रही हैं।"

बा हंसने लगीं और बोलीं: "आप जैसोंको भला वे खेला सकती हैं? परन्तु यों कहिये न कि आज वर्षा है और कसरत नहीं हुअी, अिसलिअे रस्सी कूदकर व्यायाम कर लिया है।"

कूद कूदकर सब थक गये तो बैठकर 'धमाल गोटा'* का खेल खेला। अिस छोटे बालकोंके खेलमें सभी बड़े लोग शामिल हो गये। अिस पर बा कहने लगीं: "अिस सरकारने जेलमें बन्द करके आप

---

* बच्चोंका अेक खेल।

लोगोंके लिअे बड़ा आराम कर दिया है। (खेलमें बा और बापूके सिवाय सब शामिल थे; वे दोनों देखते थे।) बचपनके खेल ताजा कर रहे हैं। आप पर सरकारकी कितनी कृपा है!"

डॉ० गिल्डर बोले: "बा, मनु मुझे आज आनन्दी कौवेकी कहानी पढ़नेको दे गअी थी। बालवार्ताओंकी अिस पुस्तकमें मुझे वह कहानी बहुत ही पसन्द आअी।" (डॉ० गिल्डर पारसी होनेके कारण गुजराती जानते अवश्य थे, परन्तु गुजराती लिखने-पढ़नेकी आदत कम थी। मेरे हाथमें वह पुस्तक आते ही मैं अुन्हें मनोरंजनके लिअे पढ़नेको दे आअी थी।)

बाने कहा: "आप जैसोंको मजा आवे अिसीलिअे तो कहीं यह न छपी हो? लो, अब बाप कहानी पढ़ने बैठे हैं। लेकिन आप ये पुस्तकें और कब पढ़ते? अिसलिअे पुस्तकका भी सौभाग्य है कि आप जैसे बड़े डॉक्टर अुसे अितने शौकसे पढ़ रहे हैं।"

डॉक्टर: "परन्तु मेरा सौभाग्य और अंग्रेज सरकारकी मेहरबानी है कि बचपनके अधूरे रहे शौक अब बुढ़ापेमें तो ताजा हो रहे हैं। बाहर रहने पर कितनी झंझटें और दौड़धूप पीछे लगी रहती है?"

अिस प्रकार हमारा परिवार आनन्दसे दिन बिता रहा था। भले ही मैं सबसे छोटी थी; परन्तु ये सब अितने छोटे छोटे मित्र बन जाते कि अुस समय मैं यह भूल जाती कि बापू, बा, डॉक्टर गिल्डर, कटेली साहब, मीराबहन, प्यारेलालजी और सुशीलाबहन अितने बड़े हैं, विद्वान हैं, नेता हैं और राष्ट्रके निर्माता हैं।

१४

प्रार्थना -- आत्माका भोजन

आगाखां महल, पूना,
२६-५-'४३

बापूने आज घूमते-घूमते गीताके आठवें अध्यायका पाठ कराया। श्लोक पूरे होने पर सुशीलाबहन भी घूमने आ गअीं, अिसलिअे बापूजीने कहानी कहना शुरू किया और पोर्ट सैयद तक अपने पहुंचनेकी बात कहकर छोड़ दी। केवल सात ही मिनट तक कही।

परन्तु आज प्रातःकालकी प्रार्थनामें मैं नहीं अुठी थी, अिसलिअे घूमकर आने पर हाथ-मुंह धोते समय बापूजीने पूछा: "क्यों, तुझे पता है मैंने तुझे कान पकड़कर जगाया था, फिर भी तू नहीं अुठी?"

मैंने कहा: "मैं भजनके समय अपने आप अुठ गअी थी। आप अुठाने आये, अिसका मुझे कुछ भी पता नहीं है।"

बापू बोले: "तुझे बार बार कहां तक कहा जाय कि पूरी नींद ले? रातको देरसे सोना और दिनको सोनेका ढोंग करना। तेरे शरीरको तो दस घंटे नींद जरूर मिलनी चाहिये, क्योंकि अभी वह बढ़ रहा है। परन्तु तू अपनी जिद छोड़े तब न?"

मैंने कहा: "रातको मैं बाके साथ कैरम खेलने बैठी थी। लेकिन बा नहीं खेलीं। मीराबहन, डॉ० गिल्डर, कटेली साहब और मैं, चार थे। अेक आदमीकी कमी पड़ रही थी, अिसलिअे बाने मुझे बुलाकर खेलनेको कहा। अिसीसे सोनेमें देर हो गअी।"

बापूने पूछा: "कितने बजे थे?"

मैंने कहा, "मैं सोअी अुस समय १२॥ बज रहे थे।"

बापूजीने कहा: "तो वह नींद आज दिनमें पूरी कर लेना, ताकि प्रार्थनाके समय अुठ सके। प्रार्थना न तो अूंघते-अूंघते हो सकती है और न जबरन् कराअी जा सकती है। प्रार्थनाके समय अीश्वर-

मय बननेकी कोशिश करनेका सुन्दर अवसर है। प्रार्थना आत्माका भोजन है। मैं तुझे वह भोजन देना चाहता हूं। परन्तु जैसे शरीर-रक्षाके लिअे दो दिन भोजन करें और चार दिन न करें तो शरीर कमजोर हो जाता है, वैसे ही प्रार्थना भी दो दिन करें और चार दिन न करें तो आत्माको अुसका पोषक तत्त्व नहीं मिलेगा और आत्मा भी शरीरकी तरह दुर्बल हो जायगी। हमेशा रातको सोते समय मनमें दृढ़ संकल्प करना चाहिये कि कुछ भी हो जाय प्रार्थनाके समय तो अुठना ही है। अिससे तू अपने आप अुठ जाया करेगी। यह बात मैं तुझे सुबह अुठते ही कहनेवाला था, परन्तु बादमें भूल गया। अब सोचा कि मेरी और बाकी मालिशके समयमें से पांच मिनट कम करके भी यह बात तुझे समझा दूं। अिसलिअे समझा दी।"

अिसके बाद मैं रातको सोनेसे पहले हमेशा निश्चय करके सोती कि प्रार्थनाके समय अुठना ही है और अिस संकल्पके आधार पर अकसर अपने आप जग जाती; कभी न जागती तो बापूजी जगाने आते ही थे। अुनके आते ही अुठनेकी आदत पड़ गअी। अिससे प्रार्थनामें मैं क्वचित् ही अनुपस्थित रहती।

पूज्य बाने अपने हस्ताक्षरोंवाला सबसे पहला पत्र आश्रममें रहनेवाली काशीबहन गांधीके नाम लिखवाया था। परन्तु अुसका कोअी अुत्तर नहीं आया। आश्रममें रहनेवाले लोगोंको ही बा अपने कुटुम्बीजन मानती थीं। परन्तु जेलके नियमानुसार सगे-सम्बन्धियोंको ही पत्र लिखा जा सकता था। यह शर्त किसीने मंजूर नहीं की थी। परन्तु मेरे आगाखां महलमें आनेके बाद पू० बाने अपवादके तौर पर यह नियम छोड़ दिया था। और मैं तो नागपुर जेलमें थी तभीसे सम्बन्धियोंको पत्र लिखती थी। अिस प्रकार मेरे लिअे तो आगाखां महलके नियम पालनेकी बात ही नहीं थी। अिसलिअे मैं और बा पत्र लिखती थीं। वे सारा पत्र मुझसे लिखवातीं और नीचे अपना और बापूजीका नाम खुद ही लिख देतीं। अिससे आश्रमवासियोंके लिअे पू० बापूजीके पत्रकी कमी पूरी हो जाती थी। आज अिसी प्रकार डेढ़ बजे काशीबहन गांधीके नाम पत्र लिखवाया। अुसमें आश्रम-

वासियोंके लिअे कितनी सावधानीसे याद कर करके समाचार लिखवाये, जिसका नमूना नीचेके पत्रसे मिलता है (मैंने अुसकी नकल रख ली थी) :

"चि० काशी,

"तुम्हारे दोनों पोस्टकार्ड मिले। पढ़कर आनन्द हुआ। सबकी अपेक्षा तुम्हारा ही पत्र नियमित आता है। पढ़कर बहुत ही खुशी होती है। ता० १४–५–'४३ का पत्र आज मिला। अिस प्रकार पत्र बड़ी देरसे मिलते हैं। वहां सब अच्छे हैं, यह जानकर आनन्द हुआ। किशोरलालभाअीका स्वास्थ्य अच्छा है, यह आनन्दकी बात है। अिससे पहलेका मेरे हस्ताक्षरोंवाला पत्र तुम्हें मिला या नहीं?

"आर्यनायकम्‌जी नागपुरसे आ गये हैं, अिसलिअे अुन्हें और आशादेवीको मेरे आशीर्वाद। पत्र लिखो तो प्रभु तथा अंबाको मेरे आशीर्वाद लिख देना। कल लक्ष्मीका पत्र आया था। लिखती है कि कभी कभी अंबाके पत्र आते हैं। वैसे यहां सब मजेमें हैं। मेरी तंदुरुस्ती अच्छी है। मेरी चिन्ता न करना। तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। बच्चू मजेमें होगा। यहां प्रार्थनाके समय तुम सबको खूब ही याद करती हूं। चि० कहाना (कनु गांधी) क्या लिखता रहता है? शाक तो सभी थोड़ा थोड़ा काटते हैं। कहना कि थोड़ा तू भी काट। भणसाली-भाअीसे पढ़ता है या नहीं? बढ़अीका काम करने जाता है या नहीं? वैसे मेरे लिअे तो वह तरसता ही होगा, परन्तु मैं कैसे आअूं? चि० कनुसे कहना कि तू सबसे मिलजुलकर रहा कर। लीलावतीसे कहना कि हमें अुसका सन्देश मिल गया है। अुससे कहना कि अुसे पसन्द हो सो करे। वैसे मेरा तो खयाल है कि वह कालेजमें भरती हो जाय। यह तो लम्बा रास्ता है। छगनलालको आशीर्वाद। लीलावती, गोमतीबहन, शारदा, आनन्द, बच्चू वगैरा सभी आश्रमवासियोंको मेरा आशीर्वाद। कृष्णचन्द्रजी जैसे भी हो सके वैसे कहानाको अच्छी तरह रखें; फिर पसन्द न हो तो भेज दें। नागपुरमें सब बहनोंको आशीर्वाद लिखना।

बाके आशीर्वाद तथा
बापूजीके शुभ आशीर्वाद"

अिस प्रकार पू० बाका यह अेक ही पत्र बताता है कि अुनके लिअे आश्रमवासी क्या थे?

[अिस पत्रमें जिनका जिक्र आता है, वे सब परिचित हैं। परन्तु बहुत लोग बार-बार अुनका परिचय पूछते हैं, अिसलिअे यहीं दे देती हूं।

काशीबहन गांधी : ये बापूजीके भतीजे छगनलालभाअीकी पत्नी हैं। बापूजी और बाके साथ अफ्रीका और हिन्दुस्तानमें रही हैं। काशीबा बहुत मीठे स्वभावकी हैं, मेरी बड़ी ताअी होती हैं। मैं तो कौटुम्बिक दृष्टिसे अुन्हें ताअीजी कहती थी। परन्तु आश्रमकी दूसरी लड़कियां काशीबा कहतीं और बा तो अुन्हें 'काशी बहू' कहकर मीठे लहजेसे बुलाती थीं।

आर्यनायकम्‌जी : ये नागपुर जेलमें थे और छूटकर सेवाग्राम आये थे। आशादेवी अुनकी पत्नी हैं। दोनों सेवाग्राममें तालीमी संघकी सुन्दर संस्था चला रहे हैं।

प्रभुदासभाअी और अंबाबहन : ये काशीबहनके पुत्र और पुत्रवधू हैं। प्रभुदासभाअी जेलमें थे। जेलमें अुन्होंने बहुत कष्ट सहन किया। अंबाबहन बाहर थीं। अुनके दुःखद समाचार कभी कभी बाको मिलते रहते थे। अिसलिअे बाने अुनका अुल्लेख किया है। प्रभुदासभाअी गांधीकी हाल ही में 'जीवनका प्रभात' नामक बड़ी दिलचस्प पुस्तक (गुजरातीमें) प्रकाशित हुअी है। अिसलिअे अुनका विशेष परिचय देनेकी जरूरत नहीं है।

कहाना : यह रामदासभाअीका पुत्र है। पू० बाका लाड़ला लड़का है। जैसा नाम है वैसे गुण हैं। तूफानी भी खूब और अूपरसे दादीमाका लाड़। फिर पूज्य कस्तूरबा जैसी दादीमाकी तालीम, अिसलिअे शरारती होनेके साथ होशियार भी खूब। अुसने बासे शिकायत की थी कि "आप नहीं हैं, अिसलिअे आश्रमके व्यवस्थापक कृष्णचन्द्रजी मुझे शाक काटनेको कहते हैं।" यद्यपि बा आश्रममें थीं, तब भी अुसे काम तो करना ही पड़ता था, परन्तु बैठे बैठे करनेका काम अुसे बिलकुल पसन्द नहीं था। अिसलिअे अुन्होंने पत्रमें कहानाका अुल्लेख किया है।

लीलावती बहन: यह बहन बचपनमें ही पू० बापूजी और बाके पास आ गअी थीं। अिसलिअे बा और बापूजीके लिअे तो वे पुत्रीके समान ही थीं। परन्तु अुन्होंने '४२ की लड़ाअीके कारण पढ़ना छोड़ दिया था। अिसलिअे वे अिस पसोपेशमें थीं कि अब क्या करूं? वे डॉक्टरीकी पढ़ाअी कर रही थीं और बाका हुक्म चाहती थीं। अिसलिअे बाने अुन्हें सन्देश कहलवाया।

सब आश्रमवासी और आश्रमके बालक: नागपुरमें अभी तक आश्रमकी बहनें जेलमें थीं — अुन्हें याद करके आशीर्वाद भेजे।]

सरकार पत्रोंको सेन्सर करती थी, अिसलिअे बा कोअी भी अैसा वाक्य नहीं लिखती थीं जिसकी सरकारको काटछांट करनी पड़े। "नागपुर जेलकी बहनें" शब्द लिखावें तो सरकार पत्र ही न जाने दे। अिसलिअे "नागपुरमें सब बहनोंको आशीर्वाद लिखना" वाक्य लिखवाया। पू० बापूजी और बा तो जेलके और सरकारके पुराने और परिचित मेहमान ठहरे, अिसलिअे वे वहांके सभी नियम भलीभांति जानते थे।

* * *

आज शामको जिन्नासाहबने बापूजीके साथ बातचीत करनेका सुझाव दिया था। और बापू पत्र लिखें अैसी सूचना 'डॉन' पत्रमें पढ़ी थी। बापूजीको अखबार तो सभी मिलते थे। अिस पर अुन्होंने जिन्नासाहबको पत्र लिखा था। अुसका सरकारकी तरफसे अुत्तर आया कि जब तक बापूजी अपना राजनैतिक आचरण न बदलें, तब तक सरकार अुनका पत्र जिन्नासाहबको नहीं दे सकती। परन्तु सरकार अुसको अखबारोंमें प्रकाशित कर देगी। अिस पर मैंने घूमते-घूमते बापूजीसे कहा, आप जानते तो थे कि सरकार आपका पत्र जिन्नासाहबको नहीं देगी, तब भी आपने पत्र क्यों लिखा? अिसमें आपका कितना अपमान हुआ? जिन्नासाहबको पत्र लिखना होता तो आपको लिखते।

बापूजी कहने लगे: "अिसमें मेरा अपमान नहीं हुआ। जिन्नासाहबने मुझे निमंत्रण दिया, अिसलिअे मुझे पत्र लिखना ही चाहिये।

अिससे मैं छोटा नहीं बन जाता। और छोटा बन जाअूं तो भी क्या हुआ? अैसा लगे कि परिणाममें कुछ न कुछ सेवा होगी, तो काम भले कितना ही हलका हो, तो भी अुसे करना सबका फर्ज है। हम (महादेवभाअीकी) समाधि पर बारहवें अध्यायका रोज पाठ करते हैं, अुसमें भगवान्‌ने क्या कहा है? —

> यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति।
> शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् यः स मे प्रियः॥
> समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
> शीतोष्णसुखदुःखेषु समः संगविवर्जितः॥
> तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येनकेनचित्।
> अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान् मे प्रियो नरः॥

"जिसे हर्ष-शोक, राग-द्वेष नहीं और जो अिसकी चिन्ता नहीं करता कि कोअी भी काम सफल होगा या नहीं और कार्यसिद्धिके लिअे किसी भी तरहकी आशा नहीं रखता — जैसे कि मैं यह काम करूंगा तो मुझे बड़ा पद मिलेगा या रुपया मिलेगा अथवा मेरी वाहवाही होगी, अिस प्रकार कर्तव्यके पीछे जिसकी किसी भी प्रकारकी आशा नहीं — जिसकी दृष्टिमें शत्रु-मित्र सभी समान हैं और मान-अपमान सब अेकसा है। भक्त तो सब कुछ भगवान्‌के भरोसे ही छोड़ दे। तभी हम भगवान्‌के सच्चे भक्त बन सकते हैं। फिर हम प्रार्थनामें बहुत बार यह भजन गाते हैं:

> साधो मनका मान त्यागो।
> काम क्रोध संगत दुर्जनकी, ताते अहनिस भागो।
> सुख दुःख दोनों सम करि जानै, और मान अपमाना,
> हर्ष शोक तै रहै अतीता, तिंन जगतत्त्व पिछाना।
> अस्तुति निन्दा दोअू त्यागे, खोजै पद निरवाना,
> जन नानक यह खेल कठिन है, कोअू गुरुमुख जाना।

(यह सारा भजन बापूजी बोल गये) "यह भजन बड़ा महत्त्वपूर्ण है, परन्तु यह गानेके लिअे नहीं है। अिसका अर्थ और मैंने तुझे गीताके

बारहवें अध्यायके श्लोकोंका जो अर्थ बताया वह अेक ही है। परन्तु अिसे जो लोग आचरणमें ले आते हैं, अुन्हें अनोखा आनन्द आता है। अिसके भीतर जो पड़ता है, वह महासुखका अनुभव करता है। लेकिन देखनेवालेको अुस पर दया आती है। मैं तो अिसके भीतर पड़कर अिसे आचरणमें अुतारनेके प्रयत्नमें लगा हूं, अिसलिअे आज जब यह खबर आअी कि सरकार जिन्नासाहबका पत्र अुनके पास नहीं पहुंचायेगी तो मुझे बड़ा आनन्द हुआ। लेकिन तू देखनेवाली है, अिसलिअे तुझे मुझ पर दया आती है कि बापूका कितना अपमान हुआ। और मुझे सीख देने आअी कि आप पत्र न लिखते तो अच्छा होता। परन्तु हरिका मार्ग वीरोंका मार्ग है, अिसमें कायरोंका काम नहीं। अिसलिअे अीश्वरको जो करना होगा करेगा, हम क्यों चिन्ता करके अुसके प्रति अपनी श्रद्धा कम करें, और अपने दिमागको अैसी झंझटमें फंसावें ?"

यह सारी बात मुझे बापूजीने बहुत ही रसपूर्वक और ज्ञान-पूर्वक समझाअी। अन्तमें बापूजीने मुझसे कहा: "यदि तू अैसे प्रश्न करती रहेगी, तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। अिससे तुझे ज्ञान तो प्राप्त होगा ही, साथ ही अीश्वरकी पहचान भी होगी; और जिस ढंगसे मैं तुझे तैयार करना चाहता हूं अुस ढंगसे तैयार कर सकूंगा। यह बात अिसीलिअे कहता हूं कि तुझे लगता होगा कि बापूजीको अैसी बात मैंने क्यों कही ? तेरे मनमें शायद यह विचार हो कि मैंने तो हंसते-हंसते यह बात कही थी, फिर बापूजीने मुझे अिस तरह अुलहना क्यों दिया ? अिसलिअे तुझे निःसंकोच बनानेको अितना कह देता हूं।"

सचमुच मुझे अैसा ही लगा था कि मैंने कहनेको तो कह दिया कि जिन्नासाहबको आपने पत्र क्यों लिखा ? अिसमें किसी हद तक मजाक भी था। लेकिन मजाकमें यह गाम्भीर्य आ गया और मनमें बापूजीसे प्रश्न पूछनेका पश्चात्ताप होने लगा। बापूजी मानो अुसे जान गये। अुन्होंने मुझे निश्चिन्त कर दिया, अिसलिअे मेरे आनन्दका पार नहीं रहा।

१५
बा और बापूका खेल

आगाखां महल, पूना,
४–६–'४३

डॉ० सुशीलाबहन और डॉ० गिल्डरने मेरी आंखें किसी अच्छे डॉक्टरको बतानेके लिअे हमारी जेलके सरकारी डॉक्टर कर्नल शाहसे कहा। अिसलिअे वे डॉ० पटवर्धनको लाये थे। डॉ० पटवर्धनने दो दिन तक आंखोंकी परीक्षा की। नम्बर बढ़ जानेके कारण नये चश्मेकी आवश्यकता बताअी और आंखोंमें डालनेकी दवा लिख दी। अिस पर बापूजीके पास कर्नल भण्डारीकी तरफसे यह सूचना आअी कि मेरे लिअे नया चश्मा लेना हो तो वह मेरे खर्चसे लिया जाय।

अिस समाचारसे बापूजीने कहा: "कैदीकी सम्हाल रखना तो सरकारका काम है। यदि आपको चश्मा दिलाना हो तो दिलाअिये। नहीं तो आंखें चली जानेकी जिम्मेदारी अपने सिर अुठाअिये। यह ठीक है कि मनुके पिता अुसके लिअे चश्मा खरीद सकते हैं। वे अितने गरीब नहीं हैं कि चश्मा न खरीद सकें। परन्तु अिस लड़कीकी सारी जिम्मेदारी अिसके पिताने मुझे सौंपी है। और यदि बीमार कैदीकी हालतमें न होकर बाहर हो और मान लीजिये वह गरीब स्थितिका हो, तो धर्मादा खातेसे भी चश्मा ले सकता है। कैदीकी सम्हाल रखनेका काम सरकारका है। अुसे खुराक, कपड़े वगैरा दिये जाते हैं। बीमार पड़े तब अुसकी सार-संभाल भी की जाती है। सरकार अैसा न करे और मनुष्य मर जाय अथवा अुसके शरीरमें कोअी दोष पैदा हो जाय, तो अिसकी जिम्मेदारी सरकारकी ही मानी जायगी। और अैसा हो तो सरकार लोगोंकी निगाहमें अवश्य गिर जायगी।" अिसलिअे कर्नल भण्डारी और बापूजीके बीच थोड़ीसी लिखा-पढ़ीके बाद सरकारने यह तय किया कि चश्मा दिया जाये।

आगाखां महल, पूना,
१६–६–'४३

अभी अभी बरसात हो रही थी, जिसलिये बाहर कुछ खेला नहीं जा सकता था। जिस कारण अेक बड़ी मेज पर जाल डलवाकर पिंग-पोंग खेलनेका कटेली साहबने सुझाव रखा। जिसके लिअे कोअी खास खर्च करनेकी जरूरत नहीं थी। जिसलिअे शामको अुसकी अुद्‌घाटन-विधि हुअी। अुद्‌घाटन बापूजीके हाथसे हुआ। अेक तरफ बापूजी थे और दूसरी तरफ बा। डॉ० गिल्डर साहब, मीराबहन और हम सब तो हाजिर थे ही। बापूजीने बल्ला हाथमें लेकर छोटीसी गेंदको — जो खास तौर पर पिंगपोंग खेलनेमें ही काममें ली जाती है — मारा। सामनेसे बाको मारना था। पता नहीं बापूजी कब यह खेल खेले होंगे? न तो बापूजी ठीकसे मार सके और न बा गेंदको लौटा सकीं। हमारा तो हंस-हंसकर दम निकल रहा था। ७४–७५ वर्षके बापूजी मानो कोअी खिलाड़ी खेल रहा हो जिस तरह बोले: "देखना, हां... मैं अभी धड़ाका करता हूं।" हम सबको खूब आनन्द आया। और शामको हम लोग जितने हंसे कि घूमनेकी भी सुध न रही। आजकल अनेक बार अकल्पित आनन्द लूटनेके अनुभवोंमें पूज्य बापूजी और पूज्य बाको पिंगपोंग खेलते देखनेका दृश्य तो अनोखा ही था।

बापूजी हालमें ही सरकार द्वारा प्रकाशित 'कांग्रेसकी जिम्मेदारी' नामक पुस्तिकाका जोरदार जवाब देनेके काममें जुटे रहते हैं। जिसके लिअे अुन्हें गंभीर विचार करनेमें दिमागकी बहुत शक्ति खर्च करनी पड़ती है। साथियोंसे सलाह-मशविरा करना पड़ता है, अुन्हें अपनी सत्य और अहिंसाकी सूक्ष्मता समझानेके लिअे चर्चायें करनी पड़ती हैं। अैसे गंभीर वातावरणको भी बापूजी क्षण भरमें विनोदी वातावरणमें बदल डालते हैं।

आगाखां महल, पूना,
५–७–'४३

आजकल मैं पूज्य बाके लिअे अेक साड़ी पर कसीदा काढ़ रही हूं। यह साड़ी असलमें तो मदालसाबहन (जमनालालजी बजाजकी पुत्री और

प्रो० श्रीमन्नारायण अग्रवालकी पत्नी)ने काढ़कर पूज्य बाके लिअे भेजी थी। परन्तु थोड़ा काम अधूरा रह गया था, अुसे पूरा करना है। पूज्य बा दोपहरको मेरे पास बैठीं और देखने लगीं कि मैं कैसे सुअी चला रही हूं। पांचेक मिनट बाद अुन्होंने कहा: "ला, अब मैं काढूं। तू मुझे सिखा; देख मुझे आता है या नहीं?" साड़ी पर हाथ-कते सूतका ही कसीदा भरना था। अिसलिअे कच्चा डोरा बार-बार टूट जाता था। बा बोलीं: "अिसे पहले बल दे दे तो नहीं टूटेगा।" बल देनेका मुझे आलस्य था, यह बा नहीं जानती थीं और न मैंने बताया था। मैंने कहा, "बा, अिसी तरह धीरेसे भरूंगी, तो काम चल जायेगा।" अिस पर वे तुरन्त बोलीं: "बल देनेमें आलस्य आता है क्या? अिसमें मेहनत तो पड़ेगी, परन्तु बार बार सुअीमें डोरा पिरोनेमें आलस्य नहीं आता? अिसमें वक्त कितना खर्च होता है? समयका हमारे पास अभाव नहीं है। फिर भी अिससे डोरा बेकार जाता है। तू जितना काढ़ेगी (लगभग दो गज काढ़ना था), अुसमें पांच पूनियोंका सूत नष्ट कर देगी। अैसी साड़ी मुझसे कैसे पहनी जायेगी? मदालसाकी बहुत समयसे अिच्छा थी कि अुसके हाथ-कते सूतकी साड़ी मैं पहनूं। अुस बेचारीने हाथसे मेहनत करके यह साड़ी भेजी है। मैं पहनूंगी और अुसे मालूम होगा, तो वह और श्रीमन् (श्रीमन्नारायण अग्रवाल, जिन्हें बा 'श्रीमन्' के नामसे पुकारती थीं) बड़े खुश होंगे।" आलस्य मेरे रास्तेमें आये बिना न रहा। अिसका मुझे पाठ मिल गया। और अन्तमें बल देनेके बाद ही बाने टांका भरना बहुत रसपूर्वक सीखा। पांचेक मिनिटमें तो अुन्हें आ भी गया। अिस पर मुझसे कहने लगीं: "मेरे जीमें आया कि देखूं तू बाहर बरामदेमें क्या कर रही है। निकली तो तुझे काढ़ते देखा। मैं न निकली होती तो पता नहीं अिस तरह तू कितना सूत बिगाड़ती? मेरे आनेसे सूत भी बच गया और मैं काढ़ना भी सीख गअी।"

अितनी अुम्रमें नअी कला सीख लेनेकी अुत्कंठा और अिससे भी अधिक सूत बचा लेनेके आनन्दकी चमक अुनके मुख पर साफ़ दिखाअी दे रही थी।

आगाखां महल, पूना,
८–८–'४३

'अंग्रेजो, हिन्दुस्तानसे चले जाओ' वाला अैतिहासिक प्रस्ताव पास करनेको आज पूरा अेक बरस हो गया। हमने यहां ध्वजवंदन किया। डॉ० गिल्डरने कराया था। हमने 'झंडा अूंचा रहे हमारा', 'सारे जहांसे अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' और 'वन्देमातरम्' गाया। जिसमें बा, बापूजी, हम सब और जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब भी शामिल हुअे। जमादार और सिपाहियोंने भी हिस्सा लिया। सबने साथ मिलकर गाया। और कैदियोंको भोजन कराया।

आगाखां महल, पूना,
९–८–'४३

प्रातः जल्दी ही यरवदा जेलसे जय-जयकारका नाद सुनाअी दे रहा था। पू० बापूजीको आगाखां महलमें आये पूरा अेक वर्ष हो गया। घूमते-घूमते बापूजी कहने लगे: "कौन जाने क्यों, महादेव मुझे कहता था कि सरकार पकड़ेगी। गिरफ्तारीका वारण्ट आ गया, पुलिस अफसर आ गये, तब भी मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। महादेव जब पुलिस अफसरको मेरे पास लाया, तभी भरोसा हुआ। आध घंटेका समय मांगा। महादेवने तो मानो दो महीने पहलेसे ही तैयारी करके सारी सामग्री जुटा रखी थी।"

बापूजी आज जिस प्रकार जब महादेव काकाको याद कर रहे थे, तब हमारा हृदय द्रवित हो अुठा।

तुलाअीका दिन था। पू० बापूजीका ११२ तथा बाका ९० पौंड वजन निकला। कोअी न घटा और न बढ़ा।

आगाखां महल, पूना,
११–८–'४३

बापूजीने आज मुझे सूचित किया कि, "महादेवकी पुण्यतिथि १५ तारीखको है। अुस समय तू सबके साथ गीतापाठ कर सके जिसलिअे

किसी भी तरह अठारहों अध्यायोंका अुच्चारण प्यारेलाल और सुशीलाके साथ मिल सके अिस तरह तैयार कर ले। अभी चार पांच दिन बाकी हैं। अिसलिअे जब जब मुझे या प्यारेलालजी या सुशीलाबहनको वक्त मिले, तब तब तू सब काम छोड़कर अुच्चारण सीखने बैठ जा।" अिसलिअे सारा दिन लगभग अिसीमें बीता।

दोपहरको पू० बाके पास अखबार पढ़ने नहीं गअी थी। परन्तु बरसातसे मारवाड़के अुपलेटा प्रदेशमें जो भारी हानि हुअी थी, अुसका जो ब्यौरा अखबारमें आया था, अुसे अूपर अूपरसे बाने पढ़ा। फिर मुझसे कहने लगीं: "ब्यौरा पढ़कर सुना। बादमें अपना काम करना।" ब्यौरेमें था कि मारवाड़में बीस-पच्चीस हजार आदमी बाढ़में बह गये, बेघरबार हो गये और पशुओंकी हानिका तो कोअी हिसाब ही नहीं है। अुपलेटा गांव बहनेसे बाल बाल बचा।

अैसी चौंकानेवाली बातें सुननेके बाद बा बोलीं: "अेक ओर बंगालमें भुखमरी; दूसरी तरफ हमारी अिस लड़ाअीमें कितने ही जवानोंके सिरोंका बलिदान हुआ होगा, कितने ही बच्चे मर गये होंगे; और तीसरी ओर यह प्रकृतिकी अतिवृष्टि! क्या भारतका भाग्य अैसा ही है?" बाकी तबीयत अच्छी नहीं थी। बिस्तर पर तकियेके सहारे बैठे बैठे सांस लेते हुअे दुःखी हृदयसे कहने लगीं, "अीश्वर बापूजीके सत्य और अहिंसाकी कब तक कड़ी परीक्षा करता रहेगा?"

आगाखां महल, पूना,
१४–८–'४३

पिछले दो तीन दिनसे पू० बाकी तबीयत अच्छी नहीं है; मन भी प्रफुल्ल नहीं रहता। अखबारोंके विस्तृत समाचार पढ़कर और सुनकर बहुत अुद्विग्न हो जाती हैं। बापूजी, डॉ० गिल्डर, मीराबहन, प्यारेलालजी, और सुशीलाबहन बापूजी पर सरकार द्वारा लगाये गये आरोपोंका अुत्तर देनेमें लगे हुअे हैं। वे सब मिलकर चर्चाअें करते हैं। ये चर्चाअें बापूजीके बैठनेकी जगह होती हैं। और बाका पलंग बापूजी बैठते हैं अुसके सामने ही रहता है। अिसलिअे

वे सब चर्चाअें सुनकर बहुत अुद्विग्न हो जाती हैं। अुनको लगता है कि "बापूजीने अैसा न तो कहा था और न किया था, फिर भी सरकार क्यों झूठे आरोप लगाती है? कहते हैं कि सत्यकी सदा जीत होती है। अमुक बात सत्य है, यह प्रत्यक्ष देखकर भी सरकार असे आरोप लगाये, तो अिसे क्या कहा जाय?" बापूजीकी सत्यतामें बाको यहां तक विश्वास था कि साथियोंमें होनेवाली अिस सारी मंत्रणाके जितने शब्द बाके कानों पर पड़ते और समझमें आते, अुन पर मन ही मन वे दुःखी होतीं और मेरे सामने प्रगट करतीं। अलबत्ता, किसीको अिसका जरा भी खयाल होना कठिन था कि पू० बा यह सब सुनकर अपने मनमें गंभीर विचार या भारी चिन्ता करती होंगी। मैं अिन चर्चाओंमें अितनी गहरी दिलचस्पी नहीं लेती थी। बहुतसी बातें तो मेरी समझनेकी शक्तिसे बाहर भी होती थीं। फिर भी मेरा काम करते करते अथवा पू० बा कुछ कहें तब, या अुनके पलंग पर बैठकर अुनकी सेवा करते करते कुछ सुननेको मिल जाता था। अिसके सिवा खास कुछ नहीं। मैं पू० बा और बापूजीकी सेवा करने, खाने-पीने और पढ़नेके सिवा तेरह-चौदह वर्षकी अुम्रमें गहरी राजनैतिक बातोंमें क्या समझूं? अिसलिअे अुनकी चर्चामें कोअी रस नहीं लेती थी। अिसका आज दुःख और पश्चात्ताप भी है कि १९४२–४३ के दंगोंके लिअे कांग्रेसको जिम्मेदारीके आरोपका अुत्तर देनेमें पू० बापूजीको लगभग दो महीने लग गये होंगे; अुस पर भी अन्तमें साथियोंके साथ जो अैतिहासिक चर्चाअें होतीं, अुनमें बापूजी जो मनोव्यथा अुडेलते अुसमें भाग लेनेका मुझे सौभाग्य नहीं मिला। फिर भी पू० बाके ये करुण अुद्गार अपनी डायरीमें सहज ही मैंने लिख लिये थे और अब अुन्हीं परसे बापूजीकी अुस समयकी मनोव्यथाकी कल्पना करके आश्वासन प्राप्त करना होगा।

ठीक ७॥ बजे रोजके नियमानुसार बापूजी समाधि पर पहुंच गअे। मैं नहीं गअी अिसलिअे बाने कहा: "तू आज न जाय यह मुझे अच्छा नहीं लगता। फूल चढ़ाकर प्रणाम करना और गीतापाठ (गीता का बारहवां अध्याय वहां रोज बोला जाता था।) करके चली आना। अितनी देरमें मुझे कुछ नहीं हो जायगा। मेरे पास काढ़ा रख जा, मैं खुद पी लूंगी।"

मैंने कहा, "डॉक्टर साहब (डॉ० गिल्डर) और सुशीलाबहनने खास तौरसे कहा है कि बारी बारीसे बाके पास किसी न किसीका हमेशा रहना जरूरी है। अिसलिअे अुन लोगोंके आनेके बाद में प्रणाम कर आअूंगी।"

मुझसे कहा, "तू कहना कि मुझे बाने भेजा है। अितनी देरमें मुझे कुछ भी नहीं होनेवाला है, तू जा।"

मैं समाधि पर गअी तब श्लोक बोले जा रहे थे। सबकी आंखें बंद थीं। लेकिन मेरा स्वर अुसमें मिला अिससे बापूजीने जरा आंखें खोलीं, फिर बंद कर लीं। अगरबत्तीका सुगंधित धुआं चारों तरफ फैल रहा था। मीराबहन और सुशीलाबहन दोनों ठहरीं कलाप्रेमी, अिसलिअे 'डेलिया' और दूसरे फूलोंसे अुन्होंने सुन्दर सजावट की थी। जिस भक्तिभावसे महादेव काका बापूजीके सम्मुख खड़े रहते थे, ठीक अुसी भक्तिभावसे आज बापूजी दोनों हाथ जोड़कर प्रभातमें सूर्योदयकी सुनहरी किरणोंके बीच आंख बंद करके गंभीर मुखमुद्रामें खड़े थे। अुस पर गीताजीके बारहवें अध्याय — भक्तियोगका पाठ हो रहा था। अिससे मेरे मनमें सहज यह खयाल आया कि अिस समय किसे किसका भक्त कहा जाय? महादेव काका बापूजीके भक्त या बापूजी महादेव काकाके भक्त?

जैसे ही श्लोक समाप्त हुअे, पहला प्रश्न बापूजीने किया, "क्यों, तू आ पहुंची? बाने तुझे भेजा होगा, अैसी है बा। आज महादेवकी बरसी है। अुसके कारण तू यहां न आ सके, यह बाको कैसे सहन होता? यह बताता है कि बाके हृदयको पहुंचा हुआ महादेवकी मृत्युका आघात अभी तक वैसा ही बना हुआ है।"

में समाधिसे सीधी बाके पास आयी। बापूजीके साथ सुशीला बहन लौटीं। जिस कमरेमें महादेव काकाके शवको नहलानेके बाद गीतापाठ और प्रार्थनाके लिअे रखा गया था, अुसमें गीतापारायण करना था। अिसलिअे मीराबहन अुसे सजाने आयीं। अुस कमरेका सारा फर्नीचर निकलवा दिया। कमरा साफ किया और जेलकी अेक चादर बिछा दी। जिस तरह अेक वर्ष पहले महादेव काकाका मृत शरीर सुलाया गया था और जिस ओर अुनका सिर था अुस ओर फूलोंसे बड़े कलामय ढंगसे ॐ बनाया, पैरोंकी तरफ ✝ (क्रॉस) बनाया, अगरबत्ती सुलगाअी और सारा वातावरण पवित्र कर दिया। अिस बीच बापूजी और हम सब नहा-धोकर निपट गये, अिसलिअे अेक थाली और चम्मच लेकर ठीक दस बजे घंटी बजाअी। पू० बाने गीतापारायण हो तब तक घीका दिया जलानेको कहा था, अिसलिअे मैंने घीका दिया जलाया। अिस प्रकार सब प्रार्थनामें बैठे। कटेली साहब (हमारे सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब) भी मौजूद थे। सबके बैठ जाने पर सदाकी भांति प्रार्थनाके रोज बोले जानेवाले श्लोक शुरू हुअे।

सबसे पहले जापानी श्लोक, 'नम्यो हो रेंगे क्यो' बोला गया। (अिस श्लोकका अर्थ होता है, बुद्ध भगवानको मेरी ओरसे नमस्कार।)

अिसके बादका श्लोक था:

अीशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

अिस श्लोकके बाद कुरान शरीफकी आयत बोली गअी। बादमें जरथोस्त गाथा डॉ० गिल्डर साहब बोले।

(नम्यो, अीशावास्य, कुरान शरीफकी आयत तथा जरथोस्त गाथा बापूजीकी सुबह-शामकी दैनिक प्रार्थनामें सदा बोले जाते थे। अुनका अर्थ आश्रम-भजनावलिके नये संस्करणमें दिया गया है।)

अुपरोक्त श्लोक बोले जानेके बाद 'वैष्णवजन तो तेने कहिये' भजन सुशीलाबहनने और मैंने शुरू किया। परंतु अिस भजनकी पहली ही कड़ी गाने पर गला भर आया। प्यारेलालजीने भजनका सुर संभाल लिया और मुश्किलसे भजन पूरा किया।

भजनके बाद मीराबहन कमरेके अेक कोनेमें तानपूरा लेकर बैठ गअीं। अुन्होंने तानपूरेकी मीठी झनकारके साथ अपनी पहाड़ी आवाजमें रामधुन गवाअी।

बापूजी और बा अपनी कमजोर तबीयतके बावजूद आंखें बन्द करके बैठे थे। अेक तरफ दिया जल रहा था, फूलोंका ॐ और ✝ (क्रॉस) का पवित्र चिन्ह थे, तथा अगरबत्तीका सुगंधित धुआं सारे वातावरणकी पवित्रताके साक्षीके रूपमें फैल रहा था। बा और बापू पालथी मारकर आंखे बन्द किये सीधे दोनों हाथोंकी अुंगलियां स्वाभाविक रूपमें ही जोड़कर ध्यानमग्न बैठे थे। बड़ा हृदयद्रावक दृश्य था। रामधुनके बाद मीराबहनने महादेव काकाका प्रिय अंग्रेजी भजन गाया :

When I survey the wondrous Cross,
On which the Prince of Glory died,
My richest gain I count but loss,
And pour contempt on all my pride.
See from His head, His hands, His feet,
Sorrow and love flow mingling down;
Did e'er such love and sorrow meet,
Or thorns compose so rich a crown?

अिस भजनके बाद गीतापारायण शुरू हुआ। सारे गीतापाठमें अेक घंटा दस मिनट लगे। गीतापाठके बाद —

विपदो नैव विपदः संपदो नैव संपदः।
विपद्विस्मरणं विष्णोस्संपन्नारायणस्मृतिः॥

अिस श्लोकके बाद सब काम पूरा हुआ। बा निश्वास लेकर बोलीं : "पिछले साल अिस समय तो महादेवकी चिता जल रही थी और दुनियामें केवल अुसका नाम रह गया था।"

प्रार्थनाके बाद सुशीलाबहनने बापूजीको गरम पानी और शहद दिया। मैंने बाको पानी दिया। बादमें हम दोनों कैदियोंके लिअे बन रहे भोजनको देखने गअीं। हम दोनोंने भोजन बनानेमें सहायता दी।

भोजन सब तैयार हो गया, तो सब कैदियोंको अेक बजे खानेको बैठाया। ३० कैदी थे। बा अिन ब्राह्मणस्वरूप कैदियोंको खिलाने अेक कुरसी पर बैठीं। भोजनमें खिचड़ी, कढ़ी, शाक, हलवा और पकौड़ी बनाअी थी। सबसे पहले हरअेककी दस्तेकी चमकती हुअी तसलीमें कड़छीसे कांपते हाथों बापूजी हलवा परोसने लगे। बाकी चीजें डॉ० गिल्डर, मीराबहन, प्यारेलालजी, सुशीलाबहन और मैंने बारी बारीसे परोसीं।

पू० बाका ध्यान ठेठ सिरे पर गया, जहां मैं पकौड़ियां परोसना भूल गअी थी। दूसरेको परोसना शुरू किया कि मुझे टोका: "देख, अुस कैदीको तूने पकौड़ियां नहीं परोसीं और यहां कैसे परोसना शुरू कर दिया? परोसना भी नहीं आता? कौन रह गया, अिसका ध्यान रखना चाहिये न?" (जरा नाराजीसे बोलीं।)

खांसीके कारण और कल दिलका जो दौरा हुआ था अुसकी कमजोरीके कारण अशक्त बनी हुअी बाका ध्यान कहां पहुंचा? और मैं परोसनेवाली होने पर भी आखिरी आदमीको भूल गयी, अिससे मनमें खूब शरमाअी।

कुछ कैदी तो बीस बीस वर्षकी सजा पाये हुअे थे। वे कहते कि हमने पाप करते समय थोड़ा सोच-विचार किया होगा, अिसीलिअे अिन देवपुरुषके समान महात्माजी और माताजीके हाथकी प्रसादी खाकर हम पवित्र हो रहे हैं। अिस प्रकार अिन कैदियोंको अितनी आजादीसे बा और बापूजीके साथ रहनेका सौभाग्य मिल गया था और बाहरके लोगोंके लिअे बापूजीकी चरणरजके लिअे तरसते रहने पर भी वह संभव नहीं था। और जब कैदी बा और बापूजीको प्रणाम करते और अुन दोनों विरल विभूतियोंके पवित्र आशीर्वाद देनेवाले हाथ कैदियोंकी पीठ छूते, तब कैदियोंके चेहरों पर अपने आपको धन्य समझनेका भाव दिखाअी दिये बिना कैसे रहता?

अिस प्रकार बा, बापूजी और कैदियोंके बीचका यह पवित्र प्रसंग शब्दोंमें चित्रित करनेका काम यद्यपि मेरे लिअे बहुत ही कठिन है, फिर भी अुस पवित्र दृश्यकी मैं साक्षी थी, अिसलिअे थोड़ेमें यह

कल्पनाचित्र यहां खींचनेका मैं प्रयत्न कर रही हूं। अिसलिअे स्वभावतः ही मेरी आंखोंके सामने यह दृश्य खड़ा हो जाता है और मुझे लगता है कि आज जव वे दोनों विभूतियां देहरूपमें संसारसे अदृश्य हो गअी हैं, तव जितने कैदियोंने अिस प्रकार वा और वापूजीके हाथोंसे परोसी हुअी प्रसादी खाअी होगी, जिनकी पीठ पर अुनके प्रेमपूर्ण हाथ आशीर्वादके रूपमें फिरे होंगे, अुन अपराधी कैदियोंके मनमें कितना आत्मसंतोष होगा? क्योंकि हत्या करके सजा पाये हुअे कैदियोंके भाग्यमें महात्माओंके अितने समीप रहना आम तौर पर दुर्लभ ही होता है। परंतु अिस दृश्यकी कल्पना करनेवालोंके मनमें यह श्रद्धा सहज ही जमे विना नहीं रहेगी कि दुनियामें दुर्लभ भी सुलभ हो सकता है।

कैदियोंको खिलानेके वाद वा और वापूजीने थोड़ा आराम किया। मैंने दोनोंके पैरोंमें घी मला। अितनेमें ३। वज गये। ठीक ३।। से ४।। वजे तक १ घंटा सामूहिक कताअी-यज्ञ रखा था। अिसलिअे सबने जैसे सवेरे प्रार्थना की, अुसी तरह अिस १ घंटेमें मौन लेकर काता।

ठीक ५।। वजे वापूजीने अुपवास छोड़ा। (सबने २४ घंटेका अुपवास किया था।) वापूजीके भोजन कर लेनेके वाद हम सबने खाया, घूमे, सदाकी भांति सायंकालकी प्रार्थना हुअी और प्रार्थनाके वाद रविवार होनेके कारण वापूका सोमवारका २४ घंटेका मौन-व्रत शुरू हुआ।

मौन भी सामान्यतः वहुतसे व्रतोंमें से अेक व्रत है और वह मौनदिन भी कुदरती तौर पर आज ही पड़ा, अिसलिअे सारे दिनमें भक्तको अर्पण किये गये पवित्र श्राद्धको कुदरतने अन्तमें सोते समय पूरा करा दिया।

१७

मेरी रिहाओीका हुक्म

आगाखां महल, पूना,
३–९–’४३

पिछले कुछ दिनोंसे मुझे बुखार रहता था और अुसके कारण वजन घट गया था। आज वजन लेनेका दिन था। मेरा वजन ४ पौंड घट जानेसे मुझे सब चिढ़ाने लगे कि अब तुझे सरकार अवश्य छोड़ देगी। और कटेली साहब अेक कागज टाअिप करके और अुस पर झूठे हस्ताक्षर करके मुझे छोड़नेका हुक्म भी ले आये। डॉ० गिल्डर, कटेली साहब, प्यारेलालजी और सुशीलाबहन सब अेक हो गये। मैं अकेली ही थी। मैंने सचमुच ही मान लिया और जैसे सब बालक निरुपाय होने पर रोनेका आश्रय लेते हैं, वैसे अेक कोनेमें बैठ कर मैं रोने लगी। पहले तो हिम्मत रखी, परंतु जब सब लोग कहने लगे: "अब रोयेगी, अब रोयेगी" तो मैं सचमुच रो पड़ी। अिस प्रकार लगभग आध घंटे तक अुन लोगोंने मुझे तंग किया। आध घंटे बाद सब हंसते हुअे बापूजीके पास गये। बापूजी कहने लगे, "जो चिढ़ता है अुसे सब चिढ़ाते हैं। यह तो झूठा कागज है, तुझे सब बना रहे हैं। तू रोती है अिसलिअे अिन सबको आनंद आता है।"

मुझे थोड़े दिनसे सुशीलाबहन अिंग्लैंडके अितिहास और भूगोलका (अंग्रेजीकी छठी क्लासका अभ्यासक्रम) विषय शामको ६ से ६–२० तक बारी बारीसे पढ़ाती हैं। आज मैं काममें लगी हुआी थी। ६–१० हो गये अिसलिअे १० मिनिटमें क्या पढ़ा जा सकता है, यह सोचकर मैं वहां न गअी और दूसरा काम करने लग गअी। और सदाकी भांति ६॥ बजे बापूजीके साथ घूमने चली गअी। बापूजी कहने लगे:

"अेक बार अपने मनमें जो निर्णय कर लिया हो अुसे छोड़ना नहीं चाहिये। तभी हमारे जीवनकी प्रगति होती है। तू काम पूरा न कर पाती हो अथवा किसी दिन कदाचित अपवादके रूपमें नियम तोड़ना पड़े, तो अुस दिन आकर मुझसे कह दिया कर। जिससे तू

नियम पालना सीख जायगी। अिसी तरह वक्तकी पाबन्दी सीखनी चाहिये। अैसी शिकायत है कि तू खानेके लिअे भी ठीक ५॥ बजे नहीं जाती और पांच-सात मिनिटमें ही खा लेती है। पांच-सात मिनिटमें भला क्या खाती होगी? यों कहना ज्यादा ठीक होगा कि तू जैसे तैसे खाना निगल लेती है। मैं सोच ही रहा था कि अिस लड़कीको मलेरिया छोड़ता क्यों नहीं? आज मुझे पता चला कि तू बिना चबाये जैसे तैसे खा लेती है, अिसीलिअे बीमार पड़ा करती है। खानेमें ठीक आधा घंटा लगाना ही चाहिये। अीश्वरने तुझे दांत सदुपयोगके लिअे दिये हैं, अीश्वरका काम करनेके लिअे दिये हैं। दांतोंसे अच्छी तरह चबाया जाय, और परिणामस्वरूप तन्दुरुस्ती अच्छी रहे और शरीर अच्छा हो तो ही सेवा हो सकती है। अिसलिअे हमें हरअेक बात अिस भावनासे करनी चाहिये कि सब कुछ अीश्वरके कामके लिअे करना है। साथ ही जैसे तू कोअी नया कपड़ा अिस्तेमाल न करे और रख छोड़े तो वह किसी समय सड़ जायगा, अुसी तरह दांतोंका सदुपयोग नहीं करेगी तो वे भी सड़कर गिर जायंगे। मैं भी यदि तेरे दांतोंकी तरह अपने शरीरसे अिस प्रकार घूमनेका व्यायाम न कराअूं, तो जल्दी ही बिना मौत मर जाअूं। खुद होकर बिना मौत जल्दी मरना भी पाप है, क्योंकि बिना मौत तो हम अपनी पूरी संभाल न रखें तो ही मरते हैं। (मानसिक और शारीरिक सावधानी दोनों मेरी दृष्टिमें अेक हैं।) और सेवा करनेके लिअे अयोग्य ठहरना यह तो पाप ही हुआ न? थाली पर खाने बैठें तब और कौर मुंहमें डालनेसे पहले अीश्वरकी प्रार्थना करनी चाहिये। अीश्वर हमें खानेको देता है, अतः अुसका अुपकार मानकर खाना चाहिये। अैसे सब नियम तू पालेगी तो तुझे मुंह बिगाड़ कर कुनैन और अरंडीके तेलकी खुराक पीनी पड़ती है, वह न पीनी पड़ेगी और तेरा शरीर मजबूत हो जायगा। यह याद रखना कि आज तो कटेली साहब झूठा हुक्म लाये थे, परंतु अधिक बीमार हो जायगी तो सच्चा हुक्म भी आ जायगा।"

और दूसरे हफ्ते सच्चा हुक्म आ भी गया।

* * *

आगाखां महल, पूना,
५-९-'४३

आज पारसियोंका नया वर्ष है। अिसलिअे सुशीलावहनने प्रार्थनाके वाद तुरंत डॉ० गिल्डरके कमरेके पास चौक पूरा। वाहर आंगनमें भी पूरा। ६॥ वजे कटेली साहव फूलोंके हार और दूसरी भेंटें लेकर डॉ० साहवको देने नीचे आये। वा, सुशीलावहन और मैंने अुन दोनोंको वारी वारीसे तिलक किया और सूतके हार पहनाये। वादमें अुन दोनोंने वा और वापूजीके पैर छूअे। चाय पीकर हम सव वैडमिंटन खेलनेको नीचे अुतर रहे थे कि अितनेमें वाने मुझे वुलाकर कहा: "दोनोंके लिअे आज कोअी मिठाअी वनाना।" दूसरी वहुत सी मिठाअी थीं, अिसलिअे दोनोंने मना कर दिया। अिस पर वा कहने लगीं: "आप क्या जानें? शकुनकी तो वनानी ही चाहिये न?" दोनों चुप हो गये वाने मुझे पूरणपोली वनानेको कहा।

जव मैं खेलकर लौटी और वाके सिरमें मालिश करने लगी, तव वे वोलीं: "देख, वेचारे कटेलीको भी आज वारह महीनेके त्यौहारके दिन अपने वालवच्चोंसे अलग रहकर हमारी तरह जेल ही भोगनी पड़ी रही है। गिल्डरकी तो कोअी वात नहीं। ये दोनों वाहर होते तो जैसे और सव नववर्षके दिन आनंद मनाते हैं वैसे ये भी मनाते। अिसलिअे हम कुछ न वनायें तो ठीक नहीं होगा। अतः मेज पर डेढ़ वजे खाने वैठें, तव गरम गरम पूरणपोली वनाना।"

अशक्त वा अिन दोनोंको खिलानेके लिअे डेढ़ वजे मेज पर आअीं और आग्रहपूर्वक भोजन कराया।

असल वात यह है कि जवसे वापूजी और वाने अपना जीवन-परिवर्तन किया, तवसे अुनके लिअे सव दिन अेकसे हो गये थे। फिर भी वा दूसरोंके त्यौहारोंका प्रसंग अिस प्रकार व्यावहारिक रूपमें साध लेती थीं।

आगाखां महल, पूना,
१६-९-'४३

आज दोपहरको जब मैं बापूजीके पैरोंमें घी मल रही थी तब कटेली साहब आये। मुझसे कहने लगे, "अिस बार तो सचमुच तुम्हें छोड़नेका हुक्म आया है।"

मैंने कहा, "आप सबको अिसके सिवाय और कोअी काम ही नहीं है। मुझीको चिढ़ाना आता है? आप भले ही मजाक करें, अब मैं पहलेकी तरह रोनेवाली नहीं हूं!"

अिस प्रकार बात चली अितनेमें तो मुझे चिढ़ानेवाली मंडली जमा हो गअी। कटेली साहबने बापूजीके हाथमें कागज रखा, अिसलिअे मैंने सोचा कि मजाक ही होता तो बापूके हाथमें झूठा कागज हरगिज न रखते। क्या मुझे सचमुच छोड़ दिया जायगा? मैं बोल अुठी और छूटनेकी घबराहट फिर पैदा हो गअी।

सब कहने लगे: "चलो, अब मनुको विदाअी देनी पड़ेगी।"

पू० बा भी पलंग परसे वहां आ गअीं, जहां बापूजी नीचे सो रहे थे। बोलीं, "तो मनुबाअी चली जायगी? मुझे पत्र लिखती रहना। अब सीधी कराची जाकर पढ़ना। सबसे अेक बार मिल आना। बेचारी तेरी बहनें तुझसे मिलनेको कितनी तरस रही होंगी? वे खुश हो जायंगी। तूने हमारी बहुत सेवा की है। परंतु सरकारके आगे हमारी क्या चले?"

यह पिछला वाक्य बा बोलीं कि बापूने कहा: "परंतु अिसमें तो अैसा है कि तुझे सी० पी० सरकार छोड़ रही है। तू सी० पी० सरकारकी कैदी है; नागपुरमें दूसरी बहनोंको छोड़ रहे होंगे अिसलिअे तेरा हुक्म यहां भेजा है। परंतु यदि तुझे यहां रहना हो तो तुझ पर जो अंकुश हैं वे जारी ही रहेंगे। और छूटना हो तो किसी भी समय छूट सकती है।"

मैंने कहा: "मुझे नहीं जाना।" मेरे आनंदका तो पार नहीं था। अैसा हुक्म होगा, यह कल्पना कैसे हो सकती थी? मनमें मैं

अिस डरसे कांप रही थी कि बा बापूकी पवित्र सेवाका अैसा अलभ्य अवसर हाथसे छिन जायगा। मैंने बादमें साहस करके कहा: "आप सब भले ही मजाक कीजिये। पहली बात तो यह है कि मुझे स्वप्नमें भी खयाल नहीं था कि मुझे आगाखां महलमें रहनेको मिलेगा। पूर्वजोंके पुण्यबलसे और पू० बा तथा बापूजीके प्रेमके आकर्षणसे यहां आ गअी। अीश्वर कोअी अैसा अनुदार नहीं है कि अैसी अमूल्य सेवाका अवसर देकर तुरंत ही वापस ले ले। तब तो अीश्वर पर मेरी जरा भी श्रद्धा न रहती। परंतु हुक्म भी कितना बढ़िया है? कोअी किसीका भाग्य थोड़े ही छीन सकता है?"

बा तो बहुत ही प्रसन्न हुअीं। कटेली साहब कहने लगे: "यह तो तू बहुत रोयेगी, अिसीलिअे अितनी राहत मांगी थी।" (मजाकमें ही कहा।) सब हंस पड़े।

फिर थोड़ी देरमें बा बोलीं: "तू अितनी छोटी अुम्रमें क्यों हमारे पीछे परेशान होती है? बाहर जायगी तो ज्यादा पढ़-लिख सकेगी।"

मैंने आखिरी जवाब दे दिया, "मुझे यहां जो शिक्षा मिलती है, वैसी संसारमें कहीं भी नहीं मिलेगी। मुझे अिस तरह नहीं जाना है।"

बा बोलीं: "तेरे जीमें क्या है, यह जाननेको मैं तुझसे जिरह कर रही थी। अिसमें रोनेकी क्या बात है?"

कटेली साहबने बापूजीसे कहा: "मनुके पिताजीसे पुछवाना पड़ेगा न?"

बापूजी बोले: "अिस लड़कीका पिता यानी मेरा भतीजा या बेटा। दोनों अेक ही बात है। अुसका मुझ पर अगाध विश्वास है। अिस लड़कीके लिअे जो मेरी अिच्छा है वही अुसकी अिच्छा है। अुसे मैं अच्छी तरह जानता हूं। लड़कियोंको अितनी स्वतंत्रता देनेवाले बहुतसे पिताओंमें वह अेक है। अितनी छोटीसी मनुको जेल जानेसे भी अुसने नहीं रोका। जहां तक मैं जानता हूं मनु और अिसकी बहनोंको अिनके मां-बापने कभी किसी बातकी कमी नहीं रहने दी। अिसलिअे अिसके पिताके बारेमें मनु और मैं दोनों निश्चिंत हैं।"

बापूजीने फिर पूछा कि तेरा थोड़ा भी विचार बाहर जानेका हो तो कह देना। मैंने कहा, अब मुझे पूछेंगे तो मैं अुत्तर ही नहीं दूंगी। अिन सब बातोंके कारण बापूजीको सोनेमें दो बज गये। ढाअी बजे अुठकर अेक रद्दी कागज पर पेंसिलसे कटेली साहबको देनेके लिअे मुझे नीचेका मसौदा बना दिया। वह मसौदा अैतिहासिक मसौदेके रूपमें मेरे पास आज भी अुसी हालतमें सुरक्षित है।

"आदरणीय कटेली साहब,

"आपने मुझे खबर दी है कि सी० पी० सरकारकी कैदमें होनेके कारण वह मुझे छोड़ना चाहती है। परन्तु यदि मैं अपनी मरजीसे यहां रहना चाहूं, तो वर्तमान अंकुशोंके नीचे रह सकती हूं। अिसका जवाब आपने मुझसे मांगा है।

"मेरा जवाब यह है कि यहां मैं पू० कस्तूरबाकी सेवाके लिअे ही आअी हूं और जब तक अुनकी मरजी हो तब तक यहां रहना चाहती हूं और वर्तमान पाबन्दियोंको स्वीकार करती हूं। मैं समझती हूं कि यदि मेरी अिच्छा छूटनेकी हो, तो मैं छूट कर जा सकती हूं। अिसलिअे मेरे पिताजीकी अिच्छा जाननेकी बात नहीं रह जाती। परन्तु जब अुन्हें पत्र लिखूंगी, तब अुन्हें यह बता दूंगी कि अभी मेरी अिच्छा यहीं रहनेकी है।"

यह मसौदा बापूजीने लिख दिया और मैंने अपने अक्षरोंमें लिखकर कटेली साहबको सौंप दिया। अिस मसौदेमें अंतिम वाक्य अिसीलिअे लिखा कि हमारे पत्र बम्बअीके गृहविभागके अफसर श्री आयंगर पास करें तभी जाने दिये जाते हैं, नहीं तो काट-छांट करते हैं। सेंसर करते वक्त वे काट न दें अिसीलिअे मैंने यह सफाअी कर दी। मैंने तो जैसे बड़ी आफतसे बच जानेका आनन्द अनुभव करके सच्चे हृदयसे अीश्वरका अुपकार माना। बापूजीने यह मूल मसौदा मुझे अपने ही पास रख छोड़नेकी सूचना की और डायरीमें अुसकी नकल कर लेनेको कहा।

अिस सारे काममें दोपहरकी सुशीलाबहनके पास अंग्रेजी नहीं पढ़ी जा सकी। अंग्रेजीका वर्ग न छूटे और नियमकी रक्षा हो सके, अिसके लिअे बापूजीने मुझे अपने पास पढ़नेके ४॥ से ५ बजेके समयमें से १५ मिनट सुशीलाबहनसे पढ़ लेनेको दिये। अिससे अंग्रेजीका वर्ग भी नहीं छूटा और संस्कृतका वर्ग भी (जो मैं बापूजीसे पढ़ती थी) नहीं छूटा। और ५ से ५॥ तक बाको भागवत सुनानेके कार्यक्रम पर ठीकसे अमल हो सका। "भले सब कुछ छूट जाय, परन्तु बाको भागवत सुनानेके समयमें से अेक भी मिनिट न तो तुझे किसीको देना चाहिये और न किसीको तेरा अेक मिनिट लेना चाहिये; क्योंकि बाके लिअे वह अेक खुराक है। बा रामायण और भागवत सुनकर ही आनन्द प्राप्त करती है," बापूजीने कहा।

१८

'वा अैसी है!'

आगाखां महल, पूना,
१७-९-'४३

आज बाने मणिलाल काकाको अेक तार दिया, (मणिलालभाअी गांधी बापूजीके दूसरे पुत्र हैं।) क्योंकि अुनका बहुत समयसे दक्षिण अफ्रीकासे कोअी पत्र नहीं आया था। और वहां लड़ाअी तो समय समय पर किसी न किसी बातको लेकर होती ही रहती है, अिसलिअे बाको बड़ी चिन्ता हो रही थी। तार दक्षिण अफ्रीका भेजनेके लिअे मैंने कटेली साहबको दिया। परन्तु शामको वे बापूजीके पास आये और यह हुक्म लाये कि तारके दाम कस्तूरबासे लिये जायं।

बापूजी कहने लगे: "बेचारी बाके पास तो अेक पाअी भी नहीं है। चाहिये तो अुसकी अेकाध खादीकी साड़ी बेच दीजिये। तीनेक रुपये तो जरूर मिल जायेंगे।"

सब खिलखिलाकर हंसने लगे। कटेली साहब लौट गये और अिस बारेमें सरकारको लिख भेजा। अन्तमें जवाब आया कि आगाखां महलके खर्चमें से अितनी रकम नामे लिख दी जाय। बापू हंसते-हंसते बोले: "सरकार जानती नहीं होगी कि पत्थरसे पानी निकले तो ही मेरे पाससे रुपया निकले। असलमें अैसी बातें पूछी ही नहीं जानी चाहिये।"

अुपरोक्त मनोरंजक प्रसंगके आधार पर बापूजीने बासे कहा: "मुझे तो लगा कि तेरी अेकाध साड़ी बेचनेको देनी पड़ेगी। परन्तु यह नौबत नहीं आअी! मेरे कच्छके तो (बापूजी २॥ गज लम्बा और ३२ या ३६ अिंच अंर्जका कच्छ पहनते थे।) तार जितने दाम कोअी नहीं देगा, परन्तु साड़ीके तार जितने दाम मिल जाते।" यों कहकर थोड़ी देर बाको हंसाया।

कांग्रेसके विरुद्ध लगाये गये आरोपोंका जवाब बापूजीने भिजवा दिया था। अुसकी छोटी-सी पहुंच सर टॉटनहामकी तरफसे मिली कि "आपका जवाब मिल गया। जवाब देनेका विचार किया जा रहा है।"

यह पत्र पू० बा बैठी थीं तभी आया था। अिसलिअे वे कहने लगीं: "आप सबने रातको जागरण कर करके अितना बड़ा अुत्तर दिया है। परन्तु जिसे सच-झूठसे कोअी मतलब नहीं अुस पर आपके अुत्तरका क्या असर होगा? आपने यह लड़ाअी छेड़ी, अिसलिअे बेचारे कअी लोगोंको मार डाला। व्यर्थ अैसे पत्र लिख लिखकर सरकारसे अपना अपमान कराना है!"

बापूजी बोले: "अिसमें हमारा अपमान बिलकुल नहीं है। सत्यका कभी अपमान नहीं होता।"

बा: "यह बात सच है कि सत्यका अपमान नहीं होता, मगर देखिये तो अुपवासके दिनोंमें सरकारने कैसे पत्र लिखे? अभी तक भी वह मानती है कि अुसकी कोअी भूल है?"

अन्तमें बापूजीने हंसते हंसते कहा: "अेक अुपाय है। चल, आज मैं और तू सरकारको माफीनामा लिख दें।"

बा चमककर बोलीं: "बस, रहने दीजिये, में क्यों माफी मांगूं? में मानती ही नहीं कि मैंने कोअी अपराध किया है।"

बापू: "तो में माफी मांग लूं?"

भोली बा और भी चिढ़ीं: "अिस मनु और सुशीला जैसी लड़कियां, अिनसे भी छोटी कितनी ही फूलसी सुकुमार लड़कियां और लड़के जेलोंमें पड़े हैं और आप माफी मांगेंगे?"

बापूजी अिस तरह गंभीर मुंह बनाकर बाका अुत्तर सुन रहे थे, मानो सचमुच ही माफीकी बात कर रहे हों। बा मानती थीं कि बापूजीके स्वाभिमान — सत्यकी किसी भी कीमत पर रक्षा होनी चाहिये, और कदाचित् माफी मांगें तो कितनी बदनामी हो? अैसी बदनामी बा सहन ही कैसे कर सकती हैं?

वे चिढ़कर जोरकी आवाजमें बोलीं, अिसलिअे अुन्हें खांसी आ गअी। मैंने बापूजीसे कहा: "आपने बाको क्यों चिढ़ा दिया? देखिये, कैसी खांसी अुठ आअी है!"

बापूजी: "तेरी बात भी सच है। परन्तु देख तो सही, बा कितनी भोली और निर्दोष है! मैंने हंसीमें कहा था, परन्तु अिसने सच समझ लिया। अपनी जान चली जाय तो भी वह मुझे नहीं छोड़ेगी। मेरे पीछे पीछे चलनेका ही अेक महामंत्र अिसने ग्रहण कर लिया है। हर वक्त मेरे पीछे चलनेमें अुसने हमेशा बुद्धिसे ही काम लिया हो सो बात नहीं। फिर भी जो कुछ किया, वह मेरे प्रति श्रद्धा रखकर ही किया है। परन्तु मेरी मान्यता है कि बुद्धि कितनी ही तीव्र क्यों न हो, अगर हृदय पाषाण जैसा हो तो बुद्धि बहुत बार काम नहीं आती। बुद्धि हृदयके पीछे चलनेवाली वस्तु है। तूने देख लिया न कि मैंने जरासी माफीकी बात की, अुसमें अिसे हम दोनोंकी मानहानि मालूम हुअी और वह नाराज हो गअी। वह मुझे कितना समझती है? बाके हृदयकी शुद्धतासे ही में अितना सुशोभित हुआ हूं। लोगोंने मुझे महात्मापद दिया है, अुसका श्रेय भी में तो मानता हूं कि बाको ही है। वह मेरा साथ न देती तो में कुछ भी न कर सका होता। जैसे गाड़ीके दो पहियोंमें से अेक पहिया काम न दे तो गाड़ी बिलकुल नहीं

चल सकती; अेक पहियेमें जरासी खामी हो, कहीं टूट-फूट हो गअी हो, तो भी वह अच्छी तरह नहीं चल सकती। यही बात सांसारिक जीवनकी भी है। भले बा बहुत पढ़ी हुअी नहीं है, परन्तु हिन्दू स्त्री जिस पतिव्रता-धर्मको सब धर्मोंसे श्रेष्ठ मानती है, अुसे बाने अपनाया है। मैंने जब कभी भूलें की हैं, तब बाने मुझे कितनी ही बार समय पर सचेत किया है। अिस प्रकार मैं तुझे यह समझा रहा हूं कि बाने पतिव्रता-धर्मको पोथीधर्म नहीं बना डाला। जब मैं दक्षिण अफ्रीकामें था तब हमारे यहां अेक पंचम जातिके मां-बापका अीसाअी लड़का क्लर्कका काम करता था। वहांके मकानोंमें हमारे मकानोंकी तरह टट्टी और पेशाबघर नहीं होते। वहां पॉट (बरतन) रखा जाता है। मेहमानोंके पॉट या तो मैं अुठाता था या बा अुठाती थी। यह अीसाअी लड़का अभी तक मेहमान जैसा ही था। परन्तु बाने हंसते हुअे चेहरेसे नहीं, बल्कि मुंह बनाकर वह पॉट अुठाया। यह मुझसे सहन नहीं हुआ। मैं चिढ़ा। बा भी नाराज हुअी। मैं हाथ पकड़कर ज्यों ही अुसे बाहर ले जाने लगा, बाने रोते रोते मुझे अुलहना दिया कि तुम्हें लाज-शरम नहीं है, परन्तु मुझे तो है। कोअी सुन या देख लेगा तो क्या कहेगा? दोनोंमें से अेककी भी शोभा नहीं रहेगी। यह प्रसंग मैंने 'आत्मकथा' में भी दिया है। अिस प्रकार बामें पातिव्रत धर्मके पालनके साथ साथ अैसी निर्भयता भी थी। ले, मैंने तुझे आजकी कहानी भी कह दी। अब शामको नहीं कहूंगा।"

मैंने पहले लिखा है कि बापूजी अपने जीवनकी घटनायें हमें सुनाया करते थे। अुसी सिलसिलेमें अुपरोक्त प्रसंग कह सुनाया।

तीसरी घटना भी अैसी ही आज हो गअी। सुशीलाबहन स्नानागारमें रपटकर गिर पड़ीं। अुन्हें सख्त चोट आअी थी। अिससे अुन्हें बुखार आने लगा। अिसलिअे शामको बापूजीको दूध देनेमें पांच मिनट देर हो गअी। बापूजीका खाना-पीना सदा सुशीलाबहन संभालती थीं। (सबेरे वे दूसरे काममें होतीं और बाको खिलाने-पिलानेकी जिम्मेदारी मेरी होती, अिसलिअे बापूजीका सुबहका खाना-पीना मैं ही संभाल लेती। परन्तु शामको पांच बजे मेरा बाके पास रामायण पढ़नेका समय होनेके कारण यह काम सुशीलाबहन करती थीं।)

बाकी तन्दुरुस्तीमें भी बिगाड़-सुधार होता रहता था। मैं दूध गरम कर रही थी। अुबाल आ रहा था, अितनेमें बा धीमी चालसे खांसती-खांसती भोजनालयमें आ पहुंचीं। "क्या अभी तक बापूजीको दूध नहीं मिला?"

मैंने कहा: "बस, दे ही रही हूं। आप यहां क्यों आयीं? बापूजी और सुशीलाबहन नाराज होंगे न?"

बा बोलीं: "तुझे मालूम तो था कि सुशीलाकी तबीयत अच्छी नहीं है। अिसलिअे तुझे अपने मनमें चिन्ता रखनी चाहिये न कि मुझे अमुक काम अमुक समय करना है? अन्य कार्य बादमें। मेरे पास रामायण पांच मिनिट कम पढ़ी होती तो?"

बापूजीको दूध देते हुअे मैंने कहा: "बापूजी, पांच मिनिट देर हो गअी।"

बापूजी: "कोअी हर्ज नहीं।"

मैंने कहा: "परन्तु बा मुझ पर नाराज हो गअीं।"

अितनेमें बा भी आ गअीं। बापूजीसे कहने लगीं: "अिस लड़कीने पांच मिनिट देर कर दी। पता तो था ही कि आज दूध-खजूर तुझे देना है; अैसी हालतमें घड़ी पास रखकर ही रामायण पढ़ने बैठना था।"

बापूजी: "अिसमें कोअी हर्ज नहीं। यहां कहां बाहरकी तरह किसीको मुलाकातका समय दिया हुआ है?"

बा: "मगर मुझे मालूम है न कि वक्तकी पाबन्दी आपको बहुत पसन्द है। आप यहां भी अपने सब काम समय पर करते हैं, तो फिर देर क्यों की जाय?"

बापूजी और मैं निरुत्तर रहे। क्योंकि मैंने भूल की थी, अिसलिअे अब बचाव करनेमें मैं या बापूजी कोअी भी बाकी दलीलके सामने टिक नहीं सकते थे। परन्तु बापूजी अपने लकड़ीके चम्मचसे दूधका घूंट लेते हुअे अेक ही वाक्य बोले: "बा अैसी है!"

१९

मक्खन निकाला !

आग़ाखां महल, पूना
१८-९-'४३

हमारे यहां श्रावण मासका पहला रविवार विशेष महत्त्व रखता है। अुसे 'वीरपसली'का दिन कहा जाता है। अुस दिन भाअी बहनको कुछ न कुछ भेंट देता है। अिस निमित्तसे बाने बापूजीकी बड़ी बहन पू० गोकी बुआजीको और अुनकी लड़की फूली बुआको अेक अेक साड़ी और चोलीका कपड़ा (अपनी ओरसे) भेजनेको आश्रममें लिखवाया था। अुसका जवाब आज आया। अुसमें यह पुछवाया था कि साड़ी किस पेटीमें किस जगह रखी है। श्रावण महीनेके पहले रविवारको बीते अेक मास हो चुका था और अभी तक अुपरोक्त प्रश्न पूछनेवाला पत्र ही मेरे नाम अेक सम्बन्धीका लिखा हुआ आया। वह मैंने बाको पढ़ सुनाया।

बा कहने लगीं: "कैसे लोग हैं? 'वीरपसली' कभीकी चली गअी, और अभी तक काली पट्टीवाली दो साड़ियां ही किसीको नहीं मिलीं। मानो मेरी कोठरीमें तिजोरी हो और अुसमें कहीं कुछ छिपाकर रखा हो, जो किसीको भी नहीं मिलता! अरे, अुस बिना सांकल-कुन्देवाली पेटीमें अूपर ही तो रखी हैं। जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक बुआजीको दूंगी, बादमें बापूजी तो क्या देंगे? कह देंगे कि मेरे पास देनेको कुछ भी नहीं है। मैंने वे दो साड़ियां खास तौर पर बुआजी और फूलीके लिअे रखी थीं। जरा मोटी हैं और जाड़ेमें पहनी ज़ा सकेंगी। परन्तु समयकी बात समय पर ही शोभा देती है। बुआजीको भी अिस बार कैसा बुरा लगेगा? बारह महीनेमें बेचारीको अेक साड़ीकी तो आशा होगी ही न? अब अच्छी तरह समझाकर आश्रमवालोंको लिख दे।" फिर मुझ पर जरा नाराज हुअीं, "तूने तो

अच्छी तरह लिखा था या नहीं? साड़ियां कैसे नहीं मिलीं? आज ही लिख दे कि वे न मिलें तो कोअी भी अेक सफेद साड़ी भेज दें। अब बापूजीका जन्मदिवस आ रहा है। अुस समय मिल जाय तो भी काफी होगा।"

बापूजी महात्मा ठहरे, अुनके लिअे सभी दिन समान थे। परन्तु भाअी (बापूजी) की तरफसे बहनके लिअे जो कुछ किया जाना चाहिये, अुसे भाभी (बा) कितनी भावनासे करती थीं! ठीक 'वीरपसली' के दिन ननंदको अपने भाअी-भाभीकी तरफसे कुछ भी न मिलने पर बुरा लगा होगा, जिसका अुन्हें बड़ा दुःख हो रहा था। अैसे अैसे व्यावहारिक प्रसंगोंकी रक्षा करना बा कभी भूलती नहीं थीं।

आजकी घटनासे बा कुछ दुःखी थीं। अुन्हें जब कभी अच्छा न लगता, तब अन्तमें वे भजनावलि लेकर बैठ जातीं। तदनुसार लगभग दस बजे नहा-धोकर वे अेक कोच पर बैठी बैठी श्लोक बोल रही थीं और अुनके अर्थ पढ़ रही थीं:—

गोविन्द द्वारिकावासिन्, कृष्ण गोपीजनप्रिय।
कौरवैः परिभूतां मां किं न जानासि केशव॥

(यह सारी प्रार्थना भजनावलिमें खास तौर पर स्त्रियोंकी प्रार्थनाके रूपमें दी गअी है।) बा तो जब अुनका मन अुद्विग्न होता, तब अकसर भजनावलि लेकर यही प्रार्थना पढ़ने लगतीं। परन्तु अुसका अर्थ वे मनमाना करतीं और अुसे भी जोरसे बोलतीं: "हे प्रभु, हे अीश्वर, जैसे द्रौपदीने यह प्रार्थना की वैसे मैं भी तुझसे विनती करती हूं कि तू कौरवों (अंग्रेजों) से घिरे हुअे मेरे अिस देशकी रक्षा कर। और कितने ही बेचारे जेलमें सड़ रहे हैं अुन्हें अब छोड़। तुझे रखना हो तो हम दोनोंको रख; परन्तु अब तो मेरे धीरजकी हद हो रही है।"

अिस प्रकार प्रार्थनारूपी शब्द बोलतीं। वे शब्द मैं कितनी ही बार छिपकर सुननेके लिअे खड़ी रहती। पू० बाने जब अत्यन्त करुण स्वरमें ये शब्द कहे कि "तुझे रखना हो तो हम दोनोंको

(बापूजी और बाको) रख, परन्तु औरोंको छोड़", तब वे निःस्वार्थताके कितने अूंचे शिखर पर पहुंच गअी थीं!

बा कोच पर लेटे लेटे जिस प्रकार प्रार्थना कर रही थीं और में बापूजीके लिअे मक्खन निकालनेको छाछ बिलोती बिलोती रुक गअी थी। अुनकी प्रार्थना पूरी हो गअी, मगर मेरा छाछ बिलोना अभी तक पूरा नहीं हुआ था। अिसलिअे बा बोलीं: "अेकसी रअी घूमनी चाहिये, तभी मक्खन अच्छी तरह निकल सकता है।" मैंने कहा: "मक्खन तो में अभी निकाल देती हूं।" यों कहकर मैंने अुस छाछको अेक कपड़ेमें छान लिया। पानी नहीं डाला था, अिसलिअे अभी तक दही जैसा घोल ही था। अिससे पानी निचोकर निकाल दिया और जो दहीका मावा रह गया था अुसकी छोटी कटोरी भर गअी। मैं खुशी खुशीमें बाके पास गअी और बोली: "देखिये बा, मैंने आज मक्खन कितना जल्दी निकाल लिया? अच्छा निकला है न?" मैं तो अुसे सचमुच ही मक्खन समझ रही थी और अिस नअी खोजसे जरा फूल भी गअी थी कि कपड़ेमें छान लेनेसे अितना बढ़िया और ज्यादा मक्खन निकल सकता है।

परन्तु वे अिस तरह मेरे पराक्रमके भुलावेमें थोड़े ही आनेवाली थीं? अुन्हें आश्चर्य हुआ कि बकरीके दो (कच्चे) सेर दूधमें से कटोरी भर मक्खन निकल ही कैसे सकता है। मुझसे कहने लगीं: "यह मैं मान ही नहीं सकती, भूलसे भैंसका दही बिलो डाला होगा।" यों कहकर बाहरके बरामदेमें आअीं और कपड़ा, पानी वगैरा देखकर मेरी मक्खन निकालनेकी नअी खोज पर कहिये या मेरी मूर्खता पर हंसने लगीं। अितनी हंसीं कि दस मिनिट तक लगातार जोरकी खांसी रही और मुश्किलसे सांस बैठी। फिर भी मैं समझ न सकी कि बा अिस प्रकार अितना ज्यादा हंसी क्यों। मुझसे बोलीं: "तूने मक्खन नहीं निकाला, परन्तु श्रीखंड बना दिया। यह बापूजीसे कह देना, मूर्ख! मटके भर भरकर छाछ बिलोनेके लिअे हम अपने बचपनमें कितनी जल्द अुठतीं और बिलोते बिलोते हांफ जाती थीं। तेरी तरह यों कपड़ेसे

दहीको छानकर मक्खनके नामसे देतीं तो हमारा कैसा बेहाल हुआ होता? चल, अब भी मैं तुझे असमें से मक्खन निकालकर बताअूं।"

अैसा कहकर बाने दुबारा अुसे और अुस दहीके पानीको मिलवाया और छाछ बिलोनेमें नित्यकी भांति ही खासा आध घंटा चला गया। मैं मक्खन तो रोज निकालती ही थी। मगर मुझे बिलोते बिलोते ही देर हो गअी और बाने प्रार्थनाके बाद तुरन्त टोक दिया कि अेकसी रअी घूमनी चाहिये। तब मुझे यह नया रास्ता सूझा, जिस पर तुरन्त अमल किया; और लगा कि रोज आधा घंटा चला जाता है, अिसके बजाय अिस तरह पांच-सात मिनिटमें ही कितनी अच्छी तरह काम निपट जाता है। अिसलिअे आज यह नया पराक्रम किया था। परन्तु बाने अन्तमें दुबारा सर पर खड़ी रहकर जैसा रोज करती थी वैसा ही करवाया और मक्खन निकलवाया। बापूजीसे कहने लगीं: "आज तो मनुको आप पर कुछ प्रेम अुमड़ आया था, अिसलिअे श्रीखंड खिलानेवाली थी।" और अुन्हें सारा किस्सा कह सुनाया। मैं बापूजीको खाना देकर अपनी मूर्खतासे शरमिन्दा होकर वहांसे चल दी। परन्तु सारा कमरा अिस नअी खोजके पराक्रमके कारण हंसीसे गूंज रहा था। अिससे मेरे स्वाभिमानको चोट पहुंची। मुझे लगा कि मैंने तो अपनी अकल दौड़ायी और ये लोग हैं कि मेरा मजाक अुड़ा रहे हैं! अिस प्रश्नका अुत्तर अुस वक्त तक नहीं मिला था, अिसलिअे अुस दिनकी डायरीमें तो गुस्सेमें मैंने यही लिखा है कि मेरे स्वाभिमान पर आज अिस तरह आघात हुआ।

परंतु आज जब मैं सोचती हूं तब अपने बचपनकी अिस हास्य-जनक घटना पर हंसी तो आती ही है, लेकिन पूज्य बाने जिस प्रेमसे मुझे दुबारा स्वयं सब कुछ सिखाया अुसका पूज्यभावसे स्मरण भी करती हूं। और विचार करने पर आज अैसा भी लगता है कि शायद अुस समय मेरे काम करनेमें कुछ आलस्य भी रहा होगा। क्योंकि बहुत बार बचपनमें जब मुझे काम करनेमें आलस्य आ जाता, तो मैं अैसी किसी खोजमें लग जाती। परंतु ये दुर्गुण मुझमें पैदा

होनेके साथ ही वा और वापूजीके सान्निध्यमें रहनेसे और अुनकी मुझ पर तीव्र देखरेख होनेसे मिट जाते थे।

अिस प्रकार कुम्हार आंवेंमें जिस ढंगसे सुन्दर वर्तनोंका निर्माण करता है और अुसके वाद ही अुन वर्तनोंकी कीमत आंकी जाती है, अुसी तरह आगाखां महलके मेरे अिस प्रकारके प्रारंभिक निर्माणका मेरे लिअे आज कितना मूल्य है, अिसका वर्णन शव्दों द्वारा करना मेरे लिअे संभव नहीं है।

२०

सच्चा स्वदेशी

आगाखां महल, पूना,
१९–९–'४३

मैंने पिछले प्रकरणमें लिखा है कि वापूजीके कामकी (खास तौर पर खाने-पीनेके मामलेमें) वा स्वयं देखरेख रखती थीं। वीमार होतीं तो भी सोते सोते या कुर्सी पर वैठकर सव जगह नजर डाले विना न रहतीं।

रोज तो वकरीका शामका दूव मीरावहन ही छानती थीं। आज मीरावहनकी तवीयत अच्छी नहीं थी, अिसलिअे मुझे छानना था। मीरावहन जिस कपड़ेसे दूध छानतीं, वह कपड़ा मुझे न मिला। वे सो गअी थीं अिसलिअे अुन्हें जगाकर नहीं पूछा जा सकता था। परंतु अेक वारीक कपड़ा मेरे हाथ लग गया। अिस कपड़ेमें वाहरसे मेवा वंध कर आया था। वह साफ और वारीक था, अिसलिअे अुसे मैंने संग्रह करके रख छोड़ा था। अुसे आज दूध छाननेके लिअे निकाला। अुसे धोकर दूध छान रही थी कि वा आ पहुंचीं। दूध लगभग ४ या ४॥ वजे (तीसरे पहरके) दुहकर आता था। अुसी समय वा, डॉ० गिल्डर और कटेली साहव तीसरे पहरकी चाय लेने मेज पर आते थे। वा गरम पानी और शहद पीती थीं और अिन लोगोंको चाय पिलाती और कुछ नाश्ता कराती थीं।

मैं दूध छान रही थी। अितनेमें बा बोलीं, "मीराकी तबीयत कैसी है?"

मैंने कहा, "मुझे कपड़ा मिल नहीं रहा था अिसलिये अुन्हें पूछने गअी थी। परंतु वे सो रही थीं, अिसलिअे मैंने जगाया नहीं।"

बा: "तब यह कपड़ा कहांसे लिया? किसमें से फाड़ा? धोया था या नहीं?"

मैंने कहा: "कराचीसे जिस कपड़ेमें खजूर बंधकर आअी थी वह कपड़ा है। कपड़ा बिलकुल नया है। मैंने अुसे धोकर सावधानीसे रख लिया था। अब धोकर अुससे दूध छान रही हूं।"

बाने अुस कपड़ेको हाथमें लिया और अुलट-पलटकर देखा। वह मिलका था। बोलीं: "अिस मिलके कपड़ेसे बापूजीका दूध छाना जाता है भला? यह तो मिलका कपड़ा है। बापूजीको मालूम हो जाय कि दूध मिलके कपड़ेसे छाना हुआ है, तो अुनका मन दुःखी होगा। अपने पास खादीके कपड़े क्या कम हैं? हम अपने ही काममें मिलका कपड़ा कैसे अिस्तेमाल कर सकते हैं? यदि हमारा कोअी काम मिलके कपड़ेसे ही पूरा होता हो, तो वह काम ही हमें छोड़ देना चाहिये। लेकिन मिलके या विलायती कपड़ेसे हमारा काम हरगिज नहीं निकाला जा सकता। तू जानती है कि मिलका कपड़ा दिखनेमें बारीक होता है। अिसलिअे बहुत बार यह माना जाता है कि छानने या अैसे ही अुपयोगके लिअे वह अुत्तम होता है। पर यह बिलकुल गलत है। खादीका कपड़ा मोटा होगा, तब भी अुसकी बुनाअीमें अैसे छिद्र होते हैं कि वह मिलके कपड़ेसे अधिक अच्छा काम देता है। आज तुझे यह खयाल हुआ होगा कि अिस कपड़ेसे अच्छा छनेगा; और छाननेमें क्या हर्ज है, कपड़ा पहनना हो तो ही आपत्ति है। परंतु यह बड़ी भूल है। आज तो तूने दूध छाना, और कल तुझे लगेगा कि कितना मुलायम है, चलो, पहन लूं! अिस तरह वहां मन डिग जायगा। साथ ही मिलके कपड़ेसे छाना हुआ दूध पेटमें जाय तो सूक्ष्म दृष्टिसे यह अेक प्रकारका पाप ही पेटमें गया कहा जायगा। हमने स्वदेशीकी

प्रतिज्ञा ले रखी है। और बापूजी कितनी दृढ़तासे प्रतिज्ञाका पालन करनेवाले हैं? तुझे अिस बातका कोअी पता न होगा। तूने साफ और बारीक टुकड़ा देखकर काममें ले लिया। परंतु तुझे आयंदाके लिअे सावधान करने और सिखानेके लिअे कह रही हूं। प्रतिज्ञाका पालन करनेवाला होता है या पालन करानेवाला होता है। (तू अिस समय मेरी या बापूजीकी प्रतिज्ञा पालन करानेवाली है।) तू कदाचित बकरीके दूधके बजाय भैंसका दूध बापूजीको दे दे। अिससे बापूजी तो दोषमें नहीं पड़ते, परंतु तू पड़ती है। अिसलिअे दोनोंको सूक्ष्म रूपमें प्रतिज्ञाका पालन करना चाहिये। तभी ली हुअी प्रतिज्ञा सच्ची कही जायगी। बाकी तो सब सुविधा-धर्मकी तरह निरा दंभ ही कहलायेगा। अब दुबारा खादीके कपड़ेसे दूध छान ले। और अिस घटना परसे आगेके लिअे पूरी सावधानी रखना।"

मैंने सारा दूध फिरसे खादीके टुकड़ेसे छान लिया। परंतु यह समझमें आ गया कि प्रतिज्ञाका सूक्ष्मतम रूपमें कैसे पालन किया जाय; और मिलके कपड़ेसे छना हुआ दूध बाने फिरसे खादीके टुकड़ेसे छनवाया, अिसमें बाने समझपूर्वक खादीका जो आग्रह बताया, अुसकी बात मैंने बापूजीसे कही।

बापूजी कहने लगे: "भले ही बा अपढ़ है, परंतु मेरी दृष्टिसे जितना अुसने ग्रहण किया है, जितना अुसने समझ लिया है, अुसका वह सूक्ष्मसे सूक्ष्म पृथक्करण कर सकती है। और मैं मानता हूं कि जैसे कालेजमें कोअी खास विषयोंके प्रोफेसर लड़कोंको खास विषय पर पूर्ण शुद्ध और भावनामय व्याख्यान दे सकते हैं, वैसे ही बाने भी समझकर जितना हजम कर लिया है अुसमें श्रद्धाके साथ ज्ञानको मिलाकर आज तुझे खादीका अितना माहात्म्य सुनाया। जैसे अेकादशीका माहात्म्य तुझसे बा प्रत्येक अेकादशीके दिन पढ़वाती है, वैसे ही यह भी अेक पवित्र खादी-माहात्म्य है। यदि घरमें माताअें बालकोंको अैसी शिक्षा देने लग जायं, तो अुससे मुझे पूरा संतोष होगा। अिसमें न कोअी अंग्रेजी भूमिति सीखनेकी जरूरत है और न बीजगणित। केवल

श्रद्धा चाहिये। परंतु वह श्रद्धा ज्ञानपूर्ण होनी चाहिये। गीतामाता कहती है:

श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।।
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः।।

"अिस प्रकार बाने तो केवल श्रद्धासे मेरे पीछे अपनी जीवन-नौका चलाअी है। और श्रद्धा यदि शुद्ध भावनावाली हो तो ज्ञान अपने आप प्रकट होता है। परंतु श्रद्धा शंकावाली हो तो ज्ञान प्रकट नहीं होता। अिसलिअे अैसे संशयवालोंको कहीं भी सुख नहीं मिलता। जब खादी शुरू की तब बा न तो कोअी खादीका विज्ञान जानती थी, न चरखेका विज्ञान जानती थी और न यह गणित ही जानती थी कि अिससे देशका क्या लाभ है। परंतु अुसने श्रद्धासे ही मेरी अिच्छाका आदर किया, तो आज अुसका यह ज्ञान अपने आप प्रकट हुआ और तुझे वह अितना सुन्दर पाठ दे सकी।

"अिसमें तुझे मुख्य बात तो यह सिखाअी कि सच्ची प्रतिज्ञा किसे कहते हैं? वह किस तरह पाली जाती है? अिसके सिवाय यदि तूने आज सिर्फ दूध छाननेके लिअे मिलका कपड़ा अिस्तेमाल किया, तो कल किसी और काममें अुसका अिस्तेमाल करनेका मन हो सकता है। अिस प्रकार यह तो अुस साधु बाबाकी लंगोटीका किस्सा हो जायगा। अिसलिअे अिस मोहमें पड़ना ही नहीं चाहिये। साथ ही दुबारा खादीके कपड़ेसे छनवा कर मुझे दूध देनेको कहना खादीके प्रति बाकी पवित्र भावनाके साथ ही मेरे प्रति अुसकी असीम भक्ति और सेवाकी भावनाको भी सूचित करता है। तुझे तो अिससे आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक पाठ सीखनेको मिला।

"आध्यात्मिक और धार्मिक पाठने तो तुझे समझा दिया कि मिलमें कितने लोगोंके खूनका पानी हो जाता है! अुसमें अुत्पन्न हुआ जरासा भी कपड़ा हम हरगिज काममें नहीं ले सकते। और खादी गरीबोंको रोजी देनेवाली है। घर बैठे आरामसे कातकर सब कोअी

अपना पेट भर सकते हैं। राजासे लेकर रंक तक कात सकते हैं। अिसमें कितना पुण्य भरा है?

"सामाजिक और राजनैतिक पाठोंमें पतिने जो भी पवित्र प्रतिज्ञा ली, अुसका सूक्ष्मतासे पालन करानेमें पत्नीका साथ सामाजिक दृष्टिसे मेरे खयालमें बड़ी भारी बात है। और राजनैतिक पाठमें तो खादी पहनना ही अिस समय अंग्रेजोंके राजमें अपराध है। सूतके धागेसे आज ही स्वराज्य प्राप्त किया जा सकता है, अिसमें मेरे मनमें जरा भी शक नहीं — बशर्ते ४० करोड़ लोगोंके हाथमें चरखा या तकली चले। अिस प्रकार आज तो तूने मेरी दृष्टिसे बहुत बड़ा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।"

बापूजीने दूध पीते-पीते मेरी पढ़ाअीके समय दूसरा नया पाठ देनेके बजाय पू० बाकी आजकी बातका अधिक शुद्ध स्पष्टीकरण करके मुझे अेक अनोखा पाठ पढ़ाया।

२१
बाकी राजनैतिक भाषा

आगाखां महल, पूना,
२०-९-'४३

पू० बा रोज अेक बार सूखे मेवेमें अंजीर, जरदालू, मुनक्का, काली द्राक्ष वगैरा जो भी हो अुसे दूधमें अुबालकर लेती थीं। यही अुनके लिअे दवा और खुराक दोनोंका काम करती थी। (अुनसे दूसरी खुराक नहीं ली जाती थी।) अिसी प्रकार बापूजीके लिअे खजूर खुराक और दवाका काम देती थी। बापूजी लगभग रोज शामको दूधमें अुबालकर खजूर लेते थे। ये सब बातें कराचीके मेरे साथ संबंध रखनेवाले कुछ भाअी-बहन जानते थे और कराचीका सूखा मेवा तो प्रख्यात ठहरा। जब बापूजी बाहर थे तब तो जब चाहिये तभी मैं मंगवा लेती थी। परंतु अब जेलके नियमानुसार पत्र लिखकर तो मंगवा ही नहीं सकती। अिसलिअे यह समझकर कि बापूजी

और वाके लिअे मेवा नहीं होगा, अुन लोगोंकी तरफसे श्री शान्तिकुमार भाअी द्वारा भेजा हुआ पार्सल आज मिला। साथ ही, वापूजीकी प्रत्येक जयंती पर वहुतसे स्त्री-पुरुष अपने अपने हाथके सूतकी खादी, धोतियां, रुमाल वगैरा वनाकर पू० वापूजीको अर्पण करते थे। परंतु अिस समय अुन सवको पता नहीं होगा कि ये चीजें वापूजीके पास कैसे पहुंचेंगी। फिर भी कुछ परिचितों और आश्रमवासियोंको मालूम था कि शान्तिकुमार भाअीके द्वारा अैसी चीजें वापूको मिलती हैं, अिसलिअे प्रेमावहन कंटक, अमतुस्सलाम वहन तथा दिलखुश दीवानजीकी ओरसे पू० वापूजीकी आगामी जयंती पर भेंट करनेके लिअे अिस पार्सलके साथ खादीका थान, धोतियां और रुमाल अित्यादि मिले।

पार्सल खोलते ही पहले खजूर देखी। खजूर स्वच्छ और सुन्दर थी। मैं तुरन्त वापूजीको दिखाने ले गअी। अैसी खजूर मैंने कभी नहीं देखी थी। और अुसके वाद भी अभी तक मैंने वैसी खजूर नहीं देखी। वह कुछ और ही किस्मकी थी। वड़े दानेकी, विलकुल वारीक गुठलीवाली, स्वच्छ और प्रत्येक दाना अलग अलग और रसदार था। अूपर 'वटर पेपर' लिपटा हुआ था।

वापूजी और वाको दिखाने गअी। वा अपने पलंग पर वैठी थीं। अितनी वढ़िया खजूर देखकर कहने लगीं: "देख ले शान्तिकुमार कितनी सावधानीसे सव कुछ अिकट्ठा करके भेजता है! लेकिन मैं अुसे और सुमतिको आशीर्वादके लिअे नाम तक नहीं लिख सकती, क्योंकि अुसके पीछे गांधी नामका पुछल्ला नहीं है। सरकारका अैसा काम है।"

यह जान लेनेके वाद कि और क्या क्या किसकी तरफसे आया है, वापूजीने वासे कहा: "तुम जानती हो न कि शान्तिकुमार सिंधियाके मैनेजिंग डाअिरेक्टर हैं, और अव हमारे अेजेण्ट वन गये दीखते हैं। अुनमें यह कुशलता है। हमारे लिअे भागदौड़ करके सव चीजें भिजवाना अुन्हें वुरा नहीं लगता, वल्कि आनंददायक मालूम होता है। वे रामदास और देवदास जैसे ही हमारे लिअे सव कुछ करनेको तैयार रहते हैं। सुमति और शान्तिकुमार तो प्राण न्यौछावर

करनेवाले पति-पत्नी हैं। परंतु सिन्धियासे अुन्हें आमदनी होती है, जब कि हमारे वे अवैतनिक अेजेंट हैं। अिस प्रकार जैसे सबको अपनी पसन्दका काम मिल जाता है, वैसे ही शायद शान्तिकुमारके लिअे भी हुआ।" (शान्तिकुमार भाअी नरोत्तम मोरारजी तो बापूजीके पुत्रोंमें से अेक हैं। पू० बापूजी जब जेलरूपी महलसे निकले तब जुहूके किनारे अिन्हींके मेहमान बने थे। अिसलिअे अुनका परिचय अनावश्यक है।)

अिस पर बाने मुझसे अपने पिताजीको पार्सलकी पहुंच लिख देनेको कहा। मैंने तो पहुंचमें साफ नामसहित लिखा कि शान्तिकुमार भाअीके द्वारा अितनी चीजें मिली हैं, वगैरा . . .।

बाको मैंने पत्र पढ़कर सुनाया। बा भी जबरदस्त थीं! राजनैतिक भाषा किस तरह काममें ली जाती है, यह जानती थीं। मेरा पत्र नापास कर दिया। कहा: "अिस तरह साफ लिखेगी तो तेरा पत्र कौन जाने देगा? पत्र कभी जयसुखलालको मिल भी गया तो काटछांट किया हुआ मिलेगा; जिससे अुन सबको चिन्ता हो जायगी कि कोअी बीमार तो नहीं है। आ यहां बैठ। मैं नये सिरेसे पत्र लिखवा दूं।" फिर अुन्होंने छोटा परंतु सचोट नया पत्र लिखवाया:

चि० जयसुखलाल,

तुम्हें चि० मनु समय समय पर पत्र लिखती रहती है, अिसलिअे मैं खास तौर पर नहीं लिखती। तुम सबके पत्र मिलते हैं; पढ़कर आनन्द होता है। चि० मनुका पढ़ाअीका क्रम अच्छी तरह जम गया है। मेरी सेवा भी खूब करती है। बापूजी, डॉ० गिल्डर, प्यारेलाल और सुशीलाके पास बारी-बारीसे नियमित पढ़ती है। स्वास्थ्य हम सबका अच्छा है। चि० संयुक्ता, चि० अुमिया और चि० विनोदको हमारा आशीर्वाद।

तुम्हारे अेजेन्टके कुशल-समाचार जाने। बहुत जरूरी भी था, मौकेका था और बढ़िया था। सबको मेरा खास तौर पर आशीर्वाद लिखना। तुम्हें मेरा आशीर्वाद।

२०-९-'४३

बा तथा बापूके
आशीर्वाद

मैंने प्रयोग करनेके लिअे अपना पत्र भी भेजा और वाका यह पत्र भी भेजा।

महीने भर बाद मालूम हुआ कि अुन्हें अभी तक मेरा २० को लिखा पत्र मिला ही नहीं और वाको अपने पत्रका जवाब मेरे पिताजीकी ओरसे १५ दिनमें ही मिल गया। मेरे सीधे नाम-पतेवाले पत्रका अभी तक कोअी ठिकाना ही नहीं है! अिस प्रकारकी दो अर्थवाली भाषा पू० वा कभी कभी अिस ढंगसे काममें लेतीं कि अच्छे अच्छे लोगोंको भी पढ़कर अर्थ लगानेमें थोड़ी बुद्धि खर्च करनी पड़ती। कौन कहेगा कि वा अपढ़ थीं? मैंने वह पत्र कटेली साहबको डाकमें डलवानेके लिअे नियमानुसार दिया। वे चाय पी रहे थे। अुन्होंने पत्र पढ़ा और फिर तह करके लिफाफेमें रख दिया। बादमें मेरा भी पढ़ा और मुझसे बोले: "यह सब काट देंगे, परंतु यहांसे जाने देनेमें हमारा क्या जाता है?"

मैंने कोअी बात तो नहीं की, परंतु हंसे बिना नहीं रहा गया। मुझसे अुन्होंने अिसका कारण पूछा। मैंने शामको डाक चले जानेके बाद बात की। सुनकर वे कहने लगे, "मैंने तो यही समझा कि तुम्हारे कुटुम्बमें कोअी प्रसंग होगा। अुसीके सिलसिलेमें वाने लिखवाया है। परंतु आयंगर साहब कितने ही अनुवाद करायें, कैसे ही अच्छे गुजराती जाननेवाले भाषा-शास्त्रियोंको दें, वाकी भाषा कोअी नहीं समझेगा।"

हुआ भी अैसा ही। वाका मेरे पिताजीके नामका पत्र आज भी मेरे पास है और मेरा पत्र तो जाने कहां चला गया!

२२
मेरी परीक्षा

आगाखां महल, पूना,
२३-९-'४३

दोपहरको सुशीलाबहन मेरी अंग्रेजीकी परीक्षा लेनेवाली थीं। मैं अुसकी तैयारीमें लगी थी। कुछ शब्द रट रही थी। मेरी यह रटन्त जब तक सुशीलाबहनने प्रश्नपत्र मेरे हाथमें नहीं दिया, तब तक अर्थात् अन्तिम क्षण तक जारी रही। प्रश्न भी पाठशालाके ढंग पर ही बाकायदा ४ पन्नोंकी नोटबुक बनाकर स्याहीसे लिखने थे। समय अेक घंटेका था। परंतु सुशीलाबहन खुद अेम० डी० थीं, अिसलिअे अुन्हें विद्यार्थियों-संबंधी अनुभवोंका विश्वास तो होना ही चाहिये। मुझे भी पुरा विश्वास था कि जो पांचवीं रीडर में पढ़ रही हूं, अुसे मैंने अितना रट लिया है कि अुसमें से शब्दोंका वाचन या किसी पाठको जबानी बोलनेके लिअे मुझसे कहा जायगा तो शायद बोल जाअूंगी। अिसलिअे पास होनेके सिवाय १०० में से कमसे कम ८० नंबर तो मुझे मिल ही जायंगे। परंतु यह कल्पना मुझे कहांसे होती कि वे पाठमालाके वाक्य पूछेंगी तथा जो चौथी रीडर में पढ़ चुकी हूं अुसके शब्द पूछेंगी अथवा अनुवाद करायेंगी? मुझे तो अितना ही कहा था: "कल तेरी अंग्रेजीकी परीक्षा लूंगी।" मैं मनमें गर्व कर रही थी कि भले कभी भी ले लें। पांचवीं रीडरके सिवाय नीचेकी (४थी कक्षाकी) पढ़ाअीमें से थोड़े ही पूछेंगी? पर अुन्होंने मुझे अिससे बेखबर नहीं रखा था। अुन्होंने कहा था, "पाठमाला, चौथी रीडर और पांचवीं रीडरमें से प्रश्न पूछूंगी।" मेरा खयाल था कि चौथी कक्षाके कोअी सवाल नहीं पूछेंगी। परंतु मेरी धारणा बिलकुल गलत निकली और सभी प्रश्न लगभग चौथी कक्षाकी पढ़ाअीमें से ही पूछे गये। आजका अकल्पित प्रश्नपत्र देखकर मैं चकरा गअी।

वा कोच पर पैर फैलाये लेटी थीं। मुझसे बोलीं: "खूब पढ़ रही थी। कल परीक्षाके मारे खेलने भी नहीं गअी, अिसलिअे अेक घंटेके बजाय शायद जल्दी ही पूरा कर लेगी। परंतु देख, अच्छी तरह विचार कर लिखना। जो लिखे अुसे दुबारा पढ़ लेना। भूलें न हों और पास हो जाना।"

प्रश्नपत्र देखकर मेरे मुंहसे अितना निकल गया, "सुशीला बहन! यह तो आपने चौथी रीडर और पाठमाला — भाग १ के प्रश्न दे दिये। परंतु अिस नअी पांचवीं रीडरके जो बीस पाठ हो गये हैं अुनमें से या पाठमाला — भाग २ में से कुछ भी नहीं पूछा!"

सुशीलाबहन बासे बोलीं: "देखिये बा, मैं कितनी दयालु हूं! मनुको पूरे नंबर लेनेका कैसा बढ़िया अवसर मैंने दिया है? वह पढ़ती है पांचवीं अंग्रेजी और सवाल मैंने चौथी अंग्रेजीके पूछे हैं। अिसलिअे मनु शायद सौ में से सौ नम्बर ले जायगी।"

बाको क्या पता कि मेरी अिस समय कैसी दयाजनक स्थिति है?

वे बोलीं: "परंतु सुशीला, तूने भूल की। तुझे तो अिससे पांचवींमें से भी सवाल पूछने चाहिये थे। चौथीके (अर्थात् पिछली बातोंके) सवालोंके जवाब तो मेरे जैसी भी दे सकती है, अिसमें क्या है?"

मुझे थोड़ी आशा हुअी कि बाके कहनेसे अगर अेक दो सवाल मेरी की हुअी रटाअीमें से आ जायं तो मजा आ जायगा।

सुशीलाबहन मेरी विषम स्थिति पलभरमें समझ गअीं। अिसलिअे कहने लगीं: "अब बा, आज तो हो गया सो हो गया। दूसरी दफा देखूंगी।"

मैंने जितना याद था अुतना मुश्किलसे लिखा। घंटा पूरा हो गया। मेरा पर्चा सुशीलाबहन अुसी समय देखने लगीं। सही गलत मिलाकर कुल १०० में से ४५ नंबर मुश्किलसे मिल सके। मैंने कहा: "सुशीलाबहन, मैंने पहलेका पढ़ा ही नहीं था। आपने पिछला पढ़ लेनेको कहा था, परंतु मैंने अुतना कष्ट नहीं किया। जब चौथी

कक्षाकी अन्तिम परीक्षा भणसाली काकाको दी थी, तब तो मुझे १०० में से ७० नम्बर मिले थे और तीन लड़कियोंमें मेरा पहला नंबर आया था।" (जब मैं सन् '४२ में सेवाग्राम गअी तभी भणसाली काकाने मेरी परीक्षा ली थी। यह बाको अच्छी तरह याद था।)

मैंने अुपरोक्त शब्द अपनी कुछ बहादुरी बतलानेको सुशीला बहनसे कहे।

पर बा नाराज हो गअीं—"पढ़ लिया सो तो भूल जानेके लिये ही न? तभी तो तूने अपने सवाल पढ़ते ही फौरन सुशीलासे कहा कि चौथी रीडरमें से क्यों प्रश्न दिये, पांचवी रीडरमें से क्यों नहीं? आता नहीं था अिसीलिअे तो अैसा पूछा। सुशीलासे पूछ कि तुमसे युनिवर्सिटीमें कभी अिस तरह पूछा गया था? रटन्त करनेसे सब मना करते हैं तो भी करते ही रहना चाहिये? समझकर अेक बार भी पढ़ लिया जाय तो कैसा अच्छा याद रहता है?"

फिर सुशीलाबहनसे कहने लगीं: "अब अिसे चौथी ही पुस्तक पढ़ाना। भले ही अेक वर्ष लग जाय। परंतु जो पढ़े सो पक्का होना चाहिये।"

मेरी आंखोंसे टप टप आंसू गिरने लगे। चौथी कक्षाके प्रश्न पूछनेके कारण सुशीलाबहन पर मुझे गुस्सा आ गया और दिन भर अुनसे बोली नहीं। बाके साथ भी नहीं बोली। मुझे दुबारा चौथी कक्षामें अुतार देना कितनी मानहानिकी बात थी? यदि पाठशालामें पढ़ती होती और अिस तरह अुतार देते तो पढ़ना छोड़ देती। परंतु अूपरसे नीचेकी कक्षामें पढ़ने जाना कैसे हो सकता है? अिससे आजका मेरा सारा दिन खराब हो गया। शामको घूमने नहीं जा रही थी। अिस पर बापूजीने जबरन् हाथ पकड़कर मुझे साथ ले लिया। सुशीलाबहन घूमनेमें साथ नहीं थीं और दूसरे लोग खेल रहे थे।

घूमते समय मैं और बापूजी दो ही थे। मुझसे बोले: "मैंने सुना है कि परीक्षामें तेरे नंबर कम आनेसे तू रोअी और खेलने भी नहीं गअी। बाने तुझसे कुछ कहा?"

जगह होता है। मैंने जब तेरे गुस्सेकी बात सुनी तभी मुझे तुझसे कहना चाहिये था। परंतु बादमें सोचा कि घूमते समय तुझे समझाअूंगा। मैं मानता हूं कि सुशीलाने तुझे डॉक्टरी ढंगसे यह अिन्जेक्शन दिया है। वह तुझे बार-बार समझाती थी कि रटा न कर। परंतु तू अिसके लिअे प्रयत्न ही नहीं करती थी। अिसलिअे तुझे पड़ी हुअी रटनेकी कुटेव अब अिस पाठशालामें अपने आप मिट जायगी।"

रटनेसे मैं अितनी ज्यादा बदनाम हो गअी, अिससे मैं खूब शर्माअी। परंतु अिसका चमत्कारी लाभ तो तभी अनुभव किया, जब मैं आगाखां महलसे छूटी और फिरसे कराचीके शारदा मंदिरमें पढ़ने लगी। अिस बीच अेक सावधानी रखी कि किसीके देखते हुअे चाहे जब रटना बिलकुल बन्द कर दिया, लेकिन कोअी न देखता तब रट भी लेती थी।

२३

चरखा-द्वादशीका अुत्सव

आगाखां महल, पूना,
२५-९-'४३

आज दोपहरको तीन बजे बाद कलके कार्यक्रमका विचार करनेके लिअे डॉक्टर साहब, मीराबहन, प्यारेलालजी और सुशीलाबहन बैठे। मैं अिस कमेटीमें नहीं रखी गअी थी, क्योंकि बात परसे बात निकल आये और मैं नादानीमें कुछ कह दूं तो अैसे विनोदका मजा किरकिरा हो जाय। परंतु जब खानगी तौर पर कोअी बात होती है, तब कुछ ज्यादा अुत्कण्ठा जागृत हो जाती है। क्योंकि मुझे अितना तो पता था कि ये लोग कलके लिअे कोअी कार्यक्रम सोच रहे हैं। मुझे बुरा लगा। मैं जब कभी रूठती तब खाने और खेलनेसे अिनकार कर देनेका अेक मंत्र मैंने पकड़ रखा था। और अिन

वातोंसे अिनकार कर देती, तो सहज ही अुसका कारण भी मुझसे पूछा जाता। अिस नाराजीके आधार पर में अपना काम बना लेती थी।

अिस प्रकार शामको जब घंटी बजी तो मैंने खेलनेसे अिनकार कर दिया। सुशीलाबहन रूठे हुओंको मना लेनेकी कला जानती हैं। अिसलिअे अुन्होंने मुझसे अिस तरह बात की, जैसे मुझे सारा ब्यौरा दे रही हों कि कल क्या क्या करना है। मुझे अुस समय तो संतोष हो गया। परंतु अुन्होंने सारी बातें नहीं बताओीं, अिसका पता दूसरे दिन ही लगा, जब हमने चरखा-द्वादशीका सारा दिन मना लिया। परंतु अितना निश्चित है कि सुशीलाबहनने मुझे पांच ही मिनिटमें संतुष्ट कर दिया और में खेलने भी चली गओी।

में नीचे अुतरी, अिसलिअे प्यारेलालजीने विनोदमें डॉ० गिल्डरसे कहा: "मनुको यहांके अस्पतालमें भरती कराना पड़ेगा; 'स्क्रू' ढीला हो जाता है।"

मैंने बालकोंकी तरह अंगूठा बताकर कहा: "आप सब भले ही कुछ भी कहा करें, परंतु सुशीलाबहनने मुझे सब कुछ बता दिया है।" और सब खिलखिलाकर हंस पड़े। परंतु हंसनेका कारण तो आज वर्षों बाद नोटबुक देखती हूं, तभी समझमें आता है।

अिस प्रकार फिर खुश हो कर मैंने अपना सभी काम पूरा किया। प्रार्थनाके बाद बापूजीके लिअे थोड़ी मीठी पपड़ियां बनाओीं। सुशीलाबहनने भी कैदियोंके लिअे मिठाओी बनाओी। बा और बापूजीके सो जानेके बाद सुशीलाबहन और मीराबहनने सिपाहियोंकी सहायतासे अशोकपल्लवके तोरण बनाये। में अुनकी मददमें रातके बारह बजे तक ही थी। बादमें सो गओी।

परंतु मीराबहन और सुशीलाबहन दोनों ठहरीं कलाप्रेमी। अुन्होंने लगभग सारी रात जागकर अपनी-अपनी कला हमारे निवासस्थानमें अलग अलग तरहकी सजावट करनेमें अुंडेल दी थी। मीराबहन, प्यारेलालजी और सुशीलाबहनन रातमें मुश्किलसे डेढ़-दो घंटे नींद ली होगी।

जैसे दीवालीके बाद नव वर्षके दिन जल्दी अुठ कर हम तैयार होते हैं, वैसे ही पू० बापूजी और बाके सिवाय हम सब अपने आप ही जाग गये थे और साढ़े चार बजे बापूजीके अुठनेसे पहले नहा-धोकर तैयार हो गये।

चरखा-द्वादशी
२६-९-'४३

सवेरे तड़के ही सबसे पहले बाने बापूजीको प्रणाम करते हुअे कहा: "लीजिये, यह मेरा अन्तिम जयन्तीका प्रणाम है, अगली द्वादशीको मैं रहनेवाली नहीं हूं।"

अिसके बाद हम सबने बारी बारीसे बापूजीको प्रणाम किया। रातभर किये गये श्रृंगारमें — सारे बरामदेमें अलग-अलग रंगोंसे सुन्दर अक्षरोंमें लिखे गये संस्कृतके पवित्र सूत्र और श्लोक, आकर्षक कलामय चौक और फूलोंकी महक ये सब तो बाह्य आकर्षण थे; परंतु बाकी मौजूदगीमें अुत्सवका कुछ अनोखा ही रूप हो जाना स्वाभाविक था। प्रार्थनामें आजका भजन था:

'और नहीं कछु कामके,
मैं भरोसे अपने रामके।
दोअू अक्षर सब कुल तारे,
वारी जाअूं अुस नाम पे।
तुलसीदास प्रभु राम दयाधन,
और देव सब दामके।'

यह भजन बापूजीके अिक्कीस दिनके अुपवासके समय अेक बहनने खास तौर पर तारसे भेजा था और बापूजीको बहुत प्रिय था।

प्रार्थनाके बाद नित्यका क्रम चला। बा अुठीं। अुनके दातुन-पानीका अिन्तजाम कर और चाय देकर निपट जाने पर मुझे सुशीलाबहनने डॉ० साहबके कमरेमें आनेको कहा था। अिसलिअे मैं

वहां गअी। जाकर देखती हूं तो सभीका भेस वदला हुआ था। मीरावहनने दाढ़ी लगाकर सिक्खों जैसा सफेद साफा वांव रखा था और डॉक्टर साहवके कोट-पतलून चढ़ा लिये थे। अेक हाथमें सिक्खों जैसा कड़ा था। अूंचाअी काफी और शरीरकी रचना वढ़िया थी। अिसलिअे विलकुल सरदारजी जैसी लगती थीं। डॉक्टर साहव पठान वने। मीरावहनकी चूड़ीदार सलवार और सिर पर पठानों जैसा तुर्रा निकालकर फेंटा वांवा था। सुशीलावहनने पादरीका वेश वनाकर गलेमें क्रॉस डाल लिया था। प्यारेलालजी दक्षिणी साधु वने और मैंने फ्रॉक, अूंची अेड़ीके वूट और सिर पर पारसी टोपी पहनी, जो कटेली साहवने जुटा दी थी। अिस प्रकार हम तैयार हो रहे थे अिस वीच वा चुपकेसे अेक वार आकर देख भी गअीं और वापूजीको परोक्ष रूपमें कह भी दिया।

अिसी अर्सेमें कटेली साहव वापूजीको कह आये कि आज आपका जन्मदिवस है, अिसलिअे शायद कुछ मुलाकाती आयें। परंतु वापूजी थोड़े ही अिस प्रकार भुलावेमें आनेवाले थे?

हम मीरावहनके कमरेमें वैठे और कटेली साहवने वापूजीसे कहा: "कुछ दर्शनार्थी कहते हैं कि वे सरकारसे मंजूरी लेकर आपके दर्शन करने आये हैं।" वापूजीका घूमनेका समय ७॥ वजे (सवेरे)का हो गया था। अिसलिअे वे हमारे कमरेमें आये। ज्यों ही वापूजीने पैर रखा, त्यों ही मैं सवसे पहले गअी और कहा: "महात्माजी, साल मुवारक। मेरा नाम जरवाअी जरीवाला है। खुडा आपको वहुत वहुत जिलाये।" मैंने अुसी भाषामें कहा, जो आम तौर पर पारसी वोलते हैं।

वापूजी और वा खिलखिलाकर हंसे। वापूजीने मेरे कान अैंठकर खूव जोरकी धप लगाअी।

वादमें मीरावहन आअीं पंजावी हलवेकी भेंट लेकर। स्वयं ही अपना परिचय दिया और हलवेकी वड़ाअी की। वापूजीने अुनके भी खूव जोरकी धप जमाअी। फिर आये डॉ० गिल्डर खजूर

अित्यादि पठानी मेवा लेकर। और पादरीके बाद अन्तमें ब्राह्मण साधु अिस तरह आये मानो प्रणाम करने और आशीर्वाद देने खड़े हों।

हम सब पेट पकड़कर हंसे और वहांसे सीधे महादेव काकाकी समाधिकी तरफ जाने लगे। परंतु हम ज्यों ही मैदानमें निकले त्यों ही कटेलो साहबने जमादारको डरानेके लिअे डांटकर कहा, "ये कौन आदमी यहां आ गये? दौड़ो, दौड़ो।" बेचारा रघुनाथ जमादार साहबकी अैसी जोरकी धमकीसे घबराकर दौड़ा। दरवाजे पर पहरा देनेवाले गोरे सार्जण्टोंने भी चकित होकर अपनी भरी बन्दूकें संभाल लीं। रघुनाथ आकर हमारे मुंहकी तरफ देखने लगा और सबसे पहले बोला: "अरे, ये तो सुशीलाबाअी और मनुबाअी हैं।" बेचारेके दममें दम आया। और किसीको जल्दी पहचाना नहीं जा सकता था।

घूमकर आनेके बाद हम अपने रोजमर्राके काममें लग गये। बापूजी नहाने चले गये। अिस बीच बापूजी जिस कमरेमें बैठनेवाले थे, वहां अुनके लिअे अनेक भक्तोंने स्वयं कातकर जो खादी भेजी थी अुसे अलग अलग ढंगसे सजाया, और फूलों तथा सूतके तोरण बनाये। बापूजीकी गद्दीके ठीक सामने फूलोंसे ॐ लिखा। बापूजीने फूलके ज्यादा हार बनानेकी मनाही की थी। सूतके हार भी अिस तरह बनानेको कहा था कि दूसरी बार तुरंत ही वे बुननेके काममें लिये जा सकें।

लेडी प्रेमलीलाबहन ठाकरसीकी तरफसे कुमकुमके साथियेवाला नारियल आया था। अिसके सिवाय तीन नअी कटोरियोंमें शक्कर, गेहूं, गुड़, चप्पलकी जोड़ी, बा और बापू दोनोंके लिअे मालाअें वगैरा सभी थालमें भरकर कटेली साहब नीचे ले आये।

नहाकर बापूजी अपनी गद्दी पर बैठे। सबसे पहले ७५ बिंदियां कुमकुमकी बनाकर हम सबने अपने अपने हाथके काते हुअे ७५ तारोंका जो हार तैयार किया था अुसे पू० बाने बापूजीके माथे पर तिलक लगाकर पहनाया और प्रणाम किया; बादमें हमने बारी बारीसे तिलक करके मालाअें पहनाअीं।

आज बाने बापूजीके हाथके काते हुअे सूतकी लाल किनारकी साड़ी पहनी थी। अिस साड़ीके लिअे मुझे बाने खास तौर पर

हिदायत दी थी कि "मेरे पास वापूजीके हाथकी काती हुअी यह अेक ही साड़ी है। अिसे जव मैं मरूं तव तू मुझे ओढ़ा देना।" मैं पंजावी पोशाक पहनती थी, फिर भी वाने मुझे आज लाल किनारकी दूसरी साड़ी पहननेको कहा।

सुशीलावहनने भी लाल किनारकी ही साड़ी पहनी। वा कहने लगीं: "आज जीते जी तो अेक वार और आखिरी वार यह वापूजीवाली साड़ी चरखा-द्वादशीके दिन पहन लूं। फिर कहां पहननी है?"

(अिसके वाद सचमुच ही वह साड़ी अुनकी मृतदेह पर ओढ़ानेका कठिन काम मुझे ही करना पड़ा। अपने जीते जी वाने दूसरी वार वापूजीके हाथकी साड़ी आगाखां महलमें कभी नहीं पहनी।)

फिर हमने छोटीसी प्रार्थना की। 'वैष्णवजन' का भजन गाया। प्रार्थनाके वाद वापूजीके लिअे मैं भोजन लाअी। वा रोज तो वापूजीके खा लेनेके वाद खाने वैठतीं, परंतु आज देर वहुत हो गअी थी अिसलिअे वापूजीने अनायास ही कहा: "वाको भी परोस दे। मैं और वा अेक दूसरेका ध्यान रखकर साथ ही खा लेंगे। और तुम लोग भी भोजनसे निपट लो।"

वाने वापूजीको आग्रहपूर्वक मीठी पपड़ी दी और दोनों खाने वैठे। वाके जीते जी आखिरी चरखा-द्वादशी हमने खूव शानसे मनाअी। अुसके दृश्य अभी तक मेरी आंखोंके आगे अितने ताजे हैं कि मैं चित्रकार होती तो अुनका हूवहू चित्र खींच देती। परंतु हमें यह कल्पना थोड़े ही थी कि वाके लिअे यह सव अन्तिम ही सावित होगा।

वापूजी और वाके भोजन कर लेने पर सव कैदी प्रणाम करने आये। लेडी ठाकरसीकी तरफसे जो संतरे और मोसंत्रियां आअी थीं, वे वापूजीके हाथसे दिलवानेके लिअे वाने मंगवाअीं। कैदी प्रणाम करते गये और वापूजी आअी हुअी सारी भेंट अुन्हें वांटते गये। फिर आराम करनेके लिअे लेट गये।

मैंने बापूजी और बाके पैर जल्दी जल्दी मले, अितनेमें २॥ से ३॥ बजेका सामूहिक कताअीका वक्त हो गया।

२॥ से ३॥ तक सबने मौन-कताअी की।

४॥ बजे कैदियोंको मिठाअी, चिवड़ा और सेव-गांठिये दिये। यह सब कैदियोंकी सहायतासे घर पर ही बनाया गया था।

मीराबहन अपनी नअी धुनमें चार बजेसे ही बैठी थीं। वे अेक मिट्टीका मंदिर बना रही थीं, जिसमें मंदिर, मस्जिद और गिरजेका आकार दिख सके। छः बजे अुन्होंने यह काम पूरा किया। छः बजे जब बापूजी घूमने गये तो अुसी कमरेमें मीराबहनने फूलोंके पौधोंके गमले रखकर जंगलका दृश्य बनाया। पत्थर रखकर पहाड़ बनाया और अुसमें यह मंदिर रखा। सराअियोंमें सोलह दिये जलाये। मंदिरके भीतर शिवलिंगके रूपमें अेक चमकदार पत्थर रखा, जो रास्तेमें मिला था।

बापूजी घूमकर आये, अितनेमें तो अुस कमरेका दृश्य जंगल जैसा बन गया। मैं अिस काममें मीराबहनकी सहायिका थी। सब बत्तियां बुझा दी गअीं। अिन दियोंका प्रकाश सुन्दर मालूम हो रहा था। वह दृश्य अैसा अनुपम था मानो जंगलमें मंगल हो रहा हो।

बा तो बहुत ही आस्था और श्रद्धावाली थीं। अुन्होंने अुस पत्थरको शिवलिंग ही मानकर अुसे अपने तुलसीके गमलेमें रखवाया। वहां वे रोज प्रातः सायं पूजा करतीं और घीका दिया जलातीं। वह अुनका शान्ति प्राप्त करनेका स्थान था।

(अीश्वरकृपा और सौभाग्यसे मीराबहनका बनाया हुआ वह मिट्टीका मंदिर और वह पत्थर जिसको बा शिवलिंग मानकर पूजा करतीं, दोनों प्रसादियां मेरे पास अुस पवित्र चरखा-जयंतीके प्रतीक-स्वरूप मौजूद हैं।)

शामकी प्रार्थनामें बाका प्रिय भजन, 'हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे' गाया। यह भजन आश्रम-भजनावलिमें है।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने सोमवारका मौन लिया। अिस पर्वत और जंगलके दृश्यको देखकर किसीका भी जी नहीं भर रहा था।

जरासा मौका मिलते ही वहां जाकर खड़े हो जाते। बापूजीने मौनसे पहले कहा : "मीराबहन प्रकृतिकी पुजारिन है, अतः अुसके लिअे सृष्टि-सौन्दर्यका अवलोकन करके अुसे आचरणमें लाना बायें हाथका खेल है।" सुशीलाबहनने अिस दृश्यका चित्र बना लिया। अिसलिये अुन्होंने अिस दृश्यको अपनी चित्रकलासे स्थायी कर दिया।

नौ बजे बापू बिस्तर पर गये। मैंने अुनके पैर दबाकर और अुन्हें अंतिम प्रणाम करके आजका यह मंगल दिवस आनंदमें समाप्त किया।

२४
दो वर्षगांठ

आगाखां महल, पूना,
२६-९-'४३

लार्ड लिनलिथगो भारतके-वाअिसरॉयका पद छोड़कर भारतसे विदा लेनेवाले थे। अिसलिअे पू० बापूजीने अेक मित्रके नाते अुन्हे पत्र लिखा। अुसका सार यह था :

> आप भारतसे विदा हो रहे हैं, अिसलिअे दो शब्द लिखनेकी अिच्छा हो रही है। आपके हृदयमें अीश्वरका निवास हो। आशा है अीश्वर आपको यह समझनेकी सद्‌बुद्धि देगा कि आप जैसे अेक महान राष्ट्रके प्रतिनिधिने अेक बड़े साम्राज्यमें अितनी बड़ी झूठ चलाकर गंभीर भूलें कीं। भगवान् आपको यह सद्‌बुद्धि दे।

आगाखां महल, पूना,
२९-९-'४३

बंबअी सरकारकी तरफसे मुझे आज फिर पत्र मिला कि तुम्हें छूटना हो तो अभी ही छूट सकोगी, बादमें जब अिच्छा हो तब नहीं छूट सकोगी। अिसके अुत्तरमें मैंने लिखा कि मैं यहां अेक सेविकाके रूपमें आअी हूं और रही हूं, अिसलिअे आपकी सभी शर्तें मुझे मंजूर हैं।

आगाखां महल, पूना,
२२–१०–'४३

आज डॉ० गिल्डरका बासठवां जन्म-दिवस था। अिसलिअे सवेरे जरा धूमधाम रही। डॉक्टर साहब बापूजीको प्रणाम करने आये, तब बापूजीने अपने हाथके सूतके बासठ तारका हार अुन्हें पहनाया। बा और हम सबने तिलक करके डॉक्टर साहबको हार पहनाये। बाने तो शक्कर देकर सबका मुंह भी मीठा किया।

कटेली साहबने खानेकी मेज पर अच्छी तरह पैक किये हुअे और अूपर पतेके लेबल चिपके हुअे छोटे बड़े पार्सल अिस तरह जमा दिये थे, मानों डॉक्टर साहबके जन्मदिनके निमित्त बाहरसे भेंटें आअी हों। अेक पार्सल पर 'स्मोकलेस सिगार' लिखा हुआ था। अुस पार्सलमें दूध, कोको, गुड़ और मूंगफलीका भूसा मिलाकर चुरुट जैसा ही रंग और आकार बनाकर अूपर सच्चे चुरुटका ही सुनहरा कागज लपेटकर चुरुटके लकड़ीके डब्बेमें (जिस कंपनीकी तरफसे वे बने हों अुसका निशान कायम रखनेको) भर दिया। डॉक्टर साहबके चुरुट काममें लेनेके बाद जो डब्बे खाली होते, अुन्हें हममें से जिसे आवश्यकता होती वह ले लेता। वैसे डब्बेका अुपयोग किया गया। चुरुट जैसी यह चाकलेट बनानेका परिश्रम प्यारेलालजीने किया था।

दूसरे पार्सलमें अेक कसीदा किया हुआ मेजपोश था। अुसे सुशीलाबहनने तैयार किया था।

अेक पार्सलमें मिट्टीके खिलौने — बकरी, बैल, गाय अित्यादि थे। वे मीराबहनके बनाये हुअे थे।

ये सब पार्सल डॉक्टर साहब सुबहकी चाय पीने मेज पर आये, तब कटेली साहबने गंभीर चेहरा बनाकर अुन्हें सौंपे और वहीं पर खोले। अिस प्रकार आनंद-विनोदमें प्रातःकालका समय कहां चला गया अिसका पता ही नहीं चला। अिसलिअे सुबह बैडमिंटन खेलनेके लिअे हमें मुश्किलसे पंद्रह मिनट मिले।

हम खेलने नीचे अुतरे। बाकी तमन्ना यह थी कि आज तो डॉक्टर साहबको ही जीतना चाहिये। अिसलिअे हमारे दल बनाये

गये। अेक दलमें कटेली साहव, डॉक्टर साहव और प्यारेलालजी, और दूसरेमें मीराबहन, सुशीलाबहन और मैं। हमारा दल हारा और डॉक्टर साहबका दल जीता। अिससे बाको खूब आनंद हुआ।

आगाखां महल, पूना,
२९-१०-'४३

दीवालीका त्यौहार हमारे यहां खूब धूमधामसे मनाया जाता है। परंतु बापूजीके लिअे तो ये सब दिन अेक प्रकारसे समान ही थे। क्योंकि सब जेलमें थे और भारतमें गुलामी थी, अिसलिअे आनंद तो होता ही कैसे? परंतु बा शकुन रखे विना कैसे मानतीं? लगभग नौ बजे मैं रोज अुनके सिरमें मालिश करके कंघी करती थी। मुझसे कहने लगीं: "आज दीवाली है न? अिसलिअे तू मेरी मालिश करके तुअरकी दाल चढ़ा देना और पूरणपोली बनाना।" बादमें दक्षिण अफ्रीकाकी बात करते हुअे बोलीं: "बापूजीको पूरणपोली अितनी अधिक प्रिय थी कि हर रविवारको जरूर बनवाते थे।"

मैंने कहा: "यदि हम शक्करके बजाय गुड़की बनायें और बकरीका घी काममें लें तो बापूजीको खानेमें क्या अेतराज हो सकता है?"

बा बोलीं: "तू बापूजीसे पूछ लेना।"

मैंने बापूजीसे पूछा। बापूजी जरा मुस्कराकर बोले: "यदि बा चखे तक नहीं तो मैं अुसके बदले खा लूंगा।" मेरी समझमें नहीं आया कि बापूजी यह शर्त क्यों लगा रहे हैं, अिसलिअे मैंने पूछा। सुशीलाबहनने समझाया, "बाको दाल भारी पड़ेगी और हृदयकी धड़कन बढ़ जायगी, अिसीलिअे बापूजीने अैसा कहा होगा।"

यह समझ लेनेके बाद जो शब्द बापूजीने कहे थे वही मैंने बासे कह दिये।

अुन्होंने तो अेक क्षणका भी विचार किये बिना कह डाला, "यदि बापूजी खायें तो मुझे पूरणपोली चखनी तक नहीं।" बापूजी और हम सबको अुन्होंने आनंदपूर्वक पूरणपोली खिलाअी।

आगाखां महल, पूना,
नववर्ष
३०–१०–'४३

जल्दी अुठकर प्रार्थनासे पहले ही बा, प्यारेलालजी, सुशीलाबहन और मैंने बापूजीको प्रणाम कर लिया था। प्रार्थनाके बाद नहा-धोकर मैंने जब सबको प्रणाम किया, तब दुबारा बापूजीको भी किया। बापूजी विनोदमें कहने लगे: "तू सबसे छोटी है, अिसलिअे तुझसे अीर्षा होती है। तेरे लिअे कैसा मजा है कि आज तुझे सबके आशीर्वादकी धप मिलती है और मुझे किसीकी भी नहीं।"

अितनेमें डॉक्टर साहब भी प्रणाम करने पहुंच गये, तो मेरे साथ हुअी बात डॉक्टर साहबको दुबारा सुनानेके बाद बापूजी बोले:

"यह थोड़े ही नववर्ष है? सच्चा नववर्ष तो अुसी दिन मनाया जायगा, जब भारत आजाद होगा। और दीवाली या होली सभी त्यौहार तभी मनाये जा सकते हैं, जब हिन्दुस्तान आजाद हो। सबको पेटभर खानेको मिले, कपड़े मिलें, और रहनेको मकान मिलें। आज चारों ओर होली जल रही है। परंतु अैसे नववर्ष और दीवाली कितने ही चले गये और शायद कितने ही चले जायंगे। अलबत्ता, मुझे पूरा धीरज है। जो होता है या हुआ है अुसमें हिन्दुस्तानका भला ही है, अैसा मानना चाहिये। आपने तो बहेरामजी मलबारीकी यह कविता पढ़ी होगी न — 'सगां दीठां में शाहआलमनां भीख मागतां शेरीअे?'* हम अुसीके वारिस हैं न? अुसके संबंधी कहें तो भी गलत नहीं होगा। अीश्वर जाने हमें कब तक भीख मांगनी पड़ेगी?"

आगाखां महल, पूना,
७–११–'४३

आज मीराबहनका जन्मदिन था। जन्मदिन तो आते ही हैं, परंतु मीराबहनका जन्मदिन कुछ दूसरी ही तरहका था।

---

* शाहआलमके सगे-संबंधियोंको मैंने गलियोंमें भीख मांगते देखा है।

सवेरे वे बापूजीको प्रणाम करने आओीं, तव बापूजीने अपने काते हुअे सूतकी अठारह तारकी माला मुझसे मांगी।

मीराबहन बापूजीके पास ही थीं, अिसलिअे मुझे आश्चर्य हुआ कि सिर्फ अठारह तार क्यों? परंतु अुस समय यह सारा ब्यौरा पूछनेका मौका नहीं था। मैंने तुरंत अठारह तारकी माला दे दी। मीराबहनको गाय, बकरी आदि पशु-पक्षियों पर खूब ही प्रेम है। अिसलिअे कटेली साहबने मिट्टीकी गाय, चिड़िया आदि खिलौनोंका पार्सल बनाकर बापूजीके द्वारा अुन्हें दिया।

अिस सारी विधिके बाद जब मीराबहन मेज पर दूध पीने बैठीं, तब मैंने पूछा, "आपको आज बापूजीने सिर्फ अठारह तारकी माला किस लिअे पहनाओी? आम तौर पर नियम यह है कि जिसका जो साल शुरू हुआ हो, अुसे अुतने ही तारकी माला पहनायी जाय।"

मीराबहनने मुझसे कहा: "मैं अपना जन्म अुस समयसे मानती हूं, जबसे मैं बापूजीके चरणोंमें आओी हूं। बापूजीकी दुनियामें जीना बड़े सौभाग्यकी बात है। परंतु बापूके भारतमें जीना तो अुससे भी अधिक है। जबसे मैं बापूजीके पवित्र चरणोंमें आओी, तबसे अपना सच्चा जन्म हुआ मानती हूं। ७ नवम्बर, १९२५ को अर्थात् आजसे अठारह वर्ष पहले मैंने बापूजीके चरणोंमें सिर रखा। अिसलिअे आज मुझे अठारह वर्ष पूरे होकर १९ वां वर्ष लग रहा है। भले ही तुझे दीखनेमें मैं बड़ी लगती हूं, परंतु अपने मनमें मैं बापूजीके सामने अठारह वर्षकी बालिका ही हूं।"

* * *

प्रबोधिनी अेकादशी
९-११-'४३

प्रबोधिनी अेकादशीके दिन तुलसीका ब्याह होता है। और बाको तुलसी पर असीम श्रद्धा थी। सुबह-शाम तुलसीके गमलेमें घीका दिया जलवातीं। प्रार्थना या पाठ भी वहीं बैठकर करतीं और अेक तुलसीका गमला बरामदेमें रहता।

पू० बाने चार गन्नोंका सुन्दर मंडप बनवाया। सुशीलाबहनने रांगोलीका अेक रंगीन बड़ा फूल बना दिया। अुस पर गमला रखवाया। सामने ॐ लिखा और तुलसीको फूलोंसे खूब सजाया गया। सूखे-गीले मेवोंका प्रसाद रखा। शामके समय बापूजी भी देखने आये। आरती अुतारी और रोजके समय प्रार्थना हुअी। जब तक नित्यके अनुसार रामायणकी चौपाअियां गाअी गअीं, तब तक धूप-दीप जलते ही रखे गये। प्रार्थनाके समय रोशनी बंद कर दी जाती थी। रोशनी बन्द हो जानेके बाद अगरबत्ती और घीके दियेका तेज और तुलसीका बढ़िया शृंगार देखते ही बनता था। साथ ही प्रार्थना, रामधुन, भजन, रामायणकी चौपाअियां सुशीलाबहनके मंजीरे और मीराबहनके तंबूरेकी झंकारके साथ गाये जा रहे थे। रोजकी प्रार्थनाकी अपेक्षा आज कुछ अनोखा ही वातावरण बन गया था।

सप्ताहमें दो बार भजन गानेकी मेरी बारी रहती थी: सोमवार और शुक्रवार। आज सोमवार था। बाने नीचेका भजन गानेकी सूचना की:

दिलमां दीवो करो रे दीवो करो,
कूडा काम क्रोधने परहरो रे. दिलमां०

दया दिवेल प्रेम परणायुं लावो,
मांही सुरतानी दिवेट बनावो,
मांही ब्रह्म अग्निने चेतावो रे. दिलमां०

साचा दिलनो दीवो ज्यारे थाशे,
त्यारे अंधारुं मटी जाशे,
पछी ब्रह्मलोक तो ओळखाशे. दिलमां०

दीवो आभे प्रगटे अेवो,
टाळे तिमिरना जेवो,
अेने नेणे तो नीरखीने लेवो. दिलमां०

दास रणछोड़ घर संभाळ्यं,
जडी कूंची ने ऊघड्युं ताळुं,
थयुं भोमंडळमां अजवाळुं. दिलमां०

[अर्थ : दिलमें दिया जलाओ। काम-क्रोधकी बुराओीको छोड़ो। दयाका तेल और प्रेमका दीपक लाओ, अन्दर ध्यानकी बत्ती बनाओ और अुसमें ब्रह्मकी अग्नि प्रगटाओ। जब सच्चे हृदयका दिया जलेगा तब अंधेरा मिट जायगा। बादमें ब्रह्मलोकका ज्ञान होगा। दिया हृदयरूपी आकाशमें अैसा जले जिससे सारा अंधकार नष्ट हो जाय। अुसे आंखोंसे अच्छी तरह देख लिया जाय। दास रणछोड़ कहते हैं कि ज्ञानकी कुंजी मिल गओी, ताला खुल गया और हमें आत्मज्ञान हो गया। अिससे भूमंडलमें अुजाला हो गया।]

अिस प्रकार आजका भजन भी बाने अिस वातावरणके अनुरूप ही ढूंढ़ निकाला।

२५–११–'४३

डॉ० सुशीलाबहनकी भाभीके अेक दिनकी छोटी बच्ची छोड़कर गुजर जानेका तार मृत्युके दस दिन बाद सुशीलाबहनके हाथमें आया। अिस संबंधमें गृहविभागको तो पत्र लिखा गया था, परंतु साथ ही बाने बापूजीसे अिस प्रकारका पत्र भेजनेका भी आग्रह किया था कि सुशीला-बहनको अुनकी माताजीके पास दिल्ली भेजा जाय। लेकिन यह असंभव बात थी, क्योंकि सरकार बापूजीके पास रहनेवालोंमें से किसीको बाहर नहीं भेजना चाहती थी। तब बाने यह आग्रह किया कि सुशीलाबहनने अब तक अपने किसी भी संबंधीको पत्र नहीं लिखा। लेकिन यह टेक अैसे समय छोड़ देनी चाहिये। सुशीलाबहनने कहा कि सरकारको जब अेक बार बता चुकी कि मैं पत्र नहीं लिखूंगी, तो अब कैसे लिख सकती हूं? तब बा बापूजीके पास गओीं और कहा कि सुशीला-बहन तथा प्यारेलालजी दोनों भाओी-बहनको घर पत्र लिखना ही चाहिये। बापूजीके समझानेसे दोनों भाओी-बहनने घर पत्र लिखा। परंतु

मुझे मध्यप्रान्तकी सरकारने छोड़ा था और देवदास काकाके पत्रमें अुसका अुल्लेख किया गया था, जिससे कुछ गलतफहमी हुअी। सुशीला-बहनकी माताजी दिल्लीमें रहती थीं, अिसलिअे समय समय पर देवदास काका अुनसे मिलते रहते थे। अुनकी स्थिति देखकर देवदास काकाने बाके नाम पत्र लिखा कि सुशीलाबहनने छूटनेसे अिन्कार कर दिया, परंतु अुन्हें अैसा नहीं करना चाहिये था। अुनकी माताजीको अुनकी सहायताकी बड़ी आवश्यकता है।

अैसी गलतफहमी होनेके कारण बाने थोड़ा अुलहना मुझे भी दिया, क्योंकि अुनके पत्र मैं ही लिखती थी। पत्र यद्यपि मैं लिखती, परंतु बा दस्तखत तभी करतीं जब खुद पढ़ लेतीं कि क्या लिखा है। बाको अिससे बड़ा दुःख हुआ। अुन्होंने सोचा, सुशीलाबहनकी मांको कहीं अैसा न लगे कि मेरी विपत्तिके समय भी मेरी पुत्री काम नहीं आती। अिसलिअे अुन्होंने बापूजीसे कहकर अेक तार दिलवाया कि 'सरकार सुशीलाको नहीं परंतु मनुको छोड़ रही थी।'

सुशीलाबहनने तार देनेके लिअे बहुत मना किया, परंतु बाका हृदय मातृहृदय था। और बच्चोंको माताके प्रति कैसा बर्ताव करना चाहिये, अथवा लड़का या लड़की अपने माता-पिता या बड़ोंके प्रति जब अुनको अप्रिय लगनेवाला व्यवहार करता है, तब अुन्हें लड़के या लड़कीका व्यवहार कितना दुःख पहुंचाता है, अिसका बाको अच्छी तरह अनुभव था। अिसलिअे अुन्होंने सुशीलाबहनकी बात न मानी और तार दिलवाकर ही चैन लिया।

२५
जेलमें मुलाकातें

आगाखां महल, पूना,
२७–११–'४३

बापूजीने (भारत-सरकारको) अिस आशयका अेक पत्र लिखा था कि कार्य-समितिके सदस्योंसे मिलनेके बारेमें नये सिरेसे विचार किया जाय, तो आज बंगालमें जो भुखमरी फैली हुअी है, देशमें हजारों आदमी मर रहे हैं और सेवा करनेवाले जेलोंमें सड़ रहे हैं, अुसका कोअी हल निकल सकता है। अुस पत्रका भारत-सरकारके मंत्री रिचार्ड टॉटनहामकी तरफसे जवाब आया कि:

> ८ अगस्त, १९४२के प्रस्तावके विषयमें आपके विचारोंमें कुछ भी परिवर्तन हुआ नहीं दीखता। किसी तरह अिस बातका कोअी चिन्ह दिखाअी नहीं देता कि कार्य-समितिके सदस्योंमें से भी किसीका मत आपसे भिन्न हो गया हो। और यह तो दोनोंको अच्छी तरह मालूम है कि किन शर्तों पर सहानुभूतिपूर्ण विचार हो सकता है।

अिसके अलावा बापूजीने अेक और पत्र लिखा। डॉ० गिल्डरकी पत्नी बीमार थीं। परंतु अुन्हें या बापूजीके साथ रहनेवाले दूसरोंको बापूजीके साथ होनेके कारण साधारण कैदियोंको हकके तौर पर जो मुलाकातें मिलतीं वे भी नहीं मिलती थीं। अिसलिअे बापूजीने लिखा कि,

> मेरे साथ रहनेवालोंमें सिर्फ डॉ० सुशीला नय्यरको ही तार देरसे मिला हो अथवा अैसे अवसर पर भी कठिनाअी भुगतनी पड़ी हो सो बात नहीं है। डॉ० गिल्डर भी मेरे साथ रहनेके कारण अपनी पत्नी या पुत्रीसे नहीं मिल

सकते। छोटीसी मनु गांधी अपने पिता या वहनोंसे नहीं मिल सकती, न कस्तूरबा ही अपने पुत्र या पौत्र-पौत्रियोंसे मिल सकती हैं।

अलवत्ता, मैं जानता हूं कि ये प्रतिवंध मेरे साथियोंको कड़े प्रतीत नहीं होते। यदि अैसा ही होता तो मनु गांधी वाहर जा सकती थी।

मुझ पर लगाये गये सरकारके प्रतिवंधोंको मैं समझ सकता हूं। परंतु दूसरों पर लगाये गये प्रतिवंध मेरी समझमें नहीं आते।

अुपरोक्त पत्रका अुत्तर आया:

डॉक्टर साहवकी पुत्रीने भी अपनी माताजीकी बीमारीके कारण डॉक्टर साहवसे मुलाकात करनेके लिअे सरकारको अर्जी दी है और अुस पर विचार हो रहा है।*

दोपहरको समाचार मिला कि कल अर्थात् २८–११–'४३ को डॉक्टर साहवको मुलाकत मिलेगी। सव खुश हुअे।

आगाखां महल, पूना,
२८–११–'४३

मुलाकातके लिअे कर्नल भंडारी डॉक्टर साहवको साढ़े वारह वजे लेनेको आये। मुलाकात अुनके दफ्तरमें रखी गअी थी। शामको चार वजे डॉक्टर साहव लौटे।

---

* अिन पत्रोंकी अक्षरशः नकल तो मैंने नहीं रखी थी, परंतु अुस समय लिखे गये पत्र पढ़कर अुनका सार मैंने लिख लिया था। वही दे रही हूं। अिसलिअे कोअी गलतीसे यह न समझ लें कि मैं सरकारके साथका पत्रव्यवहार अक्षरशः दे रही हूं। मूल पत्रव्यवहार तो अंग्रेजीमें ही होता था। परंतु मेरी अंग्रेजी सुधारनेके लिअे और अैसे पत्रव्यवहारसे मेरी जानकारी वढ़ानेके लिअे ही सुशीलावहनने अिस पत्रव्यवहारका मेरे अंग्रेजी पाठोंमें समावेश कर दिया था। रोज मैंने क्या पढ़ा अथवा कितना पढ़ा — आदिकी मुझे नोंध रखनी पड़ती थी। अुसीमें यह लिखा हुआ है।

पू० बाकी तबीयत खराब हो गअी है। रातको सोया नहीं जाता। अिसलिअे आज तो ऑक्सिजन मंगाना पड़ा।

आगाखां महल, पूना,
३०–११–'४३

बाकी तबीयत खराब ही रही। डॉ० गिल्डर और सुशीलाबहनने विचार करके बापूजीसे कहा कि मानसिक राहत मिलनेके लिअे यदि बाहरके व्यक्तियोंसे बाकी बारी बारीसे मुलाकात होती रहे, तो कदाचित् अुन्हें लाभ हो।

दोपहरको अिसके सिलसिलेमें अेक पत्र भी लिखा गया।

आगाखां महल, पूना,
२–१२–'४३

आज कटेली साहबने खबर दी कि 'संबंधियोंकी सूची' बनाकर सरकारको भेज दी जाय तो क्रमशः मुलाकातें दी जायंगी।

दोपहरको बापूजी, बा और मैंने गांधी-परिवारके सदस्योंके — जिनमें से आधे तो अफ्रीकामें रहते हैं — नाम बालकों सहित याद कर-करके लिखे। स्त्री-पुरुष मिलकर लगभग ५०० नाम हुअे। (अिनमें विवाहिता लड़कियां और अुनके लड़के-लड़कियोंका भी समावेश कर दिया। तो भी कितने ही रह गये थे।)

मुझे तो लम्बी नामावली देखकर आज ही पता चला कि अितना विशाल कुटुम्ब है। मैंने बापूजीसे यह बात कही तो वे बोले: "तब तो तेरी अपेक्षा मेरा परिवार कदाचित् सौ गुना बड़ा होगा!" बात सच्ची थी। बापूजी किसी 'गांधी' नामवालेको ही अपना कुटुम्बी नहीं मानते थे। अुनके लिअे तो सारे जगत्के मनुष्य कुटुम्बियों जैसे ही थे।

आगाखां महल, पूना,
४–१२–'४३

कर्नल भंडारीने सुबह खबर दी कि रामदास गांधीको तार दिया है कि वे चाहें तो कस्तूरबासे मुलाकात करने आ सकते हैं।

वे अभी बातें कर ही रहे थे कि अितनेमें अुनका नागपुरसे टेलीफोन आया कि निर्मला काकी (रामदास गांधीकी पत्नी) को भेजा है। कर्नल भंडारीने कहा कि यदि आज आ जायंगी तो आज ही मुलाकात कर सकेंगी, जिससे मुलाकातियोंका समय भी खराब न हो; और मुलाकातके दरमियान बा और बापूजी ही मौजूद रह सकेंगे, दूसरा कोअी नहीं।

आगाखां महल, पूना,
४-१२-'४३

शामको चार बजे निर्मला काकी नागपुरसे मिलने आअीं। मैंने केवल अुन्हें प्रणाम किया, बात तो हो ही नहीं सकती थी।

निर्मला काकी लगभग दो घंटे रहीं। बाने परिवारके सभी लोगोंके कुशल-समाचार पूछे। मुझे अैसा लगा कि आश्रमकी छोटीसे छोटी बातें और आश्रमवासियोंके स्वास्थ्य अेवं नित्यके कार्यक्रमके बारेमें सब कुछ अुनसे जानकर बाने मनमें ताजगी महसूस की। आज वे खुश दिखाअी देती थीं।

रातको समाचार आया कि कल देवदास काका आनेवाले हैं। रात अच्छी बीती, अैसा कहा जा सकता है। डेढ़ बजे सांस चढ़ी हुअी सी लगने पर बाने मुझे जगाया। गरम पानी और शहद पिया। मैंने जरा पीठ पर हाथ फेरा। तुरंत सो गअीं। पिछले तीन दिनोंकी अपेक्षा आज बाने अच्छी नींद ली।

आगाखां महल, पूना,
५-१२-'४३

बापूजीका मौनवार था, अिसलिअे सब कुछ शान्त लगता था। मुझे भूमिति पढ़ानेके विचारसे बापूजी पिछले लगभग पंद्रह दिनसे मेरी पाठशालाके पाठ्य-क्रममें रखी हुअी भूमितिकी पुस्तक (**Plane Geometry**) स्वयं पढ़ रहे थे। आज वह पूरी हो गअी तो बापूजीने अेक पर्चे पर लिखा: "वर्षों बाद मैंने तेरी भूमितिकी पुस्तक पढ़

ली। मुझे अिसमें बड़ा रस आया। तुझे पढ़ाअूंगा तो मेरा और भी पुनरावर्तन हो जायगा। कलसे हमें विन्दुसे प्रारंभ करना है और अिसमें जितने अंग्रेजी नाम हैं अुनके गुजराती नाम बनाने हैं।"

"हमें तो सात साल जेलमें विताने हैं, अिसलिअे गुजरातीमें अेक पुस्तक भी तैयार हो जायगी।" मैंने बापूजीसे कहा तो वे हंसने लगे।

आज देवदास काका आनेवाले थे। परंतु बाने कहा कि, "निमू कल आ गअी थीं, अिसलिअे देवदास भले आज न आकर कल आवे।" अिस पर बापूजीने लिखा: "किसे पता रातको क्या हो जाय? आजका काम आज ही कर लिया जाय। हम यह भजन तो गाते ही हैं कि 'जो कल करना सो आज कर ले, जो आज करे सो अब कर ले'।"

निर्मला काकी भी ठहर गअी थीं। परंतु दोनोंको साथ नहीं आने दिया। दोनों बारी-बारीसे आये, जिससे कटेली साहबको मुलाकातियोंकी डायरी रखनेमें सुविधा रहे।

बाकी तबीयत दिनमें ठीक रही। रातको फिर बिगड़ी। आजसे मैंने और बाने कमरेमें सोना शुरू किया। बापूजी और अन्य सब बाहरके बरामदेमें सोते हैं। रातको नींद न आनेसे बाको बेचैनी रहती थी। अिससे कहीं बापूजीको जागरण न करना पड़े अिस खयालसे बाने यह फेरबदल करवाया।

आगाखां महल, पूना,
७-१२-'४३

आजकल बाकी देखभालमें रहनेके कारण और दोपहरको मुलाकातोंके कारण बापूजी खुदको संतोष हो अिस तरह पढ़ा नहीं पाते। अिसलिअे मुझे सुबह ही पढ़ा दिया।

तीन बजे देवदास काका और निर्मला काकी आये। निर्मला काकीका आज अंतिम दिन था। देवदास काका अभी दो दिन ठहर सकेंगे।

शामको हम घूमने निकले कि अेकाअेक बाकी तबीयत बिगड़ी। अिसलिअे तुरंत सब अूपर आये। सुशीलाबहन और डॉ० गिल्डरने अुनकी परीक्षा की। जरा ठीक लगने पर प्रार्थना की।

सुशीलाबहन तो दस बजे तक खड़े पैरों ही रहीं। मैं शरीर दबाने या कुछ जरूरी चीज ला देनेमें ही मदद कर सकती थी। परंतु डॉक्टरके नाते वे तो तीन-चार घंटे तक लगभग सतत बैठी रहीं। दस बजे बापूजी थोड़ी देर बैठे। सुशीलाबहनको और मुझे बापूजीने आराम करनेके लिअे कहा। मैंने अिन्कार किया, तो बापूजी बोले: "मैं कहूं वैसा करती रहेगी तो ही पार अुतरेगी। जिसे बाकी सेवाका लाभ लेना हो, अुसे पहले अपनेको संभालना होगा।"

मैं चुपचाप अपने पलंग पर चली गअी। मेरे जानेके आधे घंटे बाद ही बाने बापूजीको भी आग्रह करके सोनेको भेज दिया। बापूजी सोनेको अुठे और प्यारेलालजी बाके पास बैठे। प्यारेलालजी दो बजे तक रहे। बीचमें अेक दो बार सुशीलाबहन और डॉक्टर साहबने बाकी परीक्षा की। ३॥ बजे बापू आकर मुझे अुठा गये। खांसी और सांसका बड़ा जोर था। शरीर दुःख रहा था। ३॥ से ७॥ के बीच अेक बार ३० मिनट और अेक बार २० मिनटके लिअे बाको अच्छी नींद आअी। सीधा नहीं सोया जाता था।

सबेरे दातुन करके गरम पानी और शहद पीकर ८ से ९। तक अच्छी नींद ली।

आगाखां महल, पूना,
८-१२-'४३

पू० बाको मालिश करनेसे सुशीलाबहनने मना कर दिया। नहानेकी भी मनाही कर दी। परंतु स्पंज करवाया। दस बजे बाने अेक रकाबी काढ़ा लिया। कुछ भाता नहीं। दूधमें आधा पानी डलवा कर अंजीर अुबाले और दोपहरके भोजनमें दिये। कमजोरी बहुत ज्यादा लगती है।

आज दोपहरकी मुलाकातमें हरिलाल काकाकी दोनों लड़कियां थीं। रामीबहन कहती थीं कि माधवदास मामाको मुलाकातकी अनुमति नहीं दी गअी (माधवदास मामा बाके भाअी हैं।)

छोटीसी अुर्मिने बढ़िया नाच करके दिखाया। बा अपने बेटेकी सात वर्षकी बेटी अुर्मिकी कला हंसते हंसते आनंदसे देख रही थीं। दादा-दादियोंको अपने पुत्रों, पौत्रों या पौत्रियोंके पराक्रम देखकर आनंद होना स्वाभाविक है।

अिन सबके जानेके बाद माधवदास मामाकी बारी आअी। भाअीकी बहन अेक थीं और बहनके भाअी अेक थे। अैसे भाअी-बहनकी जेलके भीतर मुलाकात होना अेक अनोखा दृश्य था। बाकी भाभी गुजर गअी थीं, अिसलिअे माधवदास मामा मनसे कुछ अस्वस्थ और दुबले लगते थे। पहले तो मामाके प्रवेश करने पर हर्षके आवेशमें अेकदम कोअी बोल नहीं सका। दो मिनिट नीरव शान्ति छा गअी। मैंने मामाको बहुत वर्षों बाद देखा। प्रणाम किया।

बा अेकदम बोल अुठीं, "अितने दुबले क्यों हो गये हो? रामका नाम लो। सारी चिन्ता छोड़ दो। अब क्यों व्यर्थकी चिन्ता की जाय?"

बाने अुन्हें चाय देनेको कहा। चाय दी। निर्मला काकी नागपुरसे जाड़ेके लिअे मेथीपाक बनाकर लाअी थीं, वह सब अुन्हें दे दिया और कहा "यह निमू बनाकर लाअी थी, तुम्हें वापस दे रही हूं। खा लेना और बेकारकी चिन्ता मत करना। अब अीश्वर-भजनमें जिन्दगी बितानेका समय है। जितना हो सके रामनाम लो।"

अन्तमें विदाअीके समय दोनों गद्गद हो गये।

तीसरी बारी देवदास काकाकी आअी। देवदास काकाने खबर दी कि नागपुर जेलमें किशोरलाल काकाका स्वास्थ्य बहुत ही खराब है। वजन ७५ पौण्ड हो जाने और दम अुठनेकी बात कही। अुन्हें

पैरोल पर छुड़वानेकी बात की। बापूजीने मना करते हुअे कहा: "किशोरलालको तो मैं खो चुका। अुन्हें मैं अच्छी तरह जानता हूं। वे बीमारीके कारण पैरोल पर छूटनेको राजी होनेके बजाय जेलमें मरना पसन्द करेंगे। नागपुर जेलमें ही महादेवकी तरह अुनके चले जानेकी खबर सुनूं तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। कौन जाने अैसे लोगोंके बलिदान ही शायद स्वराज्यकी कुंजी साबित हों।"

२६

सरकारका बरताव

आगाखां महल, पूना,
२६-१२-'४३

पू० बाका स्वास्थ्य कभी अच्छा कभी बुरा चलता रहता है। आज शामलदास काका अपने परिवारके साथ, देवदास काका परिवारके साथ और जमनादास काका भी अिजाजत मिल जानेके कारण दोपहरको तीन बजे आयेंगे। यह समाचार कर्नल अडवानी दे गये।

सबकी बारी अेकके बाद अेक आअी। और सब परिवार बच्चोंके साथ होनेके कारण बहुत शोर हो रहा था। बापूने बच्चोंको सूखा मेवा दिया। शामलदास काकासे कहने लगे: "ले, तू भी तो बच्चोंमें ही गिना जायगा न? मेरी दृष्टिमें तो तू बालक ही है।" यों कहकर अुन्हें भी बापूने प्रसादी दी।

दूसरी बारी देवदास काकाकी थी। लक्ष्मी काकी, तारा, मोहन और रामू सभी आये थे। अुन सबको भी मेवेकी प्रसादी दी। मुझे अुन सबके साथ खेलनेका आनन्द मिल गया। मैं, तारा और मोहन दूसरे कमरेमें खेलने बैठ गये। अिसमें मैं अपना काम भूल गअी। परंतु बापूजीको पढ़ानेका समय न मिलनेके कारण भाग्यवश बच गअी।

सबके जानेका समय हो गया। तब लक्ष्मी काकीने बाको प्रणाम करनेके लिअे बच्चोंको बुलाया। बाने देवदास काकासे कहा: "जयसुखलाल और मनुकी बहनको खबर देना और कहना कि अुन्हें सुविधा हो तो अेकाव बार मिल जायं।" ये शब्द मेरे कानों पर पड़े और मैं प्रसन्न हो गअी। जाते जाते काकाने कहा, "मैंने कराची समाचार भेज दिये हैं।" अिससे मैं बहुत ही खुश हुअी। डेढ़ वर्षसे किसीका मुंह नहीं देखा था, अिसलिअ आनंद होना स्वाभाविक था। बा कहने लगीं: "हम कानून नहीं तोड़ सकते, अिसलिअे तू कोअी बात न करना। परंतु मिलना तो होगा ही।"

बा अपनेसे भी दूसरेका विचार कितना ज्यादा करती हैं! बात भी सही है। सभी मुलाकाती कोअी बाके साथ बातें नहीं करते, क्योंकि अुन्हें बात करनेमें भी दम अुठता है। मुलाकाती तो केवल प्रणाम करते हैं। बा सबका कुशल-मंगल पूछती हैं। बादमें तो सभी लगभग बापूजीसे ही बातें करते हैं। बाहर बा और बापूजीके समाचार पानेके लिअे तड़पती हुअी जनताको मुलाकातियों द्वारा अुनके ताजे समाचार मिल जायं तो अुसे कितना धीरज बंधे!

मुलाकात छः बजे तक चली। बाकी तबीयत ठीक रही। बापूजीका रक्तचाप बढ़ गया है। हम सब दिनभर पिछले बरामदेमें धूपमें ही बैठते हैं।

आगाखां महल, पूना,
२९-१२-'४३

सुबह ही साढ़े आठ बजे कटेली साहबने बासे कहा, आज मनुका कुटुम्ब आ रहा है। बाको बड़ी खुशी हुअी। वे बोलीं, "अच्छा, बेचारी छोटीसी लड़की यहां पड़ी है। अपनी बहन और बापसे मिलकर खुश हो जायगी। बच्चोंकी मिलनेकी अिच्छा तो होती ही है न?" मेरी तरफ देखकर कहने लगीं: "ले, आज तो तेरे पिताजी और संयुक्ता आ रहे हैं; तुझे कुछ कहना हो तो मुझसे कह देना।"

आज सबको साथ आने दिया। कनुभाओी और मेरी बुआ भी थीं। कनुभाओीने बाको भजन सुनाया। मेरी बहनने भी भजन सुनाया। बुआजीने बाके सिरमें तेल मला। मेरी अिन लोगोंसे बोलनेकी तो बहुत अिच्छा हुओी, परंतु क्या करती?

बहनकी छोटी छोटी बच्चियां — अरुणा और हंसा थीं। अुनमें से अरुणाको तो मैंने अनजाने ही अेकदम अुठा लिया। जरा खेलानेके बाद ही भान हुआ कि कानूनका अुल्लंघन कर दिया। परंतु कटेली साहब बड़े भले हैं। मैंने ज्यों ही अरुणाको नीचे अुतारा वे मुझसे कहने लगे, "छोटे बच्चोंको न खेलानेकी आज्ञा सरकार नहीं देती।" मैं और भी शर्मिन्दा हुओी। दो घंटे बाद सब चले गये।

आगाखां महल, पूना,
२–१–'४४

कटेली साहब अेक हुक्म लाये। मुलाकातके समय अेक ही नर्स मौजूद रह सकती है और बहुत जरूरत हो तो अेक डॉक्टर अुपस्थित रहे। अिसके अलावा बा डॉक्टर दिनशा महेताकी देखभालके लिअे तरस रही थीं और शायद देशी दवासे कुछ राहत मिले, अिसके लिअे बार-बार अेक वैद्यको दिखानेकी मांग करती थीं। ये सब बातें जब कर्नल भंडारी या कर्नल शाह आते तब बा रूबरू अुनसे करतीं। परंतु अुनका कोओी परिणाम न होने पर बापूने टॉटनहामके नाम अेक पत्र लिखा कि मुलाकातके समय सेवा-शुश्रूषा करनेवालों पर पाबंदी नहीं होनी चाहिये। बीमारके अशक्त होनेके कारण कमसे कम दो तीन सेवा करनेवालोंकी जरूरत होती है। कनुभाओीको हर तीसरे दिन आनेकी अिजाजत मिली है, अिसके बजाय अुन्हें आगाखां महलमें ही रहने देनेकी बात भी बापूजीने लिखी।

यह भी लिखा कि कस्तूरबाको मुलाकातियोंकी अिजाजत तो मिल गओी, परंतु सेवा-शुश्रूषा करनेवाला अुस समय मौजूद न रह सके, अिसमें कोओी विवेक नहीं है। अिसके सिवाय हरिलाल काका यहीं थे, परंतु कर्नल भंडारीको अुन्हें आने देनेकी अनुमतिकी कोओी

सूचना न होनेके कारण वे मिलने नहीं आ सके। यह बात जब बाको मालूम हुआी तो अुन्हें बहुत दुःख हुआ। अिसलिअे अिस बातका अुल्लेख भी पत्रमें किया कि हर बार मुलाकातियोंको बंबअीके दफ्तरसे ही अनुमति लेनी पड़ती है, अिसके परिणामस्वरूप देर होती है और मुलाकात नहीं हो पाती।

अिस पत्रका अंतिम भाग तो अितना करुण था कि जब मैं सुशीलाबहनके पास पढ़ रही थी तब अुनकी आंखोंसे भी आंसू टपक पड़े। अुसमें लिखा था कि,

> श्रीमती कस्तूरबा तो सरकारकी बीमार हैं। अुनके पतिके नाते मुझे कुछ नहीं कहना है। छोड़नेके बजाय अुन्हें मेरे साथ अुनके भलेके लिअे यहां रखा गया है। परंतु वे अच्छी हो जायं या मृत्युकी ओर चली जायं, अिस बीच और कुछ न हो सके तो भी अुन्हें मानसिक शान्तिकी राहत मिले, यह देखना मेरा और सरकार दोनोंका कर्तव्य है। अुनकी किसी भी मानसिक भावनाको चोट पहुंचानेका असर अुनके रोग पर बहुत ही बुरा होता है।

बापूजीका वजन अिस सप्ताह दो पौंड घट गया। आजकल लगभग रोज जागरण होता है। खुराक भी रोजके हिसाबसे घट गअी है।

आगाखां महल, पूना,
८–१–'४४

संबंधियोंकी मुलाकात लगभग रोज ही होती है। अेक आया सरकारकी ओरसे दी गअी थी, जो आज चली गअी। बेचारी अपने बालबच्चोंको छोड़कर आअी थी। अुसे भी रातदिन हमारे साथ नजर-कैदमें रहना पड़ता था। यह अुसे कैसे अच्छा लगता? अिसलिअे अन्तमें आज तो वह अूब गअी।

तारके पास लगभग ३० फुटकी जगह है, जहां सुबहकी धूप आती है। बापूजी सवेरे वहीं घूमते हैं। आज हुक्म आया कि वहां न घूमें।

मैंने क्रोधमें कह दिया, "यहां आपके घूमनेमें सरकारका क्या जाता है?"

बापूजी कहने लगे: "हां और ना का तो वैर है न? बाको मुलाकातकी अिजाजत दिये बिना तो छुटकारा नहीं था, अिसीलिअे दी है।"

मैंने कहा, "बाको छोड़ देनेमें क्या आपत्ति है?"

बापूजी बोले, "मान लो बा कहीं गुजर जाय तो अुसकी अन्त्येष्टिके लिअे तो मुझे छोड़ना ही पड़े। अिसका अुन्हें डर है। न छोड़े तो दुनियाके सामने काला मुंह हो जाय। मौलाना साहबको कहां छोड़ा — हाल ही में अुनकी बेगम गुजर गअीं तो भी? परंतु बा गुजर जाय तो मुझे तो छोड़ना ही पड़े।"

अब मुझसे और सुशीलाबहनसे काम नहीं चल सकता था और आया भी चली गअी थी, अिसलिअे बाने प्रभावतीबहनकी मांग की। सुशीलाबहन और डॉ० गिल्डर साहबने अिस बारेमें पत्र लिखा था। अुसका अुत्तर आया कि प्रभावतीबहन अेक दो दिनमें आ जायंगी।

आगाखां महल, पूना,
९–१–'४४

आजसे बापूजीने मौन लेना शुरू किया है। सुशीलाबहन और मुझे पढ़ानेके लिअे, मुलाकातियोंके साथ बात करनेके लिअे, और बाके लिअे बोलेंगे और अधिकारियोंके साथ बहुत जरूरत होगी तो बोलेंगे। यह व्रत कब तक रहेगा, अिसकी मियाद नहीं रखी।

आगाखां महल, पूना,
१२–१–'४४

शामको प्रभावतीबहन भागलपुरसे आ गअीं। साथमें युरोपियन सार्जण्ट थे। मुट्ठीभर हड्डियोंवाली प्रभावतीबहन अितने कड़े पहरेमें आअीं। अुस वक्त हम घूमने जा रहे थे। बाके पास प्यारेलालजी थे।

दुबली पतली प्रभावतीबहनके साथ जितने भरी बंदूकोंवाले सार्जण्ट देखकर मैं हंस पड़ी। बापूजीसे कहा, "मेरे साथ आनेवाले नागपुर जेलसे भेजे गये बेचारे दो सिपाहियोंको यह पता नहीं था कि नागपुरसे पूना किधरसे जाते हैं। अिसलिअे सरकारी दृष्टिमें मैं विश्वासपात्र मानी जाअूंगी न?"

बापूजी कहने लगे, "तेरी बात सच है। सरकारी दृष्टिसे भले विश्वासपात्र तू हो, परंतु मेरी दृष्टिसे प्रभा होगी। तू कभी भाग भी जाय, परंतु प्रभा हरगिज नहीं भागेगी।" यों कहकर हम दोनोंको बाके पास भेज दिया और प्रभाबहनको नहाने और मुझे अुन्हें खिलानेको कहा।

प्रभावतीबहन बाके पास गअीं। बाने सबसे पहले जयप्रकाशजीके समाचार पूछे।

"अुनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। वे जेलसे भागे और पकड़े गये, अुसके बाद अुन पर जुल्म करनेमें सरकारने हद कर दी।" यों कहकर अपनी आपबीती भी सुनाअी।

प्रभाबहनने बहुत ही कष्ट सहन किया था। आते ही अुन्होंने काम संभाल लिया। बहुत ही मिलनसार और प्रेमल स्वभाव है।

मैंने कहा, "गाड़ीकी थकावट तो अुतरने दीजिये!"

वे बोलीं, "परंतु मुझे तो तुम्हारी थकावट दूर करनी चाहिये न? बापूजी और बाकी सेवा करनेमें मेरी थकावट अपने-आप दूर हो जायगी।"

हम दोनोंमें कामका बंटवारा हुआ। सुबहसे अेक बजे तक मैं बाके पास रहूं; १ से ६ तक प्रभाबहन। सुशीलाबहन या प्यारेलालजीको जरूरत पड़ने पर ही बुलाया जाय। वे बापूजीकी सेवामें रहें, ताकि किसी पर कामका ज्यादा भार न पड़े।

अब तो अीश्वरसे अेक ही प्रार्थना है कि हम सबके बीच हमारी बाको फिरसे भलीचंगी बना दे, जिससे हमारा आश्रय और भी बलवान हो जाय।

२७
बाके अंतिम दिन

आगाखां महल, पूना,
१४–१–'४४

आजकल शामको मुलाकातियोंके आनेके कारण बा रोज चार बजे गुजराती वाल्मीकि रामायण पूरी करनेके बाद भागवत सुनतीं। अेक बार तो सारी भागवतका पारायण हो गया था। परंतु कुछ गूढ़ भाग मैं सादी भाषामें बाको समझा नहीं सकती थी, अिसलिअे सुशीलाबहन पढ़ने लगीं।

पिछले चार-पांच दिनसे अुपरोक्त कारणसे पारायण बन्द रहा, यह बाको खटकता था। आज अुन्होंने मुझे कहा: "सुशीलासे कह दे कि वह मुझे दो बजे आकर पारायण सुना जाय।" परंतु दो बजे सुशीलाबहन रात्रिके जागरणके मारे सो रही थीं, अिसलिअे फिर मैंने ही पढ़ना शुरू किया। यद्यपि सुशीलाबहनसे सुननेमें अुन्हें अधिक रस आता था, फिर भी मुझसे यह काम चल जाता था। अिसलिअे अुन्होंने मुझसे कहा, "तू कोअी नब्ज देखने वगैराका डॉक्टरका काम थोड़े ही कर सकेगी? परंतु भागवत तो पढ़ ही सकती है। अिसलिअे तुझसे या प्रभासे जो काम हो सकता हो, वह काम सुशीलाको सौंपना अुसका बोझा बढ़ाना है।"

यद्यपि सुशीलाबहनको अिस बातका दुःख रहा कि मैंने अुन्हें सोतेसे नहीं जगाया, अिसलिअे बाकी अिस सेवासे वे वंचित रहीं, परंतु अुन परसे ज्यादा भार अुतर जानेका बाको सन्तोष हुआ।

मैं भागवत सुना चुकी तो बाने पूछा, "आज तो मकर संक्रान्ति है न?" यह त्यौहार मैंने याद नहीं रखा, अिसके अुलहनेके रूपमें नहीं, परंतु सब बातोंसे परिचित रहनेकी सीखके तौर पर कहा:

"अैसे त्योहार मुझे याद दिलानेका तेरा कर्तव्य था न? आज तो गायोंको घास डालना चाहिये। काठियावाड़में आजके पुण्यदानकी महिमा मानी जाती है। अिधर महाराष्ट्रीयोंमें भी तिलगुड़का रिवाज होता है। यह तू कब सीखेगी? जा, यहांसे सीधी जाकर तिलके लड्डू बना डाल (तिल मंगवा रखे थे)।"

मैं सीधी जाकर तिलके लड्डू बनाने लगी। बापूजी कहते थे कि अैसा खर्च हमें नहीं करना चाहिये, परंतु बाको दुःखी न करनेके खयालसे चलने दिया।

शामको प्रत्येक कैदी और सिपाहीको बाने अपने हाथोंसे अेक-अेक तिलका लड्डू दिया। "लो, अगली संक्रान्तिको मैं कहां जीती रहूंगी? यह आखिरी है।"

बाका स्वास्थ्य बहुत ही नाजुक हो गया है। बिस्तरके पास दो जनोंकी अुपस्थिति लगभग हमेशा ही चाहिये।

आजसे ही बापूजीने रातको जागनेकी बारियां बांध दीं। अेक रात ९ से २ बजे तक सुशीलाबहन और २ से ७ तक मैं और अेक रात ९ से २ तक प्यारेलालजी और २ से ७ तक प्रभावतीबहन, ताकि किसी पर जरूरतसे ज्यादा बोझ न पड़े।

आगाखां महल, पूना,
२६–१–'४४

बाके स्वास्थ्यमें कोअी खास फर्क नहीं है। अब मुलाकाती अपनी अपनी बारीके अनुसार आते रहते हैं। रोजकी तरह काम चल रहा है।

आज स्वातंत्र्य-दिवस होनेके कारण हम सबने अुपवास किया और नियमानुसार अपना खाना कैदियोंको दिया।

शामको ध्वजवंदन हुआ। डॉ० गिल्डरने ध्वजवंदन कराया। 'झंडा अूंचा रहे हमारा', 'सारे जहांसे अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' और 'वन्देमातरम्' के तीन गीत गाये गये। अिसके बाद बापूजीने जो प्रतिज्ञा (हिन्दीमें) फिरसे की, अुसे लिखित रूपमें डॉ० गिल्डरने पढ़ा। वह अिस प्रकार है:

"हिन्दुस्तान सत्य और अहिंसाके रास्तेसे सभीकी सभी और हर मानोंमें पूरी आजादी ले, यह मेरा जिन्दगीका मकसद है, और बरसोंसे रहा है। मेरे अिस मकसदको पूरा करनेके लिअे मैं स्वतंत्रता-दिनकी चौदहवीं बरसी पर आज फिरसे अिकरार करता हूं कि वह न मिले तब तक मैं न तो खुद चैन लूंगा, और न जिन पर मेरा कुछ भी असर है अुन्हें चैन लेने दूंगा। मैं अुस महान अीश्वरी शक्तिसे, जिसे आंखसे किसीने नहीं देखा और जिसे हम गॉड, अल्लाह, परमात्मा जैसे परिचित नामोंसे पुकारते हैं, प्रार्थना करता हूं कि मेरे अिस अिकरारको पार अुतारनेमें वह मुझे मदद दे।"

रातको मेरा २ से ६ बजे तक जागरण हुआ था, अिसलिअे ६ बजे बापूजीने मुझे फिर सोनेको कहा। ६ से ८ तक मैं सोअी। बापूजीने कहा, जो जागनेवाले हैं अुन्हें किसी भी तरह समय निकाल कर आगे-पीछे नींद ले ही लेनी चाहिये, तभी वे सेवा कर सकेंगे।

आगाखां महल, पूना
३०-१-'४४

आज तो बाकी तबीयत बहुत ही खराब रही। दमेका बहुत जोर था; अुस पर बापूजीका मौन भी था।

दोपहरको कनुभाअी आये। ७ बजे तक रहे। मेरी और सुशीला बहनकी जागनेकी रात थी। हम दोनोंने अपने-अपने समयमें बाको भजन सुनाये। सारी रात भजन, धुन और गीताजीके बारहवें अध्यायके श्लोक सुनानेकी ही मांग बा बार-बार करती रहीं। आजकी-सी खराब रात तो अभी तक अेक भी नहीं गअी होगी। बापूजीका भी रक्तचाप अूंचा रहता है।

अैसी स्थिति होनेके कारण बापूजीने बा द्वारा की जानेवाली डॉ० दिनशा महेताकी मांगके बारेमें अेक पत्र सरकारको लिखा था। परंतु अभी तक अुसका अुत्तर न मिलनेके कारण दूसरा पत्र लिखा कि :

बीमारकी हालत बहुत खराब है और अुनकी सेवा करनेवाले केवल चार ही आदमी हैं; रातको हर तीसरे दिन अेक साथ दो जनोंको काम करना पड़ता है और दिनमें तो चारोंको काम करना पड़ता है। अब बीमारका भी धीरज टूट गया है; वह पूछती ही रहती हैं कि डॉ० दिनशा अब आयेंगे?

१. अभीके लिअे डॉ० दिनशा महेताकी सेवाअें मिल सकेंगी?

२. मुलाकातके समय सेवाके लिअे मौजूद रहनेवालोंकी संख्याका प्रतिबंध दूर हो सकेगा?

मैं अितना ही चाहता हूं कि यह कहनेका मौका न आये कि राहत देरसे मिली। और यह चाहता हूं कि अुपरोक्त स्पष्टीकरण जल्दी मिलें।

अिन दिनों किसीको अेक मिनिटकी भी फुर्सत नहीं रहती। सब मशीनकी तरह काम करते रहते हैं। बाकी बीमारीके कारण वातावरण खूब गंभीर बन गया है।

आगाखां महल, पूना,
१–२–'४४

आज कनुभाओीको पू० बाकी सेवाके लिअे आनेकी मंजूरी मिल गअी। वे रातको ही आ गये और डॉ० गिल्डर और सुशीलाबहनने सबकी बाकायदा 'ड्यूटी' लगा दी। मेरी रातको जागनेकी 'ड्यूटी' बिलकुल हटा दी, क्योंकि मुझे बा और बापूजी दोनोंका फुटकर काम करना होता है। परंतु यह नया फेरबदल मुख्यतः मेरी आंखोंको बचानेके लिअे था, यद्यपि मुझे यह कारण बताया गया कि "सभी यदि रातको जागनेका आग्रह रखें, तो हमें खिलायेगा कौन?" यों कहकर डॉ० गिल्डरने अपने स्वभावके अनुसार मुझे मनाकर समझा दिया।

अिस प्रकार मेरी ड्यूटी लगी सुबह ५ से ९, दोपहरको १ से ३ और शामको ६ से ९। रातको अेक दिन सुशीलाबहन तथा कनुभाओी

और अेक दिन प्रभावतीबहन और प्यारेलालजी। कर्नल भंडारी डॉ० जीवराज महेताको यरवड़ा जेलसे ले आये थे। अुन्होंने बाकी परीक्षा की, परंतु अुन्हें बापूजीसे नहीं मिलने दिया गया।

बापूजीसे पूछा गया था कि अुनके ध्यानमें कोअी खास वैद्य हो तो बतायें। अिसका अुत्तर भी बापूजीने तुरंत तैयार कराया। वैद्य शिवशर्माको, जिनके बारेमें देवदास काका कह गये थे, परीक्षा करने देनेकी अिजाजत मांगी गअी।

दिन दिन बाकी तबीयत बिगड़ती जा रही है।

आगाखां महल, पूना,
४–२–'४४

आज दिनमें बाकी तबीयत बहुत ही खराब रही। भजन, रामधुन गाते हैं और ज्योतिका रे के मीराबाअीके भजन सुनना बाको पसन्द होनेसे ग्रामोफोन पर रिकार्ड बजाते हैं।

रातको २॥ बजे मुझे अुठाया, दो दो मिनिटमें भयंकर खांसी आती थी। शरीर खूब दर्द करता था, अिसलिअे बा बोलीं: "बेटी, खूब दबा। अब तो मेरा आखिरी समय आ गया है. . . ." मेरी आंखोंसे आंसूकी अविरल धारा बह निकली। अुसे बाने देख लिया। "अिसमें रोनेकी क्या बात है? सबको अेक दिन तो जाना ही है। तेरी मां भी तो चली गअी न? अुस रास्ते सभीको जाना है। और अैसा झूठा मोह क्यों? तुझे तो अभी दुनियामें बहुत कुछ देखना है। बापूजीकी संभाल रखना, पढ़ना और जो सेवा हो सके करना।"

सीखके ये शब्द बा मुझे भारी परिश्रमसे ज्यों ज्यों कहती गअीं, त्यों त्यों मेरे लिअे हिम्मत रखना कठिन होता गया। परंतु अुसी क्षण अर्थात् २–४० पर बापूजी आ गये। मैं वहांसे अुठ गअी। बापूजीने बाका सिर अपनी गोदमें ले लिया और मेरी जगह बैठे। मैं सीधी स्नानघरमें जाकर मुंह धो आअी। बाने बापूजीसे कहा, "अब तो मैं चली।" बापूजी बोले, "जा, परंतु शान्ति है न?"

बाने तुरंत गीताजीके १२ वें अध्यायके श्लोक सुननेकी अिच्छा प्रगट की। बापूजीने १२ वां अध्याय सुनाया। बादमें अुन्हें खटका कि बापूजीकी नींद बिगड़ेगी। अिसलिअे अुन्होंने बापूजीसे सो जानेको कहा। मुझे अपने पास ही रहनेको कहा। डॉ० गिल्डर और सुशीलाबहन अिस अुधेड़बुनमें थे कि किस तरह बाको राहत पहुंचाअी जाय। कनुभाअीसे गीताका ११ वां और ९ वां अध्याय और भजन सुननेके बाद बाने अुन्हें सोनेको कहा।

अेक बार रिकार्ड पर नीचेके बहुत प्रिय भजन सुने। बादमें अुन्हें लगा कि रिकार्ड बजेंगे तो बापूजीकी नींदमें खलल पड़ेगा, अिसलिअे ग्रामोफोन बंद करवा दिया। और धीमे स्वरसे ये भजन सुबह तक सुने :

जाअूं कहां तजि चरन तिहारे,
जिसका नाम पतित पावन है
जिसे दीन अति प्यारे . . . . . जाअूं०

तन दे डारा, मन दे डारा,
दे डारा जो कुछ था सारा . . . . . जाअूं०

अिन चरननका लिया सहारा
कह दे तू हो गया हमारा . . . . . जाअूं०

*　　　*　　　*

आया द्वार तुम्हारे, रामा,
आया द्वार तुम्हारे;
जब जब भीर परी भक्तन पर,
तुमने ही दुःख टारे, रामा,
तुमने ही दुख टारे। आया०

मनमें छाया गहन अंधेरा,
दीपक कौन अुजारे? रामा,
दीपक कौन अुजारे? आया०

नैया मोरी बीच भंवरमें,
तू ही पार अुतारे, रामा
तू ही पार अुतारे! आया०

अिस दूसरे भजनका अुन्होंने अुल्लेख किया कि "हे भगवान! अिस भजनके अनुसार मेरी नैयाको तू पार अुतार दे। मुझसे तो किसीकी भी सेवा नहीं हो सकी। प्रभु! तुझसे अेक ही प्रार्थना है कि महादेवकी तरह बापूजीकी गोदमें मुझे भी सुलाना।"

बा रातको तीन साढ़े तीन बजेकी नीरव शांतिमें औश्वरसे अिस प्रकार करुण प्रार्थना कर रही थीं। दमके मारे सोया नहीं जाता था। अुनका सिर मेरी गोदमें था। मैं छाती पर धीरे धीरे हाथ फेर रही थी। हृदयकी धड़कन तेजीसे चल रही थी। सांसकी आवाज आ रही थी।

अितने अधिक हांफेमें भी अेकाअेक अुन्होंने टूटे हुए स्वरमें गाना शरू किया:

हे गोविन्द, हे गोपाल, हे गोविन्द राखो शरण,
अब तो जीवन हारे।
नीर पिवन हेतु गयो सिन्धुके किनारे,
सिंधु बीच बसत ग्राह, चरन धरि पछारे।
चार प्रहर युद्ध भयो, ले गयो मझधारे,
नाक कान डूबन लागे, कृष्णको पुकारे।
द्वारकामें शब्द भयो, शोर हुआ भारे,
शंख, चक्र, गदा, पद्म, गरुड़ ले सिधारे।
सूर कहे श्याम सुनो, शरन है तिहारे,
अबकी बार पार करो, नंदके दुलारे।

बा यह भजन अपने ढंगसे रोगके विरुद्ध युद्ध करते करते भी साहसके साथ गा रही थीं। अितनेमें सुशीलाबहन आ गओं। बाकी नाड़ी हाथमें ली। अुन्हें कुछ ठीक मालूम हुआ। परंतु बा कहने लगीं, "सुशीला! तू आज सोओी ही नहीं। बेटी, बीमार

हो जायगी। सब मेरे लिअे परेशान होते हो। मेरी तबीयत जरा ठीक है, तू सो जा।"

सुशीलाबहन बोलीं, "बा! हमसे कहिये न, हम आपको भजन सुनायेंगी। आपको बोलनेका श्रम नहीं करना चाहिये।"

"अिसमें कोअी हर्ज नहीं। भगवानके नामसे भी कहीं थकावट आती है? तुम लोग कहां अिन्कार करते हो? परंतु अच्छा लगता है, अिसीलिअे अभी अभी बोली। मनु, कनु, समीने बारी बारीसे अब तक मुझे सुनाये ही हैं न?"

चार बजने पर बापूजीके अुठनेका समय हुआ। प्रार्थना बाके पास की। गीता-पारायणके समय अुन्हें जरा नींदका झोंका आ गया, अिसलिअे पाठ धीमी आवाजसे किया। सारी रातमें साढ़े चार बजे बाद कुछ शांति मिली।

में सवा पांच बजे तक रही, सवा पांच बजे प्रभावहनकी गोदमें बाका सिर धीरेसे रख दिया। वे सोती ही रहीं।

सवा पांचसे साढ़े छः तक बापूजीने मुझे सो जानेको कहा। साढ़े छः बजे घूमने जानेसे पहले बापूजी मुझे अुठा गये।

बापूजी बाकी देखरेख करते हुअे हम सबकी अधिक देखरेख रखते हैं। सबको आगे पीछे खिलाने, सुलाने और अुठाने जैसी सारी छोटी छोटी बातोंका वे ध्यान रखते हैं। बापूजी कहा करते हैं कि, "कोअी भी बीमार हो जायगा, तो अुसे सेवाके अयोग्य समझूंगा।" अिसलिअे बापूजीका जो आदेश होता अुस पर तुरंत अमल करना ही पड़ता था। अुसके विरुद्ध कोअी भी दलील असंगत मानी जाती थी।

आजकी रात बड़े संकटकी रात कही जायगी। बा बाल-बाल बचीं। रातमें सबको यह डर लग रहा था कि शायद कुछ हो जायगा। परंतु अीश्वर-कृपासे कुछ तबीयत सुधरी।

बापूजीने अपना भोजन बहुत कम कर डाला है और अुबला हुआ साग, पांच पिसे हुअे बादाम, अेक औंस मक्खन, और दूध सभी

अिकट्ठा बनवा डालते हैं। शाकका कचूमर बनवा लेते हैं। अिसलिअे खानेमें बहुत देर नहीं लगती। दस मिनिटमें ही पी लेते हैं।

फलोंमें तीन छीले हुअे संतरे (अुनको छीलनेमें मेरा या जो छीले अुसका वक्त जाता है अिसलिअे) पिछले दो दिनसे बन्द कर दिये हैं। और अुनके बजाय दोपहरको रस पीना शुरू किया है। शामको केवल आठ औंस दूध और अेक औंस गुड़ ही लेते हैं।

आगाखां महल, पूना,
१२-२-'४४

बहुत समयसे पू० बाकी किसी देशी वैद्यसे अिलाज करानेकी अिच्छा होनेके कारण कल बापूजीने अिस बारेमें सरकारको पत्र लिखा। कोअी अुत्तर नहीं आया, अिसलिअे अेक कड़ा पत्र लिखा। परंतु शामको ही पत्र जानेसे पहले वैद्य, हकीम या जरूरी डॉक्टरी मददकी बात जेलके डॉक्टर कर्नल शाह पर छोड़ दी जाने पर अुन्हें फोन करके पूनाके वैद्य श्री जोशीको बुलवाया।

अुन्होंने पू० बाकी जांच करके दवा तो दी, परंतु रातको बेचैनी बढ़ गअी। और वे रातको अेकाअेक अेक ही बात कहने लगीं, "मुझे मेरे कमरेमें ले चलो, मेरे पलंग पर सुला दो।' अिस तरह वे कभी नहीं बोली थीं। बापूजी, सुशीलाबहन जो भी कोअी अुनके पास होता, अुससे यही कहतीं। परंतु अन्तमें पांच बजेके करीब सो गअीं।

नौ बजे डॉ० गिल्डर बाके पास आये। अुनसे बाने कहा: "मेरी बेचैनी बढ़ गअी है। मुझे वैद्यकी दवा नहीं लेनी।" परंतु सुशीलाबहनने कहा, "दो चार दिन देख लें; कोअी लाभ नहीं होगा तो छोड़ देंगे।" और कस्तूरबा अुनकी दवा ले रही हैं, अिसलिअे वैद्यजी भी अपनेको धन्य मानते थे। वे भावना और सावधानीपूर्वक अिस बातकी कोशिश कर रहे थे कि अुन्हें किसी भी प्रकारसे यश मिले। परंतु अुनकी मेहनत व्यर्थ सिद्ध हुअी।

आगाखां महल, पूना,
१३–२–'४४

आजसे लाहौरसे आये हुअे पंडित शिवशर्माकी दवा शुरू हुअी। आज दिन भर तबीयत बड़ी अच्छी रही। हमें लगा कि अिन वैद्य-राजको अवश्य यश प्राप्त होगा। शामको तो बा कहने लगीं, "मुझे बालकृष्णके पास ले चलो।" मीराबहन अपने कमरेमें बालकृष्ण रखती थीं और बा अच्छी हालतमें वहां रोज जाती थीं। बाको पहियेवाली कुरसीमें बिठाकर मैं वहां ले गअी। बापूजी, सुशीलाबहन और प्रभावतीबहन सब घूम रहे थे। और बा बालकृष्णकी प्रार्थनामें लीन हो गअी थीं। यह देखकर बापूजी अूपर आये। बापूजीको देखकर बा मुस्कराकर कहने लगीं, "आप घूमने जाअिये न? घूमते घूमते यहां क्यों आ गये?" बापूजी हंस पड़े और कहने लगे, "बोल, अब सिंह या सियार?*

कुछ देर यों विनोद करके बापूजी फिर वहीं चक्कर लगाने लगे। प्रार्थनासे पहले बाने तुलसीके पास दिया जलवाया। प्रार्थना भी बहुत दिन बाद अच्छी तरह की।

परंतु रातको फिर बेचैनी शुरू हुअी। अेक बजे सुशीलाबहनने कटेली साहबको जगाया और वैद्य शिवशर्माको फोन किया। अुन्होंने आकर अेक गोली दी। सरकारने वैद्यजीको रातको आगाखां महलमें रहनेकी अिजाजत नहीं दी थी। परंतु अुनका अिलाज चल रहा था, अिसलिअे यह तो कैसे कहा जा सकता था कि दुबारा कब अुनकी जरूरत पड़ जायगी? अिसलिअे वैद्यजी स्वयं दरवाजेके बाहर मोटरमें सो गये, ताकि जरूरत पड़ने पर तुरंत आ सकें।

आगाखां महल, पूना,
१६–२–'४४

परसों जैसा परिवर्तन मालूम हुआ था, वैसी तो तबीयत नहीं रही। परंतु सबका मानना था कि तीन दिन लगातार दवा करनी

* बापूका मतलब है कि बीमारीका शेरकी तरह सामना करोगी या सियारकी तरह हार मान लोगी?

ही चाहिये। अिस प्रकार आज तीसरा दिन है। बेचारे वैद्यजी रातको ठंडमें दरवाजे पर सो रहते हैं और दिनमें यहीं रहते हैं। किसी दवाकी जरूरत होने पर ही शहरमें जाते हैं। बाहर ठंडमें सोनेसे अुन्हें भी कुछ जुकाम-सा हो गया है।

आज अुनके बाहर सोनेकी तीसरी रात थी। शिवशर्माजीको जगानेमें भी दूसरे चार जनोंकी नींद बिगड़ती। पहले अेक सिपाही जागता, वह जमादारको जगाता, जमादार कटेली साहबको जगाकर कुंजी लेता, दरवाजे पर रातको पहरेके लिअे रहनेवाले सार्जण्ट अूंघ रहे हों तो वे भी जागते, तब कहीं शिवशर्माजीको अंदर लाया जाता। रोजकी तरह आज रातको साढ़े बारह बजे बाके स्वास्थ्यमें परिवर्तन मालूम हुआ और अुपरोक्त विधिसे वैद्यजीको बुलाना पड़ा।

वैद्यजीने साढ़े बारह बजे अन्दर आकर बाको गोली दी। अुन्हें जरा आराम मालूम हुआ तो डेढ़ेक बजे सोनेके लिअे दरवाजेके बाहर लौट गये। अुनके दरवाजेके बाहर चले जानेके बाद तुरंत सिपाहीने फिर ताला लगा दिया। और जमादारने कुंजी कटेली साहबको सुपुर्द की, तब वे अूपर सोने जा सके।

बापूजीको अिस वेदनामें नींद नहीं आयी। दो बजे अुठे। प्यारेलालजीको बुलाया। बापूजीको आवश्यक कागजात देकर अुन्होंने कहा, "मुझे आप लेटे लेटे लिखाअिये न?" बापूजीने अिनकार कर दिया। स्वयं ही अेक कड़ा पत्र लिखा। अुसमें अुपरोक्त स्थितिका वर्णन किया और सबको कितना कष्ट होता है यह बताकर लिखा कि,

> मैं जानता हूं कि अिस स्थितिको दूर करनेका अुपाय जरूर है। तब मेरी पत्नीके लिअे सारी रात व्यर्थ अितने लोगोंको जागते रहना पड़े और यह भी अेक रातके लिअे नहीं बल्कि अनिश्चित कालके लिअे, यह मुझे असह्य लगता है। सुशीला-बहन और डॉ० गिल्डर डॉक्टर हैं। परंतु ये देशी अिलाज दूसरी ही तरहके होते हैं, अिसलिअे ये लोग अिसमें सहायक

नहीं हो सकते। जिससे बीमार और जिसका अिलाज हो रहा हो अुसके साथ कदाचित् अनजाने अन्याय हो सकता है। अिस कारण बीमारके भलेके लिअे जब तक वैद्यकी दवा हो रही है तब तक अुन्हें रात-दिन यहीं रहने दिया जाय। यदि सरकार अैसा न कर सके, तो बीमारको पैरोल पर छोड़ दिया जाय। और सरकार अैसा भी न कर सकती हो और बीमारके पतिकी हैसियतसे में सरकारसे अुसकी अिच्छानुसार सार-संभाल तथा अिलाजकी सुविधा प्राप्त न कर सकूं, तो मेरी यह मांग है कि सरकार अपनी पसन्दके किसी और स्थान पर मुझे भेज दे। बीमार जो वेदना अनुभव कर रही है, अुसका मुझे अेक निःसहाय साक्षी नहीं बनाना चाहिये।

यह पत्र रातके २ बजे कस्तूरबाके बिछौनेके पास बैठकर लिख रहा हूं। परंतु वह तो अब जीवन और मृत्युके बीच झूल रही है; और यदि कल (१७ फरवरीको) रात तक वैद्यजीके बारेमें आप संतोषजनक अुत्तर नहीं देंगे, तो मैं अिलाज बन्द करा दूंगा।

रातको ३॥ बजे प्यारेलालजीने अिसे टाअिप किया। बादमें प्रार्थना हुअी। बापूजी लगभग सारी रात जागे हैं। बाकी जीवन-नौका मंझधारमें है। मैं प्रभुसे अेक ही प्रार्थना करती हूं कि प्रभु यह असह्य वेदना देखी नहीं जाती; तुझे जो भी करना हो जल्दी कर। सब कुछ तेरे हाथमें है।

आगाखां महल, पूना,
१७–२–'४४

कलके कड़े पत्रका अुत्तर संतोषजनक आया और आजसे जब तक जरूरत हो तब तक वैद्यजीको भीतर रहनेकी अिजाजत दे दी गयी।

नींदकी दवाके असरसे बा दिनमें शांतिसे लेटी ही रहीं। आंख अूपर नहीं अुठा सकती थीं, अितना नशा था। अेक बार तो सुशीलाबहनने जबरदस्ती जगाकर खुराकके तौर पर ग्लूकोसका पानी

अुन्हें दिया। मुश्किलसे दो ही चम्मच पिये और बोलीं, "मुझे शांतिसे सोने दे . . . . ।" परंतु हालत अच्छी मालूम नहीं होती। पैरों पर सूजन दिखाअी देती है। शरीरमें शक्ति ही नहीं, तब बेचारी खांसी क्या जोर मारे? परंतु ये नशेके चिन्ह अच्छे नहीं मालूम होते, अैसी बात डॉ० गिल्डर, सुशीलाबहन और वैद्यराजकी बातचीतसे मेरे कानों पर पड़ी। मेरे जाने पर अुन लोगोंने बातें बंद कर दीं।

डॉ० गिल्डरसे मैंने पूछा, "मुझे कहिये तो सही कि बाकी तबीयत कैसी है?"

प्रेमसे मेरे सिर पर हाथ रखकर डॉक्टर साहब कहने लगे, "तू देखती है न कि बा पहले सो ही नहीं सकती थीं, लेकिन अब शांतिसे सो रही हैं? अिसमें भी कोअी रोनेकी बात है?" अैसा कहकर मुझे बाहर भेज दिया।

लेकिन मुझसे कुछ छिपाया जा रहा है, अैसी गन्ध मुझे आती ही रहती थी। फिर भी डाक्टर साहबकी बातसे आश्वासन पाकर मैंने मान लिया कि बात सच्ची है; बीमार आदमी जितना सोये अुतना ही अच्छा है। अिसलिअे अब बा अच्छी हो जायंगी। मुझे आघात न पहुंचे और काममें विघ्न न आये, अिसलिअे वे प्रेमपूर्वक अलग अलग रीतिसे कहते रहे: "बेटी, बा ठीक हैं; अथवा थोड़ी ठीक नहीं हैं। अच्छी हो जायंगी।" मेरे जैसा अनुभव बहुतोंको हुआ होगा। अिसीलिअे लोग कहते हैं कि, "डॉक्टर तो जब तक मनुष्य मर नहीं जाता, तब तक कहते नहीं हैं।"

आगाखां महल, पूना,
१८–२–'४४

बेचारे वैद्यराज आज पूनाके बाजारसे स्वयं ढूंढ़कर काढ़ोंके लिअे दवा लाये। परंतु अुन्होंने निराशा अनुभव की। बापूजीसे कहा कि, "जितना हो सका किया, परंतु कोअी फर्क नहीं पड़ा। अब यदि डॉ० सुशीलाबहन या गिल्डर साहबको कोअी नया अुपाय सूझे तो करें।"

वे बेचारे अितना कहकर गद्गद हो गये। परंतु बापूजी बोले, "आप क्या करें? आपने भरसक प्रयत्न किया। तकलीफ अुठानेमें कसर नहीं रखी। मनुष्य शक्तिभर प्रयत्न ही कर सकता है, फल अीश्वरके अधीन है।"

अब बापूजीकी अिच्छा बाका सर्वथा रामनाम पर रखनेकी थी। परंतु दोनों डॉक्टर माननेवाले नहीं थे। अुन्होंने दोपहरको सेलिगॅनका अिजेक्शन दिया। अुससे बाको कुछ फायदा-सा जान पड़ा। बुखार था। त्रिदोष-सा लगता था। अेक बार अिजेक्शनसे लाभ मालूम हुआ, अिसलिअे रातको दूसरा लगाया। परंतु सुशीलाबहन कह रही थीं कि विशेष लाभ नहीं दिखाअी देता। वैद्यजी अभी तक यहीं हैं। अुनकी दवाका भी अुपयोग किया जाता है। परंतु अब तक अकेले वैद्यजी ही सब कुछ करते थे, अुसके बजाय दो डॉक्टर और वैद्यराज तीनों मिलकर अिलाज कर रहे हैं।

आगाखां महल, पूना,
२०-२-'४४

आज तो सारी रात बा ऑक्सीजनकी नली डालकर सो रहीं। परंतु सवेरे पुकारने लगीं, "हे राम! हे राम! अब कहां जाअूं?" बापूजी आये। अुन्होंने सिर पर हाथ फेरा तो शान्त हुअीं और "श्री राम भजो दुखमें सुखमें" यह चट्टोपाध्यायका रिकार्ड सुना।

सुशीलाबहनने नशेकी दवा दी। नौ बजे तक सोअीं। अुठकर दातुन-कुल्ले किये और मुझे काढ़ा ले आनेको कहा। वह काढ़ा फीडिंग कपसे अेक रकाबी भर पिया।

परंतु प्रातःकाल जैसी बेचैनी फिर शुरू हो गअी। भजन, गीता-पाठ और धुन तो सतत चल ही रहे थे। अब तो बा भी दवा लेनेसे अिन्कार कर रही हैं। बापूजीने भी कहा कि, "अब अिसके लिअे रामनामकी ही दवा ठीक है। अुसके सिवाय और सब चीजें बन्द कर दो। खुद अुसे भी अिसीमें शान्ति है।" बापूजी तो अपना

सब काम-काज बन्द करके बाकी सेवा करनेमें ही लीन हो गये हैं। अधिकांश समय अुनके पास बैठनेमें ही बिताते हैं। बाको साफ करनेमें बार बार छोटे रुमाल खराब होते थे, जिन्हें हममें से कोअी मौजूद न हो तो बापूजी स्वयं धोते थे।

२८

बाका अवसान

महाशिवरात्रि,
महानिर्वाण दिवस,
२२–२–'४४

कल देवदास काका आ गये। परंतु आजका दिन भयंकर है, अिसकी आगाही सबके मनमें थी। सब रातभर जागे थे। प्रातः बा सुशीलाबहनकी गोदमें थीं। बापूजी अपने दैनिक भोजनकी 'कैलरीज' लिख रहे थे। मैं बाके पैर दबा रही थी। वे सुशीलाबहनसे कहने लगीं, "मुझे बापूजीके कमरेमें ले चलो।" अिस पर सुशीलाबहनने मुझे अिशारेसे समझाया कि बा घूमनेकी तैयारी कर रही हैं, तू उठ और चादर वगैरा दे।

बापूजी कैलरीज लगभग लिख ही चुके थे। कटेली साहब कोअी कागज लेकर आये (मुझे याद नहीं वह कागज किस बारेमें था)। परंतु बापूजीने कहा, "चर्चिल मुझे अपना सबसे बड़ा शत्रु मानता है। मुझे या जिन पर जनताका विश्वास है अुन्हें जेलमें बन्द करके वह देशको हरगिज नहीं दबा सकता। यदि जनताने सच्चे दिलसे विश्वास प्रगट किया होगा, तो मैं यहां खप जाअूंगा तो भी अपना काम पूरा हुआ समझूंगा। परंतु मुझे स्वराज्य लेनेके लिअे जीना तो है ही। मैं जीनेका प्रयत्न भी कर रहा हूं। यह कैलरीजका हिसाब लिखना भी मेरे जीनेके प्रयत्नका अेक भाग है। अिसलिअे बाकी बीमारीमें और सब कुछ छोड़ दिया, परंतु यह काम नहीं छोड़ा।"

अितना कहकर बापूजी मुंह धोकर बाके पास गये। सुशीलाबहन अुठीं और मैं वहां बैठी। बापूजीने कहा, "मैं टहलने जाअूं न?" बाने मना कर दिया। रोज अुन्हें कितनी भी तकलीफ क्यों न हो, वे बापूजीको टहलनेसे मना नहीं करती थीं। लेकिन आज मना कर दिया।

मेरी जगह बापूजी बैठे। रामधुन अित्यादि हो रहा था। परंतु बापूजीकी गोदमें अुन्हें थोड़ी शान्ति मिली। आध घंटे बाद बापूजीने दुबारा कहा, "अब मैं जाअूं?"

"हे राम! अब कहां जाअूं?"

बापूजीने कहा, "जाना कहां? जहां राम ले जाय वहीं।"

दस मिनिट बाद बाने अढ़ाअी औंस गरम पानी और शहद लिया।

लगभग दस बजे बापूजीको छुट्टी मिली। बापूजी कहने लगे, "बिलकुल न टहलूं तो बीमार पड़ जाअूं, अिसलिअे थोड़ा टहलना जरूरी है।" सुशीलाबहन वहां बैठीं। घूमते समय बापूजी कहने लगे, "अब बा थोड़े ही समयकी मेहमान है। मुश्किलसे चौबीस घंटे निकाले तो निकाले। देखना है किसकी गोदमें वह अन्तिम निद्रा लेती है।" पांच चक्कर लगाकर अूपर आये। पांच पांच मिनटमें डॉ० गिल्डर आकर देख जाते। बापूजी घूमकर जल्दीसे मालिश और स्नानसे निपट लिये। पिछले दो दिनसे बापूजीका सतत जागरण होनेके कारण पिसे हुअे बादाम लेना भी अुन्होंने बन्द कर दिया है। मैंने बापूजीसे कहा, "आज भी बादाम-काजू नहीं लेंगे?"

बापूजी बोले, "या तो बा अच्छी हो जाय तब लिया जाय या बा रामजीके पास चली जाय तब लिया जाय। चबानेमें समय लगाना ही चाहिये। न खाया जाय तो कुछ भी हानि नहीं, परंतु अधकचरा पेटमें जाय तो मुझे खटिया ही पकड़नी पड़े।" अिसलिअे अुबाले हुअे शाकके कचूमरमें दूध डालकर मैंने बापूजीको दिया, जिसे वे पी गये।

बापूजी साढ़े बारह बजे बाके पास गये। सबका यह खयाल हो गया था कि बा किसी भी क्षण चली जा सकती हैं। देवदास काका,

मेरे पिताजी, और हरिलाल काकाकी पुत्रियां आ गअी थीं। अिसलिअे बापूजी जरा देखकर आरामके लिअे लेट गये। मैंने बापूजीके पैरोंमें घी मला। बीस मिनिट बापूजीने आराम किया। डेढ़ बजे कनुभाअीने कुछ फोटो लिये और देवदास काका गीतापाठ पूरा करके बाके पास आये। बा अुनसे कहने लगीं, "बेटा, तूने मेरे लिअे बहुत धक्के खाये। रामदासको मना कर देना। वह बेचारा बीमार है। यहां तक क्यों अुसे दौड़ाया जाय? तुम सब खूब सुखी रहो।"

साढ़े तीन बजे देवदास काका गंगाजल और तुलसीके पत्ते ले आये। अिसे पीनेके लिअे बाने मुंह खोला। देवदास काकाने थोड़ा जल पिलाया और बा शान्त पड़ी रहीं। साढ़े चार बजे फिर बापूजीकी तरफ देखकर वे कहने लगीं, "मेरे लिअे लड्डू खाने चाहिये। दुःख कैसा? हे अीश्वर, मुझे क्षमा करना; अपनी भक्ति देना।" दूसरे संबंधी आये थे अुन सबसे बा बोलीं, "कोअी दुःख न करना।"

पांचेक बजे बाद मुझसे कहने लगीं, "बापूजीकी बोतलमें गुड़ खतम हो रहा है। तूने दूसरा बनाया?"

मैंने कहा, "हां, बा, गुड़ अंगीठी पर ही है; अभी तैयार हो जायगा।"

"देख, मेरे पास तो बहुत लोग हैं, बापूजीके दूध-गुड़ (खाने) का अिन्तजाम करके तू भी खा लेना।"

जिन्दगीभर बापूजीकी हर तरहकी सेवामें रहने और मुख्यतः अुनके दोनों समयके भोजनकी बारीक जांच रखनेका काम बाने कभी नहीं छोड़ा। आज आखिरी दिन भी बीमारी और भगवानसे लड़ते लड़ते अुन्होंने अेकाअेक मुझे सचेत किया। अिस समय वे मेरे पिताजीकी गोदमें थीं। मुझसे बोलीं, "जयसुखलाल यहां है, तू जा।"

पेनिसिलिनका अिंजेक्शन विशेष वायुयान द्वारा आ गया था। अिसलिअे बापूजी, देवदास काका, डॉ० गिल्डर, सुशीलाबहन, प्यारेलालजी, कर्नल शाह, भंडारी, कटेली साहब सब अिस चर्चामें मशगूल थे कि जेक्शन दिया जाय या नहीं।

मैं भोजनालयमें गअी। गुड़ बना लेनेके बाद अुसे ठंडा करनेको पानीमें रखा। बेचारी सुशीलाबहनने सुबहसे कुछ खाया नहीं था, अिसलिअे वे खाने आअीं। और लोग भी खानेवाले थे, अिसलिअे मैंने खिचड़ी, कढ़ी, रोटी वगैरा बनाया। और जिन दो-चार लोगोंका शिवरात्रिका अुपवास था, अुनके लिअे अलग मेज पर फलाहार तैयार किया। सब कुछ तैयार करके सबको साढ़े पांच बजे बुलवाया। सबके खा-पीकर निपटते-निपटते साढ़े छः बज गये। (आम तौर पर भी हम साढ़े छः बजे ब्यालू कर लेते थे।)

अभी तक पेनिसिलिनके अिंजेक्शन देने न देनेकी चर्चाका अंत नहीं हुआ था। खाते-खाते भी बातें हो रही थीं कि पेनिसिलिनसे शायद फायदा हो जाय।

अन्तमें लगभग सातेक बजे सुशीलाबहनने मुझे अिंजेक्शनकी सुअियां अुबालनेको दीं। मैंने बिजलीके चूल्हे पर बर्तनमें अुन्हें रखा और शाम हो जानेसे तुलसीके पास धूप-दीप करनेकी तैयारी की।

अिधर बापू दूध पी कर मुंह धोने गये। स्नानघरमें मुंह धोकर थोड़ा घूमना था। परंतु प्यारेलालजीके कमरेमें देवदास काका थे, अिसलिअे अुनसे बातोंमें लग गये। मैं भी दिया जलानेके लिअे स्नानघरकी मेजके खानेमें दियासलाअी लेने गई, जहां यह अिन्जेक्शन संबंधी चर्चा हो रही थी। मैंने अेकाअेक सुशीलाबहनसे कहा, "आप की दी हुअी अिंजेक्शनकी सुअियां तो कभीसे अुबल गअी होंगी। मैं तो भूल ही गअी।" वे बोलीं, "बापूजीने अिंजेक्शन देनेको मना कर दिया, अिसलिअे मैंने चूल्हा बुझा दिया है।"

मेरे कानों पर बापूजीके अितने ही शब्द पड़े कि, "अब तेरी मरती हुअी मांको सुअी क्यों चुभोअी जाय?" परंतु ये शब्द सुने न सुने कि मैं दिया जलानेकी जल्दीमें होनेसे वहांसे चली गअी। मैंने दिया जलाया। बाने स्वयं जयश्रीकृष्ण कहा। प्रभावतीबहन और मेरे पिताजी अुनके पास थे। अितनेमें बाके भाअी माधवदास मामा आ गये। अुन्हें देखा। बोलना चाहती होंगी, परंतु कुछ बोल

नहीं सकीं। अेकाअेक कहा, "बापूजी"। सुशीलाबहन आ रही थीं। बापूजीको याद करते ही अुन्हें बुलाया। बापूजी हंसते-हंसते आये। कहने लगे, "तुझे यह खयाल होता है न कि अितने सारे संबंधियोंके आ जानेसे मैंने तुझे छोड़ दिया?" यों कहकर बापूजी मेरे पिताजीके स्थान पर बैठे। धीरे धीरे बाके सिर पर हाथ फेरा। बापूजीसे कहने लगीं, "अब मैं जा रही हूं। हमने बहुत सुख-दुःख भोगे। मेरे लिअे कोअी न रोये। अब मुझे शान्ति है।" अितना बोलीं कि सांस रुक गया। कनुभाअी फोटो ले रहे थे, परंतु बापूजीने रोक दिया और रामधुन गानेको कहा।

हम सब 'राजा राम राम राम, सीता राम राम राम' गाने लगे। राम रामके अन्तिम स्वर सुने न सुने कि दो मिनिटमें बाने बापूजीके कंधे पर सिर रखकर सदाके लिअे नींद ले ली!

बापूजीकी आंखोंसे दो बूंद आंसुओंकी निकल पड़ीं। अुन्होंने चश्मा अुतार दिया। मैं तो मूढ़की तरह देखती ही रह गअी। क्या क्षणभर पहलेकी बाकी प्रेमपूर्ण आवाज अब सुनाअी नहीं देगी? मनुष्य दो ही क्षणमें अिस प्रकार सबको छोड़कर चला जाता है, यह दृश्य मेरी जिन्दगीमें पहला ही था।

बापूजी दो ही मिनिटमें स्वस्थ हो गये, परंतु देवदास काकाका रुदन देखा नहीं जाता था। मांसे बिछुड़े हुअे छोटे बच्चेकी भांति वे बाके पैर पकड़कर करुण क्रन्दन करने लगे। अैसी हालतमें हमारी किसीकी क्या हिम्मत रहती? अुस दुःखद घड़ीका शब्दोंमें वर्णन करनेकी मुझमें शक्ति नहीं है।

७ बज कर ३५ मिनिटकी संध्या महाशिवरात्रिकी थी। मंदिरोंमें आरती हो रही थी। अैसे समय हमें रोते-बिलखते छोड़कर भगवान बाको अपने धाममें ले गये।

पांचेक मिनट बाद बापूजीने बाको तकिये पर सीधा सुलाया और अुठे। देवदास काकाको शान्त किया। मुझसे बोले, "तेरी सेवा तो अभी पूरी नहीं हुअी। यों रोयेगी तो बाका जी कितना दुखेगा? आखिरी वक्तकी अुसकी जो अिच्छा थी वह तो तुझसे कह ही दी

है। तू रोने बैठ जायगी तो बा जो चाहती थी सो नहीं हो सकेगा; तब अुसकी आत्माको शान्ति कैसे मिलेगी ?" मुझे अुठाया। दरवाजेके बाहर भी बहुत रिश्तेदार थे, परंतु सरकारी हुक्मके बिना भीतर कैसे आते ?

बाके शवको स्नानागारमें लाये। आगाखां महलमें आओ तबसे बाके सिरके बाल मैं ही धोती और कंघी भी मैं ही करती थी। आज मैंने अुनके बाल शिकाकाओीके साबुनसे आखिरी बार धोये। नहलानेमें और लोग भी मेरे साथ थे। बाल धोकर जिस कमरेमें बाने अंतिम श्वास लिया अुसकी सफाओीमें कनुभाओीका हाथ बंटाने गओी। गोमूत्र और गोबरसे जगह लीपकर पवित्र की। मीराबहनने जितने भागमें शव रहे अुसमें चूनेसे चौरस बनाकर सिरकी ओरके हिस्सेमें फूलोंसे ॐ बनाया और पैरोंकी तरफके हिस्सेमें स्वस्तिक बनाया।

१९४२ में बापूजीके हाथके सूतकी जो साड़ी पहनकर अग्निदेवकी आहुति बन जानेकी अंतिम अिच्छा बाने प्रकट की थी और मुझे सौंपी थी, वही साड़ी मैंने कांपते हाथों अुन्हें ओढ़ायी। क्या अुन्हें अुसी समय यह भविष्य दीख गया होगा कि यह साड़ी वे मेरे ही हाथों ओढ़ेंगी ? क्या अिसीलिअे अुन्होंने मुझे यह सौंपी होगी ?

लेडी प्रेमलीलाबहन ठाकरसीने गंगाजलमें भिगोओी हुओी एक साड़ी भेजी थी। वह भी ओढ़ा दी गओी।

संतोककाकी (मगनलालभाओी गांधीकी पत्नी) ने बरसों पुरानी सोनेकी पट्टी जड़ी हुओी चूड़ियां और कंठी अुतारी; कंठी नओी पहनाओीऔर चूड़ियोंके बजाय पू० बापूके हाथ-कते सूतके तार कलाओी पर बांधे। अिसके बाद शवको वहां लेटा दिया जहां गोमूत्रसे जगह पवित्र कर ली गओी थी।

लाल किनारकी सफेद साड़ी पहनाकर, बालोंमें कंघी करके अुनमें फूल गूंथे, कपाल पर चंदन और कुंकुमका लेप किया, पासमें घीका दिया और अगरबत्ती रखी। बाके चेहरे पर अैसा अपूर्व तेज चमक रहा था, मानो साक्षात् जगदम्बा हों।

कर्नल भंडारीने आकर पूछा कि शवकी क्रियाके लिअे बापूजीकी क्या अिच्छा है। बापूजीने कहा, "या तो शवको अुनके लड़कों और संबंधियोंको सौंप दिया जाय। अैसा हो तो अग्नि-संस्कारमें चाहे जितनी जनता भाग ले सकती है। सरकार जरा भी दखल नहीं दे सकती। यदि यहीं अग्नि-संस्कार किया जाय तो सगे-संबंधियोंको अुपस्थित रहनेकी अिजाजत मिलनी चाहिये। परंतु यदि सरकार सगे-संबंधियोंको भी मना कर दे, तब तो हम जो छः आदमी यहां हैं वे ही अिस क्रियाको निपटा लेंगे।" अंतमें यह तय हुआ कि जेलमें ही अग्नि-संस्कार हो और जो स्नेही व संबंधी आयें अुन्हें आनेकी अिजाजत दी जाय।

अिधर बाके शवके पास 'वैष्णवजन'के भजनसे प्रार्थना शुरू की गअी और गीताका पूरा पारायण किया गया। गीतापारायणके समय अठारह आदमी थे। बापूजी शवके पास ही सिरकी तरफ सीधे तनकर आंखें बंद किये बैठे थे।

प्रार्थना लगभग रातके ग्यारह बजे पूरी हुअी। साढ़े ग्यारह बजे खबर आअी कि लगभग सौ आदमियोंको सरकार महलमें आने देगी। बम्बअी अलग अलग टेलीफोन करनेमें खर्च होगा, अिसलिअे बापूजीने केवल शामलदास काकाको 'वन्देमातरम्' कार्यालयमें खबर देनेको कहा।

साढ़े बारह बजे जो लोग बाहरसे आये थे अुन्हें बाहर जाने और सवेरे जल्दी आनेकी सूचना दी गयी।

बापूजी अपने बिस्तर पर लेटे। रातभर प्रार्थना, रामायण और गीतापारायण करना तय किया गया था। मैंने बापूजीके सिरमें तेल मला। सुशीलाबहन और प्यारेलालजी पैर दबा रहे थे। मुझे बापूजीने सो जानेको कह दिया था, परंतु मेरी जागनेकी अिच्छा थी। 'सवेरे जल्दी अुठ जाना' यों कहकर बापूने मुझे सोनेको कहा।

बा जब अन्तिम क्षण गिन रहीं थीं, तब मैं थोड़ी देर रो ली। परंतु चीजवस्त देने लेने और दूसरे कामोंमें यह भूल गअी कि बा नहीं हैं। वे अैसी दिखाअी देती थीं मानों सो ही रही हैं।

परंतु पलंग पर सोओी तब सचमुच यह खयाल हुआ कि नहीं, अब बाके पास सोनेको नहीं मिलेगा। पिछले कओी दिनोंसे में रातको लगभग बाके साथ ही सोती थी। आज अकेली रह गओी! मेरे पास सुशीलाबहन आओीं। हम दोनों अेकसी दुखी थीं। फिर भी अुन्होंने मुझे खूब प्यारसे समझाया। परंतु कभी-कभी जब कोओी अधिक आश्वासन देने आता है तब अधिक आघात लगता है। वैसा ही हुआ। सुशीलाबहन और मैं अेक दूसरेसे लिपटकर रो रही थीं। दो-ढाओी बजे बापूजी जागे। मुझे अपने पास बुलाया और बड़े प्रेमसे भींचकर कहा, "बाने मेरे सामने तेरी बहुत बार सिफारिश की है। बा कहीं नहीं गओी। तू यों रोयेगी तो तेरा मुझसे रोज गीता पढ़ना बेकार हो जायगा। तुझसे बाको बड़ी आशा थी, तेरी माके बजाय बा मिली, और बाके बदले अब मैं हूं। तू मुझे अपनी मां समझ ले। अभी सवेरे बहुत काम करना है। अिस वक्त तुझे सब समझाअूंगा तो जागरण होगा। अिसलिअे शान्तिसे बाका नाम लेकर सो जायगी तो मैं भी सो सकूंगा।"

मुझे याद नहीं कि बापूके पास मैं कब सो गओी। ठेठ चार बजे प्रार्थनाके समय जगाया तभी अुठी।

२६

अंत्येष्टि

आगाखां महल, पूना,
२३–२–'४४

सुबहकी प्रार्थनाके समय बापूजीने मुझे जगाया। नित्यके अनुसार प्रार्थना की। प्रार्थनाके बाद बापूजीने साढ़े पांच बजे गरम पानी और शहद लिया। साढ़े सात बजे फलोंका रस लिया।

लगभग साढ़े सात बजेसे लोग भीतर आ जा रहे थे। पूनाके नागरिकोंको तो दरवाजे पर बड़ी भीड़ लगी हुआी थी। साढ़े नौ बजे तक बम्बआीके स्नेही और संबंधी फूलमाला लेकर आ पहुंचे। सारा

मेरे पिताजीने प्रणाम करके विदा ली, तब बापूजीने कहा, "कल रातसे अब मैं मनुकी मां बन गया हूं, भला! तुम चिन्ता न करना। अब तक तो वह जिस सेवाके लिअे आअी थी वह अुसने पूरी कर दी। अुस सेवासे बचनेवाले समयमें अुसकी पढ़ाअी होती थी। परंतु यदि अब सरकार अुसे रहने देगी तो यहीं रखकर अुसकी पढ़ाअी करानेकी मेरी अिच्छा है।"

मेरे पिताजीके लिअे तो मुझे बापूजीको सौंपनेसे अधिक निश्चिन्तता और क्या हो सकती थी? मैं कुछ नहीं बोल सकी; प्रणाम किया और हम जुदा हुअे।

३०

सूनापन

सबके जानेके बाद बापूजी नहाने गये, हम सब भी नहाने चले गये। चारों तरफ सुनसान लगता था। नहानेके बाद हम सबने नीबूका शर्बत पिया। चौबीस घंटे बाद पानी पिया। बापूजी भी खूब थक गये थे।

बापूजी शामको अुबाला हुआ शाक और दूध ले रहे थे, अितनेमें कर्नल भंडारी आये। प्रभावतीबहनके और मेरे बारेमें बातें हुअीं। बापूजीने कहा, "यदि प्रभावती और मनुको यहां रखें तो मुझे अच्छा लगेगा। मैंने अभी अभी मनुके पितासे बातें की हैं। अुसके यहां रहनेमें अुन्हें कोअी अेतराज नहीं है। प्रभावतीको यदि सरकार मेरे साथ रहने न देना चाहे तो वह भागलपुरसे आअी थी अिसलिअे वहीं जाना चाहती है। मनुको तो सी० पी० सरकारने छोड़ ही दिया है। अिसलिअे यदि सरकार अुसे यहां रहने न दे तो वह अपने पिताके पास जायगी। और कनुभाअी तो बाहरसे ही आये हैं, अिसलिअे अुनका कोअी सवाल नहीं है।"

अितनी बातें समझकर भंडारी चले गये। अितनेमें रामदास काका आ पहुंचे। गद्‌गद हृदयसे बापूजीको प्रणाम किया। अेक बार

जीतेजी बासे मिलनेकी बात अुनके मनमें ही रह गअी। बापूजी कहने लगे, "बा जीवित होती और तू आया होता तो अुसका दुःख ही देखता न?"

सब खाना खाकर दुबारा चिता-स्थान पर फूल रखने गये। अभी आग जल ही रही थी। वहां फूल रखकर लौट आये। प्रार्थना अित्यादिका कार्यक्रम पूरा हुआ।

शामको (भजन गानेकी बारी मेरी थी अिसलिअे) बापूजीने मुझे भजन गानेको कहा। मैंने कहा "अीश्वरने मेरी बाको मुझसे छीन लिया। अब तो मैं न प्रार्थनामें भाग लूंगी और न रामनाम ही लूंगी।" बापूजी हंसे, "मूर्ख कहीं की।" "परंतु आज तो देवदास काका गायेंगे," यह कहकर मैंने भजन गानेकी बात टाल दी।

रातको सोनेसे पहले पू० बाके काममें आनेवाली चूड़ियां, कंठी, पादुका, कुंकुम अित्यादि चीजें मुझे सौंपी।*

प्रार्थनाके बाद बापूजीके पैर दबाकर साढ़े नौ बजे मैं सो गअी, मानो अब कोअी काम ही न हो। देवदास काका और रामदास काका दोनोंको तीन दिनके बाद अस्थियां अिकट्ठी हो जाने पर गंगाजीमें विसर्जन करनेको ले जानेके लिअे सरकारने रहनेकी अिजाजत दी है। अिसलिअे यद्यपि मनुष्योंकी संख्यामें तो वृद्धि हो गअी थी, परंतु अेक बाके चले जानेसे अैसा सूनापन छा गया था मानो सारे महलमें मैं अकेली ही हूं और मेरे पास कोअी काम ही न हो।

आगाखां महल, पूना,
२४–२–'४४

रातको भूलसे दो बार अुठ बैठी और मेरी 'ड्यूटी' अदा करने अुस कमरेमें गअी, जहां बाका बीमारीका बिछौना था। कोअी बारह बजे होंगे। सुशीलाबहन लिख रही थीं। मुझे देखकर समझ

---

* अिन सारे ब्यौरेके लिअे देखिये 'बापू — मेरी मां', पृ० ६। नवजीवन; की० ०–१०–०, डा० खर्च ०–३–०।

गओीं। हम दोनों थोड़ी देर रो लीं। में अुनके पास सो गअी। कोअ दो बजे फिर अैसा ही हुआ। अुस वक्त बापूजी जाग रहे थे। अुन्होंने मुझे रामनाम लेकर सो जानेको कहा।

प्रातः चार बजे प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद बापूजी भी नहीं सोये। मैंने बहुत दिनों बाद घंटे भर काता।

बापूजी, रामदास काका और देवदास काका बातें कर रहे थे अुनमें बीमारीके समय सरकारका व्यवहार और देशकी दूसरी राजनैतिक बातें थीं। मैं तो सुबह ही नहा-धोकर निपट गअी थी। सब साथ टहलने गये। आज किसके लिअे रुकना था?

टहलते टहलते बापूजी कहने लगे, "यदि बाका मुझे साथ न मिलता तो मैं अितना हरगिज नहीं चढ़ सकता था। मेरी प्रबल अिच्छा थी कि बा मेरे हाथोंमें ही जाय, मुझसे पहले ही चली जाय। बा मेरे हाथोंमें ही गअी, अिससे अेक प्रकारसे मेरा बोझ आज हल्का हो गया। अलबत्ता, अुसकी कमी तो कभी पूरी नहीं होगी। जाने-अनजाने मेरे पीछे पीछे चलना ही अुसने अपना धर्म माना था।" अिस प्रकार बाके संस्मरणोंकी बातें हुअीं।

थोड़ेसे चक्कर लगाकर बाकी अस्थियां अिकट्ठी करने लगे। वहां अेक बहुत आश्चर्यजनक घटना हुअी। पू० बाके शव पर रखनेके लिअे जो पांच चूड़ियां मैंने दी थीं, अुनमें से दो प्रभावती-बहनको, अेक सुशीलाबहनको, अेक बापूजीको और अेक मुझे मिली।

जैसा मैंने अूपर लिखा है, चिता ठीकसे नहीं जमाअी गअी थी, अिसलिअे दूसरे बड़े-बड़े लक्कड़ दूरसे डालने पड़े थे। अितनी दूरसे डालने पर भी ज्वालासे कनुभाअीकी आंखोंकी बरौनी थोड़ी जल गअी थी। शान्तिकुमारभाअीने तो अिन लक्कड़ोंको अुठानेमें खूब मेहनत की। वे भी थोड़े झुलस गये। महाराजने कहा, "मैंने अपने जीवनमें अैसी क्रियाअें बहुतेरी कराअी हैं, परंतु अैसी घटना मैंने कभी नहीं देखी।" बापूजी बोले, "मुझे अिसमें आश्चर्य नहीं होता, क्योंकि बा अैसी ही थी।"

भारतमें सतियोंके सतीत्वकी परीक्षाके अनेक अुदाहरण हैं। अुनमें से अेक यह था। अुनका सारा जीवन सती सीताकी तरह अग्नि-परीक्षामें ही बीता। और अुनके सौभाग्य-चिन्ह चूड़ियोंको अग्निदेवने अविच्छिन्न रूपमें लौटा दिया।

अस्थियां और भस्म लेकर मैं अूपर आअी। मैंने जो चूड़ियां दी थीं, अुमी रंगकी और अुन्हींमें से अेक चूड़ी मैंने अंगीठीमें डाली। तुरंत अुसके टुकड़े टुकड़े हो गये।

दोपहरको पू० बाकी तमाम चीजोंकी सूची बनाअी और देवदास काकाको सौंपी। वे किस समय क्या काममें लेती थीं, कौनसी चीज बिलकुल काममें नहीं ली गअी, आदि सब कुछ रातके बारह बजे तक लिखकर देवदास काकाको दिया। बापूजीने मुझे सौंपी हुअी प्रसादीमें से चूड़ी मुझे ही दे दी। प्रभाबहनको मिली हुअी चूड़ियां अुन्हें दीं और सुशीलाबहनको मिली हुअी अुन्हें सौंपी। बापूजीने वर्षों पुरानी सोनेकी पट्टीवाली जो चूड़ियां मुझे प्रसादीके तौर पर दी थीं, अुनमें अिस पवित्र चूड़ीने अनोखी शोभा पैदा कर दी। कहावतके अनुसार सोनेमें सुगन्ध मिली और आज मैं कंठी, रुमाल, पवित्र पादुका, कुंकुम और अुन चूड़ियोंकी प्रसादी प्राप्त होनेके लिअे अीश्वरका सच्चे अन्तःकरणसे आभार मानती हूं।

अब तो कोअी जल्दी सो जानेको नहीं कहता और आज यह डायरी रातको साढ़े बारह बजे लिखकर पूरी की।

आगाखां महल, पूना,
२५–२–'४४

आश्वासनके ढेरों तार देश-विदेशसे आ रहे हैं, पत्र भी बहुत आ रहे हैं। पंडित मालवीयजी महाराजका तार पू० बाके अस्थि-पुष्प प्रयाग ले आनेके लिअे आया है।

सुबह पुरोहितजीने विधिपूर्वक अंतिम पूजा कराअी। अस्थियोंका पात्र लेकर देवदास काका और रामदास काकाने बापूजीसे विदा ली। बापूजी दोनों भाअियोंको द्वार तक छोड़ने गये।

३१

सरकारका झूठ

आगाखां महल, पूना,
२६–२–'४४

मुझे कलसे बुखार आता है। अैसा लगता है कि अब शायद सरकार मुझे और प्रभावतीबहनको यहां नहीं रहने देगी। मेरे विषयमें आज खूब चर्चा हो रही थी। पू० बापूजीसे भी जुदा होना पड़ेगा! बापूजी मुझे देखने आये थे। और अभी घूमने गये हैं। मैं यह शामके छः बजे लिख रही हूं।

बापूजी मुझसे कहने लगे: "देखता हूं कि तेरी श्रद्धा मेरे प्रति बा जैसी है या नहीं? यदि मुझे बासे जरा भी कम समझेगी तो सरकार तुझे छोड़ देगी। परंतु तेरा बीमार पड़ना ही बताता है कि बाके बनिस्बत मैं तुझे कम प्यार करता हूं। नहीं तो तू बीमार क्यों पड़े?" यद्यपि यह सब विनोदमें कहा गया, परंतु मेरा खयाल है कि मेरे बीमार पड़नेमें बापूजी अपना कसूर मानते हैं अथवा यह मानते हैं कि पूज्य बाकी अपेक्षा मेरे प्रति अुनके व्यवहारमें कुछ कमी है। अिसमें अेक प्रकारसे अुनके मनकी तीव्र वेदना मुझे मालूम हुअी।

शामको बापूजीका मौन शुरू होगा। पूज्य बाके जानेके बाद यह पहला मौन-दिवस है।

आगाखां महल, पूना,
२७–२–'४४

कल बुखार रहा और आज भी अभी (सवेरे साढ़े सात बजे) तक अुतरा नहीं है। १०० डिग्री है। बापूजी टहलने जानेसे पहले मुझे अेक भव्य पत्र दे गये।

कलके बापूजीके विनोदमें बहुत बड़ी गूढ़ता थी। मेरी अुन्हें कितनी चिन्ता हो रही थी, यह अिस पत्रने साबित कर दिया। और मेरी यह धारणा सच निकली कि बापूजीने मेरी खाटके पास आकर पांचेक मिनिट मेरे सिर पर हाथ रख कर जो विनोद किया, अुसमें मेरे लिअे अुनके मनकी तीव्र वेदना छिपी थी।

यह भव्य पत्र 'बापू—मेरी मां' (पृष्ठ ७) में प्रकाशित हो चुका है, फिर भी अिसका सिलसिला बनाये रखनेके लिअे अुसे दुबारा दे दूं तो अनुचित नहीं होगा। क्योंकि परम पूज्य बापूजीके मेरे पवित्र संस्मरणोंमें यह पत्र अद्वितीय है। मेरे नाम पू० बापूजीका अपने हाथसे लिखा यह पहला ही पवित्र पत्र है।

चि० मनुड़ी,

तू अच्छी तरह सोअी न? तुझे और प्रभावतीको रखनेके बारेमें कल लंबा पत्र लिखा। परंतु रातको विचारमें नींद नहीं आअी। अन्तमें प्रकाश दिखाअी दिया। अैसी मांग नहीं की जा सकती। करें तो जेल कैसी? हमें अेक-दूसरेका वियोग सहन करना ही होगा। तू तो समझदार है। दुःखको भूल जा। तुझे बड़े बड़े काम करने हैं। रोना छोड़ दे। खुश हो जा। बाहर जाकर जो सीखा जा सके सीखना। अितनी सेवाके बाद तेरा हर हालतमें कल्याण ही होगा। मुझे तेरी बड़ी चिन्ता रहती है। तू अपने जैसी अेक ही है। भोली, सरल और परोपकारी है। सेवा तेरा धर्म हो गया है, परंतु तू अभी अपढ़ है। मूर्ख भी है। तू अपढ़ रह जाय तो तू भी पछतायेगी और जीता रहा तो मैं भी पछताअूंगा। तेरे बिना मुझे अच्छा नहीं लगेगा, फिर भी तुझे अपने पास रखना मुझे पसन्द नहीं। क्योंकि वह दोष और मोह होगा। मैं निश्चित रूपसे मानता हूं कि अभी तुझे राजकोट जाना चाहिये। वहां तुझे नारायणदासका सत्संग मिलेगा। वहां तू अुपयोगी कला सीखेगी और संगीत तो सीखेगी ही। अिसके अलावा जो भी सीखनेको मिले सीखना। कमसे कम अेक

वर्ष वहां वितायेगी तो तू समझदार बन जायगी। फिर कराची जाना हो तो वहां जाना या और कहीं जाना। कराचीमें गुरु-दयाल मल्लिक हैं, पर वे अब वहां नहीं रहेंगे। अिसलिअे वहां तो केवल पढ़ाअी ही हो सकेगी। वह भी कामकी चीज है। बहुतसी लड़कियोंमें रहना भी अच्छा है। परंतु जो चीज राजकोटमें है, वह कहीं नहीं है। अिससे अधिक तो मेरा मौन खुलेगा तब। तेरी मां तो मैं ही हूं न? अितना समझ ले तो काफी है।

यह पत्र तू संभालकर रखना।

बापूके आशीर्वाद

लगभग नौ बजे कर्नल भंडारी आये थे। कर्नल शाह भी साथ थे। अुन लोगोंको भी पू० बाके बिना सूना-सूना लगता है।

अखबारोंमें समाचार आ रहे हैं कि बाके अवसानके बारेमें देश-विदेशके लोगोंने शोक प्रगट किया है। जगह जगह प्रार्थनाका क्रम रखा गया है। जेलमें मृत्यु होनेसे बा अधिक अमर हो गअीं।

आगाखां महल, पूना,
२९–२–'४४

आज पू० बाको गये पूरा सप्ताह हो गया। साप्ताहिक तिथि होनेसे शामको ७–३५ से चौबीस घंटेका अखंड चरखा शुरू हुआ। पू० बापूजीने शुरू किया।

हममें जैसे बारहवां-तेरहवां दिन श्राद्ध दिवस माना जाता है, अुसी तरह हमने पू० बाका श्राद्ध दिवस मौन कताअी — जो पू० बाका अत्यंत प्रिय काम था — गीतापाठ और कैदियोंको भोजन कराकर मनानेका निश्चय किया। मेरी पढ़ाअी बापूजीने व्यवस्थित कर दी। और सारा दिन कार्यक्रमसे अिस तरह भर दिया कि मुझे अैसा न लगे कि मेरे पास कुछ काम नहीं है।

आगाखां महल पूना,
१–३–'४४

चौवीस घंटेके अखंड चरखेकी आज शामको ७–३५ पर बापूजीने पूर्णाहुति की।

आगाखां महल, पूना,
२–३–'४४

गीतापाठ, प्रार्थना, वगैरा रोज होते हैं। यद्यपि बापूजी खूब आनंदमें रहते हैं, परंतु मुझे अैसा लगता है कि शायद अुनके मनमें थोड़ी व्यथा बनी रहती है। कभी-कभी यह खयाल होता है कि वे विचारोंमें मशगूल रहते हैं। बाके चितास्थान पर मिट्टीकी कच्ची समाधि बना दी गअी है और अुस पर 'हे राम!' लिख दिया गया है, जिसकी बा रातदिन रटन किया करती थीं। हम दोनों वक्त अिस समाधिकी यात्रा करने जाते हैं। बापूजी स्वयं फूलोंसे क्रॉस बनाते हैं और हम सब मिलकर बारहवां अध्याय बोलते हैं।

आगाखां महल, पूना,
५–३–'४४

मुझे बुखार आता है। आज शामको बढ़ गया है। बापूजी अिस समय (शामके छः बजे) टहलने गये हैं। मैं अकेली ही बैठी यह लिख रही हूं। बापूजी अब सोचते हैं कि अुनके लिअे होनेवाला आगाखां महलका खर्च बहुत अधिक है; अुसे हो सके तो किसी तरह कम किया जाय। मेरी भी चर्चा होती है कि सरकार अब मुझे क्यों रखे? प्रभावतीबहन अभी तक सरकारकी कैदी हैं। अिसलिअे अुन्हें जैसे अन्यत्र रखेगी वैसे यहां रख सकती है, परंतु मुझे क्यों रखे? असलमें अिसमें मेरी श्रद्धाकी परीक्षा है। यदि बापूजीके प्रति मैं हार्दिक श्रद्धा रखती हूं तो जब बापूजी छूटेंगे तभी मैं छूटूंगी; यही अीश्वरसे मेरी प्रार्थना है।

आगाखां महल, पूना
६–३–'४४

२ मार्चको अिंग्लैण्डकी लोकसभामें पू० बाकी सेवा-शुश्रूषा और बीमारीके दरमियान सरकारी व्यवहारके प्रश्नोंकी चर्चा हुअी। अुसमें बटलरने बिलकुल गप लगाअी। अिसके सिवाय अंत्येष्टि क्रियाके बारेमें भी अैसी ही झूठ बात पत्रोंमें आअी है कि बापूजीकी पसन्दसे ही आगाखां महलमें अंतिम क्रिया की गअी।

बापूजी कहने लगे: "यदि मेरी ही पसन्दकी बात होती तब तो मैं स्मशानभूमि ही पसन्द करता।" परंतु यह सब बाके नामसे हो रहा है, यह शोभास्पद नहीं। अिसीलिअे बापूजी अुद्विग्न हो अुठे हैं। परसों सरकारको अेक पत्र भी लिखा। अुसमें लिखा कि सरकारकी तरफसे जो सुविधाअें दी गअीं, वे बहुत देरसे मिलीं। और वे भी तभी दी गअीं जब बापूजीने सरकारको जतला दिया कि मुझे बीमारका मूक साक्षी न बनाकर सरकार या तो बासे दूर कर दे अथवा अिलाजकी पूरी सुविधा दे। डॉ० दिनशाकी देखरेखके लिअे भी अितना ही विलम्ब किया गया। क्योंकि डॉ० दिनशाकी मांग जनवरीमें की गअी थी और अुसकी मंजूरी मिली फ़रवरीमें! डॉ० विधान रॉयकी मांग पर तो कोअी ध्यान ही नहीं दिया गया।

अिसके सिवाय बटलरने कहा है कि बाको पैरोल पर छोड़नेकी तो मांग ही नहीं हुअी, परंतु अुन्हें न छोड़नेमें सरकारने समझदारी की।

अिसके अुत्तरमें बापूजीने लिखा कि यह बात सही है कि बाको छोड़नेके लिअे प्रार्थना नहीं की गअी थी। परंतु यदि सरकारने छोड़नेकी बात की होती तो? अिसके सिवा, सत्याग्रहीके लिअे अिस प्रकार छोड़नेकी बात करना शोभा नहीं देता।

बाकी अंतिम क्रियाके ब्यौरेका जवाब देते हुअे बापूने वे ही तीन शर्तें अुद्धृत कर दीं, जो २२ तारीखकी शामको कर्नल भंडारीको दी गअी थीं; और अन्तमें लिखा कि अिस बारेमें तो सरकार ही

साक्षी है। परंतु अिस मामलेका राजनैतिक अुपयोग करनेकी बापूजीकी अिच्छा नहीं है।

बापूजीने लिखा है कि,

> मेरी जीवन-संगिनी कस्तूरबाका जीवनदीप तो अब बुझ गया है। मगर अब अितनी आशा तो जरूर रखता हूं कि बाकी पवित्र स्मृतिमें, मेरे मनके संतोष और शान्तिके लिअे और सत्यके नाम पर सरकार अपनी हो चुकी भूलोंमें और अमरीकामें भारतीय प्रतिनिधिने जो आश्चर्य-जनक बयान कस्तूरबाके संबंधमें दिया है, अुसमें अुचित सुधार करेगी, यदि मेरी शिकायत सही हो। अथवा अखबारोंमें प्रकाशित बयान और बटलरके दिये हुअे बयानमें फर्क हो तो सरकार सच्चा बयान प्रकाशित करे।

बापूजीको दुःख अिसी बातका है कि जब बा जैसोंके लिअे अितना झूठ चलता है, तब बेचारे मामूली कैदियोंका क्या हाल होता होगा?

प्यारेलालजीने दोपहरका सारा समय यह पत्र समझानेमें लगाया। मुझे प्यारेलालजी कहते थे कि, "बहुत संभव है तुझे सरकार छोड़ देगी। अिसलिअे आजकल बापूजी सरकारको जो कुछ लिखें अथवा सोचें, वह सब तुझे ध्यानमें रखना है। क्योंकि वह बाहरके लोगोंके लिअे बड़ा अुपयोगी होगा। अिसलिअे डायरीमें लिखकर तो रखा ही जाय; परंतु डायरियां सरकार कदाचित् बाहर न जाने दे, अिसलिअे सब दिमागमें ही रखा जाय।"

यह पढ़ाअी अनोखी थी। जैसे अंग्रेजी, अितिहास, भूगोल, गणित अित्यादिके पाठोंमें कभी कभी भूल हो जाय तो याद रहनेके लिअे मास्टर चार पांच बार लिखनेको कहते हैं, वैसे ही यह नया राज-नैतिक अध्ययन-क्रम प्रारंभ हुआ। लेकिन अैसे पत्र याद रखना मेरे लिअे कठिन होनेके कारण बापूजीको मुझ पर यह बोझ लादना पसन्द नहीं था। अिसके बजाय वे चाहते थे कि मेरी पाठशालामें होनेवाली पढ़ाअी ही करायें। परंतु बापूजी बापू थे और प्यारेलालजी मंत्री! अतः मेरे याद रखनेके लिअे वे अैसे पत्रोंका अंग्रेजीसे गुजराती

अनुवाद करके लिख देते और अुनका गुजराती सार में रट लेती। किसी भी पत्रके वारेमें चाहे जिस समय पूछताछ कर लेते।

अिस प्रथम पत्रसे यह प्रयोग आरंभ हुआ और आज दोपहरमें यह पत्र पांच वार लिखा जा चुका है।

अन्तमें शामको चार वजे तो मैं अुकता गअी। परंतु अुन्होंने मुझे तभी छोड़ा जव यह पत्र कंठस्थ हो गया।

यह नअी पढ़ाअी करते समय खयाल हुआ कि यह नअी अिल्लत कहांसे आ गअी? यह नया विषय पढ़नेसे मुझे जितनी अरुचि थी, अुतनी और किसी विषयसे नहीं थी। परंतु जैसे कभी कभी नापसन्द चीज अद्‌भुत काम देती है, वैसे ही पढ़ाअीके तौर पर लिखे गये ये पत्र भी अेक अद्वितीय साहित्यके रूपमें मेरी डायरीमें रह गये हैं।

३२

वेवेलको पत्र

आगाखां महल, पूना,
१०–३–'४४

'लॉर्ड वेवेलका समवेदनाका पत्र आया है। अुसका अुत्तर वापूजीने कल दिया। अुसमें पू० वाके वारेमें जो कुछ लिखा है, वह खूव समझने लायक है। प्यारेलालजीने तो यहां तक कहा कि, "वापूजी वाके संस्मरण तो जव लिखेंगे तव लिखेंगे, परंतु यह पत्र अितना हृदयस्पर्शी है कि अिसमें सारे संक्षिप्त संस्मरण आ जाते हैं।" अिस पत्रमें वापूजीने पहले तो लॉर्ड और लेडी वेवेलका आभार माना है। वादमें वाके विपयमें जो कुछ लिखा अुसमें कहा कि,

> वेशक मैंने माना था अुससे कस्तूरवाकी कमी कुछ ज्यादा मुझे खटक रही है। परंतु मैं यह जरूर चाहता था कि अिस वीमारीके दारुण दुःखसे छूटनेके लिअे वे अिस देहसे जल्दी

मुक्त हो जायं। हम कुछ दूसरी ही तरहके दंपती थे। १९०६ में हमने अेक दूसरेकी स्वीकृतिसे आत्मसंयमका नियम पालनेका निश्चय किया। अुससे हम अेक-दूसरेके ज्यादा और ज्यादा निकट आये।

यद्यपि वे अत्यन्त दृढ़ अिच्छाशक्तिवाली थीं, फिर भी अुन्होंने मुझमें ही समा जाना पसन्द किया। जब सन् १९०६ में मैंने पहली बार राजनैतिक प्रवृत्तिमें अुनका प्रवेश कराया, तब दक्षिण अफ्रीकामें जेल जानेवाले भारतीयोंकी सूचीमें कस्तूरबाका नाम सबसे पहला था और शारीरिक कष्ट अुन्होंने मुझसे अधिक भोगा। कअी बार जेल हो आने पर भी अिस महल जैसी जेलमें, जहां सभी सुविधाअें मौजूद हैं, अुन्हें अच्छा नहीं लगता था। दूसरे नेताओंकी और अुसके तुरन्त बाद मेरी और कस्तूरबाकी गिरफ्तारीसे अुन्हें बहुत दुःख हुआ, क्योंकि मैंने बहुत बार अुन्हें यह आश्वासन दिया था कि सरकार मुझे हरगिज नहीं पकड़ेगी। अिसलिअे अिस बारकी गिरफ्तारीका अुनके मन पर अितना भारी आघात पहुंचा कि अुन्हें दस्त लग गये। परंतु सौभाग्यसे डॉक्टर सुशीला नय्यर साथ थीं। अुन्होंने तुरन्त अिलाज किया। अिससे वे बच गअीं, नहीं तो मुझसे मिलनेके पहले ही मृत्युको प्राप्त हो जातीं। परंतु मुझे देखनेके बाद तो अुपचारके बिना ही अुनके दस्त बिलकुल बन्द हो गये। फिर भी मानसिक वेदनासे अुनके मन पर जो आघात लगा था और दिल खट्टा हो गया था, वह मिटा ही नहीं। परिणामस्वरूप पीड़ा भोगते भोगते वे चल बसीं।

अैसी कस्तूरबाके लिअे अखबारोंमें सरकारकी तरफसे जो झूठ बयान छपते हैं, अुनसे मुझे कितना दुःख होता होगा, यह आप आसानीसे समझ सकेंगे। वे मेरा अनमोल रत्न थीं। अुनके बारेमें असत्य बातें लिखी जायं, अिससे दुःखद वस्तु और क्या हो सकती है? मैंने अिस बातकी शिकायत गृह-विभागको भेजी है। अुसे पढ़नेका आपसे अनुरोध करता हूं।

अितना भाग पूज्य बाके बारेमें था और अुसके बादका लॉर्ड वेवेलके भाषण और मीराबहनके बारेमें था — मीराबहनको जेलसे छोड़नेके विषयमें। अुन्हें जेलमें बंद करनेका कारण अितना ही था कि वे बापूजीकी भक्त हैं। "परंतु अुन्हें छोड़ दिया जायगा, तो वे गरीब लोगोंकी सेवा ही करेंगी।"

बापूजीने वेवेल साहबको यहां आनेका भी निमंत्रण दिया है:

> "हवाअी जहाजसे बंगाल और वहांके दुखी लोगोंके बीचमें जाते हैं, तो अेकाध बार अहमदनगर और यहां (आगाखां महलमें) भी आअिये। आप अपने कैदियोंके मनकी जांच कर सकेंगे। हम आपकी आलोचना करते हैं, परंतु अितना विश्वास रखिये कि हम आपके मित्र ही हैं।"

अिस प्रकारका पत्र वेवेल साहबको लिखा। पूज्य बाके बारेमें जो कुछ लिखा है, वह तो लगभग बापूजीने अंग्रेजीमें जो पत्र लिखा अुसका अनुवाद ही है। परंतु बाकीका सारांश तो जिस तरह मैंने समझा अुस तरह अपनी डायरीमें लिखा हुआ ही अूपर अुद्धृत कर दिया है।

बापूजी आजकल अपना समय सुशीला बहनसे संस्कृत रामायणका अनुवाद करानेमें बिताते हैं और प्रभावती बहनको गीता और गुजराती पढ़ाते हैं। कभी कभी मेरा भूमितिका पाठ भी लेते हैं। शामको मीरा-बहन आध घंटे अखबार व बाअिबल पढ़ती हैं। अभी तक डाक तो बहुत आती है। यहांसे डाक लिखनेवाली मैं अकेली ही हूं, अिसलिअे जिन जिनको बा पत्र लिखती थीं अुनको बारी बारीसे मैं लिखती रहती हूं। कर्नल भंडारी और कर्नल शाह लगभग रोज ही आते हैं। समाचारपत्रोंमें आया था कि हमारा मासिक खर्च ५५० रुपये होता है। अिस बातसे बापूजी बड़े बेचैन हो गये। यद्यपि यह आंकड़ा केवल हमारे ६–७ आदमियोंके खर्चका नहीं है, फिर भी बापूजीका यह खयाल तो है ही कि केवल अुन्हींके लिअे अितना सुन्दर महल खास तौर पर रखा गया है। भले अुसमें सरकारी नौकर काम करते हैं,

परंतु सरकार अुनके वेतनका रुपया तो गरीव लोगों पर कर लगा कर ही पैदा करती है न? यदि वापूजीको सावारण जेलमें रखा जाय, तो खर्चमें जरूर फर्क पड़ेगा। यह वात मुझे समझाते हुअे वापूजी कहने लगे, "दो सगे भाअी हों और वे साथ ही रहें तो कम खर्च होगा और अलग रहें तो दुगना खर्च होगा। फिर भले ही दोनों भाअी अेकसा भोजन वनायें और अेकसा ही खायें। मैंने तो अैसे वहुत प्रयोग किये हैं। मेरा सारा जीवन ही 'प्रयोग' है।"

आगाखां महल, पूना,
१५–३–'४४

अुपरोक्त खर्चके वारेमें वापूजीने अेक पत्र सरकारको लिखा था। वह पत्र लिखा तो गया ४ मार्चको, परंतु वहुतसे पत्रोंके अनुवाद करने थे। अुनमें यह छोटासा पत्र रह गया था, सो आज ही मिला। साथ ही कांग्रेस पर लगाये गये सरकारी आरोपोंका जवाव वापूजीने पूज्य वाकी वीमारीके दिनोंमें १९४३ में दिया था, अुसका भी थोड़ा थोड़ा अनुवाद करती हूं। परंतु वह मेरी समझमें नहीं आता। अिस लिअे वापूजीने कहा, "यह तेरे लिअे अत्यन्त कठिन है। अिसमें समय लगाना व्यर्थ है। तू आजकलके पत्र समझ लेगी और पचा लेगी, तो भी मैं समझूंगा कि तूने वहुत कर लिया।" अिसलिअे आज ४ मार्चको लिखा गया पत्र पढ़ा। अुसमें वापूजीने लिखा है,

> धारासभामें पूछे गये अेक प्रश्नके अुत्तरमें गृह-विभागकी ओरसे यह अुत्तर दिया गया है कि हमारा मासिक खर्च लगभग ५५० रुपया होता है।
>
> मैंने तो अक्तूवर १९४३ में ही लिख दिया था कि मुझे अितने वड़े आलीशान वंगलेमें रखा जा रहा है, अुससे मुझे लगता है कि मैं हिन्दुस्तानकी गरीव जनताके पैसेका अपव्यय ही कर रहा हूं। मुझे किसी भी जेलमें रख दिया जाय, वहां मैं अपने दिन आनन्दसे विताअूंगा। परंतु अिसके वजाय धारासभामें

पूछे गये प्रश्नका अुत्तर शायद मुझे यह सख्त याद दिलाता है कि मुझे अपनी बात पर डटे रहना चाहिये था। परंतु 'जब जागे तभी सवेरा'—भूल तो किसी भी क्षण सुधारी जा सकती है। अिसलिअे मैं ही अब अिस प्रश्नको छेड़ता हूं। मेरा और मेरे साथ रहनेवाले लोगोंका खर्च केवल ५५० रुपये ही नहीं है। परंतु अिस आलीशान बंगलेका किराया—जिसका बड़ा भाग बंद ही रहता है, केवल छोटासा भाग हमारे लिअे खुला है—और पहरेदारों, जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट, जमादार और दूसरे सिपाहियोंका खर्च भी अिसमें शामिल करना चाहिये। यहांके बगीचेकी देखरेख और बंगलेकी सफाअीके लिअे यरवड़ा जेलसे कैदियोंको लाना पड़ता है। यह सारा खर्च मुझे तो अनावश्यक ही प्रतीत होता है। और अिसमें भी जब आज देशमें अैसा (बंगाल जैसा) अकाल पड़ा हो, तब तो मेरे जैसा प्रत्येक भारतवासी आम जनताका अपराधी माना जायगा। मेरी मांग है कि सरकार मुझे और मेरे साथियोंको किसी भी साधारण जेलमें रख दे। अन्तमें अितना ही कहूंगा कि यह सारा खर्च भारतके करोड़ों मूक और गरीब लोगोंसे लिया जाता है, यह कष्टमय विचार मेरे मनमें सदा खटकता ही रहता है।

अिस पत्रके बाद तो मालूम होता है अब मुझे जरूर छोड़ देंगे और प्रभावती बहनको भी जहांसे वे आअी थीं वहां ले जायंगे। क्योंकि अैसे खर्चके प्रश्नोंके विरुद्ध तो बापू जिद करके भी स्वयं साधारण जेलमें ही जायंगे। बापूजी कौन कम हठीले हैं ?

३३
और झूठ

आगाखां महल, पूना,
२२–३–'४४

आज पू० बाकी मुक्तिको अेक महीना बीत गया। सब कुछ स्वप्नवत् हो गया दीखता है। जैसे बा कभी थीं ही नहीं। अुनकी गैरमौजूदगीका सूनापन तो दिनदिन कुछ अधिक प्रबल होता दिखाओी देता है। यद्यपि हम सबका अेक-अेक क्षण काम-काजसे भर दिया गया है; बापूजीने किसीको अेक मिनटकी भी फुरसत नहीं रहने दी। फिर भी किसीको अभी तक मानसिक शान्ति नहीं मिली है।

यह पूछने पर कि आज खास तौर पर क्या करना है, बापूजी कहने लगे, "बाके बिना अेक महीना बीत गया!! बाके मनको पसन्द था कैदियोंको भोजन कराना, कातना और गीतापाठ। हम वही करें।"

हमने अुपवास रखा और कैदियोंको भोजन कराया। परंतु कैदियोंके आजके भोजनमें न तो हमेशाका आनंद था और न भोजन करनेवाले कैदियोंका मुस्कराता हुआ चेहरा था। अिसी प्रकार हर बार खानेवालोंके बीचमें जिस कुर्सी पर बा वात्सल्य भावसे सबको खिलाने बैठतीं, वह बीमारीके दिनोंमें सदा काममें आनेवाली पहियेदार आरामकुर्सी भी नहीं थी।

शामको साढ़े पांच बजे बापूजीने कैदियोंको खिचड़ी, कढ़ी और साग परोसा। हमने भी बारी बारीसे परोसा और कैदियोंने अुदास और दुःखी मनसे खाया। जिन कैदियोंने पू० बाकी बीमारीके दौरानमें सेवा की थी, अुनमें से दो तीनने तो मासिक तिथिके निमित्तसे अुपवास भी किया था।

७-३५ बजे अर्थात् जिस क्षण बाकी आत्माने अिस मानवदेहसे और सरकारी जेलसे सदाके लिअे मुक्ति प्राप्त की थी, ठीक अुसी क्षण अुनकी पसन्दकी प्रार्थना, भजन और गीतापाठ शुरू किये गये। अुस वक्त अैसा लग रहा था मानो आंखोंके सामने बाका हंसता चेहरा तैर रहा हो। सारा कमरा प्रार्थनाके पवित्र अुच्चारणोंसे गूंज अुठा था और अैसा लगता था जैसे बा फिर अेक बार हम लोगोंके बीच आ गअी हैं। और कुछ समयके लिअे हम भूल गये कि यह प्रार्थना अुनके श्राद्धके निमित्तसे हो रही है। वे हमारे साथ प्रार्थनामें भाग भी अवश्य ले रही होंगी; शायद हम अपने अज्ञानके कारण अुन्हें प्रत्यक्ष न देख पाते हों। कुछ भी हो, लेकिन आजकी प्रार्थनामें कुछ दूसरा ही वातावरण था।

बाके बारेमें चलाये गये सरकारके झूठके सिलसिलेमें पत्रव्यवहार अभी तक जारी है। परंतु मुझे तो विनाशकाले विपरीत बुद्धिवाली बात लगती है। सरकार अितनी अधिक गिर गअी है कि पार्लमेण्टमें पूछे गये सारे प्रश्नोंके अुत्तर अुसने बिलकुल झूठे दिये हैं। अेक जिम्मेदार सरकार अितना अधिक झूठ बोल सकती है! और किस व्यक्तिके बारेमें झूठे जवाब दिये जा रहे हैं, यह देखनेकी भी अिस समय ब्रिटिश सरकारको चिन्ता नहीं रही। जो बा सीधी-सादी, भली, भोली, दाव-पेंच या षड्यंत्र बिलकुल न समझनेवाली, जिसकी बात हो अुसे मुंह पर ही कह देनेवाली और बादको पेटमें कुछ पाप न रखनेवाली थीं, अुन शुद्ध, साफ दिल और प्रेमपूर्ण बाके विरुद्ध जो सरकार झूठी बातें फैला रही है, वह अपने सत्ताके बल पर भी सत्यका पराजय नहीं कर सकेगी। किसी समय जब यह सत्य प्रगट होगा तब वह कितनी नीच समझी जायगी? मुझे तो अिन पत्रोंका अनुवाद करना अच्छा ही नहीं लगता। अैसे सरासर झूठसे भरे पत्रोंको कौन याद रखे?

बापूजी कहते हैं, "मुझे तो यह पसन्द है। मेरे मनमें अिससे जरा भी क्लेश नहीं होता। क्योंकि अिससे बाका मूल्य घटता नहीं, परंतु बढ़ता है। कोअी हमें गाली दे तब समझ लेना चाहिये कि हमारे पाप

घुल रहे हैं। अिसलिअे तुम्हारी तरह गुस्सा आनेके बजाय मुझे सरकार पर दया आती है। जैसे किसी मनुष्यको चोट लग जाने पर मनमें दयाकी भावना पैदा होती है कि अरे, बेचारेके चोट लग गअी! वैसे ही मुझे खयाल होता है कि अिन बेचारोंको झूठ बोलना पड़ रहा है। गुनाह गरीब होता है। मेरे लिअे अैसे लोग क्रोधके पात्र नहीं, बल्कि दयाके पात्र हो जाते हैं। यह ज्ञान आसानीसे समझमें आने लायक नहीं है। मनमें किसीके लिअे लेशमात्र भी क्रोध करना मेरी दृष्टिसे तो हिंसा ही है। जब यह अुत्तेजनाकी भावना ही मनुष्यमें न रहे, तब वह सच्चा अहिंसक कहलाता है।"

आगाखां महल, पूना,
३१–३–'४४

बासे संबंध रखनेवाले काण्डमें सरकारने कर्नल भंडारी और डॉ० गिल्डरको भी लपेट लिया है। कर्नल भंडारीने सरकारसे कहा था कि "डॉ० गिल्डरका यह मत है कि बाकी बीमारीमें डॉ० दिनशा महेता कोअी खास मदद नहीं कर सकते।" यह बात बिलकुल गलत है। परंतु बापूजी डॉक्टर साहबसे कहने लगे: "मुझे यह सब अच्छा लगता है।" अिसके स्पष्टीकरणके रूपमें डॉक्टर साहबने पत्र लिखा है कि,

> दिसम्बर १९४३ में कर्नल अडवानी, जो कर्नल भंडारीके छुट्टी पर जानेसे अुनकी जगह काम करते थे, मुझसे मिलने आये थे। अुन्होंने मुझसे पूछा कि डॉ० दिनशा महेताका कुछ अुपयोग हो सकेगा? मैंने गांधीजी या डॉ० सुशीला बहनके साथ कोअी बात नहीं की थी, अिसलिअे अुस समय कोअी पक्की राय नहीं दी। परंतु दूसरे दिन मैंने कह दिया था कि डॉ० महेता बहुत ही अुपयोगी साबित होंगे।
>
> फिर भी ३१ जनवरी, १९४४ तक डॉ० महेताके लिअे मांगी गअी अिजाजतके बारेमें कुछ भी नहीं हुआ। तब हमने दूसरी बार लिखित याददिहानी कराअी। अिसके सिवाय

डॉ० विधानचंद्र रॉयके वारेमें भी लिखा था, और वार वार कहा था। लेकिन अुसका तो कोअी जवाव ही नहीं मिला था।

और तालीम पाअी हुअी दाअीके वारेमें सरकारने जो भूल-भरी वात कही है, अुसका स्पष्टीकरण करनेकी अिजाजत लेते हुअे मैं कहूंगा कि तालीम पाअी हुअी अेक भी दाअी कभी यहां नहीं आअी। पागलोंके अस्पतालमें काम कर चुकी अेक आया दी गअी थी। अुसने आठ दिन वाद ही मुक्त कर देनेके लिअे कटेली साहवसे कहा और वह चली गअी।

अिस प्रकारका पत्र लिखकर गिल्डर साहवने दोपहरको रवाना किया।

यह पत्र रवाना हो ही रहा था कि अितनेमें लिखनेके लगभग अेक घंटे वाद अखवारोंमें आया कि नअी दिल्लीकी राज्यपरिषद्में श्री रामशरणदासने अेक प्रश्न पूछा कि वैद्य शिवशर्माको वाका अिलाज करनेकी अनुमति कव दी गअी थी? अुसके अुत्तरमें कहा गया कि हमसे ९ फरवरीको मंजूरी मांगी गअी थी, १० फरवरीको हमने मंजूरी दी थी और अेक-दो दिनमें वीमारकी चिकित्सा शुरू हो गअी थी। अखवारमें आया है कि यह जवाव गृह-विभागके मंत्री कोनरान स्मिथने दिया है।

परंतु सही वात यह है कि ३१ जनवरी (१९४४) के दिन ही शामको वापूजीने कटेली साहवको लिखित पत्र दिया था। अुस समय मैं वहीं वैठी थी, क्योंकि वापूजी मुझे 'मार्गोपदेशिका' का पाठ समझा रहे थे।

'वम्वअी समाचार' में आयी हुअी यह रिपोर्ट मैंने काट ली। वापूजी भी अिस तरहकी वातें जो अंग्रेजी अखवारोंमें आती हैं, अुनकी कतरन कभी तो स्वयं ही काट लेते हैं, या काटनेकी सूचना दे देते हैं और अैसी कतरनोंकी फाअिल रखते हैं। अिसलिअे मैंने गुजराती अखवारोंको कतरनोंकी फाअिल वना ली है। गुजराती अखवार पढ़नेवाली केवल वा थीं और अव मैं अकेली हूं।

३४

प्रभावती बहनका तबादला

आगाखां महल, पूना,
९-४-'४४

आज दोपहरको कटेली साहब प्रभावती बहनको भागलपुर जेलमें भेज देनेका सरकारी हुक्म लेकर आये। प्रभावती बहनके बारेमें किसीको जरा भी आशा नहीं थी कि अुन्हें हटाया जायगा। अुल्टे मेरे छूटनेका हुक्म कब आयगा, अिसीकी रोज आतुरतापूर्वक राह देखी जा रही थी। रोज रात होने पर यह खयाल होता है कि चलो, आजका दिन तो निकला! अिससे सबको आश्चर्य भी हुआ। दो दो बार वह हुक्म पढ़ा गया और खयाल हुआ कि 'कहीं मनुको छोड़नेके बजाय भूलसे तो अैसा नहीं हो गया?'

अिस हुक्मसे मैं जरा अुत्तेजित हो गअी। मैंने कहा, मेरा तो भगवान है! देखना, हम तो साथ ही छूटेंगे। बापू कहने लगे, "तेरा भगवान जरूर सच्चा है, पर तुझे पता है कि जहां स्वार्थ हो वहां भगवान नहीं होता।"

मैंने कहा, "मेरे स्वार्थकी अपेक्षा भगवानका स्वार्थ अधिक जान पड़ता है। आपने ही कअी बार कहा है कि भगवानकी दृष्टिमें हम सब बालकके समान हैं। जैसे माता-पिता सदा यह चाहते हैं कि मेरा बच्चा पढ़े-गुने और तरक्की करे वैसे भगवानको भी यह स्वार्थ तो होता ही होगा? कारण, मेरे माता-पिताने तो हृदयपूर्वक मुझे भगवानके हाथोंमें सौंप दिया है। अिसलिअे भगवान जानता होगा कि आपके पास रहनेमें मेरा अधिक हित है।"

बापू हंसने लगे। मैं अिससे मनमें जितना आनंद अनुभव कर रही थी अुतना ही प्रभाबहनके लिअे दुःख हो रहा था। प्रभाबहन यद्यपि

कु तो रही थीं, परंतु किसी पर प्रगट नहीं होने दे रही थीं। वे हंसते मुंह सव सामान वांध रही थीं, क्योंकि वापूके आध्यात्मिक जीवनका रस वे वर्षोंसे पी रही थीं। अैसे आध्यात्मिक जीवनके दर्शनोंका लाभ तो वहुतोंको मिला होगा, परंतु प्रभावहनने अुसे अपने जीवनमें अुतार लिया है। अिसलिअे अुनके लिअे यह अवसर कठिन होने पर भी वे आनंदपूर्वक अुसका सामना कर रही थीं। परंतु यदि अुनके स्थान पर मैं होती तो मुझे नम्रतापूर्वक स्वीकार करना चाहिये कि हुक्म मिलते ही शायद मैं रोना शुरू कर देती।

शामको घूमने जाते समय वापूजी वोले: "देख, प्रभा कितनी वहादुरीके साथ तैयार हो रही है? यही दिन यदि तेरे लिअे आ जाय तो अव तुझे हरगिज आश्चर्य नहीं होना चाहिये। प्रभाको तो फिर भागलपुर जेलमें ही जाना है, जव कि तुझे अपने संवंधियोंके पास जाना होगा। दोनों स्थितियोंमें कितना अंतर है! यद्यपि प्रभा तुझसे वहुत वड़ी है, और यह भी सच है कि अुसने वहुत कुछ देखा है। परंतु मेरी दृष्टिमें तो वह वैसी ही वारह-तेरह वर्षकी लड़की है जैसी वह पहले-पहल मेरे पास आअी थी। अुसके वजाय तेरी रिहाअीका हुक्म आया होता तो?"

मेरे जवाव देनेसे पहले ही हममें से कोअी वोल अुठा 'गरम पानी' का नल ही खुल जाता!

मैं जोशमें थी, अिसलिअे मैंने कहा, "आप सव भले कुछ भी कहें, परंतु मेरा तो भगवान है। देख लेना, वापूजीको लिये विना नहीं जाअूंगी।" अिस प्रकार कह तो रही थी, परंतु मनमें लग रहा था कि छूटनेका हुक्म आयेगा तव पता चलेगा।

आगाखां महल, पूना,
१२–४–'४४

आज प्रभावती वहनके जानेका दिन था। वारह वजे खा-पीकर सव वैठे थे कि अितनेमें अेक पुलिस ट्रक आयी। वह चारों ओर जालीसे वन्द की हुअी थी। गोरे सार्जण्ट, चार-पांच पुलिस और अेक

मेट्रन थी। पुलिसवाले सब खुली बंदूकें लिये हुअे थे। मैंने कहा, "ये दुबली-पतली प्रभावतीबहन कहां भागकर जानेवाली हैं जो अितने पुलिस लेने आये हैं?"

बापूजी हंसते हंसते बोले, "यह तो भागनेवाली नहीं है, परंतु अिसका पति (जयप्रकाशजी) भागता है न?"

बापूजी और हम सब प्रभाबहनको बस तक छोड़ने गये। अुस समयका दृश्य बड़ा करुण था। बाको सदाके लिअे छोड़कर बापूजीसे दुःखद विदा ली जा रही थी। सबकी आंखोंमें पानी आ गया था।

बापूजीकी तबीयत कुछ खराब हो गअी है। रातको शरीरमें जरा बुखार-सा लगनेके कारण आज अुन्होंने खाना छोड़ दिया।

३५

बापूजीकी बीमारी

आगाखां महल, पूना,
१७–४–'४४

पू० बापूजी मलेरियासे पीड़ित हैं। बुखार बहुत रहता है। आजसे बारी बारीसे अुनके पास दिनरात रहनेकी 'ड्यूटी' लगा दी गअी है। कुनैन लेनेसे अिन्कार करते हैं। अिस बीमारीमें बाकी कमी अवश्य महसूस होती है। अीश्वरसे प्रार्थना करती हूं कि बापूजीको जल्दी तंदुरुस्त बना दे।

शामको हम समाधिकी यात्राको जा रहे थे। बापूजी बोले कि मुझे भी चलना है। लेकिन डॉ० गिल्डर साहबने समझाया तो मान गये। रातको लगभग १०४ डिग्री बुखार था। डॉक्टर साहब कह रहे थे कि आज यही हाल रहा तो कल कुनैन देनी ही पड़ेगी। आज मालिश और स्नान नहीं कराया गया।

२५–४–'४४

डॉ० विधानबाबूको बुलवानेकी मांग की गअी। वे और डॉ० गज्जर आये। बापूजीके खूनकी परीक्षा करनेको सवेरे खून ले गये थे। सरकारने अिस बीमारीमें बहुत ढिलाअी नहीं की। हमें आशा नहीं थी कि डॉ० विधान रायको अनुमति मिल जायगी। वैद्यराजने भी कहलवाया है कि जरूरत पड़ने पर मुझे सूचना दें।

कुनैन लेना तीन ग्रेनसे आरंभ किया है। कानमें बहरापन लगता है। दूध तो बापूजी नहीं लेते। फलोंका रस लेते हैं।

सुना है संबंधियोंने भी मुलाकातकी मांग की है। सारा देश चिन्तामें पड़ गया है।

३०–४–'४४

जमनादास काकाको मिलने आनेकी अिजाजत मिल गअी है। खबर है कि वे कल आयेंगे। कनुभाअीने भी सरकार सेवा करनेके लिअे आने दे तो आनेकी अिच्छा प्रकट की है। बापूजीकी तबीयत सुधार पर तो है। परंतु कमजोरी और फीकापन बहुत बढ़ गया है।

२–५–'४४

जमनादास काका मिलने आये थे। भीतर-बाहरके बहुतसे समाचार लाये। परंतु बापूजीको यह अच्छा नहीं लगा। "जमनादास 'गांधी' है, अिसलिअे अुसे अिजाजत मिल जाय और आश्रमवासियोंको, जो संबंधियोंसे भी अधिक हैं, अिजाजत न मिले?" यह खयाल होने पर बापूजीने सरकारको अेक पत्र लिखवाया :

> भविष्यमें कोअी अधिक निराशाजनक परिणाम न हो अिसके लिअे मैं जमनादाससे मिला तो सही, परंतु मैंने अपने लिअे दूसरा ही नियम बनाया है कि जिन स्नेही आश्रमवासियोंको मैंने अपने संबंधी ही कहा है, वे यदि गांधी परिवारके न होनेके कारण यहां नहीं आ सकते तो गांधी परिवारवालोंसे मिलनेका मोह भी मुझे छोड़ देना चाहिये, यद्यपि अुनसे मिलना मुझे

अच्छा लगता है। मैं मानता हूं कि मेरे अुपवासके समय मुझे हरअेकसे मिलनेकी जो छूट दी गअी थी, अुसका कोअी विपरीत परिणाम नहीं हुआ। तब क्या मेरी तबीयत अच्छी न हो जाय तब तक सरकार वैसा ही फिर कर सकेगी?"

४-५-'४४

आज कनुभाअीको आनेकी मंजूरी मिल गअी है। वे मदद करने आ गये हैं।

३६

छुटकारा

आगाखां महल, पूना,
५-५-'४४

आज शामको साढ़े छः बजे हम खानेसे निपटे तब श्री भंडारी और डॉ० शाह आये। मुझसे कहने लगे: "बापूजीको साथियों सहित छोड़नेका हुक्म आया है। परंतु तुम्हारा कहीं नाम नहीं है। अिसलिअे तुम्हें तो नहीं छोड़ना चाहिये न?" यह बात हमने बिलकुल झूठ ही मानी। बापूजीके पास गये। सब कैदियोंको शामको बहुत जल्दी यरवडा जेलमें ले गये। अिससे हमें आश्चर्य हुआ कि अिस प्रकार जल्दी क्यों ले गये होंगे? मुझे लगा कि बापूजीको अिस खबरसे दुःख हो रहा है। स्वास्थ्यके लिअे और अितने साथियोंके अभी तक जेलमें रहते हुअे अुन्हें छूटना पसन्द नहीं था। परंतु सरकार तीसरा बलिदान नहीं चाहती, अिसलिअे प्रसन्न हो गअी होगी!

मेरा पू० बापूजीके साथ ही छूटनेका जो निश्चय था और अुस बारेमें अीश्वर पर जो श्रद्धा थी अुसने कैसा अद्भुत काम किया!

अिससे मुझे अपार आनन्द हुआ। मैं अुछलती-कूदती डॉक्टर साहब, कटेली साहब, प्यारेलालजीके पास गअी और सबको छोटे बच्चोंकी तरह अंगूठा दिखाते हुअे कहा: "क्यों, देखा, बापूजीको लेकर ही बाहर जाअूंगी न? भगवान किसका? आपका या मेरा?

शामको बापूजी थोड़े चक्कर लगाने आंगनमें आये। "सब अच्छी तरह पैक करना" वगैरा बातें कहीं। और अंतमें बोले: "न जाने क्यों मुझे छूटनेका कोअी अुत्साह नहीं है। अुल्टे मुझे अपने हृदयके भीतर अंधेरा लग रहा है। देखता हूं, बाहर जाकर क्या कर सकूंगा। मेरा तो खयाल है कि सरकार अधिक समय मुझे बाहर नहीं रहने देगी। दिमाग पर खूब बोझा लगता है।"

प्रार्थनाके बाद पू० बापूजीके पैर दबाकर हम सब सामान बांधने में जुट गये।

पुस्तकें, स्टेशनरी और दूसरा भी अितना सामान पैक करना था कि मीराबहनके सिवाय रातभर हममें से किसीने पलक तक नहीं मारी। अेकाअेक रिहाअीका हुक्म! हमने तो बाकायदा घरकी तरह सब अितजाम कर लिया था। प्यारेलालजी और सुशीलाबहन तो अपने कागजोंमें से ही सिर न अुठा सके। डॉ० गिल्डरने अपना पैकिंग रातको अढ़ाअी बजे पूरा किया।

६–५–'४४

मैं सुबह ४ बजे निपटकर नहाने-धोने गअी। साढ़े चार बजे प्रार्थना हुअी। बापूजीको गरम पानी और शहद दिया। कटेली साहबने गद्गद हृदयसे ७५ रुपयेकी थैली बापूजीको अर्पित की। वे प्रेमी भक्त थे। सात बजे समाधि पर गये। वहां चिर समाधिमें लीन हुअी दो महान आत्माओंसे सच्ची विदा तो आज लेनी थी। अब तक रोज फूल चढ़ानेके बहाने भी मानो साक्षात् मिलन हो जाता था। अब पता नहीं बापूजी कब आयेंगे? खूब सजावट और धूपदीप किया। पूरी प्रार्थना और बारहवां अध्याय बोलते बोलते सभी गद्गद हो गये। अिक्कीस महीनोंमें दो दो प्रियजनोंने यहां कठोर विदा ली थी। पत्थर जैसे हृदयको

भी पिघला देनेवाला दृश्य था। बापूजीने आगाखां महलके बाहर पैर रखते हुअे अेक पत्र तैयार कराया। अुसमें लिखा,

> महादेवभाअी और बा दोनोंकी अंतिम क्रिया यहां हुअी थी। अिसलिअे अिन दोनों समाधियों पर नजरबन्दोंने पुष्प चढ़ाकर रोज दोनों समय अंजलि अर्पण की है। अग्निदाहके अिस स्थान पर जानेकी अिच्छा रखनेवाले सगे-संबंधी जब चाहें तब जा सकें, अिसके लिअे मैं आशा रखता हूं कि सरकार माननीय आगाखांकी जमीनमें से वह भाग प्राप्त कर लेगी। मैं यह बन्दोबस्त करना चाहता हूं कि अिस पवित्र स्थान पर दोनों समय प्रार्थना हो। मेरी धारणा है कि मेरी प्रार्थनाके अनुसार अवश्य किया जायगा।

ठीक आठ बजते ही भंडारी आ पहुंचे। सब पहरेदारोंको आज अिक्कीस महीनेके बाद हटा लिया गया। आठ बजे बापूजीने मोटरमें पैर रखा। पीछे थोड़ा सामान रह जानेसे मैं दूसरी मोटरमें आअी। पहलीमें बापूजी, सुशीलाबहन, कर्नल भंडारी और डॉ० शाह तथा दूसरीमें डॉक्टर साहब, मीराबहन और मैं। तीसरीमें कनुभाअी और प्यारेलालजी थे।

पर्णकुटी पहुंचे। वहां तो लोगोंके मनमें आज दिवाली या नव-वर्ष जैसा आनंद था। बापूजीके दर्शन करनेको लोग चीटियोंकी तरह अुमड़ रहे थे। जाते ही सुशीलाबहनने स्वास्थ्य-संबंधी बुलेटिन जारी किया। मैंने बापूजीके लिअे खानापीना तैयार करना शुरू किया। बापूजीसे मिलनेवालोंका पार नहीं था। आठसे बारहके बीच अेक मिनट भी चैन नहीं ले सके। बारह बजे श्रीमती प्रेमलीला बहनने अिसका बन्दोबस्त रखनेका भार अपने सिर लिया तभी शान्ति हुअी।

बापूजीने आराम किया। मैंने पैरोंमें घी मला। शामको पांच बजेकी प्रार्थनामें तो दर्शनोंके लिअे अितनी भीड़ अुमड़ आअी कि पर्ण-कुटीके सुन्दर बगीचेका कचूमर निकल गया। प्रार्थनाके लिअे स्थाना-

भाव होनेके कारण लोग पेड़ों पर चढ़ गये। प्रार्थनाके बाद बापूजी थोड़ा घूमे और खूब थक जानेके कारण थोड़ा आराम करके दूध पिया। डॉक्टरोंने जांच की।

रातको जब मैं बापूजीके सिरमें तेल मल रही थी, तब मुझे अुन्होंने अितना ही कहा: "देख लिया, मनुष्य जैसी श्रद्धा रखता है वैसा ही फल मिलता है। हृदयसे की गअी निःस्वार्थ प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती, अितना तूने प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया। मैं और दूसरे सब अब तक विनोद करते थे। परंतु यह मैं तुझे विनोदमें नहीं कह रहा हूं। अितना ज्ञानपूर्वक समझ लेगी तो बहुत है। श्रद्धा ज्ञानपूर्वक हो तभी वह महत्त्वपूर्ण काम करती है। यह हृदयमें अंकित कर लेना।"

३७
पर्णकुटीमें

पर्णकुटी, पूना,
७-५-'४४

पू० बाका स्थूल शरीर हमारे बीचसे अुठ गया था, फिर भी अुनकी समाधिके दर्शनोंसे अैसा खयाल होता था कि वे हमारे बीचमें ही हैं। परंतु आज पहला दिन अैसा अुगा जब मेरे मनमें और हमारी मंडलीमें भी — यद्यपि पर्णकुटीमें आदमी समा नहीं रहे थे — कुछ न कुछ कमी मालूम हुअी और वह थी पू० बाकी शीतल छाया की। कार्यक्रममें अेकाअेक परिवर्तन हो जानेका भान पहले-पहल आज हुआ। कल सुबहके आठ बजेसे आज सुबहके आठ बजे तकके समयमें सारा कार्यक्रम बदल गया, अिसका मनमें कोअी खास खयाल नहीं था।

सवा आठ बजे। बापूजी मालिशके लिअे जानेसे पहले मुझसे बोले, "मैं घूम रहा था तब क्षणभर यह खयाल आया कि समाधि पर जा कर श्लोक बोल कर अूपर जायंगे। परंतु यह विचार आते ही भान

हुआ कि आज हम बा और महादेवसे सचमुच जुदा पड़ गये हैं। क्योंकि कल सवेरे तो दर्शन करके चले ही थे। यदि तुझे या दूसरे किसीको जाना हो और समय मिले तो हो आना। सुशीलाबहन तो काममें अितनी डूबी हुअी है कि अुसे बिलकुल वक्त नहीं मिलेगा। परंतु वह वहां जाना पसन्द करेगी। अिसलिअे अुसे पूछ लेना। मुझे आकर खाना देगी तो चलेगा।"

वहां जानेवालोंमें तो हम बहुतसे हो गये। सब वहां गये और दर्शन करके वापस आये।

आकर साढ़े ग्यारह बजे बापूजीको खाना दिया। बीमारीके बाद आज यह पहला भोजन था : अेक खस्ता पतली रोटी (खाखरा), जरासा मक्खन, छः औंस दूध और अुबला हुआ साग। बापूजीको अभी तक कमजोरी तो है ही। मुलाकातियोंका पार नहीं है। अिससे बापूजीको थकान भी महसूस होती है। शामकी प्रार्थनामें लोग जगह न होनेसे पेड़ों पर चढ़ जाते हैं। शामको कर्नल भंडारी आये थे। कटेली साहब अभी तक आगाखां महलमें ही हैं। कहते थे कि वहां अुन्हें सब कुछ सौंपनेमें अेक दो दिन लग जायंगे।

पर्णकुटी, पूना,
१०-५-'४४

पू० बापूजीको कहां रहनेसे आराम मिलेगा, अिसकी डॉक्टरों और बापूजीके बीच खूब चर्चा हो रही है। बापूजी तो सेवाग्राम ही जाना चाहते हैं। परंतु वहां सख्त गरमी होनेके कारण सभी मना करते हैं। खास तौर पर हवा खानेको ही कहीं जाना तो बापूजी हरगिज नहीं चाहते। परंतु हवा खाते खाते, शरीरके सुधरते हुअे बापूजी कुछ महत्त्वपूर्ण काम कर सकें, अैसा स्थान तो अेक बम्बअी ही है। अंतमें तय हुआ कि जुहू पर जाकर रहें। बड़े अनुनय-विनयके बाद बापूजीने शान्तिकुमार भाअीके मेहमान बनना स्वीकार किया। अिसलिअे आज शान्तिकुमार भाअी बंबअी गये हैं। कल हमारा जाना तय हुआ है।

शामको हम सभी समाधि पर गये थे। बापूजी भी साथ थे। शामको बापूजीने दूध नहीं लिया। केवल दो संतरे, गरम पानी और शहद लिया। अभी तक जितनी चाहिये अुतनी खुराक शुरू नहीं की है। चेहरे पर पीलापन अधिक लगता है।

रातको कह रहे थे, "कानोंका बहरापन पूरा नहीं गया। अिसमें कुछ हद तक रामनाममें श्रद्धाकी कमी भी पाता हूं। यदि राम-रटनमें दृढ़ श्रद्धा जम जायगी, तो बहरापन अवश्य चला जायगा।"

३८

बंबओमें

जुहू,
११-५-'४४

हमें सुबह जल्दीकी गाड़ीमें बम्बअी जाना था। अिसलिअे हम प्रार्थनासे आध घंटे पहले अुठ गये थे। आधा सामान तो सीधा मोटर-लारीमें बम्बअी गया और बाकीका पैक करके कनुभाअी और नारायणभाअीको सौंप देना था। प्रार्थनाके बाद बापूजी आधा घंटा सोये। प्रेमलीला बहनकी पर्णकुटी अेक मुसाफिरखाने जैसी बन गअी है। अुन बेचारीको भी अेक मिनिटका आराम नहीं मिलता।

सुबहसे ही पूना स्टेशन पर लोगोंकी अपार भीड़ जमने लगी थी। तब बापूके बम्बअी पहुंचने पर बम्बअी नगरीमें क्या हाल होगा? लगभग सवा दस बजे हम अेक छोटेसे फाटकके पास अुतरे। बड़े स्टेशन पर बहुत भीड़ होगी, अैसा सोचकर हमने अिस प्रकार बीचके स्टेशन पर दो मिनिट गाड़ी रुकवा ली थी। बापूजी, सुशीलाबहन और मैं अुतर गये। परंतु जनताको यह तो मालूम हो ही गया था कि बापूजी जुहूमें रहेंगे। अिसलिअे झुंडके झुंड लोग पू० बापूजीके निवासस्थानकी तरफ जा रहे थे। हमारी मोटरके गुजरनेका

लोगोंको पता न चलने देनेके लिअे ड्राअिवर बड़ी होशियारीसे मोटरको तेजीसे ले जा रहा था। परंतु कितनी ही जगह जनताके प्रेमके आगे अुसकी होशियारी नहीं चल पाती थी और लोग मोटरके पास आकर 'गांधीजी जिन्दाबाद' के नारे लगाते थे।

मोटरमें अेक तरफ मैं, अेक तरफ सुशीलाबहन और बीचमें बापूजी बैठे थे। बापूजीका विचार था कि "जुहू पहुंचनेमें अेक घंटा लग जायगा, अिसलिअे मैं सो लूंगा।" परंतु सो न सके।

ग्यारह बजे घर पहुंचे। सुमतिबहन (श्री शान्तिकुमार भाअीकी पत्नी) ने बापूको तिलक लगाकर माला पहनाअी। अम्माजान (श्री सरोजिनी देवी) वहीं थीं, अुन्होंने बापूजीका आलिंगन किया।

मैंने अुन्हें प्रणाम किया कि तुरंत अुनके मुंहसे ये शब्द निकले:

"क्यों बेटी, बा तो हम सबको छोड़कर चली गअीं न? आज बाके बिना बापूको अकेले देखकर हृदयको चोट लगती है। बाने मरकर तीन ही महीनोंमें बापूके लिअे जेलके द्वार खोल दिये। मुझे बाकी आखिरी बातें सुननेकी अिच्छा है। तुम तो बड़ी भाग्यवान हो कि आखिर तक वहीं रहीं, लेकिन मैं अुनकी आखिरकी बातें सुनकर ही अपनेको पवित्र कर लूं।"

मेरे मनमें अम्माजानके लिअे पूज्यभाव तो था ही, परंतु अुनके अैसे प्रेममय शब्द सुनकर अुनके स्नेहशील स्वभावसे मैं अधिक परिचित हुअी।

बा और सरोजिनी देवीके बीच कैसा कौटुम्बिक संबंध था अुसका यहां वर्णन करना अप्रस्तुत होगा। अभी मैंने सामान भी ठीकसे जमाकर नहीं रखा था, लेकिन अिस खयालसे कि अुनके वे शब्द कहीं भूल न जाअूं, अुन्हें मैंने अपनी डायरीमें नोट कर लिया।

बापूजी आधे घंटेमें सबसे मिलजुलकर मालिश करवाने गये। मैं बापूजीके खानेकी तजवीजमें लगी।

लगभग साढ़े ग्यारह बजे बापूजी सब कामसे निपटकर आराम करनेके लिअे लेटे। मैं पैरोंमें घी मल रही थी। मुझे कहने लगे:

"आज मुझे तेरे बारेमें सच्ची चिन्ता हो रही है। मुझे सरकार कितने दिन बाहर रखेगी यह मैं नहीं जानता; और अब मुझे पकड़े तो सरकार तुझे या सुशीलाको मेरे साथ नहीं रहने देगी। लेकिन सुशीलाबहन तो डॉक्टर है, अिसलिअे शायद अुसे मेरे साथ रखे। अिसलिअे जैसे सुनारके पास सोना तो सुन्दर होता है, परंतु अुसे आकार कैसा देना अिसकी अुसे चिन्ता रहती है, अुसी तरह मुझे आज तेरे विषयमें चिन्ता हो रही है। तेरी पढ़ाअी ठीकसे होनी चाहिये; लेकिन अब मैं जेलसे बाहर हूं तो भी तुझे अच्छी तरह पढ़ाना मेरे लिअे कठिन होगा। जेलमें दूसरा कुछ काम नहीं होता था। लेकिन यहां तो अितना काम, डाक और मुलाकातें रहेंगे कि मैं अेक मिनिटकी भी फुरसत नहीं निकाल सकूंगा। अिससे तुझे जरा भी घबराना नहीं चाहिये। परंतु अब तेरे दिमागको मुझसे जुदा होना ही पड़ेगा। अिस तरह तू तैयारी कर सके, अिसीलिअे अितना मैंने समझाया। अिसका अर्थ यह तो नहीं है कि मैं आज ही तुझे भेज दूंगा। परंतु तेरी मां बना हूं अिसलिअे जैसे मेरे मनमें दूसरे प्रश्न हल करनेकी चिन्ता है अुसी तरह तेरा प्रश्न भी हल करनेकी चिन्ता है। तू घी मल कर जितनी बात मैंने कही वह सब लिखकर मुझे बता दे और जयसुखलालको कराची भेज दे। वह भी मुझे अिस बारेमें कुछ सुझायेगा।"

अितनी बात करके बापूजीने दसेक मिनट नींद ली। अुठकर तुरन्त ही पिताजीके पत्रमें मैंने बापूजीकी अूपरकी बातें लिखीं और अुनके विषयमें पूछताछ की। लेकिन अक्षरशः मैं पूरी बातें नहीं लिख सकी, क्योंकि बापूजी बहुत जल्दी अुठ गये। अुठ कर तुरन्त शहद डालकर गरम पानी पीनेकी अुनकी आदत थी। वह देनेके लिअे मैं लिखना छोड़ कर अुठने लगी, लेकिन मुझे रोककर बापूजीने कहा, "पहले लिखकर मुझे दे जा। बादमें पानी लाना।"

मैंने पिताजीका पत्र पूरा किया और अुनके हाथमें रखा। फिर पानी दिया।

मुझे भी लगा कि मेरी ठीक तालीम और चरित्र-गठनकी बापूजीको आजसे कितनी चिंता होने लगी है! मेरे बारेमें अुनके मनमें

अितनी चिन्ता होगी, अिसकी कल्पना मुझे तभी हुअी जब अुन्होंने गरम पानी पीनेमें दस मिनिट देर की।

दिनभर दर्शनार्थियोंकी भीड़ फाटक पर जमी रही। परंतु प्रार्थनाके समय ही सबको भीतर आने देना तय हुआ।

शामको सूर्यास्तके समय जुहूके तट पर बापूजीकी हाजिरीमें गर्जन करते हुअे सागरके साथ मानव-सागरके मिलने पर भव्य प्रार्थना हुअी। जनताने २१ महीने बाद बापूजीके दर्शन किये। प्रार्थनाके बाद बापूजीने भेंटमें आये हुअे फल बालकोंको बांट दिये, हरिजन फंड अिकट्ठा किया और घर आकर थोड़ा घूमे। नौ बजे दूध पिया और घरके लोगोंसे बात करके सो गये।

अिस प्रकार बंबअीका पहला दिन बीता।

जुहू,
१५-५-'४४

बापूजीको जितना आराम चाहिये अुतना नहीं मिल पाता। मुलाकातियोंकी बंबअीमें झड़ी-सी लगी रहती है और बापूजी बातें किये बिना रह नहीं सकते। अिसलिअे डॉक्टरोंने सोचा कि कोअी अैसा चौकीदार होना चाहिये, जो बापूजीको भी बूतेसे बाहर जाने पर कह सके और मुलाकातियोंको भी काबूमें रख सके। बापूजीको नाराज करना और प्रजाका अपयश लेना — यह बहुत कठोर हृदयके चौकीदारके बिना नहीं हो सकता था। सबकी नजर अम्माजान पर थी। अुन्होंने यह जिम्मेदारी हर्षसे स्वीकार की।

शामको मैं कुछ पत्र बापूजीको पढ़कर सुना रही थी। अुसी समय अम्माजान आअीं। अपने लाक्षणिक ढंगसे चेहरे पर हास्य लाकर कहने लगीं : "अब मैं कोअी अिस छोकरीकी अम्माजान ही नहीं हूं, आपकी चौकीदार भी बनी हूं। कोअी भी बेजा काम किया तो फिर देखिये मजा!!" बापूजी खिलखिलाकर हंस पड़े।

अुन्होंने सबको अितना काबूमें रखा और अपने कर्तव्यका अिस हद तक पालन किया कि वहां ठहरी हुअी पंडित विजयालक्ष्मीको या

खुद पद्मावतीबहनको भी आना हो तो अम्माजानकी अिजाजतके बिना बापूजीके पास नहीं आ सकती थीं। वे खुद भी बिना कामके नहीं आती थीं। जिन्हें अम्माजानकी चिट्ठी मिले, वे ही अन्दर जा सकते थे।

सारे दिनमें बापूजीने क्या क्या काम किया, क्या खुराक ली, वगैरा सारे दिनकी डायरी देने मैं रातको अुनके पास जाती। और रातको वहां जाती तब मुझे खिलाये बिना वे कभी वापस नहीं आने देतीं। खिलानेका अुन्हें बड़ा शौक था। वात्सल्य भाव भी अैसा ही था। रोजकी तरह जब आज रातको मैं वहां गअी, तो मैंने कहा: "मैं यहां कुछ न कुछ खा लेती हूं। पर बापूजी कभी मुझे खूब फटकारेंगे।"

अम्माजान बोलीं: "बुड्ढेजी यदि तुझे डांटे तो तू साफ कह देना कि डांटनेमें आपको श्रम पड़ेगा। और जब तक नया श्रम करनेकी लिखित अनुमति अम्माजान न दें, तब तक श्रम न करनेका आपका वचन है। अिसलिअे मुझे डांटना हो तो पहले अम्माजानसे अिजाजत ले आअिये।"

अिस प्रकार पूज्य बापूजीकी सेवा करनेका मौका मिलनेके साथ-साथ अम्माजानके वात्सल्यकी बौछार पाकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ।

बापूजीने पूर्ण आराम मिलनेकी दृष्टिसे आजसे १५ दिनका मौन लेना तय किया है।

जुहू,
१८-५-'४४

मनको आनंदित रखनेके लिअे रोज़ चारसे छः के बीच (यदि अच्छे गानेवाले हों तो) संगीत (भजन) सुनना बापूजीने स्वीकार कर लिया। अिसलिअे आज श्री झवेरचंद मेघाणी गानेके लिअे आये। अुनके कंठसे अुन्हीके गीत सुननेको मिलें, फिर तो कहना ही क्या? बापूजी खुश हो गये। अुनका साफा देखकर बापूजी कहने लगे: "मुझे

अपना साफा याद आता है।" श्री मेघाणीने भी बापूजीको बहुत श्रद्धासे गीत सुनाये।

बंबअीमें स्टीमरका जो भड़ाका हुआ था, अुसका दृश्य देखनेके लिअे बापूजी और हम गये। बहुत भयंकर घटना घटी है।

३९

चरखा — अहिंसाका प्रतीक

जुहू,
२०-५-'४४

जबसे पूज्य बापूजी जेलमें गये तबसे अुन पर सरकारने यह शर्त लगा दी थी कि संबंधियों (गांधी-कुटुम्ब)के सिवाय वे किसी औरको पत्र नहीं लिख सकते। अिसलिअे अुन्होंने अिक्कीस महीने तक किसीको पत्र न लिखनेकी प्रतिज्ञा निभाअी। अिस प्रतिज्ञाकी पूर्णाहुति करके अेक पत्र मेरे बारेमें पूज्य नारणदास काकाको लिखा। अुसकी नकल रख लेनेकी मुझे सूचना दी। पत्र पढ़ा अुस समय तो अितनी समझ नहीं थी। परंतु आज समझ बढ़ने पर अैसा लगता है कि प्रत्येक सयानी माता चौदहसे सोलह वर्षकी पुत्रियोंका सच्चा चरित्र निर्माण करना अपना फर्ज मानती है, क्योंकि अिन तीन वर्षोंमें कन्याओंको जिन संस्कारोंका खजाना मिलता है वह जिन्दगी भर चले अितना महत्त्वपूर्ण होता है। अिस प्रकार बापूजी मेरी मां बननेके बाद जब तक जेलमें रहे तब तक तो अुन्हें मेरी कोअी चिन्ता न थी। लेकिन अीश्वरने तो युग ही पलट दिया; महीने भरमें नया ही फेरबदल हो गया। अिस फेरबदलमें देशकी व संसारकी जो भारी जिम्मेदारी बापूजीके सिर पर आअी, अुसमें भी वे मेरी जिम्मेदारी कितनी बारीकी और सावधानीसे निबाह रहे थे, यह नीचेके पत्रसे स्पष्ट होता है।

जुहू,
२०-५-'४४

चि० नारणदास,

लेटे-लेटे तुम्हारे लिअे लेख लिखा। मुझे डर था कि कुछ भूलें होंगी, लेकिन हुआी नहीं। दुबारा स्याहीसे लिखनेका अुत्साह नहीं था। मेरे लेखमें फ़ेरबदल करना चाहो तो मुझे वापस भेज देना। तुम्हारे सुधार देखकर फिरसे लिख भेजूंगा। समय तो अभी है ही।

दूसरी बात। (जयसुखलालकी) मनुको तुम जानते हो। मुझ पर अुसने बहुत अच्छी छाप डाली है। अपने कुटुम्बमें मैंने अैसी सहज सेवाभाववाली लड़की दूसरी नहीं देखी है। अुसने जिस श्रद्धा और भक्तिसे बाकी सेवा की, अुससे अुसने मेरा मन जीत लिया है। वह अभी मेरे पास रह सकती है। परंतु मैं अैसा नहीं चाहता। मैं तो अिस समय टूटे हुअे बर्तनकी तरह हूं। अिसलिअे अुसे कुछ दे नहीं सकता। दूसरे लोग अपने-अपने कामोंमें ल`हैं। और वे अब अुसे क्या देंगे? अुसकी पढ़ाअी नियमपूर्वक होती रहनी चाहिये। यह तुम्हारे ही पास हो सकता है। तुम्हे तंग करे अैसी लड़की नहीं है। बड़ी भोली है। पढ़ाअीमें ठीक है। कण्ठ अच्छा है। शरीर ठीक माना जा सकता है। पर शरीरकी संभाल रखकर पढ़ती नहीं। सेवामें सब कुछ भूल जाती है। मैं यह अवश्य चाहता हूं कि अिसकी संस्कृत और गुजराती अच्छी हो जाय। गीता मैंने ही पढ़ाअी है। अुच्चारण ठीक कर सकती है। पुरुषोत्तम या तुम अुन्हें और सुधार सकते हो। अुसका खर्च लेना आवश्यक हो तो वह जयसुखलालसे मिल जायगा। अुसे अपनी संस्थामें लेना है या नहीं, अिसका तार देना। पहला साथ मिलते ही भेजना चाहता हूं। अिनकार करना हो तो संकोच न करना।

बापूके आशीर्वाद

चरखा-जयंतीके संबंधमें बापूजीने लेख लिखा था, जिसका अुल्लेख अूपरके पत्रके पहले भागमें है। अुस लेखमें बापूजी लिखते हैं:

तुम्हारा वार्षिक वक्तव्य ध्यानपूर्वक पढ़ लिया। अभी कुछ लिखना शुरू नहीं किया। केवल बीमारोंको तीन पत्र लिखे हैं। परंतु दुनियामें दरिद्रनारायण जैसा बीमार कोअी नहीं। तुम तो अुनके अनन्य भक्तोंमें से हो। मेरी ही जयंतीके निमित्त चरखा-द्वादशी मनाते हो और अपनी सेवाको प्रखर बनाते जा रहे हो। अिस वर्ष बहुत कड़ी परीक्षा है। भगवान करे अुसमें तुम्हें विजय प्राप्त हो। जेल महलमें अिस बार मार्क्स और अेंगल्सके रूसके महान प्रयोगका साहित्य हाथमें आया। पढ़ लिया। परंतु कहां वह प्रयोग और कहां हमारा चरखा? वहां भी हमारी तरह सारी जनताको यज्ञमें निमंत्रित किया जाता है। परंतु यहां और वहांमें अुत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिमका भेद है। कहां हमारा चरखा और कहां वहांके भाप और बिजलीसे चलनेवाले यंत्र? अितने पर भी मुझे कछुअे जैसी चरखेकी चाल प्रिय है। चरखा अहिंसाकी निशानी है। और अंतमें विजय तो अहिंसाकी ही होगी। पर हम अुसके पुजारी मंद होंगे तो अपनेको भी लजायेंगे और अहिंसाको भी लजायेंगे। प्रवृत्ति अुत्तम है। अब अुसमें नवीनता लानी चाहिये। चरखेका भी शास्त्र है, जैसे यंत्रोंका है। चरखेका टेकनिक अभी तक हमने हस्तगत नहीं किया। अुसके लिअे गहरा अध्ययन चाहिये। जैसे श्रद्धाके बिना ज्ञान व्यर्थ है, वैसे ही ज्ञानके बिना श्रद्धा अंधी है।

अेक पत्रमें बापूजी लिखते हैं:

मेरा तो अिस समय सब कुछ अव्यवस्थित-सा समझना चाहिये। महात्माओंका मद अीश्वर रहने नहीं देता। ये पंक्तियां सब समझ लें।

पत्र लिखने लगूं तो सभी मेरे पत्रकी आशा रखेंगे; और अुसे पूरा करनेकी हद तक मेरी तबीयत सुधरे अुससे पहले

तो मैं वहीं (सेवाग्राम) पहुंच जाअूंगा। मुझे ब्योरेवार लिखा जाय। जिसे अुमंग हो वह लिखे।

वापूके आशीर्वाद

पंडित मदनमोहन मालवीयजी महाराजकी अिच्छा थी कि वापूजी गंगाके किनारे आराम लेकर भलेचंगे हो जायं। अुनको वापूजीने (हिन्दीमें) लिखा,

पूज्य भाअीसाहव,

अैसे खत लिखनेकी संमति डॉक्टरोंने दी है। आपके प्रेमका पात्र मैं कहां हूं? मैं जानता हूं कि आपकी अिच्छाकी पूर्ति मैं नहीं कर पाता।

डॉक्टरोंकी संमति लंवी मुसाफिरी करनेकी नहीं मिल सकती है। वात यह भी है कि जेलके वाहर हूं अैसी प्रतीति मुझे नहीं होती है। वीमारीके कारण छूटना हीं कहां है? देखें अच्छा होने पर अीश्वर मुझे क्या मार्ग वतायेगा?

आपका छोटा भाअी

जुहू,
२२-५-'४४

आजकल वापूजी सुवह टहलने जाते समय समुद्रमें कुरसी रखकर आंखें वन्द करके दसेक मिनट वैठते हैं। सुवह घूमते समय दूर दूरसे भी लोग आते हैं, परंतु सव शान्ति रखते हैं।

आज पू० वाकी त्रैमासिक तिथि है। सवेरेकी तरह प्रार्थनाके वाद सारी गीताका पारायण किया। मीरावहनने रामधुन और 'Wonderous Cross' गाया।

पिछली दो मासिक तिथियोंमें यह महसूस नहीं होता था कि तिथिकी प्रार्थना पू० वाकी श्राद्ध-तिथिके निमित्त हो रही है, क्योंकि आगाखां महलमें वाका अस्तित्व न होने पर भी वातावरण

वा-मय था। फिर आज यह बात और भी खटक रही थी कि दोनों पवित्र समाधियों पर मस्तक टेक कर प्रणाम करनेका अवसर नहीं मिला। और अब तो कौन जाने कब यह यात्रा करनेका सौभाग्य प्राप्त होगा।

४०

घुंघरूसे शिक्षा

जुहू,
८-६-'४४

अितने कामोंमें भी बापूजीको मेरी शिक्षाके विषयमें बड़ी चिन्ता रहती थी। कराचीके श्री शारदा मंदिरके संचालकजीका पत्र मेरे नाम आया। अुन्होंने मुझे कराची आनेको ललचाया था। अिसलिअे अन्तमें राजकोटके बदले मेरे कराची जानेकी स्वीकृति पू० बापूजीने दे दी।

मुझे बम्बअीसे कराचीके लिअे जहाजमें रवाना होना था। मैं, सुशीलाबहन, प्यारेलालजी, डॉक्टर साहब, मीराबहन सब साथ साथ अेक परिवारकी भांति जेलमें रहे थे। सुशीलाबहन और प्यारेलालजीके दूसरे भाअीके यहां पहली ही पुत्री हुअी थी, अिस बातका मेरे कुटुम्बवालोंको पता था। हमने यह समझा कि अिस बच्चीको हमें कोअी भेंट देनी चाहिये और बंबअीमें भूलेश्वरमें बच्चीके लिअे कोअी चीज खरीदने निकले। भूलेश्वरमें अच्छे अच्छे लोग भुलावेमें पड़ जाते हैं। मैं भी अुसका शिकार हुअी। और अेक चांदीका प्याला और घुंघरू खरीद व पैक करके मुझे वक्त न होनेसे मैंने किसीके साथ जुहू सुशीलाबहनको भेज दिये।

सुशीलाबहनने ये वस्तुअें पू० बापूजीको बताअीं। बापूजी सख्त नाराज हुअे। तुरंत शान्तिकुमारभाअीको बुलवाया और अेक पत्रके साथ घुंघरू और प्याला जहाज पर मुझे वापस देनेके लिअे बेवक्त मोटरमें भेजा।

वेवक्त अिसलिअे कि जहाजके चलनेकी सीटी हो चुकी थी। अुन्होंने मुझे कहा, 'बापूजीने यह बंडल भेजा है।' बापूजी जानते थे कि मेरे मनमें अुन्हें छोड़नेका अत्यंत दुःख था। अिसलिअे मुझे खयाल हुआ कि कोअी अैसी चीज भेजी होगी, जिससे मैं खुश हो जाअूं। दूसरी कल्पना तो होती ही कैसे? परंतु यह तो जो सोचा अुससे दूसरा ही निकला। और वह था जीवनका पाठ।

हममें बच्चोंका जन्म होने पर पहननेका कोअी कपड़ा या दूसरी कोअी चीज देनेका रिवाज है। अिस रिवाजमें देनेवाले और बच्चेका कितना अहित है, यह कल्पना अिस बंडलके साथ बापूजीने मुझे जो पत्र लिखा अुससे हुअी। वह पत्र अक्षरशः यहां देती हूं :

८–६–'४८

चि० मनु,

तुझे अब मनु कहनेके बजाय मृदुलाबहन कहना चाहिये। अभी तो तूने बंबअी भी नहीं छोड़ा और आज्ञाभंग कर दिया। अिस तरह तू मेरी शिक्षाअें कितनी मानेगी? तूने स्वयं अेक कौड़ी कमाअी नहीं। अुदार पिता मिल गये हैं, अिसलिअे अुनका रुपया अुड़ाती है। बच्चीको तू बिगाड़ना चाहती है? परंतु मेरे देखते हुअे तू अुसे नहीं बिगाड़ सकती। चांदीके घुंघरू और प्याले तुझे शोभा दें तो तुझे मुबारक हों। अथवा तुझे न चाहिये तो तेरे जैसा कोअी हो अुसे दे देना। मेरी अिच्छा तो यह है कि तू अिन्हें अपनी मूर्खताके चिन्ह स्वरूप संभालकर अपने पास रखना। प्याला और घुंघरू साथमें लौटा रहा हूं।

दुःखी बापूजीके राम राम

मेरे पास तत्काल देनेको कुछ नहीं था और बेबीके पास कोअी स्मरणचिन्ह रहे, अैसी कुछ बुजुर्गोंकी भी राय होनेसे मैंने अुत्साहसे ये चीजें खरीदी थीं। अिसका अैसा भयंकर परिणाम होनेसे मनमें कुढ़ी। परंतु अपनी भूलके प्रायश्चित्तके रूपमें कराची पहुंचने

तक अुपवास किया; और मैंने अपनेको समझाया कि अिसमें दुःखी होनेकी कोअी बात नहीं, यह तो जीवनका अेक पाठ है।

कराचीके बन्दर पर पहुंचते ही मैंने अपने पिताजीके हाथोंमें बापूजीका पत्र रख दिया। वे हंस दिये। मुझे लगा कि "दुःखी बापूजीके राम राम" और अूपर चि० मनुड़ीके बदले मनु लिखनेसे शायद मेरे पिताजी मुझे बहुत अुलहना देंगे। परंतु यहां भी मेरी धारणा अुल्टी निकली और मेरे पिताजी कहने लगे, "तूने खर्च किया सो भी मुझे बहुत अच्छा लगा और बापूजी नाराज हुअे यह भी अच्छा लगा; क्योंकि आजके बाद तू अैसा काम नहीं करेगी।" परंतु बापूजीके "राम राम" शब्दोंसे तो यह पत्र अैतिहासिक बन गया। घर जाते ही मैंने बापूजीको पत्र लिखा। भूलकी माफी मांगी, आयंदा अैसी गलती न करनेका वचन दिया और नीचे मेरे पिताजीने भी दो पंक्तियां लिखीं कि मनु अभी अितनी समझदार कहां हो गअी है कि अैसी भूल न करे? अुसने भूल की, अिससे मैं खुश हुआ, क्योंकि जिन्दगीभरका मुक्त हो गया।

आज भी अपनी मूर्खताकी निशानीके तौर पर अुपरोक्त दोनों वस्तुअें मेरे पास हैं। जो बालक खेलने योग्य भी न हो अुसे यह भान कहांसे होगा कि यह बातु कीमती है? अैसे समय हम अपने पुराने रिवाजके अनुसार अनावश्यक खर्च करके फैशनकी चीजें अुसे देते हैं। हमारा देश गरीब है। कोअी बालक गरीब होगा या भविष्यमें कैसा होगा, यह कोअी नहीं जानता। फिर भी हम बचपनसे ही अैसी वस्तुअें देकर और लाड़ लड़ाकर अुसे पंगु बना देते हैं।

अपने परिश्रमसे तैयार की हुअी चीज भेंटमें देने पर बापूजीको कोअी अेतराज नहीं था। अैसी चीज अगर संभाल कर रखी गअी, तो समझदार बनने पर बच्चा भी अुसे देखकर वैसा ही आचरण करेगा। परंतु हम तो अपने पासके पैसेसे तैयार वस्तुअें खरीद लेते हैं। यह अेक प्रकारका आलस्य है। और मौजशौक तो है ही। परंतु बापूजीने केवल ये वस्तुअें लौटा कर ही संतोष नहीं माना, अपने स्वभावके अनुसार मेरे पिताजीको पत्र लिखा और जबसे मेरे पिताजीने अपने

जीवनमें कमाअी शुरू की तबसे पाअी-पाअीका हिसाब अुनसे मांगा, जो अुन्होंने शुरूसे आखिर तक भेजा।

ता० १५–६–'४४ को कराचीमें मेरे पिताजीको बापूजीका पत्र मिला। चूंकि अुस पत्रमें यह चेतावनी थी कि अुन्हें कितनी बारीकीसे मेरी देखरेख रखनेकी जरूरत है, अिसलिअे अुसे अक्षरशः यहां देती हूं:

१२–६–'४४

चि० जयसुखलाल,

तुम्हें यह पत्र मनुके जानेके बाद तुरंत लिखना था, परंतु लिख न सका। मनुने जाते-जाते ही मुझे बहुत निराश किया। मेरा खयाल था कि वह सब समझ गअी है और वचनके अनुसार काम करेगी। पर मैंने भूल की। अुसने जाते जाते प्यारेलालके भाअीकी लड़कीके लिअे खिलौना और चांदीका प्याला खरीद कर भेजा। मुझे बड़ा दुःख हुआ। सारा दुःख अुसे लिखे हुअे पत्रमें अुंड़ेल दिया और चीजें लौटा दीं। यह सब तुमने जान लिया होगा। तुम्हें सावधान रहना चाहिये। अुसके महान गुणोंका अधिक विकास हो और दोष दूर हों, अिस आशासे मनुको अेक वर्ष राजकोट रहनेका मैंने सुझाव दिया था। परंतु मनु वहां जानेको बहुत अुत्सुक न थी। करांचीके शिक्षकका अुल्लासभरा पत्र मिलने पर वह तो पागल ही हो गअी, अतः अुसे कराची भेज दिया।

मेरे मनमें तुम्हारे बारेमें जो विचार आये सो कह दूं। क्या तुम्हारे पास अितना अधिक रुपया है कि जिससे तुमने मनुको करोड़पतियों जैसी खर्चीली बनना सिखाया? लड़कियोंके प्रति तुम्हारे प्रेमकी मैं बड़ी कद्र करता हूं। परंतु सवाल यह पैदा हुआ कि तुम्हारे पास अितना रुपया आया कहांसे? खादी कार्यसे तो बचत होती नहीं। तो क्या वहांकी नौकरीसे सचमुच अितना रुपया बचा सकते हो? तुमने हिसाब रखा

हो तो मैं अवश्य देखना चाहूंगा। मेरे मनमें जो सन्देह पैदा हो गया है, अुसे तुमसे कैसे छुपाअूं? जब मैं बिगड़ा तब शान्तिकुमार मौजूद थे। अुनसे पूछा तो अुन्होंने कहा सिन्धियासे तो अितनी बचत हो नहीं सकती और जयसुखलाल पर शकका कोअी कारण ही नहीं।

अब मुझे जवाब लिखना। युक्तिके* बारेमें सुशीलाने लिखा होगा। अुसकी चिन्ता रखना। मनुकी आंखें बहुत खराब हैं। सावधानी रखनेसे ही बच सकती हैं, नहीं तो थोड़े वर्षमें अैसी हो जायंगी कि वह लिख-पढ़ भी न सकेगी।

बापूके आशीर्वाद

मेरे पिताजीने सारा हिसाब भेज ही दिया था। जब बापूजीको खयाल हो गया कि अितनी पूंजीमें १०–१२ रुपयेका खर्च आसानीसे किया जा सकता है, तभी अिस कांडका अन्त हुआ।

अिस सारे कांडसे मेरे मन पर भी अितना जबरदस्त आघात लगा कि मैं कराची जाते ही बीमार हो गअी और बापूजीको अितना संतोष हो गया कि जो कुछ हुआ वह बचपन और नासमझीके कारण हुआ। अिसलिअे मेरे माफीके पत्रके जवाबमें अुन्होंने तुरन्त ही पत्र लिखा:

२३–६–'४८

चि० मनुड़ी,

तू जाते ही बीमार पड़ गअी अिसने मुझे हिला दिया। मेरी कही हुअी बातोंका अक्षरशः पालन करे तो बीमार पड़ ही नहीं सकती। पढ़नेका निश्चय ठीक है। परंतु परीक्षा पास करनेके लोभसे हरगिज नहीं। आंखोंको बचाकर जितना पढ़ा जा सके पढ़ना। तू अधीर है। सभी बच्चे अैसे होते हैं। परंतु तुझसे धीरजकी आशा रखता हूं। तुझमें जो गुण देखे हैं, वे सब

---

* मेरी बड़ी बहन।

लड़कियोंमें नहीं देखे। अिन गुणोंको ध्यानमें रखकर तुझमें जरासा भी दोष देखता हूं, तो वह पहाड़ जैसा लगता है और सहन नहीं होता।

बापूके आशीर्वाद

मेरे पिताजीको लिखा:

२३–६–'४४

चि० जयसुखलाल,

तुम्हारे दो पत्र मिले हैं। तुमने सारा ब्यौरा लिख भेजा यह अच्छा किया। परंतु अिसके बारेमें फिर कभी लिखूंगा। मनुको राजकोट भेजनेको कोअी जरूरत नहीं। वहां भी वह मेरी अनुमतिसे ही आअी है। अच्छी होकर पढ़ना शुरू करें। झट पास होनेकी जल्दी न करे। घरका काम करना तो अुसे आता ही है। अिसलिअे अुसमें थोड़ा समय दे। नौकरकी तंगीके कारण कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। अगर वहां बीमार ही रहा करे तो अुसका स्थान मैं सेवाग्राम समझूंगा। परंतु मेरे कहे अनुसार वह चलेगी तो बीमार हरगिज नहीं पड़ेगी। वहांके वैद्यकी दवा युक्तिको अनुकूल आ जाय और मनुको वे कोअी औषधि देना चाहें तो भले ही वह ले। अुसका शरीर अच्छा है। वह बिगड़ना हरगिज नहीं चाहिये। आंखोंको संभाल कर ही पढ़ाअी करनी है।

बापूके आशीर्वाद

४१
फिरसे सेवाग्राम

बापूजी अपने स्वास्थ्य सुधारके लिअे पंचगनी गये थे और मैं कराची। मेरे और मेरी माताके समान बापूजीके बीच सैकड़ों मीलका फासला था। मां बेटीसे कितनी ही दूर हो, तो भी पुत्रीकी चिन्ता नजदीककी अपेक्षा कभी कभी दूरसे अधिक महत्त्वकी और गहरी बन जाती है। अतः अितनी दूर होने पर भी अुन्होंने वहांसे मेरी पढ़ाओका सूक्ष्म ध्यान अपनी बीमारी और देशके अितने अधिक कामोंमें भी रखा। बापूजीने मेरे नाम लिखे नीचेके पत्रके साथ मेरे शिक्षकको भी अपने हाथसे जो पत्र लिखा, अुसमें अिस प्रकारका आग्रह किया कि अंग्रेजीके अुच्चारण, हिज्जे, संस्कृत व्याकरणके रूप और संधि, गुजराती अक्षरों और भाषा पर अधिकार तथा गणित, बीजगणित, भूमिति, विज्ञान आदि सब विषयोंको मैं तोतेकी तरह रटकर नहीं परंतु समझपूर्वक सीखूं। और मेरा मासिक प्रगति-पत्रक भी मंगाया। माताके रूपमें वे मेरा कितना ध्यान रखते थे अिसके नमूनेके तौर पर मेरे पास बापूजीके कुछ पत्र हैं। अुनमें से थोड़े अक्षरशः यहां देती हूं।

पंचगनी,
६–७–'४४

चि० मनुड़ी,

तेरा पत्र अच्छा है। जो काम शुरू किया है वह अुत्तम है। परंतु अिससे तेरी पढ़ाओमें विघ्न पड़ेगा। भले ही पड़े लेकिन अिससे तेरी आंखें बच जायेंगी। आंखोंको बिगाड़े बिना जितना पढ़ा जा सके अुतना पढ़ना। सेवाशक्ति तो तुझे ओश्वरने दी है, अिसलिअे वह काम तुझे मिल जाता है। फिजूलखर्ची छोड़ देना। हरअेक चीज जैसे गरीब संभालकर रखता है वैसे संभालकर रखना और काममें लाना।

बापूके आशीर्वाद

जो वैद्यराज मेरा और मेरी बड़ी बहनका अिलाज करते थे, अुन्हें भी बापूजीकी सूचना थी कि "वे अिस बातका भी स्वयं अन्दाज लगायें कि हमारी शारीरिक प्रगति हुआी या नहीं, अथवा हम दवा लेनेकी चिंता रखती हैं या नहीं और हम पर आयुर्वेदका प्रयोग किस हद तक सफल हो रहा है।" अिसलिअे बेचारे वैद्यराज हम दोनोंकी बहुत चिन्ता रखते थे। परंतु मेरी दूधकी अरुचि अुनके लिअे परेशानीका कारण बन गअी और मुझसे पूछे बिना बापूजीको अुन्होंने अिसकी सूचना दे दी। परिणामस्वरूप मेरे नाम नीचे लिखा पत्र आया:

पंचगनी,
१७-७-'४४

चि० मनुड़ी,

दूधकी अरुचि मिटा ही देनी चाहिये। वैद्य कहे अुतना स्वादसे पीना चाहिये। मेरे पास रहनेके बाद रुचि-अरुचि कैसी? जो खाना ही चाहिये अुसकी रुचि और जो नहीं खाने लायक हो अुसकी अरुचि होनी चाहिये। युक्ति बिलकुल अच्छी हो जाय तो मेरा विश्वास वैद्यों पर जम जायगा; तेरी आंखें ठीक हो जायं और मलेरिया मिट जाय, तो फिर मेरे लिअे तू दवा भेज देना।

तेरे अक्षर ठीक माने जायंगे। परंतु अभी बहुत सुधारकी गुंजाअिश है। सुशीलाबहन दिल्लीके लिअे रवाना हो गअी हैं। अिसलिअे अुनका पत्र मिलनेमें देर लगेगी।

देवदास वहां आ गया, यह अच्छा हुआ।

बापूके आशीर्वाद

साथ-साथ पूर्ण आराम लेना था, जो मेरे लिअे बिलकुल असंभव था। क्योंकि मुझे पढ़ना था। मेरे साथ पढ़नेवाली लड़की मैट्रिककी कक्षामें थी और मुझे अुससे पीछे नहीं रहना था। अिसलिअे स्वास्थ्यमें ...ति होनेके बजाय जब शरीर काफी कमजोर हो गया तो बेचारे

वैद्यराज घबराये और मेरी सारी लापरवाही बापूजीको लिख दी। अिसलिअे दूसरा सख्त डांटका कार्ड मेरे नाम आया:

पंचगनी,
२७–७–'४८

चि० मनुड़ी,

तेरा वजन ८७ तक घट जाय, यह तो शर्मकी बात है। (आगाखां महलमें १०६ पौंड था।) रातके दो बजे तक पढ़ना पाप है। पास होनेकी यह शर्त हो तो मुझे अैसी पढ़ाअी नहीं चाहिये। यदि तू नियमका पालन कर ही न सके तो तुझे मेरे पास आना पड़ेगा। अैसी पढ़ाअीके बजाय तू अपढ़ रह जाय तो मुझे बरदाश्त हो जायगा। दवा लेनेमें भी तू अनियमित रहती है, यह क्या बताता है?

बापूके आशीर्वाद

अन्तमें अगस्तके दूसरे सप्ताहमें मेरी बड़ी बहनकी तबीयत अत्यंत गिर जानेसे अेकाअेक बम्बअी जाना पड़ा। बापूजी भी अुस समय बम्बअी आनेवाले थे। मैं अेक दिन ठहरी। मुझे देखते ही अुन्होंने कहा, "अब कराची नहीं जाना है, मेरे साथ सेवाग्राम चलना है।" अिस प्रकार मैं बापूजीके साथ सेवाग्राम गअी।

सेवाग्राम जानेके बाद पूज्य बापूजी और सुशीलाबहनकी देख-रेखसे मेरा स्वास्थ्य फिर अच्छा हो गया। परंतु अब कराची जानेसे अिन्कार ही कर दिया और सेवाग्राममें सुशीलाबहनकी देखरेखमें अेक नर्सिंग क्लास खुलने पर अुसमें भरती हो गअी।

सेवाग्राममें अेक दवाखाना चलता है, जिससे आसपासके गांवोंके लोग खूब लाभ अुठाते हैं। ६ सप्ताहका प्रथम कार्यक्रम बापूजीने स्वयं अपने हस्ताक्षरसे बना दिया और कुल तीन वर्षकी तालीमकी मियाद निश्चित की।

जो प्रथम कार्यक्रम बापूजीने हमारे लिअे बनाया, वह अक्षरशः अिस प्रकार है :

यह चि० मनुड़ी या सुशीलाबहनके लिअे है।

६ सप्ताहका प्रथम सेवा-शुश्रूषाका कार्यक्रम।

१. शरीरके भागोंका साधारण वर्णन। जिसमें पेटके भीतरी भाग, मुख्य मुख्य हड्डियां और रगें (व्हेन्स) आ जाती हैं।

२. साधारण घाव, जो रणक्षेत्रमें होते हैं, अुनका वर्णन, अुनके संबंधकी अनेक प्रकारकी पट्टियां — खोपड़ी पर, पेट पर, अुंगलियों पर, पैरों पर, अित्यादि।

३. बहता खून बंद करनेके लिअे टॉर्निकेट शिक्षाक्रमका और शिक्षासे बाहरका कामचलाअू ज्ञान, जैसे रेत द्वारा।

४. अस्पतालका सामान न मिले तो काम चलानेका ढंग, जैसे कि अुबले हुअे पानीके बजाय गरम राख, जलाया हुआ कागज, जलाअी हुअी रुअी, सूखे कपड़े या फलालैनके बजाय पढ़नेको मिला हुआ अखबार वगैरा। . . .

५. डूबे हुअे मनुष्यके लिअे, सांप बिच्छूके लिअे, ‘जंगली’ अुपचार — जहां डाक्टर न मिले।

६. घायलों और बीमारोंको ले जानेके लिअे स्ट्रेचर-ड्रिल, अस्पतालका स्ट्रेचर न मिले वहां बन्दूक या लकड़ी तथा जाकिटका तात्कालिक स्ट्रेचर।

७. मामूली ढंगकी हजारोंकी बाकायदा कूचके नियमोंके अनुसार कूच करना।

८. रणक्षेत्रमें कुछ मिनिटोंमें तंबू तानने और पानी काममें लेनेके नियम; पाखाने और रसोअीघर वगैरा कैसे और कब बनाये जायं?

संभव है अिसमें कोअी चीज रह जाती हो। केटलीकी लिखी हुअी पुस्तकमें अिनमें से बहुतसी बातें आ जाती हैं। सेन्ट जॉन्स अेम्बुलेंसमें भी बहुत कुछ है। हमारे वहां ये सब पुस्तकें थीं तो सही। यहां यदि मैं बोलता होता, तो अैसा

लगता है कि अिससे अधिक नहीं वता सकता था। अिसलिअे तुमने वहुत खोया नहीं।

९–१०–’४४ वापू

अिस प्रकार पहले डेढ़ महीनेमें क्या सिखाया जाय, अिसका क्रम वताया गया। और अुसकी परीक्षा भी वाकायदा ली जानेवाली थी।

अुसके वादका क्रम तो सुशीलावहनने ही तैयार किया था। यह प्रारंभिक मूल कार्यक्रम वापूजीका मौनवार होनेके कारण लिखित रूपमें मेरे पास रह गया।

जैसे स्कूलोंमें पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है, अुसी प्रकार व्यवस्थापूर्वक अिस नअी पढ़ाअीका पाठ्यक्रम तैयार करनेकी वापूजीको कितनी चिन्ता है, अिसका अुपरोक्त कार्यक्रम प्रत्यक्ष प्रमाण है।

४२

वापूकी अहिंसा

मैं रोज सुवह नौसे ग्यारह वजे तक दवाखानेमें काम करती हूं। साथ ही वीमारोंकी देखभालके लिअे भी वहां रहना पड़ता है। दोपहरको साढ़े तीन वजे वापूजीको पंखा करने जाती हूं, अुस समय मुलाकाती मिलने आते हैं। अिसलिअे मुझे काफी जाननेको मिलता है।

आज डॉ० सैयद महमूद साहव (विहारके मौजूदा विकास और यातायात मंत्री) आये। वे वीमार हैं अिसलिअे वापूजीने अुन्हें आश्रममें रहनेको कहा। अुनके शरीरके लिअे डॉक्टरने ‘चिकन-सूप’ वगैरा लेनेकी खास सिफारिश की थी। परंतु आश्रममें वह कैसे लिया जाय? अिसलिअे डॉ० महमूद साहवने विनयपूर्वक शोरवा लेनेसे अिन्कार कर दिया। परंतु वापूजीने अुनकी यह वात न मानी।

अुन्होंने डॉक्टर महमूदसे कहा, “आश्रमवासियोंको समझना चाहिये न? आपको शोरवा अच्छी तरह तैयार किया हुआ मिल

जाये, जिसका मैं प्रबंध करा दूंगा। अिसके सिवा किसी लड़कीसे कह दूंगा। वह आपको अच्छी तरह तैयार करके दे देगी। (मेरी तरफ देखकर) अिस लड़कीको शोरवा बनाना नहीं आता, परंतु अेक बंगाली लड़की है अुससे कहूंगा। मैं आपकी अेक भी बात नहीं सुनूंगा। (विनोदमें) मैं हुक्म जो दे रहा हूं। मैं भी कुशल डॉक्टर हूं और आपको मेरी देखभालमें रहना है। देखिये तो सही, आपकी तबीयतमें कितना फर्क पड़ जाता है!"

अिस तरह डॉ० महमूदके यहीं रहनेका और जरूरी खुराक देनेका अिन्तजाम बापूजीने कर दिया।

मुझे यह बात सुनकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ और मैंने अेक नया ही पाठ सीखा। कहां अुबाला हुआ सात्त्विक भोजन और कहां आश्रममें 'चिकन-सूप'! बापूजीसे पूछा तो हंसते हंसते कहने लगे, "आश्रममें यही तो सीखना है।"

[बिहारके दंगोंके सिलसिलेमें बापूजी पटनामें डॉ० महमूदके मेहमान बने थे। वे बार बार मुझे अपनी पुत्रीके समान मानकर मेरी खबर लेते रहते हैं। अुन्होंने मुझे अपने पत्रमें अुपरोक्त घटनाकी याद दिलाअी थी। वह अिस प्रसंगके सिलसिलेमें होनेके कारण अुन्हींके शब्दोंमें यहां अुद्धृत करती हूं:

I need hardly tell you how much I love everything connected with Bapu, much more his flesh and blood. You also know well how much he loved me. He was not only a friend but a father to me. I feel I am left alone in this world after he has gone.

I wonder if you will remember that while I was in the Ashram and was ill, doctors prescribed to give me chicken soup and Bapu ordered that I may be supplied chicken soup. It was perhaps entirely a new thing for Sevagram Ashram and naturally there was a flutter in the Ashram. I protested strongly

with Bapu that I should not have it, but he refused to listen to me and said that when doctor prescribes you must have it and the Ashram people may not themselves have meat but they must learn how to feed others if and when it was absolutely essential. I considered it as a great privilege. He simply captivated my heart . . .*]

लगभग ४ बजे काठियावाड़के कार्यकर्ता आये। भावनगरकी हालत बयान कर रहे थे। घी की मोनोपलीकी बात हो रही थी। अेक भाअीने कहा, "महाराजा साहब तो बहुत भले हैं। सुनते सब कुछ हैं परंतु कुछ हो नहीं सकता। तब हम क्या करें?"

बापू — आप जो कहते हैं वह सब सच ही हो तो सत्याग्रही पद्धतिसे विद्रोह कीजिये।

---

* मेरे लिअे तुमसे यह कहना शायद ही जरूरी हो कि बापूसे संबंध रखनेवाली हर चीजसे मैं कितना प्यार करता हूं; तब अुनके बच्चोंसे तो कितना अधिक नहीं करूंगा? तुम यह भी जानती हो कि बापू मुझे कितना ज्यादा प्यार करते थे। वे मेरे दोस्त ही नहीं थे, बल्कि पिता भी थे। मुझे लगता है कि अुनके चले जानेके बाद मैं अिस दुनियामें अकेला पड़ गया हूं।

शायद तुम्हें याद होगा कि जब मैं आश्रममें बीमार था, तब डॉक्टरोंने मुझे चिकन-सूप खानेकी सलाह दी थी। और बापूने मुझे चिकन-सूप खिलानेका हुक्म दे दिया था। यह सेवाग्राम आश्रमके लिअे शायद बिलकुल नअी बात थी। अिससे स्वभावतः आश्रममें थोड़ी खलबली मची थी। मैंने अिसका जोरदार विरोध करते हुअे बापूसे कहा था कि मैं चिकन-सूप नहीं लूंगा। लेकिन अुन्होंने मेरी बात सुननेसे अिन्कार कर दिया और कहा कि जब डॉक्टर कहते हैं तो तुम्हें लेना ही चाहिये; आश्रमके लोग खुद भले मांस न खायं, लेकिन अुन्हें यह सीखना चाहिये कि निहायत जरूरी होने पर दूसरोंको कैसे खिलाया जाय। अिसे मैं अपना बड़ा सौभाग्य मानता हूं। अपने अिस व्यवहारसे अुन्होंने मेरे दिलको बिलकुल मोह लिया था। . . .

वह भाअी — क्या मैं अकेला विद्रोह करूं ?

बापू — अेक मनुष्यको भी लगता हो कि राज्यका तरीका लोगोंको बिलकुल चूस लेनेका है और अेक ही मनुष्यको जोश आ जाये, तो मैं खुद तो अिस मामलेमें बहुत कड़ा हूं। यदि आपकी बातमें कहीं भी निजी स्वार्थको स्थान न हो और वह लोकोपयोगी ही होगी, तो भावनगरकी तमाम प्रजा अवश्य आपके साथ होगी। भावनगरकी प्रजा शिक्षित है। यद्यपि मैं मानता हूं कि पट्टणीजी जरूर समझ जायंगे; क्योंकि अुन्होंने मुझसे अिस बारेमें बहुत बातें की हैं। और मैं मानता हूं कि वे मेरा कहा कुछ मानते भी हैं। आप मुझे ब्यौरेवार सब बातें लिख देना। मैं अुन्हें लिखूंगा।

भणसाली काका चिमूरसे कुछ लड़कियोंको आश्रममें लाये थे। वे लड़कियां कुछ दिनसे आओ हुअी थीं और अुनकी देखरेखका काम आश्रममें रहनेवाली कुछ बड़ी महिलाओंको सौंपा गया था। परंतु वे लगभग हमारे दवाखानेमें ही रहतीं और भणसाली काका व प्रभाकरजी अुनका ध्यान रखते थे।

बापूजीने मुझसे पूछा, चिमूरकी लड़कियां कहां रहती हैं ? कौन अुनकी संभाल रखता है ? वगैरा। मुझे और कोअी जानकारी नहीं थी। परंतु स्वाभाविक रूपमें जैसा था वैसा बता दिया।

बापूजीने तुरंत ही . . . भाअी और दो चार बड़ी बहनोंसे कहा: "यदि अिस समय रामदास या देवदासकी लड़कियां आअी होतीं तो क्या वे अिस प्रकार अकेली रहतीं ? ये लड़कियां दो दिनसे आअी हुअी हैं। जब नअी लड़कियां आअी हों तब किसी न किसीको तुरंत ही देखना चाहिये कि अुन्हें नया-नया न लगे। पर अैसा नहीं लगता कि तुममें से किसीको अुनकी खास खबर हो। अिससे मुझे आश्चर्य होता है। आज वे अचानक मेरे पास आअीं, अिसलिअे मैंने प्रेमसे सब हाल पूछा। क्या तुम मनुको अिस प्रकार अकेली रहने दोगे ? यह बात आश्रमकी सब बहनोंके सामने रखना।"

ये लड़कियां दस बारह वर्षकी थीं।

सेवाग्राम आश्रम, वर्धा
२५–१२–'४४

आज ओसाअियोंका त्योहार होनेके कारण बापूजीने अेक सुन्दर सन्देश हिन्दीमें लिखा। बापूजीको खांसी होनेके कारण वह संदेश पढ़कर सुनाया गया :

"मेरी अुम्मीद थी कि मैं आज दो शब्द बोल सकूंगा, लेकिन अीश्वरेच्छा कुछ और ही थी। आजका दिन क्रिस्टमसका है। हम जो सब धर्मोंको समान मानते हैं अुनके लिअे अैसे अुत्सव मनन करने लायक हैं, आत्म-निरीक्षणके लिअे हैं। अैसे मौके पर हम अपने दिलके भीतरसे और सब मैल निकाल दें। हम जानें कि अीश्वर या खुदा अेक ही है। अुनके असली हुक्म भी अेक हैं। जिसको हम सत्य या हक मानें, अुसके लिअे दूसरोंको मारें नहीं। हम अुस सत्यके लिअे मरनेकी तैयारी रखें, और मौका आने पर मरें और अपने खूनकी मुहर अपने सत्य पर लगावें। यही मेरी दृष्टिमें, निगाहमें सब मजहबोंका निचोड़ है। हम अिस अवसर पर विचार करें, याद रखें कि अीसा मसीह, जिसे वह सत्य मानते थे, अुसके लिअे सूली पर चढ़े।"

पूज्य बापूजी रोज अपने दैनिक विचार लिखते थे। जैसे कृष्ण भगवान्‌ने गीताके श्लोक हमें मनन करनेके लिअे दिये, वैसे ही ये सुवाक्य मनन करने योग्य हैं। मूल लिखावटकी नकल मेरे पास होनेके कारण यहां दे रही हूं।*

---

* ये सुवाक्य अलग पुस्तकके रूपमें 'नित्य मनन' के नामसे नवजीवन प्रकाशन मंदिरकी तरफसे प्रकाशित हो गये हैं। (कीमत १–८–०; डाकखर्च ०–५–०) अिसलिअे यहां अुन्हें नहीं दिया गया है।

४३
बापूजीके कुछ पत्र

सेवाग्राम, २९-१-'४५

अेक नौजवान मोतीझिरेसे पीड़ित थे। अिसलिअे अुनकी माताको बापूजीने पत्र लिखा:

चि० . . .

वसंतके चले जानेका कोअी भी कारण नहीं है। मोतीझिरा भयंकर रोग नहीं है। सेवा-शुश्रूषासे बीमार जरूर अच्छा हो जाता है। तुम हिम्मत रखना और वसंतको भी दिलाना।

बापूके आशीर्वाद

यह पत्र बीमारके हाथमें पहुंचनेसे पहले ही अुसकी मृत्यु हो गअी। अिसलिअे बापूजीने अुसकी माताको दूसरा पत्र लिखा। मृत्यु या जन्मके बारेमें बापूजी कैसे विचार रखते थे यह निम्नलिखित पत्र बतायेगा।

१-२-'४५

चि० . . .

तुम्हारा तार मिला। वसंत चला गया, यह तो सपना ही है न? फिर भी मुझ पर अिसका कुछ असर नहीं होता। मैंने बहुत मौतें देखी हैं; अनेक जन्म देखे हैं। ये अेक सिक्केके दो पहलू हैं। अेक तरफ मौत है तो दूसरी तरफ जन्म। दोनों पहलू अेकसे मूल्यके हैं। अिस प्रकार जन्मका दूसरा पहलू मृत्यु और मृत्युका दूसरा पहलू जन्म है। अिसमें हर्ष-शोक क्या? और फिर ये सभीके लिअे हैं। बीचमें हम विवाह करते हैं, नाचते

हैं, कूदते हैं। ये सब खेल हैं। तुम फिरसे ये खेल खेलती रहो। क्या विवाह रुक जायगा? मेरा बस चले तो मैं विवाह न रोकूं, धर्मविधि होने दूं। शृंगार मात्र छोड़ दूं। परंतु व्यवहारकी जानकारी तुम्हें ज्यादा होगी। हिम्मत रखना।

बापूके आशीर्वाद

सेवाग्राम, १५-२-'४५

चि० . . .

तुम्हारा पत्र मिला। हम यदि अीश्वरको याद करें तो अच्छा-बुरा, दुःख-सुख, सब भूलना ही पड़ेगा। और अिस आम रास्ते पर देर अबेर हम सभीको जाना है। अंग्रेजी कहावतके अनुसार बहुमत तो वहीं है। यहां तो चार दिनकी चांदनी है। अन्तमें तो सबको मिट्टीमें ही मिल जाना है।

बापूके आशीर्वाद

अेक बहनने दूसरी जातिमें विवाह कर लिया, अिसलिये अुसने पत्र द्वारा बापूजीका आशीर्वाद मांगा। बापूजीने भेज दिया। बादमें पता चला कि जिस बहनने दूसरी जातिमें शादी की, अुसके पतिकी अेक पत्नी मौजूद है। परंतु बालविवाह होनेके कारण और पत्नी बहुत आधुनिक युवती न होनेके कारण अथवा किसी भी कारणसे पतिने अुसे छोड़ दिया और यह नया विवाह कर लिया। यह बात आशीर्वाद मांगनेवाली बहनने किसी कारणसे लिखी नहीं थी। स्त्री-जगतमें यह अेक पहेली है। अैसे सांसारिक अनर्थोंके समय बापूजीका मानस किस तरह काम करता था, यह नीचेके पत्रोंसे मालूम हो जायेगा।

चि० . . .

तुम्हारा पत्र मिला। . . . का भी मिला। अुन्हें अलग नहीं लिख रहा हूं। अुन्हें बीमार नहीं पड़ना चाहिये। तुम्हारी बात समझ गया। तुम दोनों विवाह कर लो। मेरे आशीर्वाद हैं ही।

शर्त यही है कि विवाह करके अेक वर्ष तक बिलकुल अलग रहना। तुम अपनी पढ़ाअी पूरी कर लो और वे (बहनके पति) अपनी। भगवान् करे तुम दोनों खूब सेवाभावी सिद्ध हो।

बापूके आशीर्वाद

महाबलेश्वर, २६–४–'४५

चि० . . .

तुम्हारा पत्र मिला। चि० . . . को तुम्हारा काम पसन्द आ गया, अिसलिअे तुम्हें विचार करनेकी जरूरत ही नहीं है। तुम निकटकी रिश्तेदार हो, अिस नाते मैंने तुम्हारे कामकी जांच नहीं की है। तुम पढ़ी-लिखी स्त्री हो, अिसी दृष्टिसे मैंने तुम्हारा काम देखा। तुम्हारे मनमें कोअी पाप नहीं था, तो भी तुमने बाल-विवाहकी बात छिपाअी अिसे मैं महादोष मानता हूं। दूसरी जातिमें शादी की यह तो मुझे अच्छा लगा। लेकिन बाल-विवाहको तुमने या (बहनके पतिने) विवाह ही नहीं माना, अिस बातका तुम्हारे अिस विवाहके साथ जरा भी मेल नहीं बैठता। . . . (पति) . . . बहुत भले लगते हैं। परंतु मेरी नजरमें अुन्होंने अपनी स्त्रीकी सेवा नहीं की। तुमने तो बिलकुल नहीं की। तुम अुस स्त्रीकी जगह होती, तो तुम्हें कैसा लगता? (बहनके पति) जैसे तो हिन्दू-समाजमें अनेक किस्से होते हैं। सब अुन्हींकी तरह करने लगें तो विवाहिता लड़कियोंका क्या होगा? (बहनके पति) का धर्म अुस लड़कीके साथ रहकर अुसका शिक्षक बननेका था। तुमने परोपकारके नाम पर यह काम करके अपने मोहको ही पोषित किया है। यह निदान स्वीकार करना तुम्हारा धर्म नहीं है। तुम दोनों यह मानते हो कि तुम दोनोंने अपने धर्मका पालन किया है। यह तुम्हारे लिअे बस है। आदमी खुद जिसे मान ले वही अुसका धर्म।

चि० . . . (वहनके पति) को अलग पत्र नहीं लिख रहा हूं। अिसीको दोनोंके लिअे समझ लेना।

वापूके आशीर्वाद

अूपरके पत्रके साथ, जिस लड़कीका आन्तर-जातीय विवाह हुआ था, अुसकी माताजीको लिखा :

चि० . . .

साथका पत्र . . . को भेज देना। दूसरी जातिमें विवाह करनेके वारेमें तुम्हें दुःखी न होना चाहिये। साथ ही मेरे विरोधसे भी तुम्हें दुःखी नहीं होना चाहिये। मेरे विरोधको वेकार समझना। अितने पर भी मुझे अिस वारेमें कुछ कहना होता तो भी मैं यह विवाह न रोकता। दोनों वड़ी अुम्रके हैं, अिसलिअे अुन्हें अिच्छानुसार चलनेका अधिकार था। मेरा विरोध सैद्धान्तिक कहा जायेगा। और वह कायम है। परंतु वे सुखी हों। अिस प्रकार भावनाकी लहरमें वहनेवाले अनेक जोड़े हैं। तुम चिन्ता न करना।

वापूके आशीर्वाद

सेवाग्राममें मैं नर्सिंगकी पढ़ाअी कर रही थी। परंतु सेवाग्रामकी असह्य गर्मीसे मेरी तवीयत वहुत विगड़ गअी। नकसीर छूटना शुरू हो गया। नाकमें से रक्तकी धारा कभी-कभी तो अैसी चलती थी कि देखनेवालेको भी कष्ट होता था। दिनमें आधे आधे घंटेसे अैसा होता था। अिससे मुझे कमजोरी वहुत आ गअी। मेरी पढ़ाअी अेक दिन भी रुक जाती तो मुझे अपार दुःख होता था। मनमें यही खयाल वना रहता कि कहीं मेरे साथ पढ़नेवाली वहनें आगे न निकल जायं।

मैं वहुत ही जल्दी खा लेती और मुझे छोटे वच्चोंकी तरह हाथ-पांव समेटकर सोनेकी आदत पड़ गअी थी। अिससे मैं सांस अच्छी तरह नहीं ले सकती थी। मैं सुशीलावहनकी माताजीकी सेवामें थी। अिसलिअे वावाले कमरेमें अुनके पास ही सोती थी। परंतु

तवीयत विगड़ जानेके कारण वापूजीने हुक्म दिया कि मुझे अपना रहना, सोना, खाना, पीना सव कुछ वापूजीके ही पास करना है।

वापूजीने डॉक्टरोंके अति आग्रह पर अपने स्वास्थ्यके लिअे महावलेश्वर जानेका निश्चय किया। अुस समय मेरा स्वास्थ्य और भी विगड़ गया था, अिस कारण मुझे भी साथ ले गये। वहुत काम होनेके कारण पिछले कुछ समयसे अुन्होंने मेरे पिताजीको पत्र नहीं लिखा था, परंतु महावलेश्वर पहुंचते ही मेरे विषयमें पत्र लिखा:

महावलेश्वर,
२१–४–'४५

चि० जयसुखलाल,

तुम्हें यहां आकर ही लिख सका हूं। चि० मनुको दुःख तो काफी भुगतना पड़ा। दिनमें नकसीर छूटती ही रहती थी। वुखार भी आता रहा। अब जान पड़ता है कि नकसीर नहीं छूटेगी और ज्वर भी नहीं आयेगा। मनुको यहां ले आया हूं। दवा और परिश्रम सुशीलावहनके थे। मैं कभी कभी कमर झुकाकर नैसर्गिक अुपचार कराता। और दो दिन तक अेक होमियोपैथिक आया था, अुसका अिलाज किया। चिन्ताकी कोअी वात नहीं। देखता हूं, अब अिस ठंडसे अुसकी तवीयतमें क्या फर्क पड़ता है।

अिधर दो मास रहनेकी आशा है।

वापूके आशीर्वाद

महावलेश्वर,
२१–४–'४५

महावलेश्वर आनेके वाद थोड़े दिन तो तवीयत ठीक रही, परंतु फिर विगड़ने लगी। मेरी वहनका पत्र आया जिसमें अुसने वापूजीको लिखा था कि शायद अुसके पास रहनेसे मेरा स्वास्थ्य [illegible]र जाय। मैं अिसलिअे जाना चाहती थी कि वापूजीसे दूर रहूंगी,

तो अुन्हें मेरे लिअे जो अितनी तकलीफ अुठानी पड़ती है, अुससे शायद अुन्हें कुछ राहत मिल जायगी। अिसलिअे अन्तमें यह तय किया कि मैं बम्बअी जाअूं। सबकी राय होनेसे मैं वहांसे कराची चली गयी। मैं पहुंची अुसी दिन मुझे तथा मेरे पिताजीको बापूजीके पत्र मिले:

महाबलेश्वर,
२२–५–'४५

चि० जयसुखलाल,

अन्तमें मनुड़ी अच्छी होकर वहां नहीं आअी, परंतु हार कर — मनसे और शरीरसे। अिसका असर परस्पर है। दोनोंके लिअे वही जिम्मेदार है। वातावरण भी हो सकता है। परंतु वातावरण पर काबू पानेमें ही मनुष्यकी मनुष्यता है। मनुको यह बात मैं पूरी तरह नहीं सिखा सका। अुसका भय अुसे खा जाता है। भयका कारण वह स्वयं ही है। दूसरोंकी बातें सुनकर अुनसे चिढ़ना, घबराना और रोना। यही आजकल अुसका काम है। अिससे अवकाश मिले तब पढ़ती है। सेवाभाव अुसमें अुत्तम है। सीखनेका अुसे बहुत ही शौक है। बड़ी प्रेमल है। अुसे अेमीबा और हूकवर्मकी शिकायत है, जो मुझे भी है। मैं अिन्हें काबूमें रखता हूं। मनु नहीं रखती। अब कुछ सूझे तो अुसके लिअे करना। मेरे पास तो वह है ही। मैं अुसे नहीं छोडूंगा, वह खुद छूट गअी है। तुम अच्छे होगे। चि० मनुड़ीका पत्र साथमें है।

बापूके आशीर्वाद

महाबलेश्वर,
२२–५–'४५

चि० मनुड़ी,

तू कराची गअी अच्छा किया। अेमीबा और हूकवर्म निकाल ही देने चाहिये। यदि तू ४ तारीखको लौट आयेगी, तो वहां कैसे

निकाले जा सकेंगे? अुस वैद्यकी दवा हरगिज न करना। वहां रहनेकी अिच्छा करे तो रोग मिटानेके दृढ़ निश्चयसे ही करना। परीक्षा देनेका लोभ न करना। सहज ही पढ़ना हो जाय तो भले हो जाय। तेरे पत्र परसे देखता हूं कि आसपासका डर तुझे खा जाता है। जो डरता है अुसे संसार अधिक डराता है। भय मात्रको तू समुद्रमें फेंक दे तो अच्छा। अिसकी रामबाण औषधि तो रामनाम ही है। जो रामसे डरे वह और किसीसे क्यों डरे? जब आना चाहे आ सकती है। यह तुझे अभयदान है।

वापूके आशीर्वाद

जूनके अन्तमें नर्सिंगकी आगेकी पढ़ाअीके लिअे नागपुर जानेकी मेरी तीव्र अिच्छा थी, अिसलिअे कमजोर तबीयत होने पर भी मैं हठ करके वम्बअी तो पहुंच गअी। तबीयतके लिअे पूरा साल खराब हो, यह मुझे सहन नहीं हो रहा था। परंतु मनमें यह विचार भी आता कि पढ़ने लगूं तो शायद तबीयत सुधर भी जाय। नागपुरका प्रवेशपत्र भर दिया था, मंजूर भी हो गया था। परंतु सुशीलावहन और वापूजीकी अिजाजतके विना जाना नहीं हो सकता था। मैंने वापूजीसे पुछवाया, परंतु मेरे पत्रसे मंजूरी नहीं मिली। और सुशीलावहन तथा वापूजीका पत्र मिला कि,

निडर होकर अितनी हिम्मत करना। डॉ० गिल्डरको तो तू अच्छी तरह जानती है। वहां जा और वे स्वीकृति दें तो ही नागपुर जाना। यहां जब चाहे आ सकती है। वर्धाकी सलाह मैं नहीं दूंगा।

वापूके आशीर्वाद

मुझे तो विश्वास ही था कि डॉ० गिल्डर हरगिज अिजाजत नहीं ... । अुनको भी वापूजीने मेरे स्वास्थ्यके विषयमें पत्र लिखा, अिसलिअे

तबीयत बताने तो गअी। अुनको मुझ पर पिताकी-सी ममता थी। खूब प्रेमसे अुन्होंने मेरी तबीयतकी जांच की और वचन भी दिया कि "मैं कहूं वैसा करे तो तेरा साल खराब होने पर भी मैं तुझे दूसरी लड़कियोंके साथ कर दूंगा।" सुशीलाबहनने भी वचन दिया — लेकिन शर्त यह थी कि नागपुर जानेका विचार मैं समझपूर्वक छोड़ दूं। वे जानते थे कि मेरी पसन्दकी बात नहीं होगी तो मैं मनमें कुढ़ूंगी। किसीसे कहूंगी तो नहीं, परंतु स्वास्थ्य पर अुसका प्रभाव पड़ेगा। अुसी दिन बुखार चढ़ा, अिसलिअे अुन्होंने तो मेरे लिअे अपना निश्चित मत दे दिया कि मुझे पहाड़की हवामें ही रहना चाहिये। बापूजीको यह मालूम होने पर अुन्होंने मुझे पत्र लिखा:

महाबलेश्वर,
३–६–'४५

चि० मनुड़ी,

तू फिर बीमार हो गअी? अब तो चेत! तू धीरज रखेगी तो बढ़िया नर्स हो जायगी। बुखार अुतरते ही चली न जाना। सुशीलाबहन कहती है कि तुझे दिनशाजीके आरोग्य-मंदिरमें रहना चाहिये। तुझे बार-बार बुखार आये, यह मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। तू अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करना सीख लेगी और लोहे जैसी मजबूत बन जायगी तो सब ठीक हो जायगा। जल्दी करनेसे कुछ नहीं होगा। यहां आना हो तो आ जा। नागपुर जानेका मोह छोड़ दे।

बापूके आशीर्वाद

दिन दिन मेरा स्वास्थ्य अुलटा ज्यादा बिगड़ने लगा। बापूजीको मालूम हुआ, तो अुनका हुक्म देनेवाला पत्र मुझे तारकी तरह पहुंचाया गया:

महावलेश्वर,
४-६-'४५

चि० मनुड़ी,

तेरे जैसी मूर्ख लड़की मैंने दूसरी नहीं देखी। अिसके अुत्तरमें तुझे यहां आ ही जाना है। वावला (महादेवभाअीका पुत्र) तेरे साथ जरूर आवे। अिससे रास्तेमें कोअी कठिनाअी नहीं होगी।

वापूके आशीर्वाद

मेरे वहां पहुंचनेसे पहले ही रेडियो द्वारा खवर मिली कि कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्योंकी जेलसे मुक्ति होनेके कारण वापूजी और तमाम सदस्य वम्वअी आये हैं। वापूजीके विड़ला भवन पहुंचनेके वाद मुझे लेने मोटर आअी। हम दोनों वहनें वापूजीके पास गअीं। वहां पहुंचने पर मुझे खूव थकी हुअी देखकर मुझसे कुछ भी वातें किये विना विस्तर लगाकर मुझे सुला दियागा।

दूसरे दिन मैं घर गअी और १२-६-'४५ को वापूजीका शिमला जाना हुआ। मुझे पूना आरोग्य-भवनमें ही रहनेके लिअे डॉ० दिनशाजीको सौंप दिया गया। मैं भी वहुत अुकता गअी थी, अिसलिअे अिस नये प्रयत्नको मैंने स्वीकार कर लिया।

मैं पूना तो गअी। परंतु वहां पहुंचूं अिस वीच अेक नअी वात हो गअी। मेरे पिताजीने मेरे नाम पर अेक खास रकम रखकर अुसका ट्रस्ट वनानेका निश्चय किया। अिस वातका पता मुझे वड़ी देरसे लगा, परंतु वापूजी और अुनके वीच अिस संवंधमें पत्रव्यवहार हो रहा था। मुझे तो कल्पना भी कहांसे होती कि वापूजी मेरे ट्रस्टी वनेंगे! माता, पिता और दादाके हकोंके अलावा जो लाखों-करोड़ों ट्रस्टी हों वे मेरे जैसी लड़कीकी छोटीसी रकमके ट्रस्टी वन

सकते हैं, यह मेरे लिअे आश्चर्यकी बात थी। परंतु अपार प्रेमके सामने या पूर्वजन्मके ऋण.नुबंधके कारण सब कुछ संभव हो जाता है, यह अिन पत्रों परसे समझमें आया।

मनोर विला,
शिमला,
२५-६-'४५

चि० जयसुखलाल,

ट्रस्टका दस्तावेज मैंने बनाया है, सो भेजता हूं। वहां गुजराती चलती है, अिसलिअे गुजराती बनाया है। गुजराती दस्तावेजकी रजिस्ट्री न होती हो तो अिसका सिंधी या हिन्दुस्तानी बनवा लेना। अंग्रेजीकी कोअी जरूरत नहीं। शर्तोंमें फेरबदल कर सकते हो। मैंने तो तुम्हारे विचारोंको जिस प्रकार समझा है, अुस प्रकार रख दिया है।

जब तक मनुका रोग मिट न जाय तब तक मुझे चिन्ता रहेगी। अब तो वह दिनशाजीके आरोग्य-भवनमें चली गअी होगी। यह आशा रखें कि वहां अच्छी हो जायगी।

बापूके आशीर्वाद

यहां मैं लम्बे समय तक रहना नहीं चाहता। कितना रहना पड़ेगा, यह शायद आज तय हो जायगा।

मूल दस्तावेजकी नकल, जो पू० बापूजीने अपने हाथसे लिखा है, नीचे दी जाती है:

१. मैं जयसुखलाल अमृतलाल गांधी, मूल निवासी पोरबन्दरका, हाल निवासी कराची बन्दरका, यह दस्तावेज नीचेकी शर्तोंके अनुसार लिखता हूं:

२. अिस दस्तावेजकी तारीखको मुझ पर किसीका कर्ज नहीं है।

३. मेरी चौथी लड़की कुमारी मनु (जो आगे मनुबहनके नामसे जानी जायगी) कुछ वर्षोंसे मेरे बुजुर्ग श्री मोहनदास करमचंद गांधी (जो आगे महात्मा गांधीके नामसे जाने जायंगे) के संरक्षणमें सेवाग्राम आश्रममें अपनी शक्तिके अनुसार सेवाधर्मका पालन कर रही है और अुसके लिअे आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर रही है। अुसकी सेवावृत्ति पर मैंने बड़ी बड़ी आशाअें लगा रखी हैं। मनुबहनका किसी भी कारणसे किसी पर कोअी बोझ न पड़े, अिसके लिअे मैंने दस हजार रुपये अुसके नाम अमानत रख दिये हैं। अिस दस्तावेज द्वारा वह रकम मैं . . . स्थान पर वार्षिक . . . के हिसाबसे व्याज पर रख देता हूं। अुस रकमकी रसीद अिसके साथमें है। अुस रकमका अधिकार गांधीजीके हाथमें मनुबहनके संरक्षकके रूपमें रहेगा और वे अपनी अिच्छानुसार मनुबहनके लिअे अुसका अुपयोग करेंगे। यदि किसी समय व्याजकी रकम काफी न हो तो अमानत रकमको काममें न लेते हुअे वे मुझसे अतिरिक्त रकम वसूल कर लें। मैं वह रकम न जुटा सकूं तो मूल रकमका अुपयोग करनेका गांधीजीको या जिसे वे नियुक्त कर दें अुसे अधिकार होगा।

यदि मेरे जीतेजी गांधीजीकी मृत्यु हो जाय अथवा किसी कारणसे वे संरक्षक न रहें या न रह सकें, तो अुनके बजाय मैं संरक्षक हो जाअूंगा और जो अधिकार अिस दस्तावेजके अनुसार गांधीजीको दिये गये हैं वे मुझे मिल जायंगे।

मेरी मृत्युके बाद या मेरी अशक्त हालतमें मेरा अधिकार अुसे मिल जायगा, जिसे सेवाग्राम आश्रमके संरक्षक चुन लेंगे।

मनुबहन पढ़-लिखकर अपने सेवाकार्यमें ही लग जाय, अुसे आगे कुछ भी सिखानेकी जरूरत न रहे और वह पैंतीस वर्षकी अुम्रमें पहुंच जाय, अुस समय यदि गांधीजी या मैं जिन्दा

न होअूं तो मनुवहन अुक्त रकमका अुपयोग अपनी अिच्छानुसार कर सकेगी और सेवाग्राम आश्रमके संरक्षकोंकी तरफसे जो ट्रस्टी नियुक्त होंगे अुनका धर्म मनुवहन चाहे तो मूल रकम व्याज सहित अुसे सौंप देनेका होगा। यदि मनुवहन विवाह करे तो अुस समय वची हुअी रकम चारों वहनोंमें समान रूपसे वांट दी जायगी।

चि० जयसुखलाल,

अिसमें कोअी फेरवदल करना चाहो या जिनके नाम दिये गये हैं अुन्हें तुम अपने वदले नियुक्त करना चाहो तो कर देना। मेरी सलाह है कि वे नाम मेरे और तुम्हारे वाद क्रमसे हों तो अच्छा।

वापूके आशीर्वाद

मुझे वापूजीने दिनशाजीके आरोग्य-भवनमें रख तो दिया, परंतु वहां मुझे कुछ प्रवाही पदार्थों पर रखा गया। प्राकृतिक चिकित्सामें यह माना जाता है कि अिस प्रकार रहनेसे शरीर पर प्रतिक्रिया (reaction) होती है और अन्तमें रोग जड़से चला जाता है। मुझ पर भी प्रतिक्रिया हुअी और दमेका अेक नया रोग शुरू हो गया। अिससे मैं कुछ घवराअी। मेरे वारेमें डॉक्टरोंको साप्ताहिक समाचार तो वापूजीके पास भेजने ही पड़ते थे, अुस सिलसिलेमें वापूजीने मुझे लिखा:

सेवाग्राम,
२०-७-'४५

चि० मनुड़ी,

तेरी अच्छी कसौटी हो रही है। डॉ० दिनशा पर मेरा वड़ा विश्वास है। अिसलिअे तेरी चिन्ता नहीं करता। अिस समय सवसे अच्छी जगह तेरा अिलाज हो रहा है। और तेरे लिखने परसे देख सकता हूं कि तुम दोनों वहनें वहां जरूर कुछ

सीखोगी। तांबे जैसा शरीर बनाकर आना। निश्चिंत होकर डॉक्टर कहे अुसी तरह करती रहना। जो भी हो लिखनेमें संकोच न रखना। संकोच रखेगी तो मेरी चिन्ता बढ़ेगी।

बापूके आशीर्वाद

अिस बीच डेढ़ेक महीने बाद मुझे अचानक बंबअी जाना पड़ा। अितनेमें मेरे पिताजीका तबादला कराचीसे महुवा हो गया। अिसलिअे में अुनके साथ बम्बअीसे कराची गअी और वहांसे महुवा आअी। यहां आनेके बाद महुवाके बारेमें बापूजीने थोड़ासा मेरे पिताजीको लिखा,

महुवा तो हवा खानेका स्थान माना जाता है, अिसलिअे यह बन्दरगाह तुम्हें अनुकूल आना ही चाहिये।

महुवामें पढ़नेके साधन हैं, अैसा मेरा खयाल है। वहां किसी समय दूधाभाअी हरिजन पाठशाला चलाते थे और हाजिरी भी अच्छी रहती थी। अब वह चलती है या नहीं, यह तलाश करके लिखना।

तुम लोग अैसी जगह पर चले गये हो, जहां बहुत सेवा-कार्य हो सकता है। वहां धर्मांध मनुष्य रहते हैं। वहां कोअी खादी नहीं पहनता; कोअी अिक्के-दुक्के खद्दरधारी दिखाअी देते हैं। अुस क्षेत्रमें कोअी काम नहीं हुआ है। साथ ही राज्यका बड़ा बंदरगाह होनेसे राज्यका असर भी दिखाअी दे सकता है। तुमसे जितना बन पड़े करना। मुझे लिखते रहना।

मेरा खयाल यह है कि रायचंदभाअीका लड़का भी वहीं है। वह रायचंदभाअीका काम कर रहा है अैसी बात तो नहीं है। मुझे लिखा करता था। अुसके विचार अच्छे हैं। खोज करनेकी झंझटमें न पड़ना। सहज ही कभी खबर लग जाय तो दूसरी बात।

सरदार पांच दिनके लिअे बम्बअी गये हैं। वे जहां रहते हैं वहांसे चले जायं तो सूना लगता है। अुनका स्वभाव अितना विनोदी और मिलनसार है।

बापूके आशीर्वाद

जैसे हमारे समाजमें हर शहरमें लड़कियोंको छेड़नेकी अेक कुटेव है, वैसे यहां महुवामें भी है। १९४६ में हमारे यहां आनेके बाद संस्थाके संचालकोंके आग्रहसे मैं स्त्रियोंकी अेक संस्थामें अवैतनिक काम करती थी और हम स्त्रियोंका वातावरण काफी अच्छा हो गया था। मैं हमारे घरकी नौकरानीको भी, जो पंद्रह वर्षकी कोलीकी लड़की थी, कातना, पूनियां बनाना और अक्षरज्ञान करानेके अुद्देश्यसे रोज कमलाबहन-अुद्योगशालामें ले जाती थी। अिस लड़कीकी शिकायत थी कि जब वह कैबिन चौकमें से गुजरती है, तब वहां होटलमें बैठनेवाले लड़के अुससे छेड़खानी करते हैं। यही शिकायत कपोल जातिकी लड़कियोंकी भी थी। परंतु यदि वे लड़कियां कोअी शिकायत करती हैं, तो अुनके मां-बाप अुन पर नाराज होते हैं और वे गांवकी आंखोंमें चढ़ जाती हैं। कुछने तो मुझे यह भी कहा कि "हम या हमारी लड़कियां कुछ करें तो अुनका विवाह-संबंध न हो।" अिस कारण कोअी अुस शैतानी टोलीसे, जो गांवके बीचोंबीच थी, कुछ नहीं कहता था। मुझे अिस बातका पता चलने पर मैं अपनी नौकरानीके साथ बाजारमें होकर निकली। अेक लड़केने सदाकी भांति अपनी शरारत शुरू की। मुझे गुस्सा आया, अिसलिअे मैंने तो चप्पल निकालकर अुस लड़केको दो जमा दीं। अिससे मेरे साथ जो कोलीकी लड़की थी अुसमें भी हिम्मत आअी और अुसने भी लड़केको खासी मरम्मत की। अिस कुतूहलको देखने लोग अिकट्ठे हो गये। कुछ व्यापारियोंने शाबाशी दी कि, "बहन, अच्छा किया। हमारी लड़कियोंको भी बहुत समयसे ये बदमाश परेशान करते थे।" अिससे मुझे व्यापारियों पर और भी क्रोध आया और अुस लड़केको पुलिसके सुपुर्द करनेकी विधि अपने पिताजी पर छोड़कर मैं अपने काम पर चली गअी। मंडलमें जाकर यह बात कही तो अेक

और वहनने मुझसे यही शिकायत की। अिसलिअे अुसी दिन फिर वहांसे मंडलकी दो वहनें साथ गअीं। हमें देखते ही जो लड़के अिस वहनको चिढ़ाया करते थे अुन्होंने अुसके साथ अपनी छेड़छाड़ शुरू की। हमने अुनमें से अेकको पकड़कर खूब पीटा। और अुस लड़केको भी पुलिसके हवाले किया। अंतमें सबने लिखित माफी मांगी। अुसके बाद आज तक हमारे भर वाजारसे निकलने पर भी किसीने हमें छेड़नेकी हिम्मत नहीं की।

परंतु जिस दिन दो-तीन लड़कोंको अेकके बाद अेक पीटनेकी घटना हुअी, अुसी रातको मुझे विचार आया कि मेरा यह कार्य हिंसामय हुआ; वापूजीको पता चलेगा तो अुन्हें कितना दुःख होगा! अिसलिअे मैंने सारी वात अुन्हें बता दी। परंतु वापूजीने मेरी कल्पनासे भिन्न ही लिखा:

मसूरी,
६–६–'४६

चि० मनुड़ी,

तू अपने पराक्रमोंका जो वर्णन कर रही है, अुस परसे तो यही कहा जा सकता है कि तू अपना समय अच्छी तरह विता रही है। गुंडोंसे तेरा मतलब अुन वदमाश लड़कोंसे है जिनका तुझे अनुभव हुआ है। तूने जिस ढंगसे काम लिया वह कुछ हद तक द्रौपदीका तरीका माना जायगा। लेकिन अनुकरण करने लायक ढंग सीताका है। बेशक, सतियोंमें दोनोंकी गिनती है। द्रौपदीके पांच पति थे, तो भी वह सती कैसे रही और मानी गअी, यह विचार करनेकी वात है। परंतु अिसे यहीं छोड़ देता हूं। तूने गुंडोंको जो जवाब दिया अुतना ही करके रह गअी हो और मनमें क्रोध भरा हो, तो तेरा यह जवाब गुंडेपनसे ही दिया गया माना जायगा। पैरसे चप्पल निकालकर तू गुंडे पर फेंके या हाथमें लेकर दो-चार मार दे, तो वह दब जायगा — यह अर्थ तू लगा ले तो क्या तुझे अिसका भान होना

कि तूने क्या किया? भरे चौकमें तूने जो शरीरबल दिखाया, अुससे लोगोंमें भी बल आ सकता है। और गुंडोंके स्वभावमें तो डरपोकपन होता ही है, अिसलिअे वे दबकर भाग जाते हैं। यदि चप्पल निकालना तेरी करुणाकी निशानी हो तो चप्पल निकालने और फेंकने पर भी मैं अुसे अहिंसाका चिन्ह मानूंगा। अहिंसाकी जड़ हृदयमें होती है। और अुसका परिणाम यह होना चाहिये कि सामनेवाला मनुष्य मारके आगे नहीं झुके, परंतु मारकी जड़में करुणाका जो तेज होता है, अुससे चकित होकर आत्माके बलके सामने झुक जाय। अैसा अुदाहरण मैं तुझे अपना ही देता हूं। मिस श्लेशिनने मेरे देखते हुअे मूर्खतासे बीड़ी पी। मैंने अुसे तमाचा मार दिया। बीड़ी फेंक कर पहली ही बार वह मेरे देखते-देखते रो पड़ी। अुसने मुझसे माफी मांगी और मुझे लिखा: "अब मैं कभी अैसा नहीं करूंगी। आपका प्रेम मैंने जान लिया है।" अैसे अुदाहरण मेरे जीवनमें तो और भी हैं। बहुतोंके जीवनमें भी होंगे, जिन्हें हम नहीं जानते। क्या अुन गुंडोंने जान लिया कि तुझमें वह प्रेम था? लोगोंकी बाहवाहीसे तू भुलावेमें न आना। अपने हृदयको पहचान लेना और फिर विचार करना कि तेरे काममें हिंसा थी या अहिंसा? आम तौर पर सोचें तो चप्पल निकालना सभ्यता अर्थात् अहिंसाका चिन्ह नहीं है, नादानी अर्थात् असभ्यताकी निशानी है। परंतु वह कृत्य तेरे लिअे अहिंसाका चिन्ह हो सकता है। अिसकी साक्षी तू ही हो सकती है या भगवान्। तेरे कामका यह सारा पृथक्करण करके मैं तुझे बधाअी ही देना चाहता हूं, क्योंकि तेरा काम हिंसामय हुआ हो तो भी मुझे परवाह नहीं है। मेरे लिअे अितना काफी है कि तू दबी नहीं। मैं यह मान लेता हूं कि तेरा रुख अहिंसाकी ओर है। अिसलिअे अगर यह हिंसा होगी तो भी तू अिससे विचारपूर्वक अहिंसा सीख लेगी। अिसलिअे मैंने तेरा पत्र सबको प्रेमपूर्वक पढ़नेको दिया

है। अखा भगतने कहा है: "सुतर आवे तेम तुं रहे, जेम तेम करीने हरिने लहे।"* असलिअे वहां बैठकर भी शुद्ध सत्य और अहिंसा सीखकर अुसे अमलमें ला सकेगी, तो मेरे पास या मेरे अधीन सीखनेसे अधिक सीखी हुअी मानी जायगी।

तुम दोनोंको बापूके आशीर्वाद

जिस दिन अिस लड़केको पीटा था अुसी दिन वह लड़का रातको साढ़े ग्यारह बजे घर आकर यह कहते हुअे मेरे पैरोंमें पड़ा कि मुझसे बहुत बेजा काम हो गया। और अुसने अिस बातका विश्वास दिलाया कि आयंदा कभी अिस प्रकारकी छेड़खानी नहीं करेगा। अुसके बाद पू० बापूजीका अुपरोक्त पत्र तो आ ही गया था, फिर भी मैंने जरा और स्पष्टीकरण चाहा था। अुसके अुत्तरमें बापूजीने लिखा:

दिल्ली,
२६-६-'४६

चि० मनुड़ी,

तेरा १५ तारीखका पत्र कोअी तीन दिन पहले मिला था। अुत्तर आज ही लिख पा रहा हूं। तूने जो साहस दिखाया अुसकी चर्चा करके तूने पूछा कि अिसे मैं हिंसा कहूं या अहिंसा? लेकिन तेरा अिस विचारमें न पड़ना ही अच्छा है।

अहिंसाका मनन करनेसे समय आने पर हमारे हाथों अहिंसक कार्य ही होगा। दूसरे लोग अुसे वैसा समझें या न समझें, अिसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। अुसके अन्तरका आधार अिस बात पर नहीं होता कि दूसरे क्या समझेंगे, परंतु हमारे मन पर होता है। मनको तो हम भी नहीं जान सकते। परंतु मान लो कि जान सकते हैं, तो यदि किसीका मन कहे कि गाली देना या थप्पड़ मारना अहिंसक कार्य है तो अुसके लिअे तो वह अहिंसक ही रहेगा। वह वास्तवमें अहिंसक है या नहीं,

* तू कैसा भी सरल जीवन बिता, लेकिन हरिको प्राप्त कर।

यह तो भगवान् ही जाने। सामनेवाले मनुष्य पर अुसका जो असर पड़ा हो, अुस परसे वह खुद और प्रेक्षक निर्णय कर सकते हैं। अिस सारी झंझटमें मैं तुझे क्यों डालूं? तू लगनसे यह प्रयत्न करती रहेगी तो अुसे मैं तेरी शिक्षा ही समझूंगा।

तुम दोनोंको बापूके आशीर्वाद

महुवाकी गंदगी तो मशहूर है। शुरूमें मैंने बहनोंसे यहांका सारा वातावरण जान लिया। अब तकका मेरा पालन-पोषण पोरबन्दर, बम्बअी और कराची जैसे शहरोंमें हुआ था। अतः अितनी अधिक गंदी गलियां देखकर मुझे आश्चर्य ही होता था। जगह जगह कूड़ेके ढेर पड़े हुअे थे। परंतु बादमें मुझे मालूम हुआ कि काठियावाड़में यह सब स्वाभाविक है। जहां तहां स्त्रियां घूंघट निकालकर सवेरे-सवेरे या संध्याके समय पाखाने बैठ जाती हैं। यह ढंग तो मैंने पहले पहल यहीं देखा। महुवा निवासियोंके लिअे और खास तौर पर स्त्रियोंके लिअे यह अत्यंत लज्जाजनक बात है। शायद पूज्य बापूजीके प्रयत्नसे म्युनिसिपैलिटी द्वारा ही कुछ हो सकता है, क्योंकि शहर छोटा है। साथ ही दिन-दहाड़े और भर बाजारमें जब बहनोंके साथ छेड़खानी की जाती हो तो जिन बहनोंके घर पाखाने न हों वे देर-अबेर गांवके बाहर कैसे जा सकती हैं? यह समस्या म्युनिसिपैलिटी ही हल कर सकती है, अिसलिअे मैंने बापूजीको लिखा। बापूजीने लिखा: "मैंने महुवा देखा है। परंतु तेरा वर्णन तो अुसे और भी खराब बताता है। मुझे वहां अेक ही दिन रहनेकी याद है।" मेरा पत्र श्रीमान दीवान साहबके पास भेजा गया। अुसके बाद जब सितम्बरमें मेरा बापूजीके पास दिल्ली जाना हुआ, तब और अुसके बाद जब जब श्रीमान दीवान साहबसे मिलना होता तब मेरा यह प्रश्न अुनके सामने खड़ा ही रहता था। बापूजीने अुनसे कहा था कि, "महुवामें रहनेवाली अपनी ही लड़कीकी बात सुनकर अुसे संतुष्ट कीजिये।" और आज मुझे अितना स्वीकार करना चाहिये कि यद्यपि महुवाकी म्युनिसिपैलिटी वहांके नागरिकोंके हाथमें होनेसे वे कहते थे कि 'अब तो नागरिकोंके हाथमें सत्ता है', फिर

भी अुन्हें अैसा तो लगा कि अिस प्रश्नके साथ न्याय हो सके तो अच्छा। और जहां तक मैं जानती हूं वे अिस प्रश्नको हल करनेकी कोशिशमें ही थे। परंतु राजनैतिक परिवर्तन अितनी तेजीसे हुअे कि महुवाकी मशहूर गन्दगीका सवाल अेक तरफ रह गया; और आज तक वह वैसा ही पड़ा हुआ है। आज तो हमारे अिस छोटेसे शहरमें 'वादों' के अैसे नारे लग रहे हैं कि जिस महुवाके लिअे पूज्य बापूजीने अितने असंख्य कामोंके बीच भी सतत चिंता रखी थी, अुसके लिअे आज यह अेक बड़ा प्रश्न हो गया है कि 'वादों' के नारोंको छोड़कर शहरकी यह शर्म मिटाअी जायगी या नहीं?

हमारे हिन्दी प्रकाशन

बापूके पत्र – १ : आश्रमकी बहनोंको
बापूके पत्र – २ : सरदार वल्लभभाओीके नाम
बापूके पत्र मीराके नाम
सच्ची शिक्षा
बुनियादी शिक्षा
शिक्षाकी समस्या
विद्यार्थियोंसे
हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण
गोसेवा
दिल्ली-डायरी
गांधीजीकी संक्षिप्त आत्मकथा
राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी
वर्णव्यवस्था
सत्याग्रह आश्रमका अितिहास
रचनात्मक कार्यक्रम
बालपोथी
रामनाम
आरोग्यकी कुंजी
खुराककी कमी और खेती
भाषावार प्रान्त
शिक्षाका माध्यम
राष्ट्रभाषाका सवाल
विवेक और साधना
अेक धर्मयुद्ध
महादेवभाअीकी डायरी – १
महादेवभाअीकी डायरी – २
महादेवभाअीकी डायरी – ३
सरदार वल्लभभाअी – १
सरदार पटेलके भाषण

सयानी कन्यासे	१–०–०
महादेवभाओीका पूर्वचरित	०-१४-०
स्मरण-यात्रा	३–८–०
हिमालयकी यात्रा	२–०–०
जीवनका काव्य	२–०–०
बापूकी झांकियां	१–०–०
अुत्तरकी दीवारें	०-१४-०
अुस पारके पड़ोसी	३–८–०
भूदान-यज्ञ	१–४–०
भावी भारतकी अेक तसवीर	१–०–०
जड़मूलसे क्रान्ति	१–८–०
जीवनशोधन	३–०–०
स्त्री-पुरुष-मर्यादा	१-१२-०
गांधी और साम्यवाद	१–४–०
अीशु ख्रिस्त	०-१४-०
निर्भयता	०–३–०
सर्वोदयका सिद्धान्त	०-१०-०
शराबबन्दी क्यों?	०-१०-०
जीवनका सद्व्यय	१–०–०
हमारी बा	२–०–०
हिन्दुस्तान और ब्रिटेनका आर्थिक लेन-देन	०–८–०
बापू – मेरी मां	०-१०-०
मरुकुंज	१–४–०
गांधीजी	०-१२-०
ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम	१–४–०
कलकत्तेका चमत्कार	१–४–०
गांधी-साहित्य-सूची	३–४–०
प्रेमपन्थ – १	०–४–०
गांधीचरितमानस	०–६–०

डाकखर्च अलग

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–१४